NCERT

उत्तराखण्ड शासन

SCERT UK

उत्तराखण्ड
बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023

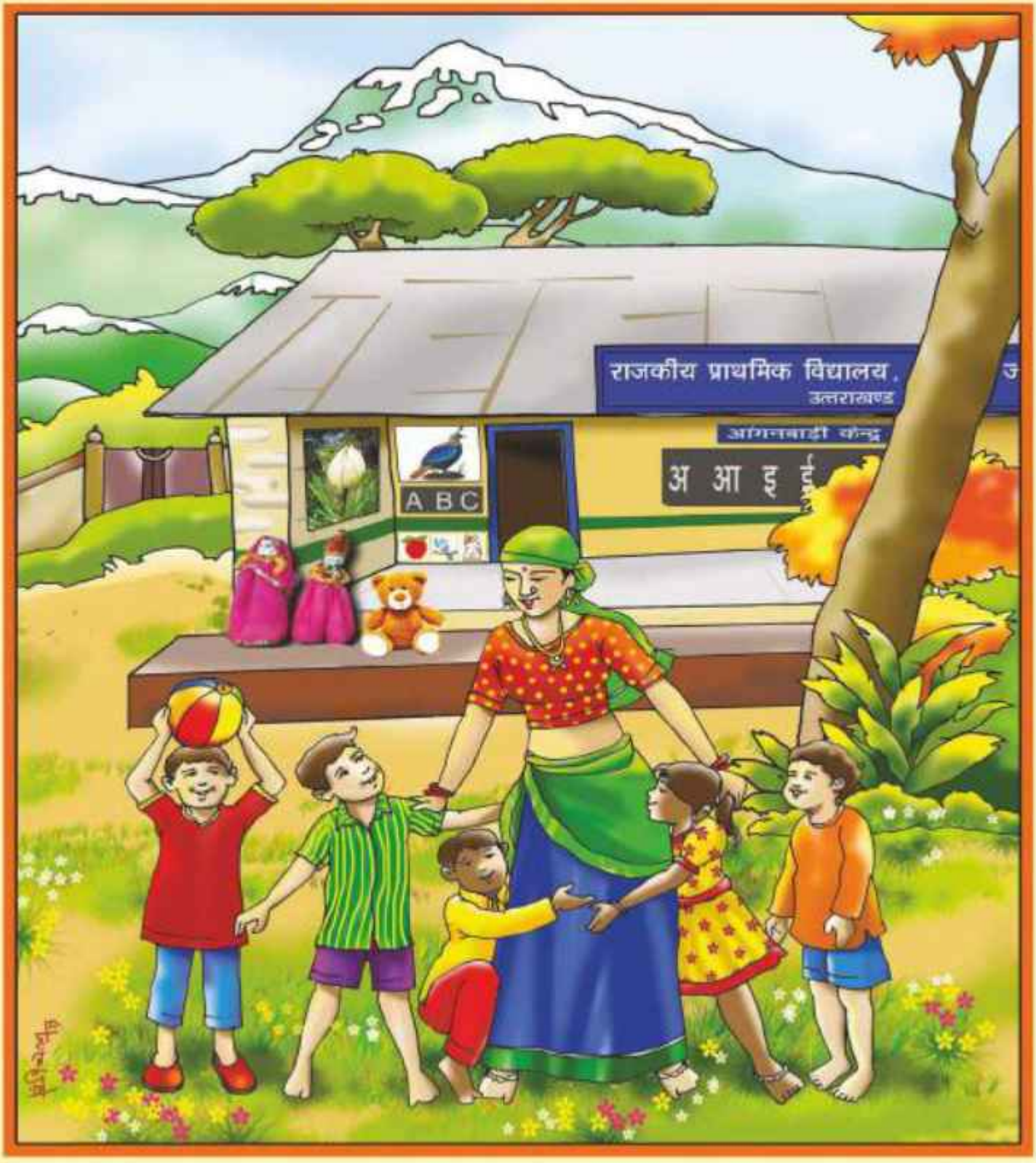

बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा

2023

उत्तराखण्ड

आमुख

इक्कीसवीं सदी भारत की सदी होगी। सार्वभौमिक उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा के द्वारा ही भविष्य की समस्याओं का सामना और समाधान किया जा सकेगा। वैज्ञानिक सोच एवं न्यायसंगत तरीके से देश के भीतर और बाहर उभरती वैश्विक चुनौतियों का सामना सफल तरीके से करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 कारगर सिद्ध होगी। इस नीति के अन्तर्गत सभी बच्चों को संविधान द्वारा परिकल्पित एक न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाएगी जिससे उन्हें वर्तमान और भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकेगा।

इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र में आमूलचूल बदलाव किया जा रहा है ताकि 21वीं सदी में आवश्यक ज्ञान, कौशल, मूल्य, रूचि जैसे तार्किक चिंतन, सृजनात्मकता, वैज्ञानिक सोच, संवाद और सहयोग की क्षमता, बहुभाषिकता, समस्या समाधान, मौलिक चिंतन और कार्यव्यवहार, सामाजिक ज़िम्मेदारी, सामाजिक सरोकार और डिजिटल साक्षरता आदि में समग्र विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

बच्चों के मानसिक विकास के लिए प्रारम्भिक 06 वर्षों को महत्त्वपूर्ण माना गया है। इसी तथ्य को केन्द्र में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के रूप में लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल और खोज आधारित शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। शिक्षा नीति के नए शैक्षिक ढांचे 5+3+3+4 में 03 वर्ष के बच्चों को शामिल करके एक मज़बूत बुनियादी शिक्षा की संकल्पना की गई है, जिससे उनका समग्र शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, नैतिक और संवेगात्मक विकास हो सकेगा।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के निर्देशानुसार एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड द्वारा बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया है, जिसमें राज्य की समृद्ध परंपराओं को समाहित करते हुए स्थानीय कलाओं, कहानियों, कथाओं, कविताओं, खेलों और गीतों को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु अक्षरों, भाषाओं, संख्याओं, गिनती, रंगों, आकारों, चित्रकला/पेंटिंग, इन्डोर–आउटडोर खेलों, पहेलियों और तार्किक चिन्तन, दृश्यकला, शिल्प, नाटक, कठपुतली और नृत्य–संगीत के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्ष्य बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हेतु बच्चों में पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक ज्ञान के विकास के लिए उसके परिवेश के अनुसार गतिविधियाँ प्रस्तुत पाठ्यचर्या में समाहित की गई हैं। मातृभाषा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास को मज़बूत आधार प्रदान करती है। मातृभाषा बालक के बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास में सहायक होती है जिसमें बालक स्वतंत्र वैचारिक अभिव्यक्ति एवं मौलिक चिंतन करने में सहजता महसूस करता है। इसी तथ्य के दृष्टिगत उपरोक्त समस्त गतिविधियों को मातृभाषा में सम्पादित करने पर बल दिया गया है।

मैं राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पूरी टीम तथा इस कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाले विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों, विद्यालयों एवं गैर शासकीय संगठनों से जुड़े सम्मानित विषय विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास विभाग सहित सभी को इस सार्थक सामूहिक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत राज्य पाठ्यचर्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में वर्णित प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होने के साथ ही राज्य की शिक्षा व्यवस्था में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

बंशीधर तिवारी
महानिदेशक
विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का लक्ष्य देश के विकास के लिए आवश्यकतानुसार ऐसे मानव संसाधनों को विकसित करना है जो भावी चुनौतियों का सामना करने में अपनी भूमिका का निर्वहन प्रभावी ढंग से कर सकें। यह नीति परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित भारतीय ज्ञान परम्पराओं को सम्मिलित करते हुये इक्कीसवीं सदी में उभरती वैश्विक व राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना और समाधान, वैज्ञानिक सोच के साथ न्यायसंगत तरीके से करने में सक्षम होगी। संविधान द्वारा परिकल्पित एक न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के अनुरूप सभी बच्चों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान की जा सके, ताकि उन्हें वर्तमान और भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकेगा।

गुणवत्तापरक शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को उत्तराखण्ड सरकार ने भी अंगीकृत किया है। इस नीति की अनुशंसाओं को मूर्त रूप देने के लिए 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा हेतु 'राष्ट्रीय संचालन समिति' द्वारा भारत में 03 वर्ष से 08 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पहली बार 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–फाउंडेशनल स्टेज 2022' (National Curriculum Framework for Foundational Stage (NCF-FS) प्रस्तुत की गई है। जिसके अन्तर्गत राज्यों को राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित करने का विकल्प दिया गया है। उत्तराखण्ड राज्य ने 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–फाउंडेशनल स्टेज 2022 के अनुरूप राज्य की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को समाहित करते हुए 'बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (State Curriculum Framework for Foundational Stage (SCF-FS) तैयार की है।

बाल्यावस्था हेतु पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण हेतु शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार तथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली के निर्देशन में अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों सहित विभिन्न हितधारकों की राय जानने के लिए पूरे देश में विभिन्न स्तरों पर व्यापक सर्वेक्षण किये गये। तदक्रम में प्रदेश के समस्त 95 विकासखण्डों से 302 सर्वेयरों द्वारा मोबाइल ऐप सर्वे के माध्यम से अपेक्षित 3000 सर्वे के सापेक्ष 3816 सर्वेक्षण पूर्ण हुए। सिटिजन सर्वे एप्लिकेशन के माध्यम से 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या हेतु डिजिटल सर्वेक्षण' (Digital Survey for National Curriculum Framework (DiSaNC) एप्लिकेशन पर 23658 सर्वेक्षण राज्य के विभिन्न हितधारकों द्वारा प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त प्रदेश के सभी जनपदों का समेकन करते हुए चार जिला विमर्श समितियाँ (District Consultation Committee) गठित की गयीं। प्रत्येक जिला विमर्श समिति द्वारा चार क्षेत्रों–विद्यालय शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा पर पृथक–पृथक जिला विमर्श प्रतिवेदन (District Consultation Report) तैयार किये गये। इस प्रकार अपेक्षित 16 'जिला विमर्श प्रतिवेदन' तैयार किए गये। साथ ही प्रदेश स्तर पर 25 फोकस ग्रुप द्वारा 25 आधार पत्रक (Position Paper) तैयार किए गए जो कि शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार तथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध कराए गए टैकप्लेटफार्म पर अपलोड किए गए।

इसके अतिरिक्त 'बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा' निर्माण हेतु राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् उत्तराखण्ड के अन्तर्गत राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा हेतु निर्मित स्टेयरिंग कमेटी के निर्देशन में कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। जिसमें देश–प्रदेश के विभिन्न राज्यों के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों से विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर एवं पण्डित सुंदर लाल शर्मा, केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षण संस्थान श्यामला हिल्स भोपाल, मध्यप्रदेश सहित राज्य से भी अनेक विषय विशेषज्ञों से परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त किया गया। इन सभी के मार्गदर्शन, परामर्श और प्रतिवेदन की अनुशंसाओं से प्राप्त सुझावों को सम्मिलित करते हुए राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गयी, जिसे मुख्य सचिव उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में गठित राज्य स्टेयरिंग कमेटी (प्री प्राइमरी संरचनात्मक विकास / सुदृढीकरण समिति) से अनुमोदित किया गया।

बुनियादी स्तर हेतु पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा हमारे प्रदेश और राष्ट्र के बच्चों के भावी जीवन के सभी पक्षों और क्षमताओं के संतुलित विकास की आधारशिला रखेगा, ताकि उनमें नैतिकता, तार्किकता, करूणा और संवेदनशीलता के भाव विकसित हों, जिससे वे चरित्रवान और कार्यशील नागरिक बनेंगे और जीवन को आनन्दमय बना सकेंगे। बच्चों के उचित शारीरिक एवं

मानसिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए उनके आरम्भिक 06 वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी आयु में बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास हो जाता है इसलिए पुनर्गठित शिक्षण शास्त्रीय ढांचे 5+3+3+4 में 03 वयवर्ग के बच्चों को शामिल करते हुए 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' की एक मजबूत बुनियाद रखी गई है। जिसमें राज्य के ग्रामीण, पिछड़े तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर पृष्ठभूमि के बच्चों को भी अब गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी जो कि राज्य के शैक्षिक परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन लाने में मील का पत्थर साबित होगी। प्रदेश की सांस्कृतिक, आर्थिक व शैक्षिक पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए स्थानीय संदर्भों को भी इस पाठ्यचर्या में समाहित किया गया है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की पहुँच सार्वभौमिक हो, इसके लिए आंगनवाड़ी केंद्रों को भौतिक संसाधनों की दृष्टि से सुदृढ़ किया जाना होगा। खेल–खेल में खिलौने, सीखने में कैसे सहायक हो सकते हैं इस हेतु आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं शिक्षकों को वांछित अवधारणाओं एवं कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान कर सशक्त बनाया जाना होगा।

इस पाठ्यचर्या को तैयार करने में डॉ0 धन सिंह रावत, माननीय शिक्षा मंत्री उत्तराखण्ड सरकार का निरन्तर मार्गदर्शन मिलता रहा इस हेतु मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही मैं डॉ0 एस.एस.संधू मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड सरकार, श्री रविनाथ रामन, सचिव विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड, श्री हरिचन्द्र सेमवाल, सचिव महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड, मेजर योगेन्द्र यादव, अपर सचिव विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड, श्रीमती अमनदीप कौर, अपर सचिव, स्वास्थ्य उत्तराखण्ड, एवं श्री बंशीधर तिवारी, महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड, श्री मोहित चौधरी, मुख्य परिवीक्षा अधिकारी, महिला कल्याण विभाग उत्तराखण्ड का हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह दस्तावेज तैयार किया जा सका। साथ ही मैं सभी विषय विशेषज्ञों, परामर्शदाताओं, स्टेयरिंग कमेटी, निर्माण एवं परिमार्जन समिति, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान सहित इस दस्तावेज के निर्माण में लगे सभी का आभार प्रकट करती हूँ जिनके अथक प्रयास से राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का यह दस्तावेज निर्मित हुआ।

उत्तराखण्ड राज्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अन्तर्गत बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 के दस्तावेज का प्रथम संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। मैं आश्वस्त हूँ कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, फाउंडेशनल स्टेज–2022 में की गई संकल्पना के अनुरूप राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा को ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वित किए जाने के पश्चात् प्राप्त अनुभवों और पश्चपोषण के आधार पर इस दस्तावेज में भविष्य में सुधार किया जा सकेगा। बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 तैयार कर प्रदेश में शिक्षा के स्तरोन्नयन के प्रयास करने का जो अवसर मुझे मिला मैं इसके लिए हृदय से आभारी हूँ मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारा यह सामूहिक प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

बंदना गर्ब्याल
नोडल अधिकारी
राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण समिति/
निदेशक, अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण, उत्तराखण्ड

संकल्पना

बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की अनुशंसाओं को क्रियान्वित किए जाने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (National Curriculum Framework) विकसित की गई है जिसके आलोक में राज्य स्तर पर भी बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा (State Curriculum Framework For Foundational Stage) निर्मित की गई है।

संस्थागत व्यवस्था के अन्तर्गत शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों हेतु प्रस्तुत रूपरेखा पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग है। जिसमें पाठ्यक्रम, सीखने सिखाने की विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएँ और आकलन, शिक्षण–अधिगम सामग्री, कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाएँ, सीखने के लिए वातावरण, संस्था की संस्कृति सहित आदि बहुत कुछ शामिल है।

इसके अलावा पाठ्यचर्या में औपचारिक रूप से शामिल न होने के बावजूद भी ऐसे दूसरे बहुत सारे कारक हैं जो पाठ्यचर्या और इसके क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं। इसमें शिक्षक और उनकी क्षमताएँ, अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी, संस्थान तक सुगम पहुँच, संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रशासनिक सहयोग और निर्देशन आदि शामिल हैं।

प्रस्तुत दस्तावेज में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अधिकांश बिन्दुओं को यथावत लिया गया है तथापि यदि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में उद्धृत कोई आवश्यक प्रसंग समाहित किये जाने से वंचित रह गया हो तो उसका संदर्भ मूल दस्तावेज (NCF-FS) से ग्रहण किया जा सकता है।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

पाठ्यचर्या विकसित करने के तत्व, इसके मार्गदर्शक सिद्धान्त, लक्ष्य और संरचना को पाठ्यचर्या की रूपरेखा परिभाषित और निर्धारित करती है। इसी के आधार पर राज्य, बोर्ड और स्कूलों के शिक्षकों सहित सम्बन्धित प्राधिकारियों द्वारा पाठ्यपुस्तकों सहित शिक्षण-अधिगम सामग्री, पाठ्यक्रम और आकलन विधियाँ विकसित की जाएंगी। इसमें राज्य और देश की गौरवमयी भारतीय ज्ञान परंपरा तथा इसकी विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता व प्रमाण आधारित तथ्यों को भी शामिल किया गया है जो स्थानीय परम्पराओं और भारतीय स्वाद से इसे व्यापक और परिपूर्ण बनाती है इसके माध्यम से छात्रों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ करायी जा सकेगी।

बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या के लक्ष्य

समृद्ध भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ों से जुड़े रह कर 21वीं सदी की भारत की ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से NEP-2020 की परिकल्पना के अनुसार शिक्षणशास्त्र सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तनों के माध्यम से देश सहित राज्य की शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक रूप से बदलाव लाना है, जो न सिर्फ विचारों से ही बल्कि व्यवहार में भी अपेक्षित बदलाव लाने में कारगर साबित हो। चूंकि 'पाठ्यचर्या' शब्द विद्यार्थियों द्वारा स्कूल में होने वाले समग्र अनुभवों को समाहित करता है, इसलिए 'व्यवहार' न सिर्फ पाठ्यचर्या की अन्तर्वस्तु और शिक्षणशास्त्र को संदर्भित करता है बल्कि इसमें स्कूल का परिवेश और संस्कृति भी शामिल है। पाठ्यचर्या का यही सम्पूर्ण बदलाव विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों को सकारात्मक रूप से बदलने में हमें सक्षम बनाएगा।

लक्ष्यों को सम्भव बनाने वाली पाठ्यचर्या की विशेषताएँ

बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आलोक में उत्तराखण्ड की स्थानीयता के दृष्टिगत आवश्यक संदर्भों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। बुनियादी स्तर हेतु राज्य की पाठ्यचर्या में कुछ संदर्भो को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–फाउंडेशनल स्टेज 2022' से आवश्यकतानुसार यथावत भी लिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में उपलब्ध अनुलग्नकों–सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण, सीखने की योजना

की उदाहरणात्मक प्रक्रियाएं, बुनियादी स्तर हेतु निपुण भारत और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं की मैपिंग को यथावत स्थान दिया गया है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर हुए नवीनतम शोधों विश्लेषणों के आधार पर बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा में बच्चों को सीखने–सिखाने के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं जिसे कुछ निश्चित मार्गदर्शित सिद्धान्तों द्वारा प्राप्त किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि बच्चे का शारीरिक एवं सामाजिक–भावनात्मक एवं नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा और साक्षरता विकास तथा सौन्दर्य बोध और सांस्कृतिक आदि मूल्यों को संवर्धित कर बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। इसके साथ ही शिक्षा व्यवस्था में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाले अभिभावक, समुदाय के सदस्य और भारतीय नागरिक के रूप में कोई भी व्यक्ति इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा।

अजय कुमार नौडियाल
अपर निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी.
उत्तराखण्ड

संक्षेपाक्षर और उनका विस्तार

Acronym	Full Form
BEO	Block Education Officer
BITE	Block Institute of Teachers Education
BRC	Block Resource Center
CBSE	Central Board of Secondary Education
CG	Curricular Goals
CRC	Cluster Resource Center
DEO	District Education Officer
DIET	District Institute of Education & Training
DIKSHA	Digital Infrastructure for Knowledge Sharing.
DISE	District Information System for Education
ECCE	Early Childhood Care and Education
ECE	Early Childhood Education
FLN	Foundational Literacy and Numeracy
NCF-FS	National Curriculum Framework for Foundational Stage
GDP	Gross Domestic Product
GER	Gross Enrollment Ratio
GOI	Government of India
GRR	Gradual Release of Responsibility
ICDS	Integrated Child Development Scheme
IECEI	India Early Childhood Education Impact
ITEP	Integrated Teacher Education Programme
LTM	Learning Teaching Materials
MWCD	Ministry of Women and Child Development
NAS	National Achievement Survey
NCERT	National Council of Educational Research and Training
NCF	National Curriculum Framework
NCPFECCE	National Curricular and Pedagogical Framework for Early Childhood Care and Education
NCTE	National Council for Teacher Education
NDEAR	National Digital Education Architecture
NEP	National Education Policy
NER	Net Enrollment Ratio
NFHS	National Family Health Survey
NGO	Non-Governmental Organization
NIOS	National Institute of Open Schooling
NIPCCD	National Institute of Public Cooperation and Child Development

NIPUN	National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy Bharat Programme
PEEO	Panchayat Elementary Education Officer
POSHAN	Prime Minister's Overarching Scheme for Holistic Nutrition
PTR	Pupil–Teacher Ratio
QR	Quick Response Code
ROI	Return on Investment
RtE	Right to Education
SARTHAQ	Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education
SCERT	State Council of Educational Research and Training
SCF-FS	State Curriculum Framework for Foundational Stage
SEDG	Socio-Economically Disadvantaged Group
SLAS	State Level Achievement Survey
SMC	School Management Committee
TET	Teacher Eligibility Test
TLM	Teaching Learning Materials
UDISE	Unified District Information System for Education
UNESCO	United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
UNICEF	United Nations International Children's Emergency Fund
UT	Union Territory

अनुक्रमणिका

आमुख	**i**
प्रस्तावना	**ii**
संकल्पना	**iv**
संक्षेपाक्षर और उनका विस्तार	**vi**
अध्याय 1: प्रस्तावना और परिचय	**01**
खण्ड 1.1: परिचय	02
खण्ड 1.2: प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास	05
खण्ड 1.3: राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का व्यापक दृष्टिकोण	10
खण्ड 1.4: बुनियादी स्तर में बच्चे किस प्रकार सीखते हैं	15
खण्ड 1.5: बुनियादी स्तर के लिए विद्यालयी शिक्षा का संदर्भ	19
अध्याय–2: लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएं और सीखने के प्रतिफल	**20**
खण्ड 2.1: प्रमुख शब्दावलियाँ	21
खण्ड 2.2: लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक	23
खण्ड 2.3: पाठ्यचर्या के उद्देश्य	24
खण्ड 2.4: दक्षताएं	25
खण्ड 2.5: उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल	29
अध्याय–3: भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण	**34**
खण्ड 3.1: सिद्धांत	35
खण्ड 3.2: बुनियादी स्तर में भाषा शिक्षा और साक्षरता पर राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का दृष्टिकोण	38
अध्याय 4: शिक्षणशास्त्र	**42**
खण्ड 4.1: शिक्षण शास्त्र के सिद्धांत	43
खण्ड 4.2: शिक्षण योजना	45
खण्ड 4.3: शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण करना	47
खण्ड 4.4: खेलों के जरिए सीखना–बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला, शिल्प	50
खण्ड 4.5: साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ	60
खण्ड 4.6: सकारात्मक कक्षा–कक्ष वातावरण बनाना	69
खण्ड 4.7: वातावरण का सृजन	73
अध्याय 5: शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण	**76**
खण्ड 5.1: पाठ्यक्रम का विकास	77
खण्ड 5.2: विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त	78
खण्ड 5.3: विषयवस्तु को व्यवस्थित करने के तरीके	83
खण्ड–5.4: शिक्षण अधिगम सामग्री	86
खण्ड 5.5: किताबें और पाठ्यपुस्तकें	91
खण्ड 5.6: सीखने का परिवेश	94

अध्याय–6: सीखने की प्रगति का आकलन **98**
खण्ड 6.1: आकलन के मार्गदर्शक सिद्धांत 99
खण्ड 6.2: आकलन के उपकरण और तरीके 101
खण्ड 6.3: प्रभावी शिक्षण–अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना 105
खण्ड 6.4: आकलन का अभिलेखीकरण एवं सम्प्रेषण 106

अध्याय–7: समय प्रबन्धन **109**
खण्ड 7.1: दिवस नियोजन 110

अध्याय–8: अतिरिक्त महत्वपूर्ण क्षेत्र **113**
खण्ड 8.1: विकासात्मक विलम्ब (Development Delay) और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) 114
खण्ड 8.2: विद्यालय में सुरक्षा और संरक्षण 119

अध्याय–9: प्रिपरेटरी स्टेज / प्राथमिक स्तर तक की कड़ियाँ **121**
खण्ड 9.1: विकासात्मक क्षेत्रों से पाठ्यचर्या के क्षेत्रों तक 123
खण्ड 9.2: विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरन्तरता और परिवर्तन 124

अध्याय–10: एक सहयोगी पारिस्थितिकी (ECOSYSTEM) तंत्र का निर्माण **125**
खण्ड 10.1: शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना 126
खण्ड 10.2: सीखने का समुचित वातावरण सुनिश्चित करना 130
खण्ड 10.3: अकादमिक और प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका 132
खण्ड 10.4: अभिभावकों और समुदाय की भूमिका 134
खण्ड 10.5: तकनीकी का लाभ 136
अनुलग्नक 1 : सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण 138
अनुलग्नक 2 : उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ 189
अनुलग्नक 3 : फांउडेनशनल स्टेज के लिए NIPUN भारत और NCF की तरह SCF की दक्षताओं की मैपिंग 234
अनुलग्नक 4 : भारत और विश्व में ECCE पर शोध 245

पारिभाषिक शब्दावली **250**
संदर्भ (References) **254**
ग्रन्थसूची (Bibliography) **256**
आभार **262**

अध्याय-1

प्रस्तावना एवं परिचय

यह अध्याय बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) के निर्देशों के अनुरूप राज्य के लिए 'बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (State Curriculum Framework For Foundational Stage-SCF-FS) का आधार तैयार करता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की अहमियत, प्राचीन भारतीय ज्ञान पद्धति और विचार की समृद्ध परम्परा में देखी जा सकती है। जहाँ पंचकोशों के पोषण में ही बच्चे का सर्वांगीण विकास निर्भर करता है। बच्चे के सर्वांगीण विकास की नींव भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा से बंधे रह कर, समसामयिक शोधों के निष्कर्षों के अनुरूप बाल्यावस्था में उचित देखभाल के साथ खेल–खेल में शिक्षा द्वारा रखी जाएगी। इस हेतु सीखने–सिखाने की रूपरेखा SCF-FS द्वारा प्रस्तुत की जा रही है। इसमें खेल आधारित शिक्षण को जीवन के शुरूआती वर्षों हेतु अत्यन्त आवश्यक समझा गया है, जिसके माध्यम से ही बच्चे के सर्वांगीण विकास की आधारशिला रखी जा सकती है।

SCF-FS मार्गदर्शन करने वाले मूल सिद्धान्तों तथा दृष्टिकोणों और परिवार, समुदाय व विद्या केन्द्रों का बच्चे के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सहयोग आदि को लेकर समग्र रूप से व्यापक दिशानिर्देश प्रस्तुत करता है।

खण्ड 1.1

परिचय

1.1.1 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा :

एक बालक अपने प्रारम्भिक आठ वर्षों में जीवन के सभी आयामों यथा–शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास की ओर अग्रसर होता है। इन वर्षों में मस्तिष्क के विकास की गति तीव्र होती है। विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से हमें ज्ञात होता है कि किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क का 85% से अधिक विकास 06 वर्ष की आयु तक हो जाता है। इसलिए शुरूआती वर्षों में बच्चों के मस्तिष्क के स्वस्थ एवं सतत विकास के लिए उनकी उपयुक्त देखभाल और प्रोत्साहन का विशेष महत्व है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE- Early Childhood Care and Education) को जन्म से 08 वर्ष तक के बच्चों की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया गया है।

ECCE की संकल्पना में 8 वर्ष की आयु तक के लिए स्वास्थ्य की देखभाल और पोषण के साथ ही शिक्षा के महत्वपूर्ण कौशलों जैसे कि स्वयं से तैयार होने का कौशल, गत्यात्मक कौशल, स्वच्छता, अपनी देखभाल करने वाले से दूर रह पाने का कौशल, अपने साथियों के बीच सहज महसूस करने का कौशल, नैतिक मूल्यों का विकास (जैसे– सही और गलत के बीच के अन्तर को समझ पाना), चलने–फिरने एवं व्यायाम द्वारा शारीरिक विकास, अभिभावकों और अन्य लोगों के सामने भावनाओं को व्यक्त करना और उनसे संवाद स्थापित करना, किसी काम को पूरा करने के लिए लम्बे समय तक बैठने का और सामान्यतया सभी प्रकार की अच्छी आदतों को विकसित करने के कौशल शामिल हैं।

इस उम्र में व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेल आधारित शिक्षण को बच्चे की जन्मजात क्षमताओं यथा सहयोग की भावना, समूह में कार्य, सामाजिक मेलजोल, करूणा, क्षमता, समावेश, संवाद, सांस्कृतिक सम्मान, हंसमुख, जिज्ञासा, रचनात्मकता जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के विकास के लिए उपयोगी माना जाता है। साथ ही शिक्षकों, सहपाठियों, विद्यालय/केन्द्र में सहयोगी व्यक्तियों तथा अन्य अपरिचित लोगों के साथ सफलतापूर्वक एवं सम्मानपूर्वक बातचीत करने की क्षमता भी इससे विकसित होती है। गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु इन वर्षों के दौरान अक्षरों, भाषाओं, संख्याओं, गिनती, रंगों, आकारों, चित्रकला/पेंटिग, इनडोर–आउटडोर खेलों, पहेलियों और तार्किक चिन्तन, दृश्यकला, शिल्प, नाटक, कठपुतली और नृत्य–संगीत के संचालन पर जोर देता है।

1.1.2 बुनियादी अवस्था :

उक्त सिद्धान्तों और दिशा निर्देशों के तहत प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के लिए आवश्यक पाठ्यक्रमणीय और शैक्षणिक रूपरेखा के विकास के भाग निम्नवत् हैं–

क) मुख्यतः घर पर (0–3 वर्ष)

- 0–3 वय वर्ग के बच्चे अपने माता–पिता, घर–परिवार के वातावरण में अथवा शिशुगृहों (Creches) में बड़े होते हैं। इसी क्रम में कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जिनके माता–पिता प्रवासी मजदूर हैं अथवा वे बच्चे जिन्हें अपनी माताओं के साथ कारागार में रहना होता है।
- 03 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के अन्तर्गत न केवल स्वास्थ्य, सुरक्षा और पोषण शामिल है बल्कि इसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक देखभाल, बच्चे के साथ बातचीत, खेलना, घूमना, संगीत और आवाज़ें सुनना, देखना तथा छूना आदि को विकसित करने के लिए उपयुक्त अवसर उपलब्ध करवा पाना भी शामिल है। इसके साथ ही बच्चे के मनोसामाजिक, मनोलैंगिक, आस–पास के परिवेश तथा विकास के अन्य पहलुओं की समझ भी आवश्यक है।

- 03 वर्ष की आयु तक घर परिवार का वातावरण बच्चे को पर्याप्त पोषण, स्वस्थ आदतें, देखभाल, सुरक्षा और संरक्षण एवं सीखने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करता है। ये सभी पहलू प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का आधार बनते हैं। 03 वर्ष की आयु के बाद अधिकांश बच्चे आंगनवाड़ी और प्री–स्कूल में पंजीकृत होते हैं, जहाँ पोषण, स्वास्थ्य, देखभाल, सुरक्षा और प्रोत्साहन जैसे घटकों का उचित और पूर्ण रूप से पालन सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

  राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–बुनियादी स्तर में वर्णित दिशा निर्देशों के अनुसार घर के वातावरण में 0–03 वयवर्ग के बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा दिशा निर्देश अथवा सुझावात्मक प्रक्रियायें विकसित की जायेंगी।

ख) 03–08 वयवर्ग के लिए संस्थागत व्यवस्था के अन्तर्गत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) के लिए शैक्षणिक रूपरेखा के विकास को निम्नवत् वर्गीकृत किया गया है–

- **03–06 वर्ष– आंगनवाड़ियों और प्री–स्कूल में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के कार्यक्रम।**
- **06–08 वर्ष– विद्यालय स्तर पर प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के कार्यक्रम (कक्षा 1 और 2)।**

3 से 8 वर्ष की आयु तक प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) में स्वास्थ्य, सुरक्षा, देखभाल और पोषण के साथ–साथ स्वयं सहायता कौशल, गत्यात्मक कौशल, स्वच्छता, शारीरिक विकास, माता–पिता तथा अन्य लोगों के साथ बातचीत के माध्यम से अपने विचार एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करना, अपने संवेगों को पहचानना एवं उनका उपयोग करना, अपने कार्य को पूर्ण करना, नैतिक गुणों का विकास और सभी अच्छी आदतों के निर्माण पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

इस अवस्था में खेल आधारित शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों (जो व्यक्तिगत एवं सामूहिक हो सकती हैं) के द्वारा बच्चों की जन्मजात क्षमताओं के साथ–साथ जिज्ञासा, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग, समूह कार्य, सहानुभूति, मानवीय संवेदना, शिष्टाचार, करूणा, समावेशिता, सम्प्रेषण, संस्कृति की सराहना, विनोदशीलता, परिवेश के प्रति जागरूकता, बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान करना एवं उनका सही विकास करना, साथ ही शिक्षकों एवं अपने साथियों के साथ सम्मानपूर्वक बातचीत करने की योग्यता विकसित करने की महती आवश्यकता है।

ग) साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का महत्व

इन वर्षों के दौरान प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में शुरूआती कौशल के साथ अवधारणात्मक समझ विकसित करने, रचनात्मक व तार्किक सोच विकसित करने हेतु साक्षरता और संख्या ज्ञान का विकास बहुत महत्वपूर्ण है। इस कारण यही आयु बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (Foundational Literacy and Numeracy, FLN) की उपलब्धि का आधार बनती है। समग्र शिक्षा के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का महत्व अत्यन्त स्पष्ट है, जिस हेतु निपुण भारत अभियान भी लागू किया गया है।

घ) बुनियादी अवस्था हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF-FS)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था को नए ढांचे (5+3+3+4) में पुनर्गठित किया गया है। इस नए ढांचे में 03 से 08 वर्ष की आयु सीमा को बुनियादी अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है। इस आयु के बच्चों की देखभाल और शिक्षा हेतु प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा में इस आयु के लिए वांछित विकासात्मक प्रतिफलों को प्राप्त करने में अभिभावकों और समुदाय की भूमिका के विषय में बात की गयी है।

ड.) राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का लक्ष्य

व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास और उसका लाभ सम्पूर्ण रूप से समाज को दीर्घकाल तक मिलता रहे, इस हेतु 03–08

आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क, सुरक्षित, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त, उच्च गुणवत्ता वाली बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध हो, जिसे वर्ष 2025 तक आवश्यक रूप से प्राप्त कर लिया जाएगा।

बुनियादी स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सभी बच्चों को एक अच्छे, नैतिक, विचारशील, सृजनात्मक, सहानुभूतिपूर्ण और कार्यकुशल मानव (Productive Human Beings) बनने के सुअवसर देती है। हमारे देश के कल्याण (Well-being) और समृद्धि के लिए समाज के सभी सदस्यों (शिक्षकों से लेकर अधिकारियों, माता–पिता और समुदाय के सदस्यों से लेकर नीति निर्माताओं और प्रशासकों) को यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ आना चाहिए कि जीवन के शुरूआती और सबसे अहम वर्षो में प्रत्येक बच्चे को उचित और पर्याप्त पोषण के साथ–साथ शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक प्रोत्साहन उपलब्ध हो सके।

1.1.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा का आधार

प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा जीवन भर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है। इस अवस्था में प्राप्त अनुभव मस्तिष्क की क्षमताओं पर लम्बे समय तक प्रभाव डालते हैं। मस्तिष्क के विकास से लेकर स्कूल की तैयारी तक सीखने के बेहतर परिणाम, समानता, रोजगार और देश की समृद्धि के लिए हमें गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) पर बल देना चाहिए।

खण्ड 1.2

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास

1.2.1 भारतीय परिप्रेक्ष्य –

प्रबुद्ध एवं समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं में बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। भारत के विविध सांस्कृतिक परिदृश्यों में जीवन के प्रारम्भिक वर्षों को बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। इस अवस्था में बच्चे के आंतरिक और बाह्य दोनों ही तरह के विकास को पोषित करना चाहिए। बाहरी दुनिया और अपनी आंतरिक वास्तविकता एवं 'स्व' के विषय में सीखना साथ–साथ होना चाहिए।

हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा का आधारस्तम्भ पंचकोश का विकास है। जिसमें कहा गया है कि अन्नमय कोश (शारीरिक), प्राणमय कोश (जीवन शक्ति ऊर्जा), मनोमय कोश (मन), विज्ञानमय कोश (बौद्धिक) एवं आनन्दमय कोश (आंतरिक स्व) के पोषण से ही बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है। यह सभी कोश आपस में एक दूसरे से अर्न्तसम्बन्धित हैं अर्थात् इन सभी का विकास साथ–साथ होता है।

हमारे प्राचीन विद्वानों ने पंचकोश के रूप में शरीर और मन के गूढ़ सम्बन्ध की व्यापक व्याख्या की है। प्रत्येक कोश के विकास के कुछ खास तरीके सुझाए गए हैं। ये शिक्षा एवं समग्र विकास के लिए स्पष्ट एवं पूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। हमारे देश में प्राचीन काल में गुरूकुल में शिक्षा प्रदान की जाती थी, यह दुनिया की सबसे प्राचीन शिक्षा प्रणाली है जो कि शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच के अन्तर्सम्बन्धों पर जोर देती थी।

वैदिक युग से ही आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था हेतु मार्गदर्शक रही है। आयुर्वेद के ग्रंथों में बच्चों की देखभाल से सम्बधित ज्ञान और समझ का समन्वित दृष्टिकोण उल्लिखित है। ये ग्रंथ बालविकास के विषय में विस्तार से बताते हैं।

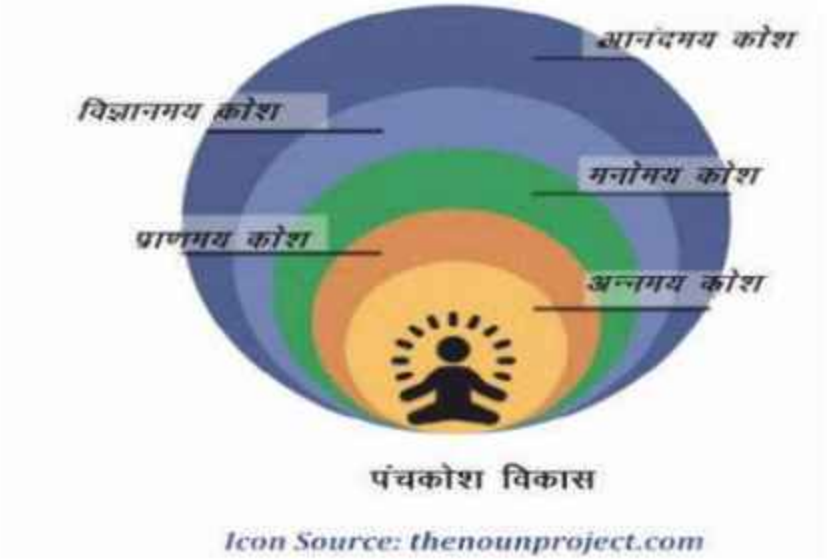

पंचकोश विकास

Icon Source: thenounproject.com

1.2.2 पथ प्रदर्शक और विचारक

भारतीय शैक्षणिक चिन्तन के क्षेत्र में भारत के कई प्रसिद्ध शिक्षाविदों ने योगदान दिया है।

क्रं.सं.	शिक्षाविद् का नाम	उल्लेखनीय विचार
क	सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले	प्राथमिक शिक्षा के विस्तार और सुदृढ़ीकरण, विशेषकर लड़कियों एवं अपवंचित समुदाय के लिए विद्यालयों की स्थापना एवं पाठ्यचर्या निर्माण पर बल।
ख	रवीन्द्रनाथ टैगोर	प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल, विभिन्न जीवन कौशलों, व्यक्तित्व के समग्र विकास एवं प्रकृति और जीवन से सीखने पर बल।
ग	स्वामी विवेकानन्द	शरीर, मन और आत्मा की समग्र तैयारी पर बल। इनके अनुसार शिक्षा मनुष्य में पहले से ही छिपी हुई सच्ची पूर्णता की अभिव्यक्ति है।
घ	महात्मा गांधी	मातृभाषा एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल, 6 वर्ष से कम आयु वर्ग के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम का निर्माण, 3H (Heart, Hand and Head) के लिए शिक्षा, स्थानीय अनुभव एवं स्थानीय संदर्भ व्यक्ति के द्वारा शिक्षक के रूप में कार्य करने पर बल।
ङ.	श्री अरविन्दो	मुक्त प्रगति के सिद्धान्त पर कार्य, इसमें स्व की गति से सीखना और मूल्यांकन, व्यावहारिक शिक्षा एवं पाठ्यपुस्तक विहीन शिक्षा पर बल।
च	जिद्दू कृष्णमूर्ति	व्यक्ति को समग्र रूप से शिक्षित करने पर बल।
छ	गिजुभाई बधेका	इनको बच्चों का गांधी और बाल शिक्षा का सूत्रधार कहा जाता है। इन्होंने जीवनोपयोगी शिक्षा पर बल दिया एवं मारिया मांटेसरी की शिक्षा पद्धति को ग्रामीण भारत के अनुरूप बनाकर प्रयोग किया।

1.2.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का क्रमिक विकास

परम्परागत रूप से प्रारम्भिक शिक्षा परिवार पर आधारित थी और बच्चों को नैतिक मूल्य एवं सामाजिक कौशल सिखाने पर केन्द्रित थी। यह शिक्षा अधिक औपचारिक और संस्थागत व्यवस्था के अन्तर्गत होने लगी है। आधुनिक भारत में महात्मा गाँधी तथा गिजुभाई ने बच्चे की शिक्षा का माध्यम आवश्यक रूप से मातृभाषा को माना है। उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि बच्चे की शिक्षा सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण में हो। उन्होंने समुदाय को भी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ने पर बल दिया। इसी क्रम में ताराबाई ने समुदाय आधारित प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के औपचारिक आयोजनों की पैरवी की। पूर्व प्राथमिक और बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गांधी के उभरते विचारों और मांटेसरी की भारत यात्रा के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के व्यवस्थित ढांचे की नींव पड़ी।

1.2.3.1 स्वतंत्र भारत में प्रारम्भिक शिक्षा –

1953 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा समिति ने प्राथमिक विद्यालय के परिसर के भीतर प्री स्कूल (Pre School) स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। केन्द्रीय समाज कल्याण की एक योजना के तहत् ग्रामीण क्षेत्रों में कई संगठनों ने बालवाड़ी केन्द्रों की स्थापना का समर्थन किया। 1963–64 में बाल्य देखभाल समिति ने प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा, भारतीय परिवेश एवं संस्कृति आधारित कई प्रावधानों की सिफारिश की। कोठारी आयोग (1964) ने देश में स्कूल पूर्व केन्द्रों की स्थापना करने की सिफारिश की। राष्ट्रीय नीति और राष्ट्रीय बाल विकास बोर्ड (National Children's Board) की स्थापना के साथ–साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर पूर्ण ध्यान केन्द्रित किया गया, ताकि बच्चे को प्रारम्भिक अवस्था से ही शिक्षा सुलभ करायी जा सके।

1.2.3.2 समेकित बाल विकास योजना–

राष्ट्रीय स्तर पर 1975 से 33 विकासखण्डों में प्रयोग के तौर पर समेकित बाल विकास परियोजना (Integrated Child Development Scheme - ICDS) शुरू की गई। तब से प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा सेवाओं के लिए यह सबसे बड़ा और व्यापक कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत आने वाली आंगनवाड़ियां देशभर के दूरस्थ इलाकों में 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों, माताओं एवं किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा एवं पोषण संबंधी सेवाएं प्रदान करती हैं। इसके अन्तर्गत 6 प्रकार की सेवाएं – पूरक पोषण, विद्यालयी पूर्व शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और संदर्भित सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार ECCE को प्राथमिक शिक्षा हेतु फीडर और कामकाजी महिलाओं के लिए एक सहायक के रूप में देखा गया है। NCERT (National Council of Educational Research and Training) और राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान (NIPCCD- National Institute of Public Cooperation and Child Development) जैसे सरकारी निकायों ने देशभर में प्रशिक्षण और समर्थन की ज़रूरतों को समझते हुए इन कार्यक्रमों की पंहुच और प्रभावशीलता को तय करने के लिए अनेक शोध परियोजनाएं शुरू कीं।

वर्ष 2006 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को 'महिला एवं बाल विकास मंत्रालय' (MWCD-Ministry of Women and Child Development) के अन्तर्गत लाया गया। वर्ष 2013 में MWCD ने 06 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास और सक्रिय सीखने की क्षमता के लिए समावेशी, न्यायसंगत और प्रासंगिक अवसरों को बढ़ावा देने हेतु नीति तैयार की।

2014 में महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। 2019 में एन.सी.ई.आर.टी. ने तीन साल की स्कूल पूर्व शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और दिशानिर्देश तैयार किए एवं वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से 2025 तक 03–08 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तायुक्त, विकासात्मक दृष्टि से परिपूर्ण बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की पहुँच की अनुशंसा की गई है।

वर्तमान समय में उत्तराखण्ड राज्य में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा आंगनवाड़ियों और निजी प्री स्कूलों में दी जा रही है। आंगनवाड़ियों ने ज़रूरी पोषण व स्वास्थ्य जागरूकता, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच, स्थानीय स्वास्थ्य प्रणालियों से जुड़ाव बनाने के लिए एवं शिक्षा का आधार बनाने हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया है।

1.2.3.3 प्रवेश, नामांकन एवं मानव संसाधन–

पिछले दो दशकों में पहुँच और नामांकन पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। हालांकि प्राथमिक विद्यालयों में पहुँच और नामांकन में अपेक्षित रूप से वृद्धि हुई है, लेकिन प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के तहत नामांकन अभी भी अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाया है। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर आंगनवाड़ी के लिए स्वीकृत पदों के सापेक्ष भरे हुये पदों की संख्या कम है, तथापि उत्तराखण्ड में यही स्थिति संतोषजनक है। यहाँ दूरस्थ क्षेत्रों में भी आंगनवाड़ियां स्थापित हैं और काम कर रही हैं। विद्यालय पूर्व शिक्षा हेतु शिक्षक शिक्षा से संबंधित संसाधनों की संख्या बहुत सीमित है। प्रत्येक आंगनवाड़ी केन्द्र में एक आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री एवं एक सहायिका नियुक्त है, जिनकी शैक्षणिक क्षमता सम्वर्द्धन हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIET- District Institute of Education and Training) के माध्यम से समय–समय पर प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं।

1.2.4 वर्तमान परिदृश्य– वर्तमान समय में उत्तराखण्ड सहित सम्पूर्ण देश में अधिगम सम्प्राप्ति को और बेहतर किये जाने की आवश्यकता है। जबकि बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित हैं, तब भी वे वांछित बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे आधारभूत कौशलों को अपेक्षित रूप से प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं।

विशेष रूप से सुविधा सम्पन्न और वंचित समूहों में अन्तर के कारण उत्पन्न हुई कमियाँ बच्चों में देखी जा रही हैं। इसका कारण यह है कि अधिक भौतिक एवं मानवीय संसाधन सम्पन्न विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवारों के बच्चों के पास रोल मॉडल, प्रिंट सामग्री और जागरूकता, विद्यालय आधारित अधिगम दक्षताओं में प्रवीणता और घर पर सशक्त सीखने के माहौल के साथ–साथ बेहतर पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, और प्री–स्कूल शिक्षा तक पर्याप्त पहुँच है जबकि सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से विपन्न परिवारों एवं ग्रामीण परिवेश के बच्चों को ऐसी सभी सुविधाएं सुलभ नहीं हो पा रही हैं। सभी बच्चों को सार्वभौमिक गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) प्रदान किये जाने हेतु प्रभावी व सकारात्मक कदम उठाये जाने चाहिए।

पोषण– स्वास्थ्य की दृष्टि से ECCE के अन्तर्गत उच्च गुणवत्तायुक्त पोषाहार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। विभिन्न शोध बताते हैं कि भारत में 5 वर्ष से कम आयु के 36 प्रतिशत बच्चों को समुचित पोषण न मिलने के कारण उनका समुचित विकास नहीं हो पाया है। 19 प्रतिशत बच्चे शारीरिक रूप से काफ़ी कमजोर हैं। 32 प्रतिशत बच्चे कम वजन के हैं। ये आंकड़े दीर्घकालिक अल्पपोषण के प्रतीक हैं। इस स्थिति का दैनिक जीवन और दीर्घावधि में बच्चों के समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है। अतः इस पर ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है।

सीखने के प्रतिफल– सीखने के स्तर को ध्यान में रखते हुए शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था से जुड़े शिक्षकों एवं अभिभावकों को यह जानना आवश्यक है कि बच्चे ने सटीक रूप से कक्षा में क्या सीखा ? इन्हीं मानदण्डों को ''सीखने के प्रतिफल'' के रूप में परिभाषित किया जाता है।

सामान्यतः ECCE केन्दों में शैक्षिक प्रतिफलों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है, जिस कारण सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि न्यून रही है। कई कारणों से आंगनवाड़ियों में शिक्षा के घटकों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है जैसे– महिला सशक्तीकरण एवं बालविकास विभाग की अन्य योजनाओं एवं विभागीय कार्यों में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों की भागीदारी, शिक्षा विभाग एवं ICDS विभाग के मध्य परस्पर समन्वय की कमी, उपलब्ध समय, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री की क्षमता, पढ़ने से पूर्व की गतिविधियां, लिखने से पूर्व की गतिविधियाँ एवं संख्या पूर्व अवधारणाओं संबंधी गतिविधियों का केन्द्रों पर न कराया जाना अथवा कम होना आदि हैं। उत्तराखण्ड में राजकीय व्यवस्था के अन्तर्गत पूर्व प्राथमिक शैक्षणिक व्यवस्था के अभाव ने भी 03–06 वयवर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित किया है, इसका ही परिणाम है कि राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (National Achievement Survey) 2021–कक्षा 3 में सीखने के स्तर और आगे की कक्षाओं में भी सीखने की कमी में लगातार गिरावट प्रदर्शित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 करोड़ों छोटे बच्चों विशेष रूप से सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए वर्ष 2030 से पहले गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु प्रतिबद्ध है। उत्तराखण्ड राज्य द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आलोक में 2030 से पहले 03–06 वयवर्ग के सभी बच्चों का पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नामांकन तथा उनको अपेक्षित शैक्षिक सम्प्राप्ति स्तर प्राप्त कराने हेतु सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए प्रशिक्षण एवं सभी केन्द्रों को प्राथमिक विद्यालयों के परिसर में स्थापित करने हेतु कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।

1.2.5 विश्वस्तरीय विचारक–

रूसो, फ्रोबेल, जॉन डीवी और मांटेसरी जैसे विचारकों का नाम पूरे विश्व में बाल्यावस्था की शिक्षा को लेकर किए गए कार्यों में अग्रणी है।

क्रं.सं.	शिक्षाविद् का नाम	उल्लेखनीय विचार
क	जॉन डीवी	शिक्षा के प्रारम्भिक केन्द्र बच्चे की प्रवृत्तियों, गतिविधियों और रूचियों के अनुरूप होने चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रतिदिन के अनुभव सीखने के बेहतर अवसर प्रदान करते हैं।
ख	पियाजे	बच्चे अपने अनुभवों को आत्मसात् करते हुए समझ के साथ अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं और अपने अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारियों को ग्रहण कर उपयोग करते हैं।
ग	वायगोत्सकी	बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय कक्षाकक्षों के छोटे समूहों में गतिविधियों और साथियों से समूहवार सीखने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
घ	जेरोम ब्रूनर	कक्षा में शिक्षण के विभिन्न तरीकों जैसे – ठोस मॉडल, चित्र आधारित और भाषा या प्रतीक आधारित विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
ड.	फ्रोबेल	बच्चों को स्वाभाविक विकास हेतु पूर्ण अवसर देकर उन के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना। उनका वातावरण एवं प्रकृति से एकीकरण और चरित्र निर्माण पर बल अवश्य दिया जाना चाहिए।

विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बच्चों के विकास को प्रभावित करती है। विकासात्मक मनोविज्ञान और बाल विकास के विशेषज्ञों ने इन बातों पर बल देते हुए कहा है कि खेल और खोज आधारित गतिविधियां बच्चों के अधिगम को सहज बनाती हैं। खोज और खेल, कला, लय, तुकबन्दी, शारीरिक क्रियाएं कक्षा में बच्चे की सक्रिय भागीदारी में सहयोग देती हैं।

खण्ड 1.3

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का व्यापक दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 स्थानीय एवं भारतीय ज्ञान परंपरा तथा मूल्यों पर आधारित उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षा व्यवस्था की बात करती है। यह भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने का कार्य करेगी। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारी पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र, छात्रों में मौलिक कर्त्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की गहरी भावना जगाने में सहायक हों साथ ही अपने राष्ट्र एवं अपनी संस्कृति के साथ जुड़ाव व बदलती दुनिया में अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य शिक्षार्थियों के बीच न केवल विचार बल्कि आत्मा, बुद्धि और कार्यों से भी भारतीय होने का गर्व महसूस करवाना है। साथ ही ऐसे ज्ञान, कौशलों, मूल्यों और स्वभाव को विकसित करना है जो मानवाधिकारों, कर्त्तव्यों, सतत् विकास, रहन–सहन और वैश्विक कल्याण के लिए ज़िम्मेदार बनाने की प्रतिबद्धता को सम्बल दें, ताकि वे एक सच्चे वैश्विक नागरिक बन सकें।

1.3.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के मार्गदर्शक सिद्धान्त

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है जिससे बच्चे में तार्किक सोच, अभिव्यक्ति कौशल एवं समस्या समाधान कौशल के साथ–साथ व्यावसायिक दक्षता भी विकसित हो। बच्चे में करुणा, सहानुभूति, साहस, लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, सकारात्मक सोच और रचनात्मक कल्पनाशक्ति का विकास हो, जो संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी एवं बहुलतावादी समाज के निर्माण में योगदान दे सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के मुख्य मार्गदर्शक सिद्धान्त निम्नवत् हैं–

क) अकादमिक और गैर–अकादमिक दोनों ही क्षेत्रों में प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों को भी इसके प्रति संवेदनशील बनाना ताकि वे प्रत्येक विद्यार्थी की अद्वितीय क्षमताओं का संज्ञान लें और उन्हें पृथक–पृथक रूप से पहचान पायें।

ख) सर्वोच्च प्राथमिकता इस बात की है कि कक्षा तीन तक सभी विद्यार्थी बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हासिल कर लें।

ग) लचीलापन–विद्यार्थियों के पास अपने कौशल के अनुरूप सीखने के तरीकों को चुनने की योग्यता के साथ लचीलापन भी हो, इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रूचि के अनुसार जीवन में अपना रास्ता स्वयं चुनकर अपने भविष्य का निर्माण कर सकें।

घ) कला, विज्ञान, व्यावसायिक धाराओं (Streams) की पाठ्यचर्या एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों के बीच कड़ा विभाजन नहीं होना चाहिए।

ङ) बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल आदि विषयों के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए सभी में शिक्षण प्रणाली का बहुआयामी दृष्टिकोण होना चाहिए।

च) अवधारणात्मक समझ पर जोर हो, न कि रटने और परीक्षा के लिए सीखने पर।

छ) तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को सुनिश्चित करने के लिए अवधारणात्मक समझ, समस्या समाधान, सृजनात्मकता और समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) भी समाहित होना चाहिए।

ज) आचरण (Ethics) और मानवीय एवं संवैधानिक मूल्य जैसे समानुभूति, दूसरों का सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वतंत्रता, ज़िम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय पर आधारित दृष्टिकोण होना चाहिए।

झ) शिक्षण और सीखने में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना।

ञ) जीवन कौशल जैसे सम्प्रेषण, सहयोग, समूह में काम और लचीलापन (Resilience) का भी विकास होना चाहिए।

ट) सीखने के लिए नियमित रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) को बढ़ावा देना न कि योगात्मक आकलन (Summative Assessment) को जो कि आज की कोचिंग संस्कृति को बढ़ावा देता है।

ठ) शिक्षण और अधिगम में तकनीकी का अधिकाधिक उपयोग, भाषागत अवरोधों को हटाना, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों तक पहुंच बढ़ाना और शैक्षणिक योजना व प्रबन्धन करना।

ड) विविधता का सम्मान और सभी पाठ्यचर्याओं, शिक्षणशास्त्र एवं नीतियों में स्थानीय संदर्भों का समावेश करना।

ढ) विद्यार्थियों की सफल कामना के लिए सभी शैक्षणिक निर्णयों की आधारशिला पूर्ण समता और समावेशन पर आधारित हो।

ण) बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा, तथा स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या में तालमेल।

त) सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक और संकाय सदस्यों (Faculty) की भर्ती एवं सेवा शर्तें, निरन्तर अकादमिक संवर्द्धन और सकारात्मक कार्य वातावरण का निर्माण।

थ) सम्परीक्षा (Audit) और सार्वजनिक रूप से प्रचार–प्रसार के माध्यम से शैक्षणिक उपक्रमों की कार्यकुशलता, ईमानदारी (Integrity), पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए 'सरल एवं सटीक नियामक रूपरेखा', साथ ही साथ स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और लीक से हटकर (Out of the box) विचारों को प्रोत्साहित करना।

द) बच्चों के उत्कृष्ट शैक्षणिक विकास हेतु शिक्षण के साथ–साथ निरन्तर उत्कृष्ट बाल शोधों पर कार्य किया जाना।

ध) नियमित आकलन और सतत् अनुसंधान के आधार पर शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा प्रगति की सतत समीक्षा करना।

न) भारत की बुनियादी, गौरवशाली, समृद्ध, विविध, प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणाली एवं परम्पराओं का समावेशन।

प) शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मूल अधिकार माना जाना चाहिए।

1.3.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के क्रांतिकारी बदलाव जो बुनियादी अवस्था हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF-FS) के मार्गदर्शक हैं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में स्कूली शिक्षा के तीन प्रतिस्थापित आदर्श, जो राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के भी मार्गदर्शक हैं–

क) बहुआयामी, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर बढ़ना।

ख) रटन्त प्रवृत्ति के स्थान पर समस्या समाधान, तार्किक, रचनात्मक चिंतन, समालोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन एवं सीखने पर बल देना। विद्यार्थी के विकास की अलग–अलग अवस्थाओं एवं आयु के अनुरूप उनकी रूचि एवं विकास की ज़रूरतों पर समुचित ध्यान दिया जाना।

ग) विद्यालयी शिक्षा का नवीन पाठ्यक्रम एवं शैक्षणिक ढांचा 5+3+3+4 के रूप में पुनर्गठित किया जाना।

1) **Foundational Stage** (बुनियादी स्तर) : लचीलापन, बहुस्तरीय खेल आधारित अधिगम।

2) **Preparatory Stage** (प्राथमिक स्तर) : पढ़ने, लिखने, सुनने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा शिक्षण हेतु औपचारिक कक्षा के साथ–साथ खोज और गतिविधि आधारित अधिगम।

3) **Middle Stage** (उच्च प्राथमिक स्तर) : प्रिप्रेटरी स्टेज के शिक्षण शात्र और पाठ्यचर्या की शैली के साथ ही विभिन्न विषयों की अमूर्त अवधारणाओं को सीखने हेतु अधिगम शैली।

4) **Secondary Stage** (माध्यमिक स्तर) : चार साल तक तार्किक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन पर आधारित बहुआयामी अध्ययन, विद्यार्थियों के लिए जीवन की आकांक्षाओं पर ध्यान और विषय चयन के विकल्प में लचीलापन।

1.3.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्य–

क) गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधानों को यथाशीघ्र प्राप्त करना। (एन.ई.पी. 2020, अनुच्छेद 1.1)

ख) सभी बच्चों द्वारा दिए गए क्षेत्रों में श्रेष्ठतम प्रतिफलों को प्राप्त करना:–

i शारीरिक और गत्यात्मक विकास

ii संज्ञानात्मक विकास

iii सामाजिक–भावनात्मक–नैतिक विकास

iv सांस्कृतिक–कलात्मक विकास

v आपसी संवाद और प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्या ज्ञान। (एन.ई.पी. 2020, पैरा 1.2)

ग) लचीली, बहुआयामी, बहु–स्तरीय, खेल–आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा जिसमें भाषाएँ, संख्याएँ, गिनती, रंग, आकार, इनडोर और आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या–समाधान, चित्रकला, पेंटिंग और अन्य दृश्य कलाएँ, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत और शारीरिक संचालन के साथ सामाजिक क्षमताओं, संवेदनशीलता, अच्छा व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य और सहयोग विकसित करने पर ध्यान केंद्रित हो। (एन.ई.पी.–2020, पैरा 1.2)

1.3.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सन्दर्भ में बुनियादी स्तर के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत–

क) प्रत्येक बच्चा अपनी गति से बढ़ता है, सीखता है और विकसित होता है।

ख) बच्चे खोजी प्रवृत्ति और असाधारण अवलोकन क्षमता वाले होते हैं। वे अपने अनुभवों से सीखते हैं और अपनी भावनाओं एवं विचारों को अलग–अलग तरीकों से अभिव्यक्त करते हैं।

i. बच्चे नैसर्गिक खोजी होते हैं। उनके पास अवलोकन का जबरदस्त कौशल होता है।

ii. बच्चे अवलोकन, अनुकरण और सहयोग के माध्यम से सीखते हैं।

iii. बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उनका सम्मान किया जाता है, उन्हें महत्व दिया जाता है और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल किया जाता है।

iv. खेल और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को परिवेश का अनुभव करने, उसकी खोज करने और उसके साथ प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए।

v. बच्चों को ऐसी सामग्री, गतिविधि और वातावरण से अवश्य जुड़ना चाहिए जो विकासात्मक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त, समस्या समाधान और अवधारणात्मक समझ विकसित करने में सहायक हो।

vi. विषयवस्तु की नवीनता और इसकी चुनौतियाँ बच्चों के परिचित अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए।

vii. विषयवस्तु बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं एवं स्तर के अनुरूप होनी चाहिए जिससे उन्हें कल्पना करने, कहानी सुनाने, कला, संगीत और खेलों के अवसर प्रदान किए जा सके।

viii. विषयवस्तु में लिंग, जाति, वर्ग और दिव्यांगता जैसे मुद्दों में समानता पर ज़ोर दिया जाना चाहिए।

ix. शिक्षक बच्चों के सीखने में सुगमकर्ता की भूमिका में रहें।

x. परिवार और समुदाय दोनों ही सीखने की प्रक्रिया में पूर्णतः भागीदार हों।

xi. सीखने की प्रक्रिया में देखभाल प्रमुख है। शिक्षक बच्चों की ज़रूरतों और मनोदशा के प्रति संवेदनशील और ज़िम्मेदार हों। कक्षा–कक्ष की गतिविधियों में सीखने के भावनात्मक पहलू पर ज़ोर देना चाहिए।

बुनियादी अवस्था एक एकल पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय चरण है जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पांच साल का लचीला, बहुस्तरीय, खेल और गतिविधि–आधारित शिक्षण शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इन शुरुआती वर्षों को विकास और सीखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानती है। इन वर्षों में शिक्षा में बुनियादी क्षमताओं और कौशलों के विकास पर ध्यान देना चाहिए। इनमें संज्ञानात्मक, भाषाई और सामाजिक–भावनात्मक कौशल शामिल हैं, जिनके विकास के लिए प्रारंभिक वर्ष सबसे संवेदनशील अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे बच्चों के अकादमिक पढ़ने–लिखने और संख्यात्मकता सीखने के लिए आधार तैयार करते हैं।

1.3.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की प्राथमिकताओं पर आधारित प्रमुख नई पहलें–

क) NIPUN भारत मिशन (NIPUN- National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy Bharat Programme)

NIPUN भारत मिशन राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा निर्देशित है। यह मिशन 2021 में शुरू किया गया। यह देश में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय मिशन है। निपुण भारत का लक्ष्य 2026–27 तक कक्षा 3 में पढ़ने वाले सभी बच्चों द्वारा मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) को प्राप्त करना है।

ख) विद्या प्रवेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ज़ोर देती हैं। विद्या प्रवेश का आधार FLN ही है। अधिकांश बच्चे कक्षा–1 के पहले कुछ हफ्तों में ही पिछड़ जाते हैं। सीखने में आयी इस कमी को दूर करने के लिए तीन महीने का खेल–आधारित स्कूल हेतु तैयार मॉड्यूल (विद्या प्रवेश) को एक अंतरिम उपाय के रूप में प्रस्तावित किया गया है। विद्या प्रवेश को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले छात्रों के लिए विकसित किया गया है। विद्या प्रवेश को गणित और भाषा की बुनियाद निर्मित करने के लिए विकसित किया गया है और इसमें निपुण भारत में निर्धारित सीखने के प्रतिफलों का भी ध्यान रखा गया है।

तद्क्रम में उत्तराखण्ड राज्य में कक्षा–1 में प्रवेश करने वाले छात्रों के लिए एस0सी0ई0आर.टी0 उत्तराखण्ड द्वारा 3 माह का स्कूल रेडीनेस मॉड्यूल (आरोही) निर्मित किया गया, जिसे अप्रैल 2022 से राज्य के समस्त प्राथमिक विद्यालयों में लागू किया गया है। इसमें बच्चों को विद्यालय से परिचित करने और स्वयं का ध्यान रखने से संबंधित अनुभव प्रदान करने के अवसर दिए गए हैं। आरोही मॉड्यूल के अन्तर्गत भाषा और गणित की प्रारम्भिक दक्षताओं से बच्चों को परिचित कराया गया है। राज्य में कोविड काल के दौरान बच्चों में भाषा व गणितीय अधिगम क्षति (Learning loss) की पूर्ति हेतु अग्रेत्तर कक्षाओं के लिए मिशन कोशिश–2 (विद्या सेतु) पाठ्यकम तैयार किया गया है।

ग) बालवाटिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 01 के पैरा 1.6 में कहा गया है कि 6 वर्ष की आयु से कम का प्रत्येक बच्चा एक "तैयारी कक्षा" या "बालवाटिका" प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण (जो कि कक्षा 1 से पहले है) में जाएगा, जिसमें एक योग्य ECCE शिक्षक होगा।

बालवाटिका कार्यक्रम कक्षा–1 से पहले के लिए पूर्व प्रारम्भिक स्तर हेतु परिकल्पित किया गया है। इसका उद्देश्य खेल आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में संज्ञानात्मक, भाषाई एवं गणितीय दक्षताओं का विकास करना है। ये दक्षताएं पढ़ना, लिखना, सीखने और संख्या समझ के लिए आवश्यक शर्तें हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की अनुशंसाओं के अनुपालन में उत्तराखण्ड राज्य राष्ट्रीय स्तर पर बालवाटिका कक्षा शुरू करने वाला प्रथम राज्य है। जि0शि0प्र0सं0 देहरादून द्वारा एस0सी0ई0आर.टी0 उत्तराखण्ड के मार्गदर्शन में बालवाटिका कक्षा के लिए बालवाटिका शिक्षक संदर्शिका एवं बच्चों हेतु बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लिए निर्धारित लक्ष्यों के आधार पर तीन गतिविधि पुस्तिकाओं (भाग 1–स्वास्थ्य, भाग 2–संवाद एवं भाग 3–सृजन) का निर्माण किया है। प्रथम चरण में राज्य के 4457 को–लोकेटेड आंगनवाड़ी केन्द्रों में 12 जुलाई 2022 से बालवाटिका कक्षा का संचालन प्रारम्भ किया गया है। शेष आंगनवाड़ी केन्द्रों में भी चरणवार बालवाटिका कक्षाएं संचालित की जाएंगी। इसमें पढ़ने व लिखने की पूर्व तैयारी और संख्याओं से परिचय सम्बन्धी गतिविधियों एवं खेलों को समाहित किया गया है।

निष्कर्ष के तौर पर इस राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा–बुनियादी स्तर का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के लक्ष्यों के अनुरूप बुनियादी अवस्था के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करना है। इस पाठ्यचर्या के निर्माण में प्रारम्भिक बाल्यावस्था

देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में हुए विश्वव्यापी व्यापक शोध, भारत की समृद्ध प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा परंपराओं और हाल ही में किये गये प्रयासों तथा विद्या प्रवेश, निपुण भारत मिशन आदि को भी ध्यान में रखा गया है। जिससे बच्चे शुरूआती स्तर से ही सीखने की दक्षताओं से परिचित रहें।

खण्ड 1.4

बुनियादी स्तर में बच्चे किस प्रकार सीखते हैं

1. बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं। वे नयी चीजों को रुचि के साथ सीखने के लिए सदा सक्रिय और उत्सुक रहते हैं। उनमें जिज्ञासा की जन्मजात भावना होती है। वे आश्चर्यचकित होते हैं, प्रश्न करते हैं, अन्वेषण करते हैं, कोशिश करते हैं और दुनिया को समझने के लिए खोज करते हैं।
2. बच्चे खेल आधारित गतिविधि के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। उन्हें दौड़ना, कूदना, रेंगना और संतुलन स्थापित करना अच्छा लगता है। वे लयबद्ध दोहराव में आनंदित होते हैं। वे बात करते हैं, पूछते हैं, तर्क करते हैं और प्रश्नों के उत्तर देते हैं।
3. वस्तुओं, विचारों और भावनाओं के साथ यह चंचलता बच्चों की रचनात्मकता, लचीली सोच और समस्या को सुलझाने की क्षमताओं को विकसित करने में मदद ही नहीं करती बल्कि उनकी एकाग्रता, ध्यान और दृढ़ता को भी बढ़ाती है। बच्चे खेल के माध्यम से अपनी सोच, शब्दावली, कल्पना, बोलने और सुनने के कौशल में सुधार करते हैं, चाहे वे वास्तविक स्थितियों का सामना कर रहे हों या काल्पनिक दुनिया में खोए हों।
4. इस स्तर पर सीखना एक सक्रिय और संवादात्मक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे अन्य अधिक अनुभवी बच्चों के साथ खेल–खेल में और बातचीत के माध्यम से सीखते हैं । बच्चे सक्रिय रूप से अपनी पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से अनुभव प्राप्त करते रहते हैं तथा अपनी धारणाओं और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी का उपयोग करते रहते हैं।

   यह महत्वपूर्ण है कि इस स्तर पर बच्चों की शिक्षा उनके परिवेश के लोगों के साथ संबंधों को पोषित करने पर आधारित हो। ये रिश्ते बच्चों को सुरक्षित महसूस करने, अधिक आशावादी, जिज्ञासु और संचारी बनने में मदद करते हैं।

1.4.1 खेलों का महत्व और उनके द्वारा सीखना

खेलना बच्चों के लिए आनन्ददायक कार्य होता है। बच्चे स्वाभाविक रूप से खेलों में अधिक रूचि लेते हैं। ये बच्चों को सक्रिय और स्वस्थ (शारीरिक एवं मानसिक) रखने के साथ ही उन्हें तार्किक रूप से सोचने, समझने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाते हैं। खेल बच्चों के सामाजिक और संवेगात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब हम खेल में व्यस्त बच्चों का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि बच्चे अपने खेलों से संबंधित विकल्प स्वयं चुनते हैं, तथा आश्चर्यचकित और आनंदित होते हैं।

- खेलते समय बच्चे अत्यंत सक्रिय होते हैं, वे दुनिया को समझने की कोशिश में चीजों को अपनी समझ से व्यवस्थित करते हुए सहभागिता के साथ बातचीत करते हैं, वे अन्वेषण या खोजबीन करते हैं, योजना बनाने के साथ–साथ सोच समझ कर चीजों का विभिन्न तरीकों से प्रयोग करते हैं।
- बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS) खेल के महत्व पर ज़ोर देती है। पूर्व बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के संदर्भ में 'खेल' शब्द में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं, जो बच्चे के लिए आकर्षक, मनोरंजक और उसे व्यस्त रखने वाली हैं। यह शारीरिक खेल, अंतःक्रिया, बातचीत, प्रश्नोत्तर सत्र, कहानी सुनाना, ज़ोर से पढ़ना और साझा पठन, पहेलियाँ, तुकबंदी या खेल–खिलौने, दृश्य कला और संगीत से जुड़ी अन्य मनोरंजक गतिविधियों के रूप में हो सकती हैं। खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक सीखने के अवसर प्रदान करता है और इसका आयोजन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है।
- बुनियादी स्तर, जिसमें कक्षा–1 और 2 सम्मिलित हैं, में बच्चों को सभी तरह के खेल खेलने के समान अवसर मिलने चाहिए।

1.4.2 खेल के माध्यम से सीखना :

बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा खेलों के महत्व को प्रधानता देती हैं। इस स्तर हेतु सभी प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण के केन्द्र में खेल मुख्य है, जो बच्चों को क्रियाशील रखता है और प्रेरणादायक सीखने के अवसर प्रदान करता है।

कुछ प्रमुख खेलों के प्रकार निम्नवत् हो सकते हैं–

क) मुक्त या स्वतंत्र खेल (Free Play)

ख) मार्गदर्शित खेल (Guided Play)

ख) संरचित / निर्देशित खेल (Structured Play)

	मुक्त खेल (free Play)	**मार्गदर्शित खेल** (Guided Play)	**संरचित खेल** (Structured Play)
भूमिका	बच्चा नेतृत्वकर्ता, बच्चे द्वारा निर्देशित।	बच्चा नेतृत्वकर्ता, शिक्षक मददगार की भूमिका में।	शिक्षक द्वारा निर्देशित, बच्चों की सक्रिय भागीदारी।
बच्चे क्या करते हैं?	बच्चे खेल के सभी पहलुओं को लेकर निर्णय लेते हैं–क्या खेलना है ? कैसे खेलना है ? कितनी देर तक खेलना है, और किसके साथ खेलना है?	बच्चे योजना बनाते हैं और स्वयं खेल खेलते हैं, जैसे वे मुक्त खेल में करते हैं।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं, नियमों का अनुसरण करते हैं और शिक्षक द्वारा सोची गई गतिविधियों और खेलों में भागीदार बनाते हैं।
शिक्षक क्या करते हैं?	शिक्षक कक्षा में मजेदार खेल का वातावरण बनाते हैं, बच्चों का अवलोकन करते हैं और जब बच्चे मदद के लिए कहते हैं तो उनकी सहायता करते हैं।	शिक्षक सक्रिय रूप से खेल को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं, उनको मार्गदर्शन देते हैं, प्रश्न पूछते हैं और बच्चों के साथ खेलते हैं ताकि वे सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त कर सकें।	शिक्षक सीखने के क्रम में आने वाली दक्षताओं को बढ़ाने के लिए विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सोच समझकर गतिविधियों और खेलों की योजना बनाते हैं। भाषा और गणित के खेल, प्रकृति की सैर, गीत, कविताएं आदि सभी का निर्माण करते हैं।
उदाहरण	पहेलियाँ, साथियों के साथ रोल प्ले, स्वतंत्र चित्रकारी एवं लेखन, खिलौनों से खेलना	मिट्टी के कार्य, रंगों से छापना, ट्रेसिंग और तुकबंदी वाले खेल।	पिक्चर कार्ड्स को क्रम से लगाना, गणितीय खेल, शब्दों से कहानी बनाना, अधूरी कहानी / कविता पूरी करना

विभिन्न प्रकार के खेलों के उदाहरण जो उत्तराखण्ड सहित सभी जगह प्रचलित हैं।

क्रम सं.	खेल का प्रकार	उदाहरण
1	नाटकीय एवं काल्पनिक खेल	• पपेट शो (जानवर एवं आदमियों के मुखौटे) • फिंगर पपेट • रोल प्ले (सामुदायिक सहभागिता पर नाटक) • सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित्र पर नाटक (गौरा देवी, तीलू रौतेली, श्रीदेव सुमन, बछेन्द्री पाल, माधोसिंह भण्डारी-मलेथा गूल, रामी-बौराणी आदि)
2	खोजपूर्ण खेल	• पजल (गणितीय एवं भाषाई, जानवर, सब्जियों, फलों, राष्ट्र एवं राज्य के प्रतीक) • पहेलियां (क्षेत्र विशेष से सम्बंधित) • मिश्रित दालों को अलग–अलग छांटना एवं पहचानना लुका–छुपी। • शब्द निर्माण का खेल– स्क्रैबल(Scrabble)
3	परिवेशीय खेल	• मिट्टी से विभिन्न आकृतियां बनाना। • सैंड पिट सम्बंधी खेल। • छोटे–छोटे पत्थरों को रंगना। • विभिन्न आकार की पत्तियों का संग्रहण। • बच्चों को रसोई, शयनकक्ष, स्नानागार , कक्षाकक्ष एवं परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की जानकारी देना। • स्थानीय भ्रमण (पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, कीड़े–मकौड़ों के आकार, रंग, आवाज की जानकारी देना)
4	शारीरिक खेल	• बाह्य खेल (दौड़ना, कूदना, नृत्य, व्यायाम, चूहा दौड़– बिल्ली आई, जलेबी दौड़, बोरा दौड, नीबू चम्मच दौड़, धप्पा आदि) • आन्तरिक खेल (स्थानीय खेल जैसे तोता उड़, अक्कड़– बक्कड़, पोषम–पा आदि)
5	नियमों पर आधारित खेल	• सांप–सीढ़ी • लूडो • दौड़ • पिट्ठू (पंचपथरी) • लंगड़ी टांग • क्रिकेट • फुटबॉल • गुल्ली डंडा • बट्टी (गट्टे, टिग्गू)
6	तकनीकी आधारित खेल–आवाज़ पहचानने के खेल	• पशुओं, पक्षियों, प्रकृति की आवाज़ें, बारिश, बिजली आदि

नोट– उपरोक्त समस्त खेलों के माध्यम से 21वीं सदी के कौशलों जैसे तार्किक चिंतन, समस्या समाधान, सृजनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, सम्प्रेषण, सहयोग, लचीलापन, पहल करना, सामाजिकता आदि का विकास भी होगा।

उत्तराखण्ड में खेले जाने वाले कुछ स्थानीय खेल निम्नवत् हैं स्थानीय भाषा में जिन्हें – बट्टी खेलना (गारे) बाघ–बकरी, इक्की दुक्की, गुत्थी (कंचों का खेल), गुच्छी खिलण (रीठा, पैसे सिक्के से) टीलमटील, इकटंगड़ा, पटेला (लकड़ी की गाड़ी), छौंपा दौड़, सरौंखेल, कूड़ी–भांडी (Kitchen set) पिट्ठू फोड़, झुला खिलण फोबती (पीछे देखे मार खाई), राजा–बजीर–चोर–सिपाही, फिफरी (सीटी बजाना) के नाम से जाना जाता है।

उपरोक्त सभी खेल स्थानीय संसाधनों एवं परिवेश में मिलने वाली वस्तुओं जैसे लकड़ी, पत्थर, बीज, पत्ते, इत्यादि से खेले जाते हैं। इन सभी खेलों के साथ स्थानीय लोकोक्तियों, मुहावरों, कहावतों (औखाण) का भी समावेश होता है।

1.4.3 बच्चे खेल में आनंदित रहें –

बच्चों के लिए इस तरह के खेल आयोजित किये जा सकते हैं जिसमें उन्हें आनन्द की अनुभूति हो और वे कुछ सृजनात्मक सीख सकें, जिसके अन्तर्गत बच्चों को सक्रिय रखने हेतु निम्नांकित गतिविधियाँ / खेल कराए जा सकते हैं–

1. **चित्रकला**–रंग भरना, ट्रेसिंग करना, ठप्पे लगाना, चित्र बनाना, हाथ के छापे लगाना इत्यादि।
2. **क्राफ्ट**– कागज की गेद, पेपर फोल्डिंग, कोलाज बनाना ,कागज की नाव, जहाज बनाना इत्यादि।
3. **संगीत**–गीत, भावगीत, वाद्य यंत्रों का प्रयोग एव नृत्य करना।
4. **बातचीत, कविता, कहानी एवं गतिविधि के माध्यम से सीखना**– बच्चों के साथ बातचीत कर उनको अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना तथा स्थानीय कविता एवं लोक कहानियों के माध्यम से अपनी संस्कृति एवं परिवेश से परिचित कराना।
5. **खेल.खिलौनों के माध्यम से सीखना**–स्थानीय खेलों का प्रयोग, स्थानीय परिवेश की वस्तुओं से सीखने– सिखाने की सामग्री का निर्माण करना।
6. **स्थानीय परिवेश का भ्रमण**– इसके अन्तर्गत क्षेत्र विशेष के मेले, मंडी, मंदिर, पार्क, चिड़ियाघर, रेलवे स्टेशन, बाग बगीचा, खेत–खलिहान, मंदिर, नौले, धारे, पनघट आदि सामूहिक स्थलों का भ्रमण किया जा सकता है।

खण्ड 1.5

बुनियादी स्तर के लिए विद्यालयी शिक्षा का संदर्भ

बुनियादी अवस्था (3 से 8 वर्ष) में शिक्षा का आधार देखभाल के साथ खेल आधारित शिक्षण होना चाहिए। बच्चों के सीखने और शिक्षा में परिवार, साथी, समुदाय, पर्यावरण, शिक्षक एवं शिक्षण व्यवस्था सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1.5.1 परिवार और समुदाय की महत्ता

बच्चे के विकास एवं सीखने में विद्यालय, परिवार और समुदाय महत्वपूर्ण भागीदार होते हैं। परिवार बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बड़े परिवार में बच्चे का पालन–पोषण एकल परिवार की अपेक्षा सुगम और प्रभावी होता है। प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे का परिवार के साथ सम्बन्ध और अंतःक्रिया बच्चे के भावी जीवन को दिशा प्रदान करने के साथ–साथ उसके सीखने और विकास की प्रकिया को गहराई से प्रभावित करता है।

1.5.2 स्थानीय और भारतीय संदर्भ की महत्ता

प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों के सीखने के अनुभवों में स्थानीय संदर्भों का विशेष महत्व है। इस अवस्था में पाठ्यचर्या भारतीय एवं स्थानीय संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बननी चाहिए। इसमें शामिल विषयवस्तु एवं शिक्षण शास्त्र में बच्चों के जीवन से परिचित सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों का समावेश हो, जो उनकी घर की भाषा या मातृभाषा द्वारा समझायी जा सके। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों के साथ–साथ उनके परिवारों और समुदाय के विविध अनुभवों को कक्षा में स्थान मिले। स्थानीय कहानियां, गीत, भोजन, कपड़े, कला, संगीत और नृत्य सीखने के अनुभवों के अभिन्न अंग होने चाहिए। जब सीखने के मूल में यह होगा तो विचार, अमूर्तता और रचनात्मकता सही रूप में विकसित होगी। बच्चों को अपने घर की भाषा में अभिव्यक्ति करने, अन्तःक्रिया करने एवं उसके जरिए सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। बच्चों को स्थानीय और भारतीय संदर्भ की कविताओं, कहानियों, तुकबंदी, खेल, गीत, नाटक आदि के द्वारा अभिव्यक्ति का पर्याप्त समय और अवसर दिए जाने चाहिए। यह बच्चों में भाषाई, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित करने के लिए ज़रूरी है।

1.5.3 संस्थागत विविधता – सतही वास्तविकता

विद्यालयी संस्थागत व्यवस्था माता–पिता, परिवार और समुदाय के साथ समन्वय स्थापित करते हुए बच्चे के समग्र विकास के लिए व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन करती है। इसके अन्तर्गत बच्चों को व्यावहारिक तथा गतिविधि एवं खोज आधारित सीखने के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं जो आजीवन सीखने के लिए आधार प्रदान करते हैं। वर्तमान में प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे अलग–अलग प्रकार की संस्थागत व्यवस्था में सीखते हैं–

- 03 से 06 वर्ष के बच्चे आंगनवाड़ी, प्री स्कूल या ऐसे प्री स्कूल में हो सकते हैं जिनमें कक्षा–1 से आगे की कक्षायें भी संचालित होती हों।
- 06 से 08 वर्ष के बच्चे (कक्षा–1 और 2) ऐसे विद्यालय में हो सकते हैं, जिनमें केवल कक्षा–1 से आगे की कक्षायें हों या ऐसे विद्यालय जिनमें प्री स्कूल से आगे की कक्षाएं हों।

वर्तमान समय में इन संस्थागत व्यवस्थाओं की आधारभूत संरचना, सीखने के संसाधन, शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया, योग्यताएं, उत्तरदायित्व भिन्न–भिन्न हैं।

प्रारम्भिक अवस्था की पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र का निर्माण सभी बुनियादी 05 वर्षों (03–08 वर्ष) के लिए निरन्तरता में किया जाना चाहिए एवं इसमें विभिन्न संस्थागत संरचनाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इस प्रकार प्रस्तुत बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी अवस्था से संबंधित सभी संस्थागत व्यवस्थाओं में क्रियान्वित किया जाएगा।

अध्याय-2

लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएं और सीखने के प्रतिफल

यह अध्याय राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बुनियादी स्तर के लिए सीखने के मानकों पर चर्चा और उनका वर्णन करता है। अधिगम के ये मानक राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा निर्धारित किये गये शिक्षा के लक्ष्यों में वर्णित हैं।

- इसके भाग 2.1 में लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को परिभाषित किया गया है।
- खण्ड 2.2 लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक पहुंचने की प्रक्रियाओं और इनमें विभिन्न हितधारकों की भूमिका का वर्णन करता है।
- खण्ड 2.3 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।
- खण्ड 2.4 सभी पाठ्यचर्या के उद्देश्यों हेतु दक्षताओं की रूपरेखा को तैयार करता है।
- खण्ड 2.5 में बुनियादी स्तर के कुछ दस्तावेज़ों के सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण भी दिए गए हैं।

उक्त संदर्भों को निम्न चित्र के अनुसार समझा जा सकता है।

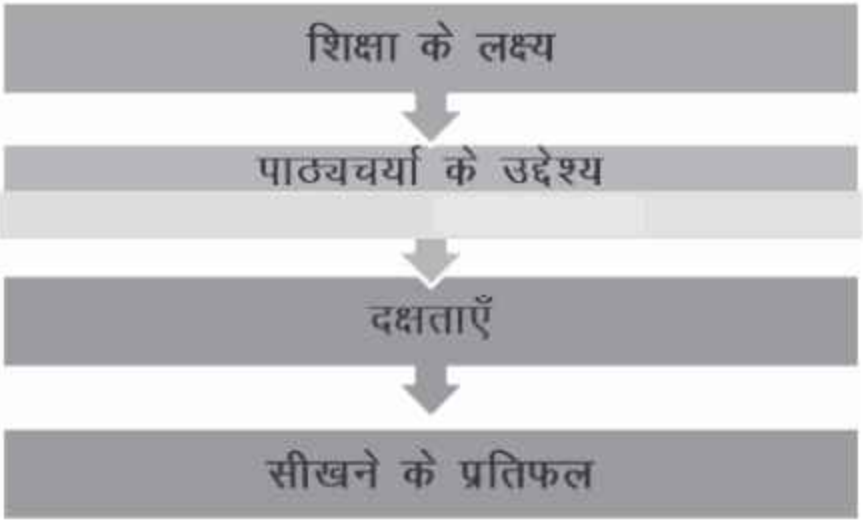

खण्ड 2.1

प्रमुख शब्दावलियाँ

राज्य पाठ्यचर्या का यह भाग इस पाठ्यचर्या में प्रयुक्त कुछ शब्दावलियों को परिभाषित करता है।

(क) शिक्षा के लक्ष्य–

शिक्षा के लक्ष्य, शैक्षिक दृष्टिकोण का विवरण हैं, जो शैक्षिक प्रणालियों के सभी सुविचारित प्रयासों को व्यापक दिशा प्रदान करते हैं। ये शिक्षण प्रणाली यथा पाठ्यचर्या विकास, संस्थागत व्यवस्था, वित्त पोषण एवं लोगों की क्षमता आदि के लिए किये जा रहे प्रयासों को व्यापक दिशा प्रदान करते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्ति का निर्माण करना है जो विवेकशील, तर्कसंगत विचार और कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करूणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्य हों। इसका लक्ष्य, हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए सदैव तत्पर और योगदान करने वाले नागरिकों का निर्माण करना है।

(ख) पाठ्यचर्या के उद्देश्य–

पाठ्यचर्या के उद्देश्य वे कथन होते हैं, जो पाठ्यचर्या विकास एवं क्रियान्वयन को दिशा प्रदान करते हैं तथा ये शिक्षा के लक्ष्यों से प्राप्त किए जा सकते हैं और शिक्षा के किसी एक चरण के लिए विशिष्ट होते हैं, (उदाहरण के लिए बुनियादी स्तर) जो सभी प्रकार की पाठ्यचर्या विकास को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं जैसे बुनियादी स्तर पर ''बच्चे दो भाषाओं में दिन प्रतिदिन की बातचीत के लिए प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं''।

(ग) दक्षताएँ–

दक्षताएँ सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जिनका अवलोकन किया जा सकता है और जिनका व्यवस्थित रूप से आकलन किया जा सकता है। दक्षताएँ, पाठ्यचर्या के उद्देश्य के अनुरूप होनी चाहिएं और इन्हें एक चरण के अन्त तक प्राप्त किए जाने की अपेक्षा रहती है। पाठ्यचर्या विकसित करने वाले उन विशिष्ट सन्दर्भों को सम्बोधित करने के लिए दक्षताओं को पाठ्यचर्या के अनुरूप विकसित और संशोधित किया जा सकता है।

(घ) सीखने के प्रतिफल–

दक्षताएँ एक निश्चित अवधि में प्राप्त की जाती हैं। ये ज्ञान, कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों के सार प्रस्तुत करने वाले कथन हैं, जो सभी बच्चों के पास अवश्य होने चाहिए और सीखने के अनुभवों के अनुक्रम के पूरा होने पर उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए। सीखने के प्रतिफल सीखने–सिखाने के लिए छोटे मील के पत्थर हैं जिनके माध्यम से क्रमवार प्रगति करते हुए दक्षता प्राप्त की जा सकती है। पाठ्यचर्या विकसित करने वालों और शिक्षकों को दक्षताओं के साथ तारतम्य और अनुक्रम बनाए रखते हुए, सीखने के प्रतिफल को उनके कक्षा संदर्भों के लिए उपयुक्त रूप में परिभाषित करने की स्वायत्तता होनी चाहिए जो शिक्षकों को बच्चों में दक्षताएँ प्राप्त कराने के लिए विषयवस्तु, शिक्षण प्रक्रिया और आकलन की योजना बनाने में सशक्त बनाएगा।

	A – (3-4 वर्ष)	B – (4-5 वर्ष)	C – (5-6 वर्ष)	D– (6-7 वर्ष)	E– (7-8 वर्ष)
1.	ध्यान से सुनते हैं और परिवेश के परिचित लोगों के साथ छोटी बातचीत करते हैं।	स्कूल तथा अन्य स्थानों पर साथियों और शिक्षकों के साथ दैनिक जीवन से सम्बन्धित बातचीत की पहल करते हैं।	परिवेश की घटनाओं, कहानियों या अपनी ज़रूरतों के अनुसार बातचीत में शामिल होते हैं और सवाल करते हैं।	बातचीत में शामिल होते हैं, बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तजार करते हैं, दूसरों के बोलने के दौरान व्यवधान नहीं करते हैं तथा दूसरों को बोलने देते हैं।	कई बार हुई बातचीत के तारतम्य को बनाये रखते हैं। इसके आधार पर बातचीत करते हैं।
2	छोटे अर्थ वाले वाक्यों के माध्यम से अपनी बात और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।	सरल वाक्यों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करते हैं और कब / क्या / कैसे / किस आदि शब्दों का उपयोग करते हुये सरल प्रश्न पूछते हैं।	विस्तृत विवरणों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करते हैं और 'क्यों' शब्द का उपयोग करते हुये प्रश्न पूछते हैं।	वास्तविक विषय वस्तु के साथ जुड़ते हुए उसे जोर से पढ़ते या कक्षा में चर्चा करते हैं, अपने स्वयं के अनुभवों को ज्ञान से जोड़ने में सक्षम हैं और इस सम्बन्ध में बात करते हैं।	किसी विषय पर चर्चा में शामिल होते हैं, प्रश्न करते हैं और प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

खण्ड 2.2

लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक

सीखने की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं और संस्थागत संस्कृति को इस तरह से संरेखित किया जाना चाहिए कि अधिकतम प्रतिफल प्राप्त किए जा सकें।

2.2.1 लक्ष्य से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए प्रमुख अवधारणायें निम्नवत् हैं–

क) शिक्षा के व्यापक लक्ष्य– शैक्षिक प्रणालियों के सभी सुविचारित प्रयासों को व्यापक दिशा प्रदान करते हुए मानव का सम्पूर्ण विकास करना।

ख) विकास के कार्यक्षेत्र (Domains)– अन्वेषण और खोज की भारतीय परम्परा और आधुनिक विज्ञान दोनों में कल्पित हैं। तैत्तिरीयोपनिषद् में पंचकोश का वर्णन मानव के विकास के विभिन्न कार्यक्षेत्रों (Domains) की प्रारम्भिक अभिव्यक्तियों में से एक है।

ग) बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर फोकस –बुनियादी चरण में ही बच्चों को समझ के साथ पढ़ना–लिखना तथा सामान्य जोड़– घटाव जैसी मूलभूत गणितीय समझ विकसित होना।

2.2.2 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं तक

बुनियादी स्तर के लिए दक्षताओं तक पहुँचने के लिए मुख्य स्रोत हैं–

क) पाठ्यचर्या के उद्देश्य।

ख) बुनियादी स्तर हेतु उपयुक्त वर्तमान शोध साहित्य।

ग) देश के विभिन्न शैक्षिक प्रयासों का अनुभव।

घ) स्थानीय संदर्भ जिसमें संसाधन उपलब्धता, समय उपलब्धता, संस्थागत और शिक्षक क्षमताएँ शामिल हैं।

2.2.3 दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों तक

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में सीखने की उपलब्धियों के अन्तरिम मार्कर/चिह्नक कहलाते हैं, उन्हें सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों की बारीकियों, उपलब्ध सामग्री तथा संसाधनों और कक्षा की आकस्मिकताओं के आधार पर परिभाषित किया गया है।

खण्ड 2.3

पाठ्यचर्या के उद्देश्य

इस भाग में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को रेखांकित किया गया है। इन उद्देश्यों की समय–समय पर समीक्षा की जा सकती है जिन्हें बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा/बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के कार्यान्वयन के अनुभव तथा राष्ट्रीय और राज्य की आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तित किया जा सकेगा। पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को Curricular Goal (CG-1, CG-2...A) और इसी तरह से क्रमांकित किया गया है।

क्र.	कार्यक्षेत्र	पाठ्यचर्या के उद्देश्य
1.	शारीरिक विकास	**CG-1** बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं, जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं। **CG-2** बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं। **CG-3** बच्चे एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करते हैं।
2.	सामाजिक भावनात्मक एवं नैतिक विकास	**CG-4** बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं। **CG-5** बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का भाव रखते हैं। **CG-6** बच्चे अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण रखते हैं।
3.	संज्ञानात्मक विकास	**CG-7** बच्चे अवलोकन और तार्किक चिन्तन के माध्यम से दुनिया को समझते हैं। **CG-8** बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।
4.	भाषा और साक्षरता विकास	**CG-9** बच्चे दो भाषाओं में दैनिक बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं। **CG-10** बच्चे भाषा–1(L1) को धाराप्रवाह पढ़ने और लिखने में अपने कौशल विकसित करते हैं। **CG-11** बच्चे भाषा–2, (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।
5.	सौन्दर्य बोध और सांस्कृतिक विकास	**CG-12** बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमता और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनन्दपूर्ण रूप से अभिव्यक्त करते हैं।
नोट :– विकास के कार्यक्षेत्रों पर आधारित उपरोक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के अतिरिक्त सीखने की सकारात्मक आदत विकसित करना बुनियादी स्तर के लिए एक और प्रासंगिक उद्देश्य है।		
		CG-13 बच्चे, सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा के औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करते हैं।

खण्ड 2.4

दक्षताएं

इस भाग में प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्य की दक्षताओं को परिभाषित किया गया है। ये दक्षताएँ पाठ्यक्रम को विकसित करने वाले विशेषज्ञों के लिए दिशा निर्देशों के रूप में देखी जानी चाहिए। इन्हें निर्देशात्मक के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को Curricular Goal (CG-1, CG-2....A) से क्रमांकित किया गया है।

2.4.1 कार्यक्षेत्र– शारीरिक विकास

CG-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।	**C-1.1** पौष्टिक भोजन में रूचि व इसकी समझ दिखाते हैं तथा भोजन बर्बाद नहीं करते हैं। **C-1.2** अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करते हैं। **C-1.3** विद्यालय/कक्षा कक्ष को स्वच्छ व व्यवस्थित करते हैं। **C-1.4** सामग्रियों और सरल उपकरणों का सुरक्षित उपयोग करते हैं। **C-1.5** चलने, दौड़ने, साइकिल/गाड़ी चलाने आदि में सुरक्षा सम्बन्धी सावधानी प्रदर्शित करते और समुचित तरीके से कार्य करते हैं। **C-1.6** असुरक्षित स्थितियों को समझते हैं और मदद मांगते हैं।
CG-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।	**C-2.1** आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करते हैं। **C-2.2** प्रतीक चिन्हों और निरूपणों के लिए दृश्य-आधारित स्मृति विकसित करते हैं। **C-2.3** ध्वनियों में उसके उतार-चढ़ाव, तीव्रता, एवं ध्वनि पैटर्न में उतार-चढ़ाव, तीव्रता एवं गति से अन्तर करते हैं। **C-2.4** विभिन्न गन्ध व स्वादों के बीच अन्तर करते हैं। **C-2.5** स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं। **C-2.6** अनुभवों से जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करते हैं।
CG-3 बच्चे एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करते हैं।	**C-3.1** विभिन्न गतिविधियों से संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करते हैं। **C-3.2** विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाते हैं **C-3.3** हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियन्त्रण दिखाते हैं। **C-3.4** किसी चीज को ले जाने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

2.4.2 कार्यक्षेत्र – सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास

CG-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमता अर्थात अपनी भावनाओं को समझते व प्रबन्धन करने और सामाजिक मापदण्डों के प्रति	**C-4.1** परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में स्व को (अपने आप को) पहचानने लगते हैं। **C-4.2** अलग-अलग भावनाओं को पहचानते हैं और उनका सही तरीके से नियमन करने के लिए यथा योग्य प्रयास करते हैं। **C-4.3** अन्य बच्चों और अपने से बड़ों के साथ आराम से बातचीत

सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।	करते हैं। **C-4.4** अन्य बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। **C-4.5** कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझते हैं और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं। **C-4.6** जानवरों, पौधों सहित सभी के प्रति ज़रूरत के समय दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं। **C-4.7** दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक जरूरतों को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।
CG-5 बच्चे उत्पादक कार्य और सेवा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।	**C-5.1** दूसरे की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।
CG-6 बच्चे अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं।	C-6.1 सभी जीवों के प्रति दया और प्रेम की भावना रखते हैं और उनसे जुड़ने में प्रफुल्लित होते हैं।

2.4.3 कार्यक्षेत्र – संज्ञानात्मक विकास

CG-7 बच्चे अवलोकन व तार्किक चिन्तन के माध्यम से दुनिया को समझते हैं।	**C-7.1** वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखते हैं, समझते हैं। **C-7.2** प्रकृति में घटित घटनाओं के कारणों एवं सम्बन्धों को समझते हैं और अवलोकन कर सरल परिकल्पना बनाकर उन्हें समझाते हैं। **C-7.3** सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों और तकनीकी का इस्तेमाल दैनिक जीवन में परिस्थितियों के अनुकूल करते हैं।
CG-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ विकसित करते हैं तथा दुनिया को समझने, पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।	**C-8.1** चीजों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप समूहों में बांटते हैं। **C-8.2** अपने परिवेश के अन्तर्गत आकृतियों और संख्याओं के सरल स्वरूप (Pattern) को पहचानते हैं और उनका विस्तार करते हैं। **C-8.3** सीधी और उल्टी गिनती में 10–10 एवं 20–20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं। **C-8.4** 99 तक की संख्याओं को बढ़ते व घटते क्रम में व्यवस्थित करते हैं। **C-8.5** दाशमिक, स्थानीयमान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की संख्याओं को पहचानते हैं और उनका अनुप्रयोग करते हैं। **C-8.6** संयोजन और वियोजन की सरल और नवीन तकनीक का उपयोग करके आसानी से दो अंकों की संख्याओं का जोड़ व घटाव करते हैं। **C-8.7** गुणा की संक्रिया को बराबर बंटवारे के रूप में जानते हैं, समझते हैं। **C-8.8** बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते हैं और वर्गीकृत करते हैं। साथ ही किसी स्थान में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध को समझते और समझाते हैं। **C-8.9** अपने आस–पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वजन और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और

	इकाइयों का चयन करते हैं। **C-8.10** मिनटों, घण्टों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करते हैं। **C-8.11** 100 रू तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेन देन करते हैं। **C-8.12** मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करते हैं। **C-8.13** मात्राओं, आकृतियों और स्थान व मापन से सम्बन्धित, सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करते हैं और हल करते हैं।

2.4.4 कार्यक्षेत्र – भाषा और साक्षरता विकास

CG-9 बच्चे दो भाषाओं में दैनिक बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं।	**C-9.1** सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनते हैं और आपस में एक दूसरे की सराहना भी करते हैं। **C-9.2** स्वयं सरल गीत और कविताएं बनाते हैं। **C-9.3** धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं। **C-9.4** किसी जटिल कार्य के लिए दिये गये मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं। **C-9.5** सुनाई गयी/बोलकर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं। पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, को पहचानते हैं। **C-9.6** स्पष्ट कथानक व पात्रों के साथ छोटी कहानियां सुनाते हैं। **C-9.7** प्रभावी ढंग से दैनिक बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका प्रयोग करते हैं और मौजूदा शब्दावली का प्रयोग करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं।
CG-10 बच्चे भाषा–1(Language1,L1) में पढ़ने-लिखने की प्रवीणता हासिल करते हैं।	**C-10.1** भाषा–1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिम/ध्वनिग्राम (Phonemes)/शब्दांशों (Syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों/ध्वनिग्रामों (Phonemes)/शब्दांशों (Syllables) में विभाजित करते हैं। **C-10.2** पुस्तक के प्रारूप, उसमें छपे हुए शब्द और उनकी छपाई के आधार और विचार को समझते हैं तथा मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं। **C-10.** लिपि (भाषा–1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं और इस अर्जित ज्ञान का उपयोग शब्दों को पढ़ने–लिखने के लिए करते हैं। **C-10.4** कहानियों और गद्यांशों को (भाषा–1) सटीकता और धाराप्रवाह के साथ उचित विरामों और आवाज में उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं। **C-10.5** भाषा–1 में छोटी–छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है इसकी पहचान करके स्वयं ही उनका अर्थ समझते हैं। **C-10.6** भाषा–1 में छोटी-छोटी कविताएं पढ़ते हैं और शब्दों और कल्पनाओं के चुनाव के लिए कविताओं की सराहना करना शुरू करते

	हैं। **C-10.7** भाषा–1 में छोटे समाचारों, दिये गये निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते एवं समझते हैं। **C-10.8** भाषा–1 में अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए छोटे–छोटे अनुच्छेद लिखते हैं। **C-10.9** भाषा–1 में बच्चों की विविध प्रकार की किताबें चुनने और पढ़ने में रूचि दिखाते हैं।
CG-11 बच्चे भाषा–2 (Language2,L-2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।	**C-11.1** ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं जो स्वनिम/ध्वनिग्रामों, शब्दांशों (phonemes/ syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिम/शब्दांशों में विभाजित करते हैं। **C-11.2** लिपि की वर्णमाला के बार–बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग, सरल शब्दों को पढ़ने–लिखने में करते हैं।

2.4.5 कार्यक्षेत्र – सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास

CG-12 बच्चे, दृश्य और प्रदर्शन कलाओं की क्षमताओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनन्दपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।	**C-12.1** विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रि–आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए अलग-अलग प्रकार की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं। **C-12.2** संगीत, रोल प्ले, नृत्य व गतिविधियाँ तैयार करने के लिए अपनी आवाज, शरीर, स्थानों और अलग–अलग प्रकार की चीजों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं। **C-12.3** कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नये तरीकों की खोज करते हैं और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं। **C-12.4** कलाओं के प्रदर्शन में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं। **C-12.5** स्थानीय संस्कृति, कला और विरासत के विभिन्न रूपों का अनुभव और रचना करते हुए विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं को सम्प्रेषित करते हैं और इनकी सराहना भी करते हैं।

2.4.5.1 सीखने की सकारात्मक आदतें

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं, जो उन्हें विद्यालय में कला जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं।	**C-13.1 ध्यान और सुविचारित कर्म:** विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल अर्जित करते हैं। **C-13.2 स्मृति और मानसिक लचीलापन:** समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्मनियन्त्रण विकसित करते हैं जो उन्हें संरचित वातावरण में सीखने में मदद करते हैं। **C-13.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण:** वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, कौतूहल के साथ और विभिन्न इन्द्रियों का उपयोग करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं और सवाल पूछते हैं। **C-13.4 कक्षा के नियम:** प्रतिनिधित्व व समझ के साथ नियमों को अपनाते हैं और उनका पालन करते हैं।

खण्ड 2.5

उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल

इस खण्ड में प्रत्येक कार्यक्षेत्र की एक दक्षता को आगे जाकर सीखने के प्रतिफलों में विस्तारित किया गया है। यह मार्गदर्शन का एक नमूना है जो बताता है कि बुनियादी स्तर के लिए सीखने के प्रतिफलों को कैसे व्यक्त किया जा सकता है।

क) कार्यक्षेत्र : शारीरिक विकास

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 2): बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।

1) दक्षता (C 2-1): आकार, रंग और उनके शेड्स के बीच अन्तर करते हैं।

तालिका 2.5 क

C–2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करते हैं।

← उम्र 03 से 08 →

	A – (03-04 वर्ष)	B – (04-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D– (06-07 वर्ष)	E– (07-08 वर्ष)
1.	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफेद, भूरे) में अन्तर करते हैं और उनके नाम बताते हैं।	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (यानी– हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अन्तर करते हैं।	• दो रंगों के मिलने पर कौन–सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं (जैसे– नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)।	• दो रंगों के मिलने पर कौन–सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाते हैं।	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करते हैं और रंगों का उपयोग करते हैं।
2.	• रंगों के आधार पर चीज़ों के समूह बनाते हैं (उदाहरण के लिए सभी लाल चीज़ें एक साथ)	• आयाम– लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर चीज़ों के समूह बनाते हैं (उदाहरण के लिए सभी लम्बी चीज़ें एक साथ)	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाते हैं (सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)	• पैटर्न बनाते हैं, पहेलियाँ सुलझाते हैं, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनका समूह बनाते हुए खेल खेलते हैं।	

(ख) कार्यक्षेत्र : सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 5): बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

1) दक्षता (C 5.1): स्कूल और घर पर आयु–उपयुक्त काम करते हैं।

तालिका 2.5 ख

C–5.1 : दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।

← उम्र 03 से 08 →

A – (03-04 वर्ष)	B – (04-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D– (06-07 वर्ष)	E– (07-08 वर्ष)
• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखते हैं।	• शिक्षक की मदद करते हैं और कक्षा को व्यवस्थित करते हैं।	• खाने के बाद अपनी प्लेट या टिफिन साफ़ करते हैं। • घर और स्कूल में उपयुक्त काम करते हैं (उदाहरण के लिए सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)	• स्थानीय उपलब्ध प्रजाति के पौधों का अंकुरण करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।	• LTM बनाने में शिक्षक की मदद करते हैं। • रसोई में सफ़ाई और सब्जी/तरकारी आदि काटने के काम में मदद करते हैं।

ग) कार्यक्षेत्र : संज्ञानात्मक विकास

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 8): बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।

1) **दक्षता (C 8.4):** 99 तक की संख्याओं को बड़े से छोटे एवं छोटे से बड़े क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

तालिका 2.5 ग

C–8.4 : 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं

← उम्र 03 से 08 →

	A – (03-04 वर्ष)	B – (04-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D– (06-07 वर्ष)	E– (07-08 वर्ष)
1.	विज्ञ प्रसंगों/घटनाओं / वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करते हैं (जैसे दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, आकार– 2 से 3)	वस्तुओं को 3 स्तरों तक के आकार के आधार पर व्यवस्थित करते हैं और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताते हैं (बड़ा–छोटा– उससे छोटा, लम्बा–छोटा–उससे छोटा, ऊँचा–नीचा उससे नीचा)	आकार/लम्बाई /वज़न के आधार पर 5 वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	वस्तुओं के विभिन्न गुणों (उदाहरण के लिए आकार/लम्बाई/वज़न/रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग–अलग क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें छोटे से बड़े व बड़े से छोटे क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

घ) कार्यक्षेत्र : भाषा और साक्षरता विकास

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 10): बच्चे भाषा 1 (L1) को पढ़ने और लिखने में क्षमता हासिल करते हैं।

1) दक्षता (C 10.5): कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है ? इसकी पहचान करके स्वयं ही उनके अर्थ को समझते हैं।

तालिका 2.5 घ

C–10.5 : (L1 में) छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं तथा पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके खुद से ही उनका अर्थ समझते हैं।

उम्र 03 से 08

	A – (03-04 वर्ष)	B – (04-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D– (06-07 वर्ष)	E– (07-08 वर्ष)
1.	"बोल कर पढ़े गए शब्दों " को सुनते हैं और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देते हैं।	शिक्षक के साथ "साझा पठन" में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	शिक्षक के साथ "निर्देशित / मार्गदर्शित पठन" में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	समान मात्रा वाली पाठ्य और दृश्य सामग्री युक्त पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करते हैं।	दृश्य सामग्री की तुलना में पाठ्य सामग्री की अधिकता वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करते हैं।
2.	चित्रात्मक पुस्तकें पढ़ते हैं और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करते हैं।	चित्रात्मक पुस्तकें पढ़ते हैं, पात्रों और कथानक की पहचान करते हैं और कहानी को छोटे–छोटे क्रमों में बताते हैं।	छोटे सरल पाठ (Text) वाली पुस्तकों को बोलकर पढते हैं, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फ़िर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और Text का प्रयोग करते हैं।	• कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझते हैं। • कथानक और पात्रों की पहचान करते हैं।	पात्रों, कथानकों, और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ते और पहचानते हैं।

ङ) कार्यक्षेत्र : सौन्दर्य और सांस्कृतिक विकास

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 12): बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं तथा कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।

1) दक्षता (C 12.1): विभिन्न आकारों में द्विआयामी और त्रि–आयामी कलाकृतियां बनाने के लिए विभिन्न उपकरणों और चीज़ों को ढूँढते और उनके साथ खेलते हैं।

तालिका 2.5 ङ

C–12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रि–आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह–तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं।

उम्र 03 से 08

	A – (03-04 वर्ष)	B & C – (04-06 वर्ष)	D & E– (06-08 वर्ष)
1.	कला सामग्रियों, उपकरणों और औज़ारों को आवश्यकता के अनुरूप पकड़ते हैं।	कला सामग्रियों, औजारों और उपकरणों (उदाहरण के लिए डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूचियां, क्रेयॉन्स, पाउडर, कैंचियाँ) का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ (Grip) का पता लगाते हैं।	गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों /रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होते हैं।

	A & B – (03-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D & E– (06-08 वर्ष)
2.	दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, गोड़ा–गाड़ी(Scribbling) करते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्विआयामी और त्रि–आयामी आकृतियों को समझते हैं।	साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (मसलन फर्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाते हैं।	उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर अपने काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होते हैं (मसलन मिट्टी की एक छोटी गुड़िया, या कागज की एक बड़ी गुड़िया बनाना)।

	A – (03-04 वर्ष)	B– (04-05 वर्ष)	C to E– (05-08 वर्ष)
3.	सामग्रियों (मसलन मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाते हैं।	मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को गूंथकर और थप-थपाकर त्रि आयामी आकृतियाँ बनाते हैं।	• भिन्न–भिन्न प्रकार के गाढ़े रंगों और डिज़ाइन वाली सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाते हैं। • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रिआयामी व्यवस्था/संयोजन बनाते हैं।

	A & B – (03-05 वर्ष)	C – (05-06 वर्ष)	D – (06-07 वर्ष)	E–(07-08 वर्ष)
4.	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे (Imprints) बनाते हैं।	ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल पैटर्न बनाते हैं।	सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के लिहाज़ से मिलाकर और व्यवस्थित करके पैटर्न बनाते हैं।	किसी सामग्री के साथ जोड़–तोड़ करके तरह–तरह के गठ्ठर बनाते हैं (मसलन मिट्टी, कपड़ा, कागज़, रबड़, लकड़ी)।

☞ कार्यक्षेत्र : सीखने की सकारात्मक आदतें

i- पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 13): बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करते हैं।

1) दक्षता (C 13.4): कक्षा-कक्ष के मानदण्ड: प्रतिनिधित्व और समझ के साथ मानदण्डों को अपनाना और उनका पालन करना।

तालिका 2.5 च

C–13.4: कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं।

उम्र 3 से 8

	A – (3-4 वर्ष)	B – (4-5 वर्ष)	C – (5-6 वर्ष)	D– (6-7 वर्ष)	E– (7-8 वर्ष)
1.	कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियमों का पालन करते हैं और इसमें दूसरों की मदद करते हैं। • शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' (Do-It-Yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेते हैं और नियमों के अनुरूप व्यवहार करते हैं। • 'स्वयं करें' (Do-It-Yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेते हैं और उनके अनुसार व्यवहार करते हैं। • 'स्वयं करें' (Do-It-Yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं, उन्हें दर्शाते हैं; जिम्मेदारी से उनका अनुसरण करते हैं।

नोट– सीखने के प्रतिफलों का अधिक व्याख्यात्मक विस्तृत सेट अनुलग्नक–1 में है।

अध्याय-3

भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण

भाषा सीखने के मामले में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की संस्तुतियाँ भाषा सीखने की दक्षताएँ अर्जित करने सम्बन्धी नवीनतम शोधों पर आधारित हैं। बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2023 में भाषा शिक्षा को मजबूत आधार देने के लक्ष्य के पीछे यह दृष्टिकोण है कि बच्चे भाषा इस प्रकार से सीखें, जिससे उनके सीखने को (सभी डोमेन/ क्षेत्रों में), उनकी सम्प्रेषण क्षमता को (मौखिक और लिखित दोनों प्रकार) तथा उनके सामाजिक–भावात्मक कौशल को उनके जीवन के शुरूआती वर्षों और उनके पूरे जीवन में भी अधिकतम बढ़ाया जा सके।

खण्ड 3.1

सिद्धान्त

बुनियादी स्तर पर भाषा सीखने–सिखाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, की सिफारिशें नवीनतम शोधों पर आधारित हैं। बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के निर्माण के पश्चात् राज्य के लिए भी बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया है। भाषा शिक्षा और साक्षरता के दृष्टिकोण से बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य यह है कि प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे इस प्रकार सीखें कि आठ वर्ष की आयु तक उनमें पढ़ने और लिखने के कौशलों का विकास हो सके।

भाषा शिक्षा और साक्षरता के विषय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर आधारित, बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के दृष्टिकोण के मुख्य सिद्धान्त निम्नांकित हैं–

क) बच्चे 0–8 वर्ष की आयु के बीच मौखिक भाषा शीघ्रता से सीखते हैं

सर्वविदित है कि बच्चे के जीवन के प्रारम्भिक आठ वर्ष सीखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। यह आयु भाषा सीखने की दृष्टि से बहुत संवेदनशील होती है। यदि इन वर्षों का उपयोग समुचित रूप से न किया गया तो बच्चे की भावी शिक्षा बाधित हो सकती है तथा उसके लिए एक नई भाषा सीखना कठिन हो सकता है।

हमारे राज्य में कई भाषाएं/बोलियाँ/उपबोलियाँ बोली जाती हैं जैसे–हिन्दी, गढ़वाली, कुमाऊँनी, जौनसारी आदि। बुनियादी स्तर पर बच्चों के साथ अंतःक्रिया में इन भाषाओं/बोलियों को अवश्य स्थान देना होगा एवं बच्चों को बातचीत के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने होंगे।

ख) बहुभाषिकता के संज्ञानात्मक –सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ

शोध स्पष्ट करते हैं कि मौखिक रूप से बच्चे जब कई भाषाओं से परिचित होते हैं तो उन्हें संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक मजबूती मिलती है। वे अपनी बातों को तार्किक रूप से रख पाते हैं तथा सुनी हुई बातों को अर्थपूर्ण रूप से ग्रहण करते हैं। यदि कक्षा में बहुभाषिक परिवेश का निर्माण है तो बच्चे अत्यन्त सहजता से बारीकियों को आत्मसात कर लेते हैं।

उत्तराखण्ड राज्य में बहुभाषिकता (Multilingualism) व्यापक स्तर पर है। अधिकांश बच्चे अपने प्रारम्भिक वर्षों से ही एक से अधिक भाषाओं के सम्पर्क में होते हैं। विभिन्न गतिविधियों यथा कहानी, कविता, बालगीत, अंताक्षरी, नाटक आदि के माध्यम से बच्चों में बहुभाषी प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है। उक्त गतिविधियों के माध्यम से राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का यह लक्ष्य भी पूर्ण हो जाता है कि प्रारम्भिक अवस्था से ही बच्चों में उनके विकास के अनुरूप सर्वोत्तम मौखिक बहुभाषिक कौशलों की नींव सुदृढ़ की जाए।

इस भाषाई विविधता को चुनौती न समझकर संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए और बच्चे में उनके विकास के अनुरूप बेहतरीन मौखिक बहुभाषिक कौशलों की नींव मजबूत की जानी चाहिए।

ग) छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से मौखिक भाषा सीख जाते हैं पर लिखित भाषा उतनी स्वाभाविक नहीं होती इसलिए पढ़ने और लिखने की अवधारणा को सिखाया जाना बहुत आवश्यक है।

प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों से कई मौखिक भाषाओं में संवाद किया जाना चाहिए जिससे आगामी वर्षों में इन भाषाओं में पढ़ने–लिखने के कौशल भी विकसित किए जा सकें। उत्तराखण्ड राज्य के संदर्भ में जो कि हिन्दी भाषी बाहुल्य राज्य है, यह उपयुक्त होगा कि पढ़ने और लिखने की अवधारणा जिसमें Phonemes (ध्वनि की छोटी इकाइयाँ) और Graphemes (लिखित

व्यवस्था की सबसे छोटी इकाइयाँ) और उनके बीच के सम्बन्ध को समझाने की भाषा प्रारम्भिक वर्षों में घर पर बोली जाने वाली भाषा के साथ हिन्दी ही होनी चाहिए।

जब घर पर बोली जाने वाली भाषा के साथ हिन्दी भाषा में बच्चे की पढ़ने और लिखने की अवधारणा और बुनियादी साक्षरता कौशल विकसित हो जाएं तभी उसका परिचय अन्य लिपियों/भाषाओं (जैसे–अंग्रेजी) से करवाया जाना चाहिए। साक्षरता के शुरूआती वर्षों में Language1 (L-1) के रूप में घर में बोली जाने वाली भाषा के साथ हिन्दी ही पढ़ने–लिखने की प्रथम भाषा होनी चाहिए।

बुनियादी स्तर की कक्षाओं में शिक्षक द्वारा बच्चे के घर की भाषा (कुमाऊंनी, गढ़वाली, जौनसारी आदि) को माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाए तथा धीरे–धीरे विद्यालय के वातावरण में सामंजस्य हो जाने के पश्चात उसे अपने घर की भाषा के साथ पढ़ने–लिखने की भाषा L-1 यथा हिन्दी की ओर ले जाने का प्रयास किया जाए। आगे चल कर यह भाषा L-2 तक पहुंचने में सेतु का कार्य करेगी।

घ) बच्चे जटिल अवधारणाओं को अपने घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा में शीघ्रता से सीखते और समझते हैं।

बुनियादी स्तर एवं उसके बाद भी बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षण देना महत्वपूर्ण है। इसके निम्नलिखित कारण हैं–

- तीन वर्ष की आयु के पश्चात् जब बच्चे प्री–स्कूल में प्रवेश लेते हैं तथा वे घर की भाषा के साथ विद्यालय आते हैं। वे इस भाषा में सुनने, समझने, दूसरों के साथ सहानुभूति व्यक्त करने, बोलने, अपने विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने और दूसरों के साथ अर्थपूर्ण ढंग से बात करने की क्षमता रखते हैं। साथ ही वे रचनात्मक, आलोचनात्मक चिंतन, साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के आधारभूत कौशल और अवधारणाऐं भी सीखते हैं। शुरूआती वर्षों में घर की भाषा या मातृभाषा में शिक्षण से बच्चे की संज्ञानात्मक और सामाजिक भावनात्मक क्षमता को निखारा जा सकता है।

- घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा से अलग किसी अन्य अपरिचित भाषा में शिक्षण किए जाने से बच्चों के शुरूआती 3–4 वर्षों के अनुभवों की पूर्णतः उपेक्षा होती है। परिणामस्वरूप बच्चे असहज महसूस करते हैं क्योंकि उनके पुराने और नए प्राप्त किये गए अनुभवों में कोई जुड़ाव नहीं रहता जो बच्चों की मनोसामाजिक स्थिति व स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है। यह प्रमाणित है कि मातृभाषा अथवा घर की भाषा के माध्यम से सिखाए जाने पर बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

- शोध स्पष्टतः यह भी प्रदर्शित करते हैं कि बच्चे यदि साथ–साथ या बाद में अन्य भाषा भी सीख रहे हों, तब भी उनके द्वारा घर की भाषा में सीखे गए किसी कौशल या अवधारणा को फिर से नहीं पढ़ाना पड़ता है।

- मातृभाषा या घर की भाषा केवल बच्चे के लिए संप्रेषण का माध्यम ही नहीं है अपितु यह उसकी वैयक्तिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान से भी गहरा सम्बन्ध रखती है। एक नई भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में अपनाना इस समृद्ध अनुभव को अस्वीकार करना है जो शिक्षा की प्रारम्भिक अवस्था में न तो न्यायसंगत है और न ही वांछित। इस समय शिक्षकों को बच्चों के आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, स्वायत्तता बोध और क्षमता विकास जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

- अध्ययन बताते हैं कि सकारात्मक एवं सहयोगात्मक सम्बन्ध और भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण बच्चों के सीखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और बच्चों में इनका पोषण करने के लिए, उनके घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा को शिक्षण की भाषा बनाते हुए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

- छोटे बच्चे सुनकर, बातचीत के द्वारा और दूसरों से अंतःक्रिया करके सीखते हैं। ऐसे में एक परिचित भाषा (ऐसी भाषा जिसे वे अच्छी तरह समझते और बोलते हैं) ही सहज संप्रेषण का वातावरण प्रदान कर सकती है जो कि उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। अतः शुरूआती वर्षों में बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा/परिचित भाषा ही अनिवार्य रूप से उसकी अंतःक्रिया की भाषा होनी चाहिए।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने रटने के स्थान पर अंतःक्रियात्मक रूप से सीखने, रचनात्मकता और खोज पर जोर देने के प्रतिमानों को सार्थक बदलाव हेतु चिन्हित किया है। यह बुनियादी अवस्था में अपरिचित भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने का समर्थन नहीं करता है।

बच्चे के घर की भाषा का सम्मान, घर की भाषा में बातचीत, सीखने के लिए बच्चे को प्रोत्साहित करना और अधिकतम संभावित स्तर पर बच्चे की घर की भाषा में शिक्षण, बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का एक और केन्द्रीय पहलू है। प्रारम्भिक वर्षों में द्विभाषा या बहुभाषा का घर की भाषा के साथ प्रयोग बच्चों को भाषाओं के बीच प्रभावी कोड स्विचिंग (एक भाषा के प्रयोग के साथ–साथ दूसरी भाषा का भी प्रयोग) में सक्षम बनाता है।

ड.) बच्चे में विकसित की जाने वाली मुख्य क्षमताओं में से भाषा एक है जिसके माध्यम से ही सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण आयाम विकसित किए जा सकते हैं।

सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति में सक्षमता बच्चों में पहचान और अपनत्व के भाव का सृजन कराती है। साथ ही दूसरी संस्कृतियों और विशिष्टताओं के लिए सम्मान और सराहना का बोध भी देती है। पूर्व में हुए अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन बताते हैं कि बच्चों में सांस्कृतिक जागरूकता/अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पहचान, उन्हें उत्कृष्ट सामाजिक व्यवहार, आत्मसम्मान, आत्मविकास तथा सहिष्णुता एवं अन्य संस्कृतियों की सराहना की ओर ले जाती है।

- अपने सांस्कृतिक इतिहास, भाषाओं, कलाओं और परम्पराओं के दृढ़ बोध से उनमें सम्प्रेषण और रचनात्मक क्षमताओं का भी विकास होता है। अतः सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति, समाज तथा व्यक्ति दोनों को ही उत्कृष्ट बनाने हेतु महत्वपूर्ण हैं।

खण्ड़ 3.2

बुनियादी स्तर पर भाषा शिक्षा और साक्षरता के सम्बन्ध में राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा रेखांकित भाषा शिक्षा के सिद्धांतों और उद्देश्यों से सामंजस्य स्थापित करते हुए बुनियादी स्तर में भाषा–शिक्षण को लेकर राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा का दृष्टिकोण निम्नवत् है–

क) चूंकि बच्चे अपने घर की भाषा में अवधारणाएं अत्यंत शीघ्रता और गहनता से सीखते हैं इसलिए बुनियादी स्तर पर शिक्षण की प्रथम भाषा, बच्चे के घर की भाषा / मातृभाषा / परिचित भाषा ही होनी चाहिए (यही भाषा आगे L1 के रूप में परिभाषित की गयी है)।

उक्त दृष्टिकोण सरकारी तथा निजी दोनों ही प्रकार के विद्यालयों द्वारा अपनाया जाना चाहिए। सीखने की प्रारम्भिक अवस्था में यह सुनिश्चित किया जाना होगा कि बच्चों ने L1 (घर की भाषा / मातृभाषा / परिचित भाषा) का उचित रूप से प्रयोग प्रारम्भ कर लिया है अथवा नहीं। इस कार्य हेतु अब हमें ऐसे स्थानीय शिक्षकों की आवश्यकता होगी जो बच्चे के घर की भाषा / मातृभाषा / परिचित भाषा की समझ रखते हों, उसमें पारंगत हों, तथा वहां की संस्कृति और रीतिरिवाज़ों की जानकारी रखते हों। बच्चे की शैक्षिक प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने के लिए यह उपयुक्त होगा कि इस प्रक्रिया में अभिभावकों को भी शामिल किया जाए। इस प्रकार अभिभावकों की भागीदारी होने से यह शैक्षिक प्रक्रिया अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक और अधिक सार्थक बन सकती है। बच्चों एवं अभिभावकों के एक साथ जुड़ने से घर और स्कूल के सम्बन्ध को मजबूत किया जा सकता है जो कि बच्चे के सीखने की प्रक्रिया और सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

बच्चे के घर की भाषा / मातृभाषा / परिचित भाषा शिक्षण का उत्कृष्ट माध्यम होती है, किन्तु बच्चों के घर की भाषा में पारंगत शिक्षकों की उपलब्धता सदैव सभी क्षेत्रों में नहीं हो सकती है। ऐसी स्थिति में जनपद स्तर पर शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा स्थानीय / क्षेत्रीय भाषाओं के अभिमुखीकरण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम सेवापूर्व तथा सेवारत दोनों ही स्तर के प्रशिक्षु / शिक्षकों हेतु होने चाहिए।

तीन से आठ वर्ष तक की आयु के बच्चे खेलने, सुनने और बोलने के माध्यम से सीखते हैं। अतः सिखाने की प्रक्रिया में (खेलते हुए, सुनते समय अथवा बोलते हुए) बच्चे की घर की भाषा / मातृभाषा / परिचित भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

बुनियादी स्तर हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आलोक में हमारे राज्य में एन.सी.ई.आर.टी. की "बरखा" सीरीज़ की चालीस पुस्तकों का गढ़वाली और कुमाऊँनी में अनुवाद किया गया है। साथ ही जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान चड़ीगांव, पौड़ी द्वारा गढ़वाली भाषा में वर्ष 2022 में आंगनवाड़ी से कक्षा–05 तक की पुस्तकों (घुघुती, सुरड़ि, घिंडुड़ी, सेंटुलि, फल्यारि, ग्वथनि) का प्रकाशन किया गया है एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान देहरादून द्वारा जौनसारी भाषा में 'आइतिनीति' पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसके अन्तर्गत चित्रों, नाटकों, गीतों आदि के माध्यम से स्थानीय भाषा कौशल के भावों से भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

शिक्षकों को चाहिए कि वे स्थानीय स्तर पर अभिभावकों और समुदाय का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करें । स्थानीय समुदाय द्वारा सामुदायिक केन्द्रों में विद्यालय की छुट्टी होने के बाद खेल आधारित गतिविधियां आयोजित की जाएं। विभिन्न पृष्ठभूमि से आये हुए शिक्षकों को भी अपने स्तर से स्थानीय भाषा की प्रचलित शब्दावली को अंगीकृत करने का प्रयास करना चाहिए। इससे बच्चे कक्षा–शिक्षण के समय बुनियादी स्तर पर सीखे हुए ज्ञान का संदर्भ लेते हुए पढ़ने–लिखने की भाषा को सहजता से सीख सकेंगे।

चूंकि उत्तराखण्ड राज्य में बच्चों के घर की भाषा/मातृभाषा/परिवेशीय भाषा, अधिकांश क्षेत्रों में (हिन्दी भाषी क्षेत्रों के अतिरिक्त) सीखने–सिखाने का माध्यम नहीं है, इसलिए इन भाषाओं को कम से कम बुनियादी अवस्था में सीखने की प्रक्रिया के दौरान मौखिक संवाद के रूप में ही प्रयोग किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप बच्चों की सोचने, तर्क करने, उच्चकोटि की समझ विकसित करने, अभिव्यक्ति और संप्रेषण की क्षमता का विकास हो सकेगा।

अतः बच्चे को उसकी घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा बोलने पर हतोत्साहित अथवा लज्जित नहीं करना चाहिए अपितु इन भाषाओं का प्रयोग करने पर बच्चों को उनके सहपाठियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ख) प्रारम्भिक वर्षों से ही बच्चे का कई मौखिक भाषाओं (जिन्हें नीचे L2 और L3 कहा गया है) से गहरा संपर्क होना चाहिए। बच्चे नियमित रूप से बचपन से ही कम से कम दो या अच्छा हो तीन भाषाएँ साथ–साथ सीखें। इसके लिए विद्यालयों में शिक्षकों और अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करनी होगी।

प्रारम्भ के 06 से 08 वर्षों में यदि बच्चों का संपर्क नई भाषाओं (हिन्दी/अंग्रेजी/उर्दू/संस्कृत आदि या जिसे वे सीखना चाहते हों) से हो तो वे उसे भी अत्यंत शीघ्रता से सीख जाते हैं। अतः प्रारम्भिक कक्षाओं में द्विभाषिक अथवा बहुभाषिक दृष्टिकोण अपनाते हुए बच्चों को घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा के साथ अन्य भाषाओं को सीखने के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

मौखिक रूप में कई भाषाओं तक पहुँच से बच्चे में महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक बोध का विकास होता है, जो कि सामाजिक, भावनात्मक कौशलों के साथ रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमताओं के विकास के लिए अत्यन्त हितकारी होता है।

यदि एक नई भाषा जो कि बच्चे के लिए अपरिचित हो सकती है (हिन्दी/अंग्रेजी/कोई अन्य) का प्रयोग पढ़ने–लिखने की भाषा के रूप में किया जा रहा हो, तो बच्चे के अनुभवों पर आधारित बातचीत और उसके रूचि के विषयों का प्रयोग मौखिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। बालगीत, कविताएँ, खेल, नाटक, सम्पूर्ण शारीरिक प्रतिक्रिया और अन्य रचनात्मक अन्तःक्रियाएँ (जैसे– अनुभव, स्थान, मनभावन वस्तुओं/खिलौनों का विवरण और उन पर बातचीत) सौन्दर्यात्मक एवं रचनात्मक बोध विकसित करते हुए भाषा शिक्षण को अत्यधिक रोचक और प्रभावशाली बना देती है।

प्रारम्भिक स्तर पर प्रयोग की जाने वाली कुछ कार्यनीतियाँ निम्नवत् हैं–

- बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा और पढ़ने–लिखने की भाषा/अन्य भाषा का (L1 और L2/L3) संतुलित व युक्तिगत प्रयोग होना चाहिए, जिससे बच्चे में भाषाई दक्षता का निरंतर विकास हो।
- पढ़ने–लिखने की भाषा/किसी अन्य भाषा के लिए (L2 और L3) बातचीत व अन्य मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों के लिए स्वाभाविक वातावरण का निर्माण करेगी। इस हेतु बच्चे की घर की भाषा और सिखाई जाने वाली भाषा के (L1 के साथ L2 और L3) मिश्रित रूप से इस्तेमाल करने को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- बच्चे के घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा (L1) की सहायता से बच्चे को पढ़ने और लिखने का कौशल सिखाया जाय।
- प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों की पढ़ने–लिखने की भाषा अथवा किसी अन्य भाषा (L2 और L3) में धाराप्रवाह बोलने का कौशल अर्जित करने हेतु स्वाभाविक, सम्प्रेषण केन्द्रित पद्धति घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा (L1) पर आधारित हो।

उक्त कार्य हेतु कतिपय क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं–

- भावगीत, कविताएँ, मनोरंजक खेल, वाक्यांशों एवं सरल वाक्यों में वार्तालाप (वास्तविक वस्तुओं/चित्रों पर आधारित)।
- शिक्षक द्वारा बहुभाषिक पद्धति को अपनाते हुए बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा (L1) में कहानियों की पुनरावृत्ति कर उन्हें पुनः पढ़ने–लिखने की भाषा अथवा अन्य भाषा (L2 और L3) में सुनाना।
- कहानियों में आये हुए प्रभावी शब्दों और संरचनाओं की पुनरावृत्ति एवं सस्वर वाचन।

- प्रारम्भिक स्तर के पूर्ण होने तक बच्चों को कम से कम दो भाषाओं में मजबूत मौखिक भाषा कौशल जिसमें सुनने का बोध, समुचित शब्द भण्डार और मौखिक अभिव्यक्ति शामिल हों, विकसित हो जानी चाहिए। यह मौखिक कौशल बुनियादी स्तर के अन्त तक कम से कम एक भाषा और उसकी लिपि में स्वतंत्र रूप से पढ़ने और लिखने का महत्वपूर्ण पहलू निर्मित करेगा।

ग) पढ़ने और लिखने की अवधारणा को शुरूआत में R1 भाषा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। R1 वह भाषा है जिसमें बच्चा सबसे पहले पढ़ने और लिखने की अवधारणा सीखता है। R2 इसी तरह की दूसरी और R3 इसी तरह की तीसरी भाषा है।

- बच्चे में पढ़ने और लिखने की अवधारणा का विकास (उद्गामी/प्रारम्भिक साक्षरता, समझाकर पढ़ना और लेखन अभिव्यक्ति) मौखिक भाषा के विकास और अर्थ निर्माण (जिसमें चित्रों व सकेतों, चेहरे के भावों, कला, संगीत, नृत्य, नाटक एवं खेल,) तथा पढ़ी जाने वाली सामग्री के द्वारा किया जाता है।
- भावगीत, कविताएँ, मनोरंजक खेल, वाक्यांशों एवं सरल वाक्यों में वार्तालाप (वास्तविक वस्तुओं/चित्रों पर आधारित)।
- शिक्षक द्वारा बहुभाषिक पद्धति को अपनाते हुए बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा में कहानियों की पुनरावृत्ति कर उन्हें पुनः पढ़ने–लिखने की भाषा अथवा अन्य भाषा में सुनाना।
- कहानियों में आये हुए लक्ष्य, शब्द और संरचनाओं की पुनरावृत्ति एवं सस्वर वाचन।
- प्रारम्भिक स्तर के पूर्ण होने तक बच्चों को कम से कम दो भाषाओं के लक्षित कौशल (सुनने का बोध, समुचित शब्द भण्डार और मौखिक अभिव्यक्ति) विकसित कर लेने चाहिए। परिणामस्वरूप बच्चा बुनियादी स्तर के अन्त तक कम से कम एक भाषा में स्वतंत्र रूप से पढ़ने ओर लिखने में सक्षम हो सकेगा।
- पढ़ने और लिखने की अवधारणा को शुरूआत में R1 भाषा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। जहां तक संभव हो यह भाषा बच्चे के घर की भाषा L1 होनी चाहिए। उत्तराखण्ड़ में स्थानीय भाषाओं यथा गढ़वाली, कुमाउंनी, जौनसारी आदि भाषाओं की कोई पृथक लिपि नहीं है, लिहाजा यहाँ पढ़ने लिखने की प्रथम भाषा हिन्दी या अन्य ऐसी भाषा होगी जिसकी अपनी लिपि हो (जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि हो सकती है) जो R1 कहलाएगी।
- R1 वह भाषा है जिसमें बच्चा सबसे पहले पढ़ने और लिखने की अवधारणा सीखता है। R2 इसी प्रकार की दूसरी और R3 इसी प्रकार की भाषा है ।

घ) एक बार जब बच्चे की R1 में पढ़ने और लिखने की अवधारणा विकसित हो जाये, तब अतिरिक्त लिपियों से उसे धीरे–धीरे परिचित कराना चाहिए। लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चे आठ वर्ष की आयु तक R1 में स्वतंत्र रूप से पढ़–लिख सकें।

अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत या कोई अन्य भाषा में भी पढ़ने–लिखने की समझ विकसित करने के लिए प्रचुर मात्रा में बाल कविताओं, बालगीत, कहानियों, खेल, नाटक और दूसरी रचनात्मक अन्तःक्रियाओं के साथ R2 और R3 में भी पढ़ने और लिखने को लेकर यही पद्धति होनी चाहिए। बोलकर पढ़ने से शुरू करना, फोनीम–ग्राफिम के सम्बन्धों को समझने के लिए गतिविधियाँ कराना, साझा रूप से पढ़ना, फिर निर्देशित पठन व लिखने के अभ्यास कराये जाने चाहिए जो बच्चों को अंततः स्वतंत्र लेखन की ओर ले जायेंगे।

चूंकि पढ़ने और लिखने की बुनियादी समझ R1 के माध्यम से सीखी जा चुकी होगी, इसलिये अन्य भाषाओं R2 और R3 (यदि R1 हिन्दी है तो R2 व R3 अंग्रेजी/संस्कृत/कोई अन्य) के लिये नई लिपि सीखना सहज होगा।

यदि L1, R1 , R2 व R3 से भिन्न है तो R1 व R2 व R3 संवादात्मक भाषा कक्षायें L1 की मदद से चलती रहेंगी, उत्तराखण्ड़ के संदर्भ में ऐसा ही है, यहाँ यदि L1 गढ़वाली, कुमाउंनी, जौनसारी या अन्य कोई भाषा है तो वह लिपि के अभाव में R1 नहीं हो सकती। L1 को संवादात्मक भाषा के रूप में प्रयुक्त करते हुए बच्चे R1 भाषा में पढ़ना–लिखना सीखेंगे जो हिन्दी या अन्य कोई भाषा हो सकती है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सभी भाषाओं में बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता में प्रगति के साथ ही प्रारम्भिक स्तर पर व उसके बाद भी शिक्षण उच्च स्तरीय चिंतन पर केन्द्रित होना चाहिए।

बुनियादी स्तर पर भाषा से सम्बन्धित मुख्य विचारों का सारांश

प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षण की भाषा घर की भाषा L1 होनी चाहिए। जहाँ यह संभव न हो शिक्षण और सीखने की गतिविधियों में बच्चे की L1 के व्यावहारिक इस्तेमाल की मदद के लिए और L1, व स्कूल की भाषा के बीच तारतम्य बनाने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।

बच्चे को कई मौखिक भाषाओं से जितनी जल्दी हो सके गहन सम्पर्क कराया जाना चाहिए। इसे अत:क्रियात्मक गतिविधियों (जैसे बातचीत,कविता गानों, नाटक, अनुभव वर्णन) के माध्यम से बढ़ाया जाना चाहिए। उद्देश्य यह हो कि बच्चा कक्षा–3 तक 2 भाषाओं में मौखिक भाषा दक्षता (भले ही समान स्तर की न हो) हासिल कर लें।

शुरूआत से ही मौखिक भाषा विकास से सम्पर्क, अर्थ निर्माण गतिविधियों और छपी हुई सामग्री के माध्यम से पढ़ने और लिखने की अवधारणा प्रारम्भ में R1 के जरिये विकसित की जाती है, जो अधिकतम संभव रूप में L1 होती है।

- *R1 में पढ़ने का कौशल पहले चित्र और कहानी की पुस्तकों, फिर बोल कर पढ़ी जानी वाली पुस्तकों, फिर साझा रूप से पढ़ने, फिर निर्देशित रूप से पढ़ने और फिर कक्षा पाठ्य पुस्तकों के जरिये स्वतंत्र पठन के द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। जहाँ R1, L1 नही होगी वहाँ L1 के साथ तारतम्य स्थापित करते हुये R1 में कौशल विकसित किया जायेगा।*
- *चित्रकारी, नाम लेखन, स्व–वर्तनी (Inventive Spelling), कार्य पुस्तिका लेखन, लिखने की आवश्यकता वाले खेलों के माध्यम से R1 में लेखन कौशल विकसित किया जायेगा।*

बाद में R2 और R3 में पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करने की भी यही पद्धति रहेगी। उद्देश्य यह होगा कि कक्षा–3 तक बच्चे साक्षरता कौशल हासिल कर लें।

नोट:– इस अध्याय में अवधारणात्मक रूप से स्कूल में बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने के लिए सीखी गयी भाषा (R1 और R2) तथा बच्चा जिन भाषाओं से मौखिक रूप से परिचित होता है (L1 और L2), के बीच अन्तर किया गया है।

चूँकि L1 और L2 को आमतौर पर स्कूलों में सीखने की भाषा समझा जाता है। अन्य दस्तावेजो में L1 और L 2 को R1 और R2 के पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया गया।

अध्याय-4

शिक्षणशास्त्र

एक समृद्ध, संरक्षित, आरामदायक और खुशहाल कक्षा का वातावरण बच्चों को प्रारम्भिक स्तर पर बेहतर सीखने एवं अधिकतम हासिल करने में मदद कर सकता है। इस चरण में अनुभव, प्रयोग और अन्वेषण के पर्याप्त अवसरों के साथ देखभाल व जवाबदेही शिक्षणशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं में से एक है ।

खण्ड 4.1

शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के लिए उपयुक्त कक्षा–कक्ष में शिक्षण की रणनीतियों का प्रयोग करते समय शिक्षणशास्त्र के सिद्धांतों का अत्यन्त महत्व है। 8 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए लचीली, बहुमुखी, बहुस्तरीय, खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षा उपलब्ध हो, यह सुनिश्चित करने के लिए मार्गदर्शक शिक्षक द्वारा बच्चे की आवश्यकता एवं रुचि आधारित बाल–केंद्रित शिक्षण के अनुरूप शिक्षणशास्त्र को अपनाया जाना होगा। कक्षा–कक्ष हेतु सीखने की योजना एवं क्रमिक निर्देशन की समझ प्रदान करने हेतु नीचे दिए गए सिद्धांत उपयोगी हैं–

क) सीखने के लिए सुरक्षित और उत्साहवर्द्धक वातावरण बनाना–

i. कक्षा–कक्ष साफसुथरा, संयोजित, व्यवस्थित व समेकित होना चाहिए।
ii. गतिविधियाँ विविधतापूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण हों।
iii. गतिविधियाँ सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर बनायी जानी चाहिए।
iv. गतिविधियाँ बच्चे की आयु एवं विकास के अनुरूप बनाई जानी चाहिए।

ख) खेल–खेल में सीखना–

I. बच्चों को स्वतंत्र, निर्देशित एवं संरचित खेलों के माध्यम से ही सिखाना चाहिए।
ii. कहानी, खेल, नाटक, रोल–प्ले, खिलौने, बातचीत, नृत्य, संगीत आदि के द्वारा सिखाना।
iii. बाह्य खेल (Out door game) / मैदानी खेलों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ग) शिक्षक का बच्चे के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना–

i. बच्चों की बात ध्यान से सुनना और पूरी तरह से उनके साथ रहना महत्वपूर्ण है।
ii. शिक्षक को संवेदनशील, मैत्रीपूर्ण, उत्साहवर्द्धक, हँसमुख, मिलनसार, उत्तरदायी व प्रतिक्रियाशील होना चाहिए।

घ) शारीरिक विकास हेतु गतिविधियाँ करवाना–

i. आयु तथा शारीरिक व मानसिक परिपक्वता के अनुरूप गतिविधियाँ गत्यात्मक कौशल (Motor skill) को बेहतर बनाती हैं।
ii. बच्चे के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास के लिए गत्यात्मक कौशल (Motor skill) आधारित गतिविधियाँ करवायी जानी चाहिए।

ङ) हर बच्चा अपनी गति से सीखता है और सीखने की ज़रूरतों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

i. सभी बच्चों को कक्षा में इस प्रकार से भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए जो प्रत्येक बच्चे के लिए सबसे बेहतर हों।
ii. प्रत्येक बच्चे की सीखने की ज़रूरतों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाना होगा। एक ही स्थिति में बच्चों की प्रतिक्रिया अलग–अलग हो सकती हैं।

च) बुनियादी स्तर पर बच्चे का घर की भाषा (मातृभाषा) में सहज होने के कारण तेज़ी से सीखना।

i. कक्षा में बच्चे की घर की भाषा का अधिकतम प्रयोग किया जाना चाहिए।
ii. बच्चों को विद्यालय में शिक्षण के दौरान घर की भाषा (मातृभाषा) का प्रयोग करने दिया जाना चाहिए।
iii. घर की भाषा और विद्यालय की भाषा अलग–अलग होने की स्थिति में बच्चों को स्कूल की भाषा की तरफ ले जाया जाना होगा, घर की भाषा के सहयोग से यह परिवर्तन सहज ढंग से होता है।
iv. बच्चों को अभिव्यक्ति का अधिकाधिक अवसर दिया जाना चाहिए, वे जिस भी भाषा में बोलते हैं उन्हें डांटा या फटकारा नहीं जाना चाहिए, बल्कि प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

छ) सीखने के अनुभवों का सम्बन्ध बच्चे के जीवन एवं संदर्भों से होना।

i. बच्चे के आस–पास के वातावरण व सामाजिक परिवेश के आधार पर बातचीत व गतिविधियाँ सम्पादित की जानी चाहिए।

ii. गीत, कहानियाँ, बालगीत, क्राफ्ट कार्य, खेल आदि पर आधारित शैक्षणिक गतिविधियाँ करायी जानी चाहिए।

ज) बच्चों की पूर्व–निहित समझ के आधार पर सीखने की प्रक्रिया का चयन करना।

i. गतिविधियाँ पूर्व ज्ञान, शारीरिक विकास एवं मानसिक परिपक्वता पर आधारित होनी चाहिए।

ii. घर की भाषा का उपयोग करते हुए बच्चे की पूर्व समझ को आधार बनाकर नए सम्बोधों से जोड़ना चाहिए।

झ) कक्षागत प्रक्रिया को विकास के सभी क्षेत्रों से जोड़ना–

i. शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक एवं सौंदर्य बोध विकास और गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

ii. कक्षा का वातावरण आनंददायक होना चाहिए।

iii. शुरूआती दिनों में बच्चों को पर्याप्त सुरक्षा के साथ प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

iv. कक्षा में नैतिक विचार व रचनात्मक सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार विकसित करने हेतु गतिविधियों द्वारा अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

खण्ड 4.2

शिक्षण योजना

शिक्षण सोच–समझ कर सम्पादित की जाने वाली प्रक्रिया है इसका सम्बन्ध बच्चे के सीखने से तथा सर्वांगीण विकास से होता है। सीखने की प्रक्रिया में योजना तैयार कर प्रभावी तरीके से सिखाया जा सकता है। शिक्षण योजना में प्राप्त किए जाने वाली दक्षताओं व सीखने के प्रतिफलों का निर्धारण, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, प्रदर्शन सामग्री की व्यवस्था एवं आवश्यक आकलन की योजना तैयार किया जाना जरूरी होता है। इसके साथ ही बच्चों के लिए आनन्ददायी गतिविधियाँ यथा वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, त्रैमासिक, साप्ताहिक तौर पर आयोजित की जा सकती है।

4.2.1 शिक्षण योजना के घटक

पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया – (पंचादि) इस क्रम को तैयार करने के लिए एक अच्छा मार्गदर्शक है, जिसे एक शिक्षक, शिक्षण के लिए योजना बनाने में अपना सकता है।

पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया

1. **अदिति (परिचय)** प्रथम चरण में बच्चे के पूर्व–ज्ञान से जोड़कर एक नए विषय का परिचय देते है। बच्चे सवाल पूछकर, खोजबीन कर और विचारों व अपने परिवेश में उपलब्ध जैविक/अजैविक वस्तुओं का ज्ञान शिक्षक के साथ साझा करते हुए नए विषय के बारे में आवश्यक जानकारी इकट्ठा करते हैं।

2. **बोध (अवधारणात्मक समझ)** दूसरे चरण में बच्चे खेल, पूछताछ, प्रयोग, चर्चा या पढ़ने के माध्यम से मूल अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को देखता है और बच्चों का मार्गदर्शन करता है। शिक्षक शिक्षण–योजना में बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली अवधारणाओं को सूचीबद्ध करता है।

3. **अभ्यास** तीसरे चरण में शिक्षक रोचक गतिविधियों के माध्यम से समझ और कौशल को मजबूत करने के लिए अभ्यास कराते हैं। शिक्षक अवधारणात्मक समझ और दक्षताओं की प्राप्ति को सुदृढ़ करने के लिए समूह कार्य या छोटी परियोजनाओं (Projects) का आयोजन कर सकते हैं।

4. **प्रयोग (अनुप्रयोग)** चौथा चरण बच्चे के दैनिक जीवन में अर्जित समझ को लागू करने के विषय में है, जिसे विभिन्न प्रयोगात्मक गतिविधियों के माध्यम से सीखा जा सकता है।

5. **प्रसार (विस्तार)** पाँचवाँ चरण अर्जित समझ को अभिव्यक्त करने के विषय में है जिसमें वह दोस्तों के साथ बातचीत के माध्यम से एक–दूसरे को नई कहानियाँ सुनाना, नए गाने गाना, मिलकर नई किताबें पढ़ना, एक–दूसरे के साथ नए खेल खेलना और सीखे गए प्रत्येक नए विषयों को साझा करता है।

4.2.2 योजना के लिए अन्य महत्वपूर्ण विचार

क) विविधतापूर्ण या अलग–अलग शिक्षण के लिए योजना–

एक शिक्षक को अपनी कक्षा–योजना इस तरह से बनानी चाहिए कि अलग–अलग रूचियों और क्षमताओं वाले बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से रूचिपूर्ण, प्रभावी व सरल तरीके से जोड़ सके ताकि बेहतर अधिगम को प्राप्त किया जा सके। बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया को तैयार किया जाना होगा जोकि अल्पावधि, मध्यावधि व दीर्घावधि के आधार पर तैयार की जा सकती है। ताकि भिन्न–भिन्न प्रकृति के बच्चों के लिए अलग–अलग सीखने की सामग्री, सीखने के तरीके और आकलन की प्रक्रिया का प्रयोग किया जा सके। इसके लिए ज़रूरी है कि शिक्षक बच्चों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें और उनके

विषय में अधिक से अधिक जानकारी जुटायें, (जैसे– वे एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, वे किसी, खास खेल को ही क्यों चुनते हैं, वे आपस में किस प्रकार की बातचीत करते हैं, वे सीखने की वस्तुओं के साथ कैसे काम करते हैं, वे मौखिक भाषा का उपयोग कैसे करते हैं और लिखित शब्द पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होती है।)

ख) सम्बलन और उत्तरदायित्व से क्रमिक मुक्ति (Scaffolding and Gradual Release of Responsibility)

बच्चों को सीखने के लिए सतत् प्रोत्साहन व सहयोग (सम्बलन) की आवश्यकता होती है। सम्बलन का अर्थ शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान मदद, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन देना है। यह सम्बलन बच्चे को स्वयं करके सीखने हेतु आत्मनिर्भर बनाने को ध्यान में रखकर प्रदान किया जा सकता है। इसमें शिक्षक पहले विचारों या कौशलों की व्याख्या करते हैं, उसके बाद बच्चे और शिक्षक उन्हीं विचारों और कौशलों पर एक साथ काम करते है। जहाँ शिक्षक मार्गदर्शित (Guided) सहयोग प्रदान करता है और अन्त में बच्चे व्यक्तिगत रूप से स्वत्रंत अभ्यास करते हैं।

- **ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति की प्रकिया**

I. **पहला चरण**: मैं करूँ (I do)– शिक्षक मुख्य विचारों या कौशलों का प्रदर्शन / व्याख्या करती है।
ii. **दूसरा चरण**: हम करें (We do)–शिक्षक और बच्चे विचारों या कौशलों पर एक साथ काम करते हैं।
iii. **तीसरा चरण**: आप करें (You do)– बच्चे स्वत्रंत रूप से विचारों या कौशलों पर अभ्यास या काम करते हैं।

ग) विद्यालय और घर में सीखने की निरन्तरता / गृह आधारित शिक्षण (Home Based Learning)

वर्तमान परिदृश्य में गृहकार्य शब्द से हमारे दिमाग में बच्चें की घण्टों तक पुस्तिका में कई पृष्ठ लिखने की तस्वीर आती है, जिसका बुनियादी स्तर पर प्रयोग किये जाने से बचना होगा।

अभिभावक का सशक्तिकरण–

i. अभिभावक को प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता करने हेतु जानकारी प्रदान करना।

ii. विद्यालय / केन्द्र में होने वाली गतिविधियों से अभिभावक को परिचित कराना तथा घर पर बच्चे को केन्द्र में करायी जाने वाली गतिविधि की निरन्तरता हेतु प्रोत्साहित करना।

iii. आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री / शिक्षक बच्चे की पारिवारिक परिस्थिति तथा परिवेश की स्थिति से परिचित हो तथा उसके अनुसार बच्चे के साथ व्यवहार किया जाय। उदाहरण –जैसे अगर केन्द्र में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री गतिविधि करायें या कोई ऐसा भावगीत जिसमें साफ–सफाई पर बात की जाए (जैसे गतिविधि– Wash your hands) तो बच्चा घर पर इसकी पुनरावृत्ति करता है।

iv. अन्य गतिविधि जैसे बच्चा अपने दादा–दादी से उनका नाम और उनके माता–पिता के नाम पूछे।

v. बच्चा पुस्तकालय से एक कहानी की किताब घर ले जाने हेतु शिक्षक से प्राप्त करे तथा घर पर अभिभावक के साथ उसे देखे, चित्रों को निहारें, शब्दों को पढ़ने तथा समझने की कोशिश करे तथा केन्द्र में भी चर्चा करे।

जब तक शिक्षक बच्चों की पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि को नहीं जानेगा अथवा पहचानेगा तब तक विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण एवं घर में तारतम्यता नहीं बन पायेगी।

खण्ड 4.3

शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण करना

इस विषय को हम एक कहानी के माध्यम से समझ सकते हैं।

आज मुझे लग रहा था कि शिक्षक के पास एक जादुई छड़ी होनी चाहिए जिसे घुमाते ही सारे काम एक साथ हो जाएं। मैं आज अपने केंद्र पर इस उत्साह के साथ गई थी कि बच्चों को एक नई गतिविधि कराऊँगी। अभी मैंने बच्चों को एक गोल घेरे में बैठाकर ताली बजवानी शुरू की ही थी कि तभी मयंक का हाथ शालिनी के मुँह पर लग गया और शालिनी रोने लगी। मैंने शालिनी को गोद में उठाया और उसे खुशी के कोने (Toy Corner) पर बैठाकर एक गुड़िया खेलने को दी। गुड़िया पाकर शालिनी चुप हो गयी। मैंने बाकी बच्चों के समूह बनाकर, मिश्रित दालों को छांटकर ढेरी बनाने वाली गतिविधि शुरू करवाई। सभी बच्चे अपने नन्हें–नन्हें हाथों से दालें अलग–अलग करके ढेरी बनाने लगे लेकिन सार्थक यह गतिविधि नहीं कर पा रहा था। मैं उसके पास गई तो पता चला कि उसके दाहिने हाथ में कुछ परेशानी है। मैंने सार्थक को ढेरी बनाने में सहायता की ताकि वह बाएं हाथ का उपयोग आवश्यकता पड़ने पर कर सके। सभी बच्चों ने मिलकर ढेरी बनाने का काम पूरा किया। मैंने सबके लिए तालियां बजवायीं और एक भावगीत करवाया। सभी बच्चे प्रफुल्लित होकर अपने घर गए। मैंने छुट्टी के बाद सार्थक के घर जाने का विचार किया, जिससे पता चल सके कि उसके हाथ में क्या हुआ था।

इस कहानी से कुछ विचार

शालिनी को चोट लगने पर शिक्षिका को उसकी माँ जैसी भूमिका निभानी पड़ी। यह सब देख कर बच्चों को समझ आया कि शिक्षिका उनकी परवाह करती है और समय पर उनकी मदद भी करती है इससे पता चलता है कि –

- बच्चों ने सीखा कि हमें किस प्रकार दूसरों का ध्यान भी रखना चाहिए।
- शिक्षिका को सिखाने के कार्य को जारी भी रखना था इसलिए उसने पिछले दिन करवायी गई गतिविधि को जारी रखा। नए सन्दर्भ की जानकारी देने के साथ–साथ पिछले वाले कार्य को मजबूती प्रदान करनी थी। शैक्षणिक दृष्टिकोण से अभ्यास पर ध्यान देना और ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना बेहद महत्वपूर्ण है।
- सार्थक को गतिविधि जारी रखने के लिए शिक्षिका ने बाएं हाथ का विकल्प दिया। साथ ही अन्य सभी बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया।

बच्चों को सहजता, संवेदनशीलता, पोषण, प्यार एवं सुरक्षित वातावरण की हमेशा ज़रूरत होती है। एक शिक्षक को धैर्य, अपनत्व, समझदारी, शांत ही नहीं अपितु बच्चों की देखभाल करने वाले गुणों से युक्त भी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त बच्चों को समय व प्यार देने की आवश्यकता होती है। बच्चों को आपस में जुड़ाव महसूस हो सके तथा वे एक दूसरे पर भरोसा कर सकें। वे शिक्षक के हस्तक्षेप के बिना आपस में मिलकर कार्य कर सकें, जो बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर करता है।

4.3.1 बच्चों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण में शिक्षक की भूमिका

भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक रूप से शिक्षक एवं बच्चों के बीच एक सुरक्षित एवं सकारात्मक सम्बन्ध बनाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिससे शैक्षणिक प्रक्रिया सुगम, सरल व रोचक हो जाती है। ऐसे सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण हेतु कुछ महत्वपूर्ण तरीके इस प्रकार हो सकते हैं। –

क) बच्चे के विषय में सम्पूर्ण जानकारी रखना–बच्चों का घर–परिवार, उनके माता–पिता, भाई–बहन, पालतू जानवर, उनकी रुचियां, पसंद, नापसंद आदि।

ख) बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनना– बच्चों को सुने जाने के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जाने चाहिए जैसे उनकी पसन्द की कहानियां, घर या आस–पड़ोस के बारे में उनकी राय और रुचियों के अनुरूप उनके विचार, जो आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करते हैं।

ग) बच्चों की अवलोकन क्षमता एवं सहज प्रतिक्रियाओं को महत्व देना– बच्चों के साथ निरन्तर बातचीत करने एवं सूक्ष्म अवलोकन से बच्चों के बारे में, उसके सोचने–समझने, तथ्यों में अंतर करने के कौशल को जान पाते हैं। उन्हें समस्या समाधान एवं विश्लेषण करने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

घ) बच्चों के घर से संपर्क करना

बच्चों के साथ आत्मीय व घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने हेतु उनके घर व अभिभावकों से निरन्तर संपर्क एवं संवाद किया जाना चाहिए। यह उनके घर के माहौल एवं पृष्ठभूमि को समझने के अवसर प्रदान करता है। विद्यालय के सेवित क्षेत्र के अंतर्गत शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने और अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर अनौपचारिक बैठकों का आयोजन किया जाना चाहिए।

ड.) बच्चों की भावनाओं और मनोदशा को पहचानना व प्रतिक्रिया देना

बातचीत, कहानी, संगीत एवं कला सभी एक बेहतर ढंग से सीखने के माध्यम होने के साथ बच्चों की भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने के माध्यम भी हैं। शिक्षक को विभिन्न माध्यमों से बच्चों के भावनात्मक विचारों व मनोदशा को समझने के लिए तत्पर रहना चाहिए ताकि उन्हें संरक्षित व आत्मीयपूर्ण शैक्षणिक वातावरण मिल सके।

4.3.2–शिक्षक द्वारा बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में सहायता करना

शुरुआती कक्षाओं में गतिविधियां एवं खेल सीखने में कई तरह से मदद करते हैं। शिक्षक इसमें मार्गदर्शक व सहयोगी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं–

क) ध्यानपूर्वक सुनना– बच्चों की बातचीत, गतिविधियाँ एवं कक्षागत प्रक्रियाओं को ध्यान से सुनना, उनके द्वारा कही गयी असहज बातों को सीधे नकारने के बजाय उनके साथ संवाद करके, उनकी गलत अवधारणा के विषय में बातचीत के माध्यम से सही अवधारणा स्पष्ट करना। ऐसी बातचीत सम्बोध या शैक्षणिक प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करती है।

ख) स्वयं करके दिखाना – निरंतर अवलोकन एवं अनुकरण बच्चों की समझ विकसित करते हैं। शिक्षक विषय की समझ विकसित करने के लिए स्वयं प्रदर्शित करेगा तथा बच्चों को खेल–खेल में स्वयं करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करेगा। उदाहरणार्थ – अलग–अलग रंगों की गेंदों के साथ बच्चों को खेल–खेल में रंगों की समझ का बोध कराया जा सकता है। शिक्षक लाल रंग की एक गेंद दिखाएं तो बच्चा भी लाल रंग की एक गेंद उठाएगा। यदि शिक्षक हरी एवं नीली गेंद दिखाए तो बच्चा भी हरी एवं नीली गेंद उठाएगा। इस गतिविधि से बच्चों को समान–असमान एवं रंगों की पहचान, गिनती सीखना या अनुकरण करना जैसी कई बातों को सीखने के अवसर प्रदान होते हैं।

ग) समस्याओं का समाधान एवं प्रश्न पूछना

बच्चे लगातार अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाते हैं। ऐसे ही अनुप्रयोगों में तिल्लियों से चित्र बनाना, ब्लॉक्स का प्रयोग, चुनौतीपूर्ण खेल खेलना, पहेली सुलझाना आदि आते हैं। इस दौरान उनके प्रश्न या उनसे किए जाने वाले प्रश्न बच्चों की समझ विकसित करने एवं सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में शिक्षक की मदद करते हैं।

घ) सोचने को प्रेरित करना (Provoking)

बच्चे विभिन्न खेल खेलते हैं जैसे रेत अथवा मिट्टी में खेलकर अपनी कल्पनाओं को सार्थक करने का प्रयास करते हैं। बच्चे अपने आस–पास जो भी देखते और सुनते हैं उनके आधार पर बनी बनाई धारणाओं को अपनाते हैं इसलिए शिक्षक को ऐसा वातावरण बनाने में सक्रिय रहना चाहिए जिसमें बच्चे तार्किक सोच के साथ वैकल्पिक दृष्टिकोण को अपना सकें।

ङ) शोध, करना

शिक्षकों को किसी संबोध के विषय में जानकारी देने हेतु पूर्व नियोजित योजना बनानी होती है और सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सम्पादित की जाने वाली बहुत सी बातों का पूर्व निर्धारण भी करना होता है। कौन सी वस्तुओं के विषय में बताया जाए, उनसे उन वस्तुओं के प्राप्ति स्थानों की जानकारी लेना या ऐसे सभी प्रश्न जो बच्चों से पूछे जाने होंगे, इन सभी बातों का निर्धारण करने के लिए पूर्व तैयारी करनी होगी। शिक्षक द्वारा अच्छी योजना बनाने के लिए उसका खोजी दृष्टिकोण, खोजपूर्ण प्रवृति का होना और बच्चों में भी जिज्ञासु प्रवृति विकसित करने सम्बन्धी गतिविधियों को संचालित करने के लिए शिक्षकों को स्वयं शोध करना आवश्यक है।

च) बच्चों को वैचारिक रूप से स्वत्रंत बनाना

बच्चों को सिखाने के अवसर प्रदान करते हुए वैचारिक स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जिससे बच्चा अपनी भावनाओं को सही प्रकार से अभिव्यक्त कर सके। प्रभावी शिक्षण योजना बच्चों को स्वतंत्र बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाने में सहायक होती है। पहले उनके साथ मिल कर काम करें, फ़िर उन्हें एक नये कौशल या एक नई समझ में आत्मविश्वासपूर्ण बनाने के लिए धीरे–धीरे सहयोग को कम करते जायें।

4.3.3 शिक्षक, परिवार और समुदाय के बीच सम्बंध

बच्चे सबसे पहले अपने घर से सीखना प्रारम्भ करते हैं। बच्चों के सीखने और उनके विकास में सहयोग करना विद्यालय एवं परिवार की साझा जिम्मेदारी होती है। अभिभावक को यह समझना होगा कि सीखने की प्रक्रिया में उनका निरन्तर सकारात्मक सहयोग देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसे हम एक कहानी के माध्यम से समझ सकते हैं।

सोहन जिसकी उम्र 4 वर्ष है रोज विद्यालय आते ही सो जाता है और भोजन करके घर चला जाता है। इस बात को गहराई से जानने के लिए शिक्षिका द्वारा उसके घर में भ्रमण किया गया। चलते–चलते डेढ़ घंटा हो गया तब जाकर सोहन का घर आया तब शिक्षिका को पता चला कि बच्चे कितनी दूर से चलकर विद्यालय आते हैं जिससे वे थक जाते हैं।

जब शिक्षक बच्चे के घर के माहौल को समझते हैं तो वे बच्चे के लिए बेहतर सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में सक्षम होते हैं। शिक्षक और परिवार के विचार साझा होने और एक साथ काम करने से बच्चे को सीखने के बेहतर अवसर मिलते हैं। अभिभावक की सक्रिय व सकारात्मक भागीदारी से बच्चों को घर पर भी सीखने का वातावरण मिलता है और उनकी सीखने की गति अधिक तीव्र हो जाती है।

खण्ड 4.4

खेलों के जरिए सीखना- बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला, शिल्प

बच्चे अक्सर रोचक और मनोरंजक वस्तुओं की ओर अधिक आकर्षित होते हैं और इन्हीं चीजों के माध्यम से अधिक सीखते हैं। इस प्रकार बच्चों को विभिन्न प्रकार की खेल आधारित मनोरंजक वस्तुओं के माध्यम से अधिक से अधिक सिखाया जा सकता है। जैसे – बातचीत, कहानी, खेल–खिलौने, गीत, संगीत, कला, शिल्प इत्यादि।

4.4.1 बातचीत (Conversation)

बातचीत सीखने एवं सिखाने की एक सरल, सुगम व आसान विधि है। बातचीत से बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके तो मिलते ही हैं, साथ ही उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इससे बच्चा अपनी समझ बनाता है और सीखता है तथा अपने विचारों और भावों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर पाता है ।

बातचीत दो प्रकार की होती है

क) **खुली बातचीत (Free Conversation)** – जब बच्चा परिवार से दूर शैक्षणिक संस्थान में आता है तो वह सीखने की प्रक्रिया में असहज महसूस करता है। ऐसे में शिक्षक बच्चे से उसकी घर की भाषा में मैत्रीपूर्ण संवाद कर सकते हैं जिससे उसके साथ एक विश्वास का रिश्ता तैयार होगा और वह सहजता से विद्यालय के वातावरण से जुड़ा रहेगा।

राहुल जब पहली बार बालवाटिका में आया तो वह सहमा हुआ था। सबसे पहले आनंदी मैडम ने उसे प्यार से गोद में उठाया, उसे पुचकारा व उसको खेलने के लिए गेंद दी। फिर राहुल धीरे–धीरे सहज होने लगा। जब राहुल सहज हुआ तब मैडम ने उससे उसका नाम पूछा, उसकी प्रशंसा की, उसके माता–पिता व घर के विषय में पूछा। राहुल को एक सेब देते हुए उससे और बातचीत की। जैसे– उसके भाई का नाम क्या है ? बहन कौन है ? इत्यादि। अब राहुल भी शिक्षिका के साथ सहज होने लगा था।

शिक्षक खुली बातचीत के दौरान बच्चों को घेरे में एकत्रित कर उनकी दिनचर्या या देखी गई किसी घटना पर आसान सवाल पूछ कर उनके अनुभवों के विषय में बातचीत कर सकता है।

ख) नियोजित बातचीत (Structured) – शिक्षक द्वारा किसी निश्चित उद्देश्य के साथ बातचीत करना नियोजित या व्यवस्थित बातचीत कहलाती है। वातचीत के विषय अक्सर उनकी दैनिक जीवन की घटना या उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति से संबंधित दिए जाने चाहिए।

"सर्कल टाइम" (Circle Time) की गतिविधि के दौरान नियोजित बातचीत–

यह गतिविधि आमतौर पर सुबह के समय बच्चों को एक साथ घेरे में इकट्ठा करने और किसी भी एक शीर्षक पर बात करने और सोचने के लिए होती है। शीर्षक अक्सर बच्चों के दैनिक जीवन की घटनाओं और उनकी भावनाओं के विषय में होते हैं। जब सभी बच्चे शिक्षक के साथ एक घेरे में बैठकर बात करते है, तो इस तरह की बातचीत करने को सर्कल टाइम कहा जाता है। बच्चे एक घेरे में बैठकर आनंदित होते हैं जिससे सामूहिकता की भावना पैदा होती है। इससे उनमें प्रेम, सहनशीलता एवं घनिष्ठता बढ़ती है। शिक्षक को इस अवधि के दौरान प्रत्येक बच्चे का सूक्ष्म अवलोकन करना चाहिए। प्रतिदिन सर्कल टाइम का एक सेशन करना अच्छा रहेगा। सर्कल टाइम बच्चों की एकाग्रता की क्षमता के अनुरूप होना चाहिए। फ्लैश कार्ड के साथ प्रस्तावित प्रश्न पूछने चाहिए इससे बच्चों में सहभागिता व रोचकता बढ़ती है।

बच्चों को केन्द्र में रखकर विशिष्ट शीर्षक चुने जाने चाहिए, जो बच्चों की भाषा, जानकारी और शीर्षक की समझ को बढ़ाने में मदद करता हो। जहाँ तक सम्भव हो प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग करके किसी खास विषय (जैसे सब्जियों) के बारे में बातचीत की जा सकती है। सब्जियों के बारे में बात करते समय वास्तविक सब्जियों का इस्तेमाल किया जा सकता है ताकि बच्चे उन्हें देख सकें, उन्हें महसूस कर सकें, उनके आकार, रंग, बनावट के विषय में बात कर सकें और उनका स्वाद भी ले सकें। शिक्षक आगे की व्याख्या करने के लिए फ्लैश कार्ड का भी उपयोग कर सकते हैं और यहाँ तक कि सब्जियों के इर्द–गिर्द कहानी भी बना सकते हैं। वास्तविक वस्तुओं के उपबन्ध न होने की दशा में खिलौनों के माध्यम से भी समझाया जा सकता है।

शिक्षिका हाथ में कुछ फ्लैश कार्ड लिए कक्षा में प्रवेश करती है। बच्चे खुश और उत्साहित नजर आ रहे हैं। वह बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर फ्लैश कार्ड सामने रखती है। इनमें बाघ, बकरी, गाय, मुर्गी, आदि के चित्र बने हैं। शिक्षिका बच्चों से एक फ्लैश कार्ड उठाने को कहती है और पूछती है कि यह किसका चित्र है? क्या तुमने कभी इसे देखा है ? यह कैसी आवाज निकालता है ? यह क्या खाता है? कहाँ रहता है? बच्चे स्थानीय परिवेश के शब्दों का इस्तेमाल करते हुए अपनी बात को सहजता से रख पा रहे हैं। सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

दिखाओ और बताओ सत्र (Show and Tell)

'दिखाओ और बताओ' अवधारणा को भारत और दुनियाभर में सार्वजनिक रूप से बोलने और सुनने के कौशल को विकसित करने की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में देखा जा रहा है जिससे शुरुआती वर्षों में बच्चों के बीच मेलजोल और बातचीत को बढ़ावा देने में एक बड़ी सफलता मिली है। प्रारम्भिक अवस्था में सभी बच्चों को सप्ताह में कम से कम एक बार अपने शिक्षक की देख–रेख में 'दिखाओ और बताओ' सत्र में भाग लेने का अवसर दिया जाना चाहिए।

इसमें बच्चे और शिक्षक अपने पसंदीदा खिलौने, खेल, पारिवारिक फोटो, फूल, किताबें, कहानियाँ तथा निजी किस्से जैसे परिवार के सदस्यों, दोस्तों, त्योहारों, अनुभवों, उस सप्ताह में पसंदीदा पाठ, विषय शामिल करते हैं और उनके बारे में कक्षा में कुछ समय तक बताते हैं। यह 'दिखाओ और बताओ' सत्र शुरू में बच्चों के घर की भाषा में हो सकता है, लेकिन आगे चलकर इसमें उस सीखने की भाषा को शामिल किया जाना होगा, जो बच्चे सीख रहे हैं। सत्र को अधिक रूचिकर और संवादात्मक बनाने के लिए बच्चे और शिक्षक भी प्रत्येक प्रस्तुति के दौरान प्रोत्साहित करते हुए सवाल पूछेगें और टिप्पणी देगें।

4.4.2 कहानी सुनाना (Story Telling)

कहानी बच्चों के मन को भाने वाला एक रूचिकर विषय होती है। अक्सर देखा जाता है कि बच्चों को हमेशा दादा–दादी, नाना–नानी से कहानियाँ सुनने में बड़ा आनंद आता है। कहानियाँ उनकी कल्पना के द्वार खोलने के साथ–साथ प्रेरणा का कार्य भी करती हैं। अतः इस स्तर पर बच्चों को स्थानीय कहानी उन्हीं की भाषा में सुनाया जाय तो वे अधिक रूचि से भाग लेंगे।

कहानियाँ, विशेष रूप से सामाजिक सम्बंधों, नैतिक मूल्यों एवं भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के प्रति जागरूकता के बारे में सीखने के लिए एक अच्छा माध्यम है। कहानियाँ सुनते समय बच्चे नए शब्द सीखते हैं जिससे उनकी शब्दावली का विस्तार होता है और साथ ही वे वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। कहानी बच्चे द्वारा अधिक समय तक ध्यान केंद्रित रखने में सहायक होती है। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कहानियों के माध्यम से बच्चों को उनकी संस्कृति और सामाजिक मानदंडों से परिचित कराया जा सकता है। इस प्रकार से वे अपने परिवेश के प्रति अधिक जागरूक और संवेदी बनेंगे।

आज स्कूल पहुँचते ही हमने देखा कि योगेश ने गमले से पौधा उखाड़ दिया। जुवेदा शिकायत लेकर मेरे पास पहुँची। तब मैंने सभी बच्चों को इकट्ठा करके एक खेल खिलाया और फिर कहानी सुनाई। आओ एक खेल खेलें। जुवेदा! आप एक पेड़ हैं और योगेश आपने जुवेदा को उसी पौधे की तरह उखाड़ना है। बाकी सभी बच्चे मेरे साथ जुवेदा (जो कि पेड़ बनी है) को उखाड़ने से बचाएंगे। सभी बच्चों ने मेरे साथ मिलकर एक घेरा बनाया और जुवेदा उस घेरे के अंदर थी। योगेश जुवेदा को जैसे ही पकड़ने जाता तो सभी बच्चे मेरे साथ मिलकर जुवेदा पर ऐसे चिपक जाते कि योगेश जुवेदा को छू न पाए। बच्चों ने इस प्रक्रिया में बहुत आनंद लिया फिर मैंने उन्हें बैठाकर यह कहानी सुनाई।

हमारे राज्य उत्तराखण्ड के चमोली जिले के रैणी गाँव में एक बार जंगल काटने वाले ठेकेदार के लोग गाँव में जंगल काटने आए। वे ऐसे समय पर जंगल काटने आए जब गाँव के सयाने पुरुष गांव से बाहर थे। उसी गाँव की एक महिला गौरा देवी सभी गाँव की महिलाओं को अपने साथ लेकर पेडों को कटने से बचाने के लिए जंगल गई और वहां वे सभी उन पेड़ों पर इस तरह चिपक गई कि जंगल काटने आए लोग उन पेड़ों पर आरी नहीं चला सके। इस तरह गौरा देवी ने अपने गाँव के जंगल को कटने से बचा लिया।

कहानियाँ सुनने के अलावा बच्चों को कहानियाँ सुनाने का भी अवसर दिया जाना चाहिए। बच्चे पहले से सुनी–सुनाई या अपने द्वारा सोची गई कोई कहानी भी सुना सकते हैं। शिक्षक जब भी कोई कहानी सुनाना शुरू करे तो बच्चों से उसे पूरा करने के लिए कह सकता है। कहानियां आयु के अनुसार, परिचित भाषा में और बच्चों के लिए रुचिकर होनी चाहिएं। कहानियों को कक्षा शिक्षण में जोड़ा जाना चाहिए। बच्चों को पारम्परिक भारतीय बोधात्मक कहानियाँ जैसे पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश की कहानियाँ, अन्य दंतकथा और प्रेरक कहानियाँ यथा अरेबियन नाइट्स, सिन्दबाद की यात्रा को सुनने–पढ़ने और सीखने के अवसर भी दिए जाने चाहिए। कहानी सुनाने के बाद शिक्षक को आकलन करना चाहिए कि बच्चे ने कहानी की विषयवस्तु को समझा है या नहीं। उसके लिए शिक्षक कहानी के पात्रों और उनके विशेष व्यवहार पर चर्चा कर सकते हैं। उसके परिणाम एवं सही और गलत कार्यों के बारे में बातचीत कर सकते हैं। उससे सम्बन्धित चित्रकारी, रोल प्ले और नाट्य रूपांतरण आदि गतिविधियाँ भी की जा सकती हैं।

शिक्षक के लिए:– छोटे बच्चे कहानी को बार–बार सुनना पसंद करते हैं। मौखिक रूप से कहानियाँ सुनाते समय शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

- कहानी को हाव–भाव, उतार–चढ़ाव के साथ एवं रुचिपूर्ण ढंग से सुनाया जाना चाहिए।
- शिक्षक के पास कहानियों का अच्छा संग्रह हो।
- कहानी सुनाने के लिए फ्लैश कार्ड, मुखौटे या कठपुतली का प्रयोग कहानी को अधिक रोचक बनाता है।
- कहानी सुनाते समय किताब का प्रयोग किया जाना चाहिए जिसमें बच्चे चित्रों को देखने, किताबों को छूने, पन्ने पलटने में आनंद का अनुभव करते हैं और सीखने के लिए प्रेरित होते हैं।
- शिक्षक कहानी चित्र पुस्तिका में अपनी उंगली से चित्रों की ओर इशारा करते हुए कहानी पढ़ा व सुना सकते हैं।

4.4.3. खिलौने पर आधारित शिक्षण (Toy-Based Learning)

खिलौने खेल–आधारित शिक्षणशास्त्र का सशक्त माध्यम हैं। बच्चे वास्तविक वस्तुओं के साथ काम करके प्रत्यक्ष अनुभव

करते हुए सीखने की कोशिश करते हैं, खोजबीन करते हैं और सीखते हैं। बच्चों के खिलौने और उसमें जोड़–तोड़ के साथ खेलने के वातावरण से अन्वेषण की भावना विकसित होती है। खिलौने चाहे सरल हों या जटिल, इनसे बच्चे रुचिपूर्ण और सहज तरीके से सीखते हैं तथा अभ्यास कौशल के साथ–साथ बच्चों में ज्ञानेन्द्रिय विकास एवं मोटर कौशल का विकास होता है। जिन खिलौनों में बच्चों को धक्का देना, खींचना, पकड़ना, चुटकी बजाना, मोड़ना या कुछ करने के लिए अपने हाथों और शरीर का उपयोग करना पड़ता है, ऐसी खिलौने आधारित गतिविधियाँ बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब बच्चे ब्लॉक्स, गुड़िया, जानवरों के खिलौने, गेंद, कार आदि खिलौनों का उपयोग कर रहे होते हैं तो वे अपने दिमाग में कहानियाँ बनाना और परिदृश्य को जीना शुरु कर देते हैं।

4.4.4. गीत और तुकबंदियाँ– (Songs and Rhymes)

बच्चे गीत और तुकबदियों के माध्यम से भी विभिन्न अवधारणाओं को समझते हैं। इनसे शब्दावलियों का विकास, अपने विचारों को भावपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करने का कौशल और सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है। गीतों के माध्यम से बच्चों में एकता और सहयोग की भावना का विकास होता है किंतु सबसे महत्वपूर्ण है कि ये गीत एवं भावगीत शिक्षक के मार्गदर्शन में स्थानीय बोली से प्रारम्भ करते हुए औपचारिक अन्य भाषाओं में कराये जाने चाहिए।

गीत

उत्तराखंड मेरी मातृभूमि
मातृभूमि यो मेरी पितृभूमि
ओ भूमि तेरी जय जयकारा
म्यर हिमाला ....
ख्वार मुकुटो तेरो हयू झलको
छलकी गाड गंगा की धारा
म्यर हिमाला .....
बद्री केदारा का द्वारा छना
म्यर कनखल हरिद्वारा
म्यर हिमाला ....

लोरी

घुघूती बसूती
क्या खांदी
दुद भाती
के उन्दा
कांसैउ थकुली
कु देली
ब्ये मेरी।

4.4.5 संगीत एवं शारीरिक गतिविधि (Music and Movement)

संगीत जीवन को आनंदमयी बनाता है। बच्चे सहज भाव से संगीत सुनते हैं और गुनगुनाने का प्रयास करते हैं। घरों में बच्चे अपने दादा–दादी, नाना–नानी और माँ से लोरी सुनते हुए बड़े होते हैं। साथ ही बच्चे के परिवेश में संगीत के कई स्रोत होते हैं जैसे ढोल की थाप, पक्षियों का कलरव, नदी की कल–कल, झरने की झर–झर आदि। बच्चे खाली टिन की आवाज़, थाली, कटोरी–चम्मच, ढपली और खाली डिब्बों को बजाते हुए धुन के साथ ताल मिलाते हैं और आनंदित होते हैं।

गीत

बरखा दीदी इथकै आ
घाम भिना उथकै जा
घाम पानी घाम पानी, स्यालोक को ब्याह
कुकुर बिरालु बरयाती ग्या
मैं थे कुनान दच्छिना ग्या
मैं थे कुनान दच्छिना ल्या

लोरी

काबुडी क्वा छ
डाला में भव्वा छा
उखल में पिन्नां छ
देली मा आगा छ
देखिए आमा बालों
को पिन्ना खालो

4.4.6 कला और शिल्प (Art and Craft)–

बच्चों को विभिन्न रंगों की दुनिया में रहने एवं विभिन्न वस्तुओं से खेल की सामग्री बनाने में बहुत आनन्द आता है। कला और शिल्प के माध्यम से बच्चे अपने विचारों और भावनाओं को सहज एवं सशक्त तरीके से व्यक्त करते हैं।

क) चित्रकारी – बच्चा चित्रकारी करके अपने मनोभावों को कैनवास या कागज पर उतार सकता है, जो बच्चे के संवेगात्मक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके लिए कागज, क्रेयॉन, स्केच पेन, रंगीन या काली पेंसिल या चारकोल का प्रयोग किया जाता है। बच्चे स्लेट, ब्लैकबोर्ड, फर्श व पत्थरों पर भी चित्रकारी या रंगोली बना सकते हैं। ब्लैकबोर्ड और फर्श का लाभ यह है कि इसमें बच्चों को बड़े चित्र बनाने के लिए अधिक स्थान मिल जाती है। सफेद कागज और विभिन्न रंगों के क्रेयॉन के बजाय, यदि बच्चों को काला कागज और पीले या सफेद क्रेयॉन दिए जाते हैं, तो जो चित्र बनते हैं वे अलग और अनोखे होते हैं। छोटे बच्चे जो पहली बार क्रेयॉन पकड़ना सीखते हैं, वे घिसना शुरू करते हैं और धीरे–धीरे मन मुताबिक आकार देने का प्रयास करते हैं। चित्रकला भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ हाथ एवं आँखों के समन्वय के लिए एक उपयोगी गतिविधि है।

ख) रंगाई – रंगाई बच्चों द्वारा की जाने वाली एक रोचक, क्रियात्मक एवं सृजनशील गतिविधि है, जिसे बच्चे बड़े चाव से करते हैं। कागज, फर्श, पत्थर या कपड़े पर

गीले रंग के प्रयोग से पेंटिंग बनाने के प्रयास किए जाते हैं। बच्चे बाजार में उपलब्ध कूची (ब्रश) का उपयोग कर सकते हैं, या शिक्षक लकड़ी और कपड़े पर कपास या बबुला(झाड़ू बनाने की घास) और ऊन से पेंटिंग बना सकते हैं। अंगूठे की छपाई, हथेली की छपाई, बड़ी बोतल के ढक्कन, ब्लॉक, सब्जियों (जैसे आलू या भिण्डी) जैसी अन्य सामग्री के साथ छपाई भी की जा सकती है। बच्चे ब्रेडप्रिंटिंग, फिंगर प्रिंटिंग के साथ–साथ फिंगर पेंटिंग का भी आनन्द लेते हैं।

ग) **ऐपण–** उत्तराखण्ड राज्य के अंचल कुमाँऊ में मांगलिक एवं धार्मिक उत्सवों में घर व दीवारों, खोलियों, मन्दिरों एवं चौखटों, चौक एवं चौकी में भीगे चावल को पीस कर व गेरू के साथ बनायी जाने वाली रंगाई कला 'ऐंपण' कहलाती है। इसमें चावल के आटे को भिगाकर गेरु के साथ विद्यालय के फर्श या चौकी पर ऐंपण की विधा सिखायी जा सकती है। शिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठा कर गेरु के घोल से थोड़ी थोड़ी दूरी पर विभिन्न आकृतियां बना सकते हैं, जिस पर बच्चे चावल के आटे के घोल में हथेली डुबोकर आकृतियां बना सकते हैं।

घ) **शिल्पकला–** अपने परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की सहायता से उपयोग किये जाने वाली खेल–खिलौने व सामग्री तैयार करने की विधा शिल्पकला कहलाती है। बाल्यावस्था में इस विधा में बच्चों को अपने आस–पास की स्थानीय वस्तुएं यथा कागज, पत्ते, लकड़ी, सूखे फूल, शादी के पुराने कार्ड, आम की गुठली, रीठा, रंगीन कागज, कपड़ों की कतरन, दालें, बीज आदि का प्रयोग कर शिल्पकला के अन्तर्गत विभिन्न खिलौने व वस्तुएँ बनाना सिखाया जा सकता है, जिससे शिल्प कौशल में बच्चों की रूचि बढ़ाई जा सकती है।

ड) **बर्तन बनाना**– गीली मिट्टी के इस्तेमाल से मिट्टी की ढलाई (Clay moulding) कर विभिन्न प्रकार के बर्तन बनाए जा सकते हैं। खाद्य रंग मिलाकर या बिना रंग मिले गूंथे गये आटे से भी बर्तन बनाने की कला सिखायी जा सकती है। इस गतिविधि से बच्चे मिट्टी से जुड़ते हैं उनके संवेदी अंगों का उत्तरोत्तर विकास होता है।

च) **ऑरेगेमी आर्ट (Oragami Art)**– बच्चे द्वारा कागज को विभिन्न तरीकों से मोड़कर विभिन्न प्रकार की सामग्री या आकृति तैयार करने की कला को ऑरेगेमी आर्ट कहते हैं। यह सूक्ष्म मोटर कौशल एवं हाथ और आँखों के समन्वय और रचनात्मकता को बढ़ाने के साथ–साथ एकाग्रता बढ़ाता है।

4.4.6.1 कला और शिल्प कार्य के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें–

ये सभी गतिविधियाँ स्वतंत्र (Open Ended) एवं निर्देशित होनी चाहिए जो शिक्षक अथवा बच्चे की देख–रेख करने वालों की निगरानी में करायी जानी चाहिए। बच्चों से धारदार उपकरणों का उपयोग सावधानीपूर्वक करवाया जाना चाहिए।

क) स्वतन्त्र कलात्मक अभिव्यक्ति– बच्चों में उनकी कल्पना, सृजनशीलता एवं शिक्षक के दिशानिर्देशित अभ्यासों के माध्यम से धुन, गीत, अभिनय, नाटकीय खेल, नृत्य और रचनात्मक कलाकृतियों के निर्माण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कलात्मक अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में सही और गलत, अच्छा और बुरा की धारणाओं से बचना चाहिए। इसके बजाय बच्चे के विभिन्न दृष्टिकोणों, अनुभवों, अभिव्यक्ति और कल्पना को प्रोत्साहित किया जाना होगा और शाबाशी दी जानी चाहिए।

ख) सामग्रियों, माध्यमों और उपकरणों की खोज एवं उपयोग– विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और उपकरणों की खोज कर कला में उपयोग करने की सम्भावना बच्चे को अधिक सृजनशील बनाती है। ब्रश का उपयोग दृश्य कला में उपकरण के रूप में किया जा सकता है, लेकिन उसकी संगीत, वाद्ययंत्र या नाट्य सामग्री के रूप में उपयोग किए जाने की सम्भावना भी हो सकती है। बच्चों को पारम्परिक रूप से स्वीकृत विधियों के अतिरिक्त कला के प्रत्येक क्षेत्र में भी उपकरणों और सामग्रियों के उपयोग की अपनी विधियों और तकनीकों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ग) अवलोकन– बच्चों को अपने आपपास की दुनिया को सिर्फ देखना ही काफी नहीं है बल्कि उन्हें खुद के विचारों, संवेदनाओं, भावनाओं, अभिव्यक्ति, कार्यों का सूक्ष्म अवलोकन भी करना चाहिए। बच्चों को कला के मूल से परिचित कराने से उनमें कौशल को संवर्द्धित करने और उसे समझने से उनकी सौन्दर्य सम्बन्धी संवेदनाओं का विकास होता है। ध्वनि, रंग या गति के तत्वों पर आधारित अभ्यासों को भावनाओं, विचारों और कार्यों के साथ संलग्न कर बच्चे इन्हें अपने दैनिक संन्दर्भों के साथ जोड़ सकते हैं।

घ) बातचीत एवं संवाद– शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों के साथ कला से संबंधित बातचीत कर उन्हें मौखिक प्रोत्साहन देना चाहिए साथ ही उनकी हस्त और प्रदर्शित कलाकृतियों की सराहना करनी चाहिए जो उनकी प्रतिभा निखारने में मददगार साबित होती है।

ड़) सौन्दर्य सम्बन्धी प्रशंसा– कक्षा में किये गये व्यावहारिक कार्य प्रदर्शन तथा व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य की प्रशंसा सौन्दर्य बोध की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

4.4.7 इंडोर गेम (Indoor Games)– जिस प्रकार शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम ज़रूरी है उसी प्रकार मस्तिष्क का व्यायाम भी जरूरी है। शारीरिक स्वास्थ्य व फिटनेस के लिए विभिन्न प्रकार के खेल ज़रूरी हैं उसी प्रकार मानसिक

विकास के लिए बहुत प्रकार के इंडोर खेल होते हैं जिनका प्रयोग करके हम बच्चों के मानसिक विकास में वृद्धि कर सकते हैं। जैसे – पहेली, सांप–सीढ़ी, शब्द ज्ञान, अंतर खोजो एवं चित्र पूर्ण करना इत्यादि।

संगीत पहेली –

तीतर के आगे दो तीतर,
तीतर के पीछे दो तीतर,
आगे तीतर पीछे तीतर,
बोलो कुल कितने हैं तीतर ?

इसे कक्षा में पहले सामूहिक रूप से अभिनय सहित गाया जा सकता है फिर पहेली का उत्तर ढूढ़कर चर्चा की जा सकती है ।

नोट– इस प्रकार की पहेलियों के माध्यम से बच्चों में समस्या समाधान व तार्किक चिन्तन जैसे 21वीं सदी के कौशलों का विकास किया जा सकता है। शिक्षक स्थानीय संदर्भ के आधार पर इस प्रकार की अनेक पहेलियाँ निर्मित कर सकते हैं।

खेल –चिड़िया उड़

यह बेहद रोचक खेल है। इसे खेलने के लिए उंगली का उपयोग किया जाता है। सबसे पहले सभी को गोल घेरा बना कर बैठने को कहा जाता है। फिर सभी अपनी एक–एक उंगली जमीन पर रखेंगे। अब कोई एक बच्चा एक–एक करके पक्षियों, जानवरों और वस्तुओं के नाम लेता रहेगा, नाम के अनुरूप उंगलियों को ऊपर या जमीन पर रखना होता है। जैसे उड़ने वाले जीव या वस्तु के नाम पर उंगली को ज़मीन से ऊपर उठाना होता है और जो जीव या वस्तु नही उड़ते हैं उनके नाम लिए जाने पर उंगली को जमीन पर ही रखना होता है। अगर किसी ने ना उड़ने वाले जीव या वस्तु के नाम पर उंगली हवा में उठाई तो उसे गाने, नाचने, कविता कहानी या कुछ और गतिविधियाँ करने को कहा जा सकता है।

इस प्रकार की खेल गतिविधि से बच्चों में एकाग्रता का विकास किया जा सकेगा।

4.4.8. बाहरी मैदानी खेल (Outdoor Games) चलना, दौड़ना, कूदना, पीछा करना, पैर से गेंद फेंकना, पानी या रेत में खेलना, पोखर में कूदना, मोटी रस्सी पर चढ़ने का अभ्यास, बच्चों के स्थूल गत्यात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है। खेल की सामग्री बनाने के लिए शिक्षक उपलब्ध सामग्री का प्रयोग भी कर सकते हैं। छोटे बच्चे बिना किसी नियम या सरल नियमों के साथ समूह में खेल सकते हैं। (जैसे पकड़म–पकड़ाई, फेंकना और पकड़ना, गेंद को छेद में फेंकना)। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं, सरल नियमों का पालन करते हुए समूह खेलों का आनंद लेते हैं। (जैसे– पिट्ठू, गिट्टे, जंजीर, आंख मिचोली, स्टेच्यू, लुक अप–लुक डाउन)

बाह्य खेल में सुरक्षा का ध्यान रखना अति आवश्यक है। शिक्षक को खेलते समय बच्चों की निगरानी अवश्य करनी चाहिए बच्चों के उचित शारीरिक विकास और मांसपेशियों के विकास के लिए बाह्य खेल अति आवश्यक हैं।

पकड़म पकड़ाई : पकड़म पकड़ाई एक अच्छा आउटडोर खेल है जिसे खेलने में बच्चों को काफी मजा आता है। इस खेल में शामिल एक बच्चे ने अन्य बच्चों को पकड़ना होता है। अगुआ बना बच्चा सबसे पहले जिसे भी पकड़ता है वह गेम की दूसरी बारी में अन्य बच्चों को पकड़ता है।

खेलने का तरीका –

- ***इस खेल में बहुत सारे बच्चे एक साथ खेल सकते हैं।***
- ***यह खेल खुले मैदान में खेला जाना चाहिए ताकि बच्चों को चोट लगने का खतरा न हो।***
- ***अक्कड़– बक्कड़..... करते हुए उस बच्चे को चुनना होगा जो सबसे पहले अगुआ बनेगा।***
- ***अन्य बच्चे वहाँ से भाग जाते हैं वह बच्चा सभी का पीछा करता है।***
- ***जिस बच्चे को सबसे पहले पकड़ा जाता है वह दूसरी बारी में अन्य बच्चों को पकड़ता है और खेल ऐसे ही चलता रहता है।***

नोट – *इस प्रकार की खेल गतिविधि से बच्चों में सहयोग और सामाजिकता का विकास किया जा सकेगा।*

4.4.9 प्रकृति के साथ समय बिताना

बुनियादी अवस्था में बच्चे प्रकृति के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं जिससे वे प्राकृतिक संसाधनों के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करना चाहते हैं। वे अपनी कल्पनाओं के माध्यम से तथा उनके साथ जीवंत सम्बन्ध बनाना चाहते हैं। जैसे चिड़िया के बारे में कोई किताब पढ़ने या कहानी सुनने के बजाय उसे सजीव सामने देखकर समझना आसान होता है और इसमें बच्चों को बहुत आनंद आता है।

कुछ बच्चों के घर में बगीचे हैं। जब उनकी शिक्षिका ने पौधों पर चर्चा की तो अन्य बच्चों की भी दिलचस्पी बढ़ गई। उन्होंने कई सवाल पूछे जैसे – पौधे कैसे बढ़ते हैं ? उनका भोजन क्या है ? उनका रंग हरा क्यों होता है? उन्हें कब खाना खाने की आवश्यकता पड़ती है? इसलिए शिक्षिका ने स्कूल के छोटे से हिस्से को सब्जी के बगीचे के रूप में उपयोग करने का फैसला किया। कुछ बच्चे घर से बीज लेकर आए और शिक्षिका ने उनकी मदद से उन्हें बो दिया। बच्चों ने बगीचे की देखभाल और ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी ली। धीरे–धीरे इस बगीचे में कद्दू तुमड़ी (गोल लौकी), गोदड़ी (तोरई) जैसी कई सब्जियां उग आई। शिक्षिका ने उन्हें बच्चों के परिवारों के साथ साझा किया। जैसे–जैसे बच्चों की पौधों में अधिकाधिक रुचि विकसित होने लगी तो शिक्षिका योजना के अनुसार बच्चों को अपने स्कूल के पास के बगीचे और पेड़–पौधे युक्त क्षेत्रों को दिखाने ले गयी। वहाँ बच्चे तितलियों, मधुमक्खियों, चींटियों और मकड़ियों को देखकर आश्चर्यचकित हुए। शिक्षिका का उद्देश्य बच्चों को उनके आस–पास की प्रकृति का अवलोकन, अन्वेषण, प्रश्न और सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करना था। शिक्षिका की इच्छा उनमें प्राकृतिक दुनिया के साथ आत्मीयता विकसित करने की थी जो उन्हें बड़े होने पर भी भावनात्मक रूप से जोड़े रखे। इन सभी कार्यों में सभी बच्चों की क्षमतानुसार सहभागिता लेनी चाहिए।

हमारे परिवेश में बहुत सारी सुंदर और दिलचस्प चीजें हैं जो बच्चे में कौतूहल उत्पन्न करती हैं उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करती हैं। स्थानीय जंगल, छोटे जंगल या स्थानीय पार्क की यात्रा और आसपास के सभी पक्षियों को देखकर प्रत्येक बच्चा अचंभित हो जाता है। पेड़–पौधों, पत्तियों और जानवरों के साथ समय बिताना या चारों ओर घिरी प्रकृति में केवल शांत रहना, पर्यावरण के लिए जीवन शैली (Life Style For Environment) का आधार विकसित करता है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में

कहा गया है कि चाहे वह सूक्ष्म शरीर हो या विशाल ब्रह्मांड, सभी अनिवार्य रूप से पंच तत्व या पांच महाभूत– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बने हैं।

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम शरीरा।

इसलिए इस अवस्था में जलवायु और पृथ्वी के साथ प्रत्यक्ष अनुभव का परिचय देना महत्वपूर्ण है ताकि बच्चे इन तत्वों के साथ सम्बन्ध का अनुभव कर सकें, उन्हें सम्मान दे सकें तथा उनके संरक्षण के लिए आगे आ सकें।

बच्चों की आवाज– जब बच्चे बगीचे या प्रांगण में होते हैं और वहां गौरैयों का झुण्ड (घिनुड़ियों का झुंड) आ जाए तो वे वार्तालाप और प्रश्नों का सिलसिला शुरू कर देते हैं। अनीशा कहती है कि यह गौरैया कैसे उड़ लेती है ? हम क्यों नहीं उड़ पाते ? आर्यन कहता है कि यह गौरैया जमीन से क्या चुग रही है ? मनप्रीत कहती है कि तोता हरा, कौआ काला, गौरैया का कौन सा रंग है? फिर बच्चे बाहें पसार कर चिड़िया की तरह होने का अभिनय करते हैं।

हमें बच्चों के ऐसे सवालों का हमेशा स्वागत करना चाहिए तथा उनकी जिज्ञासाओं को उचित समाधान देते हुए शान्त करना चाहिए।

4.4.10 क्षेत्र अध्ययन यात्राएं (Field Trips)

आसपास के क्षेत्र भ्रमण बच्चों के लिए बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक होते हैं। इनके माध्यम से बच्चे अनुभूतिजन्य ज्ञान प्राप्त करते हैं जिसका उनके जीवन पर गहरा व स्थायी प्रभाव पड़ता है। इसके अन्तर्गत स्थानीय सब्ज़ी बाजार, पार्क, चिड़ियाघर, स्थानीय मेले, दवाखाना, बस अड्डा, डाकघर और पुलिस स्टेशन आदि में ले जाया जा सकता है।

भ्रमण हेतु ध्यान देने योग्य कुछ बातें–

- बच्चों को 150 से 200 मीटर की दूरी पर ले जाया जा सकता है।
- ऐसे भ्रमण में बच्चों के साथ उनके अभिभावकों को भी ले जाया जाए तो भ्रमण में आसानी होगी।
- बच्चों को भीड़ वाली जगह में कैसे रहना है, यह भी पहले ही बताना ज़रूरी है।
- ऐसे भ्रमण के बाद बच्चों को अपने अनुभवों को साझा करने के अवसर दिए जाने चाहिए।

4.4.11 तकनीकी आधारित शिक्षण–

- बच्चों में तकनीकी यथा वीडियो, ऑडियो के माध्यम से भाषाई व गणितीय क्षमताओं का विकास किया जा सकता हैं।
- परस्पर संवादात्मक वीडियो (Interactive video) के माध्यम से बच्चों में 21वीं सदी के कौशलों का विकास किया जा सकता है।
- कम्प्यूटर, टैबलेट, स्मार्ट फोन, प्रोजेक्टर तथा स्मार्ट टीवी आदि गैजेट के माध्यम से बच्चों में कला,संगीत, भाषाई तथा गणितीय क्षमताएं विकसित की जा सकती हैं।
- प्रारम्भिक कक्षाओं के शिक्षण में तकनीकी का प्रयोग नियंत्रित रूप से किया जाना चाहिए।
- विद्यालय की समय सारणी में तकनीकी शिक्षण हेतु निश्चित समय निर्धारित किया जाना चाहिए।

खण्ड 4.5

साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में मिशन के रूप में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी है जिसके अन्तर्गत सभी बच्चे कक्षा–3 तक साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त कर सके। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि 03 से 06 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सीखने–सिखाने की ऐसी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए ताकि वे कक्षा–3 में समझ के साथ पढ़ने–लिखने एवं साधारण गणितीय कौशल प्राप्त कर पायें।

4.5.1 भाषा और साक्षरता शिक्षण

शिक्षक द्वारा आरम्भिक भाषा की कक्षाओं में मुख्य रूप से वर्णमाला एवं मात्राएँ पढ़ाते समय मौखिक पुनरावृत्ति व अनुकरण या हस्तलेखन अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में विकसित करने के लिए कुछ ही अवसर मिल पाते हैं।

आरम्भिक वर्षों में भाषा और साक्षरता के शिक्षण से बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में स्वयं को तलाशने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए। साथ ही प्रारम्भिक भाषा कौशलों (जैसे, ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना) और अर्थ केन्द्रित उच्चस्तरीय भाषा कौशलों (जैसे, मौखिक भाषा का विकास, पुस्तकों से जुड़ाव, ड्रॉइंग और मौलिक लेखन) का सन्तुलन प्रदान करना चाहिए। इस प्रकार के क्रियाकलाप बच्चों में भाषा कौशल को प्रोत्साहित करते हैं।

4.5.1.1 प्रारम्भिक साक्षरता (Emergent Literacy)

प्रारम्भिक साक्षरता सीखने का वह प्रारम्भिक चरण हैं जहाँ बच्चों में क्रमशः मौखिक भाषा का विकास तथा ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, समझ के साथ पढ़ना, धाराप्रवाह पढ़ना, लेखन और पढ़ने की इच्छा और आदत का विकास होता है।

क) शुरुआती पठन कौशल– इसमें प्रिंट जागरूकता (छोटी–छोटी कहानियाँ, कविताएँ, शब्दों और चित्रों से भरपूर रंगीन सामग्री) तथा प्रिंट अवधारणाओं को सीखना, पढ़ने जैसा अभिनय करना और 'शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना (Logographic Reading) शामिल हैं।

ख) शुरुआती लेखन कौशल– लेखन लिपि–प्रतीकों के माध्यम से विचारों और भावों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का साधन है। इसमें कुछ व्यक्त करने के लिए चित्र और अस्पष्ट लेखन या प्रतीकात्मक चिह्न शामिल हैं। बच्चे अपने आप को लेखन में अभिव्यक्त करते हैं और इसके बाद जो उन्होंने लिखा है उसके बारे में बात करते हैं। छोटे बच्चों का लेखन उनकी बातचीत, अनुभव, ड्रॉइंग, पढ़ने और खेल से सम्बन्धित होता है। बाद के चरणों में बच्चे धीरे–धीरे ध्वनि और प्रतीकों के बीच के सम्बन्ध को समझने लगते हैं और लेखन की ओर बढ़ने से पहले अक्षर जैसी आकृतियों का उपयोग करते हैं।

4.5.1.2 प्रारम्भिक साक्षरता के लिए सहयोगी रणनीतियाँ

प्रारम्भिक साक्षरता के लिए सहयोगी कुछ रणनीतियों में शामिल हैं–

(क) बच्चों को किताबों से जोड़ने हेतु शिक्षक द्वारा पढ़ने का अभिनय (Pretended Reding) शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाई जा रही सचित्र कहानी की किताबें, जोर से पढ़ना और प्रोत्साहित करना।

(ख) कहानी की समाप्ति पर बच्चों को स्वयं को व्यक्त करने के लिए फर्श, अपनी तख्ती/स्लेट या नोटबुक पर चित्र बनाने और लिखने या अस्पष्ट लिखने (Scribbling) के लिए प्रोत्साहित करना।

(ग) छपी (Print) सामग्री (उदाहरण के लिए Big Book, चित्र पुस्तकें, कहानी–पोस्टर, कविता–पोस्टर, बच्चों की पत्रिकाएँ) द्वारा कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण बनाना या बच्चों की पहुँच के भीतर अधिगम स्थल पर रखना और प्रदर्शित करना।

घ) कक्षा में 'रीडिंग कॉर्नर' और 'राइटिंग कॉर्नर' स्थापित करना।

4.5.1.3 आरम्भिक भाषा और साक्षरता के घटक

बुनियादी अवस्था में आरम्भिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए ज्ञान कौशलों, और अभिवृत्तियों को विकसित करने की आवश्यकता होती है। कुशलतापूर्वक पढ़ने और लिखने के लिए बच्चे को बोले गए शब्दों में विभिन्न ध्वनियों को अलग करने, अक्षर–ध्वनि सम्बन्धों को पहचानने, ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने, शब्दावली विकसित करने और धारा प्रवाह पढ़ने का कौशल विकसित करने की आवश्यकता होती है। इसमें कई प्रक्रियाएं शामिल होती हैं जो समझ, शब्दावली, प्रवाह, शब्द –पहचान, अक्षर–ज्ञान और ध्वनि–जागरूकता का निर्माण करती हैं।

आरम्भिक भाषा और साक्षरता के घटक

क) प्रारम्भिक साक्षरता कौशल– प्रिंट के सम्बन्ध में जागरूकता विकसित करना, पढ़ने का अभिनय (Pretend Reding) करना, शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना (Logographic), भावनायें व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और Scribbling करना ये सभी प्रिंट संबंधी अवधारणाओं में शामिल हैं।

i- छपे हुए शब्द भाषा के शब्दों के प्रतीक होते हैं। बोली जाने वाली ध्वनियाँ मौखिक और लिखित भाषा के अर्न्तसम्बन्ध को प्रदर्शित करती हैं।

ii- कहानी की किताबें, नोटिस, विज्ञापन ,पोस्टर, पत्र लेखन ये सभी आपस में एक दूसरे को विचार सम्प्रेषित करने के लिए प्रिंट के रूप व कार्य हो सकते हैं ।

iii- पुस्तक सम्बन्धी जागरुकता और उपयोग के तरीके।

ख) **मौखिक भाषा का विकास (Oral Language Development)**:– बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों (जैसे बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता–पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

ग) **ध्वनि जागरूकता (Phonological Awareness)**:– ध्वनि जागरूकता भाषा की ध्वनि संरचना की समझ है, अर्थात वाक्य शब्दों, शब्दांशों और ध्वनि की छोटी इकाइयों से बने होते हैं। यह ज्ञान पहले मौखिक रूप से विकसित होता है।

घ) **डिकोडिंग (Decoding)**:–यह ध्वनियों को अलग–अलग अक्षरों और अक्षर संयोजनों (अक्षरों) के साथ जोड़ने और ध्वनियों को एक साथ मिलाकर पूरे शब्द का उच्चारण (या पढ़ने) और अर्थ की पहचान करने की क्षमता है।

ङ) **समझ के साथ पढ़ना (Reading with Comprehension)**:– लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके बारे में आलोचनात्मक तथा समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

च) **धारा प्रवाह पढ़ना (Fluent Reading)**:– शब्दों की सटीक, स्वतःस्फूर्त पहचान और हाव–भाव के साथ पढ़ना।

छ) **लेखन (Writing)**:– तार्किक और क्रमबद्ध तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ–साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने का कौशल।

ज) **पढ़ने की इच्छा या आदत विकसित करना (Developing a Desire or Habit of Reading)**:– विभिन्न प्रकार की पुस्तकों (आकर्षक ,रंगीन और चित्रात्मक) और अन्य पठन सामग्री के साथ जुड़ना।

5.1.4 सन्तुलित साक्षरता पद्धति (Balanced Literacy Approach)

विभिन्न शोधों का निष्कर्ष है कि भाषा और साक्षरता के उपरोक्त घटकों को विकसित करने के लिए एक व्यापक और व्यवस्थित पद्धति की आवश्यकता होती है जिसे सन्तुलित साक्षरता पद्धति के रूप में जाना जाता है। सन्तुलित पद्धति शब्द–पहचान के कौशल को विकसित करने के साथ–साथ अर्थ–निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करती है। यह डिकोडिंग कार्य को सम्पूर्ण भाषा (Whole Language) (वाक्यों) के उपयोग से संतुलित करता है साथ ही मौखिक भाषा और पढ़ने और लिखने के बीच सन्तुलन करता है।

प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा और साक्षरता का शिक्षण दो व्यापक श्रेणियों से सम्बन्धित कौशल प्राप्त कर रहे बच्चों पर केन्द्रित होना चाहिए:

क) **शब्दों की पहचान और शब्दों को लिखने में सटीकता (Lower Order Skill)**:– इनमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता (डिकोडिंग के शिक्षण से पहले मूलभूत कौशल के रूप में माना जाता है), डिकोडिंग की समझ द्वारा अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना और पढ़ना सिखाया जाता है।

(ख) **भाषा समझ और अभिव्यक्ति (Higher order skills)**:– मौखिक भाषा विकास, शब्दावली, समझ के साथ पढ़ना (पढ़ने के लिए सक्रिय प्रतिक्रिया सहित) और मौलिक लेखन या रचना Lower Order and Higher Order Skills के बीच सन्तुलन, मौखिक खेलों, ध्वनि–जागरूकता गतिविधियों, वर्ण–पहचान के लिए स्पष्ट निर्देश, डिकोडिंग और शब्द–कार्य, सूक्ष्म मोटर गतिविधियाँ, पढ़कर सुनाना, साझा पठन, निर्देशित/ मार्गदर्शित पठन, स्वतंत्र पठन, Modelled लेखन और स्वतंत्र लेखन जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विकसित की जाती है।

ग) **मौखिक भाषा का विकास (Oral Language Development)**:– इस विधा से सम्बन्धित विकास की रणनीतियों के अंतर्गत कहानी सुनाना व चर्चा करना, चित्रों व विषयों पर बातचीत करना, बच्चों के लिए स्वतंत्र और निर्देशित बातचीत के माध्यम से बात करने और अपने अनुभव साझा करने के अवसर देना, पात्र अभिनय (Role Play) आदि की गतिविधियाँ की जानी चाहिए।

(घ) **डिकोडिंग निर्देश और शब्दों का अर्थ निकालना (Decoding Instruction and Word Solving)**:– यह अक्षर–ध्वनि सम्बन्ध स्थापित करने के लिए स्पष्ट निर्देशों से सम्बन्धित है। डिकोडिंग शिक्षण में ध्वनि जागरूकता की गतिविधियों का पालन करना चाहिए, जहाँ शब्दों में ध्वनियों (शुरुआत, मध्य, अन्त की ध्वनियों) पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अक्षरों और शब्दों को एक साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि अर्थ निकालना भाषा और साक्षरता शिक्षण के केन्द्र में रहे (क्योंकि शब्द अर्थ की मूलभूत इकाइयां है)। भारतीय लिपियों में कई अक्षर होते हैं और इसलिए अक्षर समूहों को सावधानी से चुनने और क्रम में लगाने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चे अपने हाल ही में प्राप्त अक्षर ज्ञान के साथ सार्थक शब्द निर्माण कर सकें। शब्दों के खंड करने और अक्षरों को मिलाने से शब्द डिकोडिंग और वर्तनी के लिए स्पष्ट निर्देश दिए जाने की ज़रूरत है। अंग्रेज़ी के मामले में Phonics Instruction का मतलब वर्णमाला के क्रमिक परिचय के स्थान पर अंग्रेजी में ध्वनियों को दर्शाने वाले विशिष्ट अक्षर संयोजनों पर ध्यान देना होगा।

(ङ) पढ़ने की रणनीतियाँ

1. **पढ़कर सुनाना (Read Aloud)**:– शिक्षक सूझ–बूझ से चुने गए बाल साहित्य (पाठ्यपुस्तक नहीं) बच्चों को पढ़कर सुनाता है। इसका उद्देश्य बच्चों द्वारा शिक्षक के बाद दोहराने मात्र से नहीं है, बल्कि उनकी भाषा क्षमताओं और शब्दावली को विकसित करना है। पढ़कर सुनाना बच्चों को अच्छे साहित्य से परिचित कराने और उन्हें शब्दावली, भाषा के उपयोग और अर्थ निर्माण से परिचित होने का मौका देना है। चर्चाएँ और बातचीत इस गतिविधि का एक अनिवार्य हिस्सा है, जहाँ बच्चे पढ़कर सुनाई जा रही लिखित सामग्री से सक्रिय रूप से जुड़ते हैं।

i. **साझा पठन**:– शिक्षक द्वारा दूर से दिखाई देने वाले बड़ी छपाई बड़े आकार वाली लिखित सामग्री के माध्यम से बच्चों को अपने साथ–साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जैसे–जैसे बच्चे ऊँची आवाज में कहानियां सुनते और साथ–साथ पढ़ने में भाग लेने लगते हैं, तब वे अपने वर्तमान स्तर से आगे बढ़ सकते हैं और पढ़ने की अपनी क्षमताओं के बारे में आत्मविश्वास हासिल कर सकते हैं।

ii. **निर्देशित/मार्गदर्शित पठन**– इस पठन में पढ़ने की जिम्मेदारी शिक्षक से बच्चों पर स्थानान्तरित हो जाती है। इस पठन में बच्चे पढ़ते हैं जबकि शिक्षक आवश्यकतानुसार उन्हें सहयोग प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में पढ़कर सुनाने में, शिक्षक द्वारा अपनाई गई रणनीतियों और तकनीकों का पुनर्बलन और अभ्यास किया जाता है।

iii. **स्वतंत्र पठन**– बच्चे को स्वतंत्र रूप से या एक साथी के साथ पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए। स्वतंत्र रूप से पढ़ते समय वे धीरे–धीरे पढ़ने की आदत विकसित करते हैं। पढ़ने और उस पर चिंतन के कार्य को महत्व देने लगते हैं और आनन्द के

लिए पढ़कर किसी पुस्तक का अनुभव करने लगते हैं। इसमें बच्चों को वह पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, जिसे वे स्वतंत्र रूप से या अपने साथी के साथ पढ़ना चाहते हैं।

च) लेखन की रणनीतियाँ

i) **आदर्श लेखन**– जो छोटे बच्चे लिखना सीख रहे हैं उनके लिए शिक्षक को लिखने की प्रक्रिया का आदर्श रूप (Model) बनाना होगा। शिक्षक, लेखन प्रक्रिया की मॉडलिंग करके छोटे बच्चों को बोलने के साथ–साथ लेखन को एक अभिव्यक्ति की गतिविधि के रूप में देखें और उसे प्रोत्साहित करें।

ii) **साझा लेखन**– साझा पठन की तरह ही साझा लेखन भी एक सहयोगी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर लेखन के काम में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक बोर्ड पर मैंने नाश्ते में..... खाया वाक्य लिखकर शुरू कर सकते हैं और एक बच्चे को बुलाकर इसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं। चर्चा करना, बातचीत करना व लिखना साथ–साथ चलता है और शिक्षक को लगातार बच्चों को लेखन प्रक्रिया में आदर्श लेख प्रस्तुत कर लिखने हेतु प्रेरित एवं मार्गदर्शन करना चाहिए।

iii) **निर्देशित / मार्गदर्शित लेखन**– मार्गदर्शित लेखन में बच्चों द्वारा मिलजुल कर लिखना (Peer Writing) और शिक्षक के फीडबैक के साथ लेखन के कई प्रारूप शामिल हो सकते हैं।

vi) **स्वतंत्र लेखन**– बच्चों को स्वयं लिखने का समय दिया जाना चाहिए। कहानियों, कविताओं, संदेशों, निर्देशों तथा स्वर–व्यंजनों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का उपयोग करने और साक्षरता के पहलुओं से जुड़ने का मौका मिलता है।

बुनियादी स्तर पर सन्तुलित भाषा और साक्षरता शिक्षण में मौखिक भाषा का विकास, डिकोडिंग सम्बन्धी कार्य, पढ़ने और लिखने की गतिविधियाँ एक साथ और प्रतिदिन होनी चाहिए।

4.5.1.5 साक्षरता शिक्षण के लिए चार–ब्लॉक पद्धति (The Four Block Approach for Literacy Instruction)

भाषा और साक्षरता शिक्षण में चार प्रमुख घटक हैं–मौखिक भाषा, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना। जबकि चार ब्लॉकों के लिए गतिविधियों को एकीकृत तरीके से कार्यान्वित किया जा सकता है, साथ ही यह भी ज़रूरी है कि बच्चे नियमित रूप से हर एक ब्लॉक पर काम करने में समय व्यतीत करें।

जब बच्चे डिकोडिंग सीख रहे होते हैं, तो उन्हें कहानी की किताबों से भी जुड़े रहना चाहिए, जिसमें पढ़ी जा रही कहानी को सुनना और प्रतिक्रिया देना तथा पढ़ी जा रही लिखित सामग्री को सुनकर प्रतिक्रिया में लिखना या चित्र बनाना आदि शामिल हैं। साथ ही अक्षरों व स्वरों या वर्णों व अक्षरों के शिक्षण को समूहबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है, ताकि बच्चे कुछ प्रतीकों को सीखने के तुरन्त बाद सरल शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों को पढ़ना और लिखना शुरू कर सकें, बजाय इसके कि वे सभी वर्णों और मात्राओं को एक साथ सीखने के लिए इन्तजार करते रहें। चार–ब्लॉक मॉडल में शामिल हैं:

मौखिक भाषा विकास	शब्द पहचान
• चित्र पर बातचीत • अनुभव साझा करना • कहानी सुनाना • नाटक और पात्र–अभिनय करना	• ध्वनि जागरुकता की गतिविधियाँ • वर्ण पहचान • ध्वनि–प्रतीक संबंध • कौशल केंद्रित लेखन (वर्णों और शब्दों का) • वर्ण और शब्द पठन
पढ़ना	**लिखना**
• पढ़कर सुनाना • साझा पठन • निर्देशित/ मार्गदर्शित पठन • स्वतंत्र पठन	• आदर्श लेखन • साझा लेखन • निर्देशित / मार्गदर्शित लेखन • स्वतंत्र लेखन

चित्र 4.5 : चार ब्लॉक्स वाला मॉडल–भाषा

कक्षा 1 और 2 के अन्त तक, उन बच्चों को अतिरिक्त सहायता के लिए समय देने की आवश्यकता होगी, जिन्होंने बुनियादी शब्द–पहचान कौशल हासिल नहीं किया है। ऐसे बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षण का एक अलग दृष्टिकोण चारों ब्लॉक्स में गतिविधियों का हिस्सा होना चाहिए।

4.5.1.6 पठन–पाठन की प्रारम्भिक भाषा के अतिरिक्त अन्य दूसरी भाषा सिखाने के लिए कुछ रणनीतियाँ–

शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसे बच्चों से मिल सकता है, जो सिखाई जाने वाली दूसरी भाषा से परिचित नहीं है। किसी अपरिचित भाषा को पढ़ाने के शिक्षणशास्त्र को Total Physical Response (TPR) या पूर्ण शारीरिक अभिव्यक्ति, गतिविधियों, मौखिक व सम्प्रेषण सम्बन्धी कार्य को विस्तारपूर्वक करने, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांशों एवं वाक्यों पर नियंत्रण, बातचीत और कहानियों के रूप में उपयोग में आने वाली रणनीतियों के साथ बेहतर ढंग से समझे जाने की आवश्यकता है।

प्रारम्भिक भाषा के अतिरिक्त अन्य दूसरी भाषा को सिखाने के लिए कुछ रणनीतियाँ इस प्रकार हो सकती हैं–

क) आरम्भ में ही बहुत सारी मस्ती भरी और संवादात्मक गतिविधियों को कराते हुए, मौखिक भाषा के विकास को बढ़ावा देना। जैस TPR (उदाहरण के लिए शारीरिक रूप से क्रियात्मक शब्दों का प्रदर्शन करना यथा शब्द Jump को कहते समय कूदना), विस्तारित मौखिक और सम्प्रेषण सम्बंधी कार्य, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांश और आदेश के रूप में उपयोग किए जाने वाले वाक्य (जैसे दरवाजा बन्द करें, बाहर देखें) और बातचीत तथा कहानियाँ आदि।

(ख) अपरिचित या अन्य सिखाई जाने वाली दूसरी भाषा में समझने हेतु इनपुट प्रदान करना। इसमें भाषा को सुनने और इसे ऐसे रूप में पढ़ने के कई अवसर प्रदान करना शामिल है जो बच्चों की समझ के क्षेत्र के भीतर हैं, जिसे 'बोधगम्य इनपुट' भी कहा जाता है। शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा सरल होनी चाहिए और इशारों, चित्रों, क्रियाओं एवं बच्चों की घरेलू भाषाओं के शब्दों के उपयोग द्वारा समर्थित होनी चाहिए। बेहतर समझ के लिए बच्चों द्वारा आसानी से सम्बन्ध स्थापित करने योग्य परिचित एवं स्थानीय सन्दर्भ का उपयोग करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

ग) बच्चों को भाषा की शुद्धता और सटीकता में उलझाने के बजाय प्रभावी सम्प्रेषण के लिए एक घर की भाषा से इतर सिखाई जाने वाली अन्य भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे सिखाई जाने वाली अपरिचित भाषा में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति में सुधार होगा।

घ) नई या अपरिचित भाषा को पर्याप्त रूप से परिचित कराएँ। यह सुनने के अवसर प्रदान करके, सम्प्रेषण के लिए भाषा का उपयोग करके और पर्याप्त प्रिंट सामग्री प्रदान करके किया जा सकता है।

ङ) तनाव मुक्त और सुरक्षित वातावरण बनाएं। एक अपरिचित भाषा के लिए जल्दी से प्रस्तुति (Early Production), बोलने और सीखने तथा औपचारिक आकलन का दबाव नहीं होना चाहिए। सकारात्मक एवं सहायक कक्षा–कक्ष वातावरण में बच्चे प्रेरित होते हैं जहाँ आत्मसम्मान उच्च और चिन्ता का निम्न स्तर हो जो कि बच्चों को बेहतर और आराम से सीखने में मदद करता है।

4.5.2 गणित शिक्षण

बच्चे अपने परिवेश और संस्कृति से सीखे हुए विविध गणितीय कौशलों का कक्षाकक्ष में अनुप्रयोग करते हैं, जो गणित सीखने के आधार होते हैं। गणित सीखने के उद्देश्यों को उच्चतर उद्देश्यों (Higher Goals) में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे बच्चे की चिंतन प्रक्रिया का गणितीकरण (जैसे अमूर्त चिंतन की क्षमता, समस्या समाधान, सादृश्यीकरण/प्रत्यक्षीकरण, प्रस्तुतीकरण, तर्क करना, विषयवस्तु संबंधी उद्देश्य और अन्य क्षेत्रों (Domains) के साथ गणित की अवधारणाओं का सम्बन्ध बनाना आदि।

गणितीय कौशल सिखाने में सरल से जटिल की ओर जाने वाले तरीके का इस्तेमाल करना चाहिए। इसका अर्थ है कि शुरुआती वर्षों में बच्चे गणितीय शब्दावली जैसे–मिलान करना, छाँटना, युग्म बनाना, क्रम में लगाना, पैटर्न बनाना, वर्गीकरण करना, एक–से–एक की संगति और संख्याओं, आकृतियों, स्थान और मापों से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं को सीखते हैं। बाद के समय में वे सरल कौशलों से कुछ अधिक जटिल कौशलों को सीखते हैं।

जब बच्चे इसमें गणितीय रूप से कुशल हो जाते हैं तो वे विषयवस्तु सम्बन्धी उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए शुरुआती वर्षों में शिक्षण और सीखने को दो तरह के लक्ष्यों–उच्चतर उद्देश्य और विषयवस्तु संबंधी उद्देश्यों पर जोर देना चाहिए, क्योंकि ये दोनों उद्देश्य परस्पर अंतर सम्बन्धित हैं।

ऐसी कई गणितीय प्रक्रियायें हैं जो बच्चों को उच्चतर और विषयवस्तु सम्बन्धी दोनों उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। समस्या समाधान का अर्थ है वास्तविक और शुद्ध (Pure) दोनों तरह की गणितीय समस्याओं को हल करना, एक अवधारणा और दूसरी अवधारणा के बीच सम्बन्ध बनाना, निरूपण यानी गणितीय अवधारणाओं और विचारों को निरूपित करने के लिए ठोस वस्तुओं, दृश्य चित्रों/आरेखों का उपयोग करना, सम्प्रेषण यानी गणितीय विचारों को समझना और सम्प्रेषित करना तथा अनुमान लगाना यानी मात्रा/परिमाण निर्धारित करने और हल करने के लिए सन्निकटन (Approximation) का उपयोग करना। इन प्रक्रियाओं को कक्षा में शामिल करने से बच्चे को एक व्यापक गणितीय अनुभव प्राप्त करने तथा अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, अनुपयोग, तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में गणितीय निपुणता हासिल करने में मदद मिलती है।

4.5.2.1 गणित शिक्षण संबंधी पद्धतियाँ

कार्यों एवं कौशल की प्रकृति और संज्ञानात्मक माँग (Cognitive Demand) पर विचार करते हुए बच्चों को व्यापक गणितीय अनुभव देने के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोणों को गणित के सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में समाहित किया जा सकता है।

क) ठोस अनुभव के माध्यम से गणितीय अमूर्त विचारों (अवधारणाओं) का विकास करना (ELPS)

गणितीय अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं, जैसे संख्याओं को समझना, संक्रियाएँ करना और 2D आकृतियाँ बनाना सीखना। इसलिए बच्चों का इन अमूर्त अवधारणाओं को ठोस अनुभव के माध्यम से सीखना और धीरे–धीरे ठोस अथवा चित्र के स्थान पर अमूर्त धारणाओं की ओर बढ़ना महत्त्वपूर्ण है। बच्चे जब ठोस अनुभव से जुड़ते हैं, तो वे गणितीय अवधारणाओं का अर्थ आसानी से समझ सकते हैं। अमूर्त गणितीय अवधारणाओं के शिक्षण के लिए निम्नलिखित अनुक्रम का पालन किया जा सकता है। ELPS के माध्यम से संख्याओं को सीखने का एक उदाहरण:

- **E- Experience (अनुभव):** ठोस वस्तुओं के माध्यम से गणितीय अवधारणा सीखना, उदाहरण के लिए, संख्याओं को सीखने के लिए ठोस वस्तुओं को गिनना ।
- **L- Spoken Language (बोली जाने वाली भाषा):** भाषा में अनुभव का वर्णन करना, जैसे, क्या गिना जा रहा है, कितनों को गिना गया है।
- **P- Pictures (चित्र):** गणितीय अवधारणाओं को चित्र रूप में प्रदर्शित करना, उदाहरण के लिए, यदि 3 गेंदों की गणना की गई है, तो इन्हें गेंद के 3 चित्रों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।
- **S- Written Symbols (लिखित प्रतीक):** ठोस अनुभव और चित्र के माध्यम से सीखी गई गणितीय अवधारणा को लिखित प्रतीक रूप में सामान्यीकृत किया जा सकता है। जैसे कि तीन गेंदों के लिए संख्या 3 लिखना।

ख) गणित सीखने को बच्चों के वास्तविक जीवन और पूर्व ज्ञान से जोड़ना

गणित सीखना बच्चों के वास्तविक जीवन और उनके पूर्वज्ञान से सम्बन्धित होना चाहिए। वास्तविक जीवन के उदाहरण बच्चों को गणितीय अवधारणा को समझने में मदद करते हैं तथा वास्तविक जीवन में गणितीय कौशलों को लागू करने की क्षमता विकसित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे गणित को सीखने योग्य और कर पाने योग्य के रूप में देखने लगते हैं। इसलिए गणितीय कौशल सिखाते समय शिक्षकों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग अवधारणात्मक और समस्या समाधान क्षमताओं के निर्माण के लिए करना चाहिए।

ग) समस्या समाधान के साधन के रूप में गणित

समस्या समाधान गणित सीखने का एक महत्वपूर्ण उच्चतर उद्देश्य है। बच्चों को जल्दी समझ में आ जाना चाहिए कि गणित को वास्तविक जीवन की गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए समस्या समाधान के साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसलिए सीखने को न केवल अवधारणाओं के विकास पर बल्कि समस्या समाधान कौशलों पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। समस्या समाधान क्षमताएं बच्चों को कौशल और ज्ञान के अर्थ–निर्माण के साथ–साथ यह समझने का अवसर प्रदान करती हैं कि वे अपने ज्ञान या कौशलों को कहाँ लागू कर सकते हैं। बच्चों में समस्या समाधान क्षमताओं के निर्माण में मदद करने के लिए समृद्ध गणितीय कार्यों को स्थापित करना, समस्या को समझना, रणनीतियों को तैयार करना, हल करना और हल की जांच करना व औचित्य देना (Justification) महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

निम्नलिखित कदम बच्चों में समस्या समाधान की क्षमताएं विकसित करने में मदद कर सकते हैं समस्या को समझाना– क्या मालूम है ? क्या मालूम नहीं है ?

i. एक रणनीति /योजना तैयार करना– क्या मुझे सम्बन्धित समस्या का पता है? इसे हल करने के लिए कौन–सी रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती है?
ii. समस्या का समाधान करना– इसे हल करने के लिए मैं क्या कदम उठा रहा हूँ ? क्या मैं सही कदम उठा रहा हूँ ? क्या मैं इस बारे में चर्चा कर सकता हूँ कि मैने इस समस्या को क्यों और कैसे हल किया ?
iii. पुनः विचार करना / समाधान की जाँच करना– क्या मैंने सही काम किया? क्या मैंने सवाल का जवाब दिया?
iv. लचीली सोच को प्रोत्साहित करना और समस्या समाधान के लिए कई रणनीतियों का उपयोग करना। बच्चों को समस्या समाधान के एक से अधिक तरीके सीखने चाहिए। उदाहरण के लिए 3+5 को हल करने के लिए कौन–सी अलग–अलग रणनीतियाँ हो सकती है? इस पर बच्चे के अपने अलग–अलग समाधान हो सकते हैं।

घ) गणितीय चर्चा, सम्प्रेषण और तर्क का उपयोग करना

गणित की अपनी भाषा होती है, जो कई मायनों में रोजमर्रा की भाषा से अलग होती है। इसकी अपनी अनूठी शब्दावली, प्रतीक और संकेत प्रणालियाँ हैं जो अक्सर दैनिक जीवन में उपयोग नहीं की जाती हैं जैसे धन, गुणा, भागा (+, ×, ÷,)। बच्चा गणित की कक्षा में पहली बार इनका सामना करता है। शिक्षकों एवं बच्चों के बीच गणितीय अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोगों और तर्क के आसपास समृद्ध बातचीत होना जरूरी है। इस चर्चा में उसे गणित पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो बच्चों को उनके वास्तविक जीवन में मिलता है और बच्चों को उनकी गणितीय सोच को समझाने, तर्क करने, औचित्य देने एवं अन्य गणितीय विचारों, साथ ही शिक्षक के स्पष्टीकरण, तर्क और औचित्य को सुनने का अवसर भी प्रदान करना चाहिए। इसलिए लिखित कार्यों में चुपचाप शामिल होने के बजाय कक्षा में मौखिक गणितीय चर्चा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ङ) गणित सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

कई व्यापक शोध बताते हैं कि कुछ बच्चों में कक्षा 3 से ही गणित के प्रति नापसन्दगी और नकारात्मक मनोवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। शुरुआती शिक्षा न केवल गणितीय दक्षताओं को विकसित करने, बल्कि एक कार्यक्षेत्र (Domain) के रूप में गणित के साथ सकारात्मक सम्बन्ध विकसित करने के लिए बच्चों की सहायता करने पर भी केन्द्रित होनी चाहिए। नकारात्मक छवि को निकालकर आरम्भ में ही गणित की पक्की नींव का निर्माण किया जाना चाहिए ताकि बच्चे गणित का आनन्द लेना सीख सकें।

4.5.2.2 आरम्भिक वर्षों में गणित सीखने के क्षेत्र या घटक

क) संख्या और उसके सम्बन्ध (Number and its Relations) से तात्पर्य गिनना, निरुपण संख्या अवधारणाओं (ध्वनि, प्रतीक और मात्रा) को विभिन्न सन्दर्भों में गिनना, निरूपण, और इनके आपसी संबंध में समझना है।

ख) बुनियादी गणित संक्रियाएँ (Basic Mathematical Operation) से तात्पर्य गणना की अवधारणाओं को समझना और उनका उपयोग करके समस्याओं को हल करने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना है।

(ग) आकृति एवं स्थानिक समझ (Shapes and Spatial Understanding) से तात्पर्य आकृतियों की समझ विकसित करने तथा आकृतियों को बनाने और वर्गीकृत करने के साथ–साथ स्थानिक बोध व समझ विकसित करने से है।

(घ) पैटर्न (Patterns) से तात्पर्य संख्याओं, आकृतियों और डिजाइनों की आवर्ती (Repeated) व्यवस्था की समझ और कुछ नियमों और संरचना के आधार पर सामान्यीकरण करने से है।

ङ) मापन (Measurement) से तात्पर्य किसी वस्तु को मापने की इकाइयों को समझना और उसका परिमाण निर्धारित करने के लिए उपयोग करने से है।

घ) आँकड़ों का प्रबंधन (Data Handling) से तात्पर्य आंकड़ों के संग्रह को समझना, उसे एकत्र करना और उसका विश्लेषण करने से है।

4.5.2.3 गणित शिक्षण के लिए ब्लॉक्स

गणितीय रूप से कुशल बनने के लिए बच्चों को अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, रणनीतियों की क्षमता / अनुप्रयोग, सम्प्रेषण और तर्क व गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की ज़रूरत है। गणितीय प्रवीणता के इन सभी पहलुओं को दैनिक कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित चार ब्लॉकों में डिजाइन किया जा सकता है। कोई भी गणितीय एप्रोच / प्रक्रिया इस प्रकृति पर ही आधारित होनी चाहिए।

(क) **ब्लॉक 1– मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत (Oral Maths Talk)** कक्षा की शुरुआत में 5–10 मिनट के लिए बच्चे संख्याओं वाली कविता गा सकते हैं या गणित के बारे में अपने अनुभवों या अपने जीवन में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। मौखिक गणना, अवधारणा, रणनीतियों और तर्क पर भी चर्चा हो सकती है। यह औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया में जाने से पहले वार्मअप गतिविधि के रूप में काम करता है।

(ख) **ब्लॉक 2– कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएं) (Skills Teaching & Combining all Strands)**: यह गणितीय अवधारणाओं, समस्या समाधान एवं सम्प्रेषण को ठोस अनुभव, व्यवस्थित गतिविधियों व निर्देश के माध्यम से सिखाया जाता है, जिसमें जिम्मेदारी पूर्वक क्रमिक युक्ति / अप्रोच का पालन किया जाता है, हालांकि हर गतिविधि या गणितीय कार्य के लिए समान क्रम होना जरूरी नहीं है। शिक्षक गणित के किसी कार्य को सोच सकते हैं और मार्गदर्शन प्रदान करने से पहले बच्चों को इसे स्वतंत्र रूप से हल करने को दे सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को सीखने, समझने और प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलना चाहिए।

ग) **ब्लॉक 3 कौशलों का अभ्यास (Skills Practice)**: गणितीय कौशल का अभ्यास करने के लिए बच्चों को अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, समस्या समाधान, तर्क और सम्प्रेषण पर आधारित विभिन्न प्रकार के समृद्ध गणितीय कार्य प्रदान करना है। यह कार्यपुस्तिका (Work Book), पाठ्यपुस्तक या शिक्षक–निर्मित टास्क सेट के माध्यम से हो सकता है।

घ) **ब्लॉक 4 – सीखने– सिखाने तथा समस्या समाधान को मजबूत करने के लिए गणितीय खेल (Maths Game for Reinforcing Learning/Problem Solving)**: बच्चों को खेल खेलने में मजा आता है। कई तरह के गणितीय खेल हो सकते हैं, जो बच्चों के सीखने को कई तरह से पुख्ता करने में मदद करते हैं। ये खेल समस्या समाधान, अवधारणाओं के साथ–साथ तर्क पर आधारित होने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर के अनुसार समूहवार खेलों की भी योजना बनाई जा सकती है।

(ङ) गणित के लिए दिन में कुल सुझाया गया समय 60 मिनट है।

ब्लॉक्स		उद्देश्य	प्रस्तावित रणनीतियाँ और पद्धतियाँ	प्रस्तावित समय
ब्लॉक्स 1 और 2	मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत	मौखिक गणित को प्रोत्साहित करने के लिए वार्म–अप गतिविधियों के रूप में	ओपन एंडेड / बड़े समूह में चर्चा, गाना, कविता, बच्चों के वास्तविक जीवन में गणित से जुड़े अनुभव, अवधारणा, मौखिक गणना, तर्क	5–10 मिनट्स
	कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएँ)	संरचित शिक्षण / गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को गणितीय कौशल प्राप्त करने में मदद करना	GRR/ ELPS/ समस्या–समाधान अप्रोच अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोग, रणनीतियों और तर्क के निर्माण के लिए गतिविधियों का संचालन करना	20–25 मिनट्स
ब्लॉक्स 3 और 4	कौशलों का अभ्यास	कौशल अभ्यास के माध्यम से बच्चों को कौशल में महारत हासिल करने में मदद करना	कार्यपुस्तिकाओं या वर्कशीटों के माध्यम से गणित के कार्य प्रदान करना	15 मिनट्स
	सीखने को मज़बूत करने के लिए गणित का खेल	सीखने को मज़बूत करने के लिए गणित का खेल समस्या–समाधान पर ध्यान केन्द्रित करना	व्यक्तिगत, उप–समूह, समूह अभ्यास	15 मिनट्स

खण्ड 4.6

सकारात्मक कक्षा-कक्ष वातावरण बनाना

स्कूल में प्रवेश के साथ ही बच्चों के संसार का विस्तार शुरू हो जाता है वे नए दोस्त बनाते हैं। परिवार से हटकर अन्य लोगों से जुड़ते हैं। वे स्वभाव से अधिक चंचल और वाचाल होते हैं। नित्य नई बातों को जानने के इच्छुक होते हैं। ऐसे में, बच्चों के लिए उचित व सकारात्मक मार्गदर्शन हेतु शिक्षक की भूमिका अहम् होती है।

4.6.1 कक्षा–कक्ष वातावरण

वातावरण शब्द का तात्पर्य कक्षा–कक्ष में भौतिक वातावरण (स्थान उपलब्धता) और मनोवैज्ञानिक वातावरण दोनों से है। भौतिक वातावरण के द्वारा आधारभूत संरचना प्राप्त होती है। मनोवैज्ञानिक वातावरण कक्षा–कक्ष में होने वाले सभी सम्बन्धों और सामाजिक अंतः क्रियाओं से बना होता है।

सुरक्षित आरामदायक एवं खुशहाल कक्षा–कक्ष के वातावरण में बच्चे को सीखने में अधिक सहायता मिलती है। बच्चों को सही क्रम से सीखने के लिए आवश्यक सामग्री की उपलब्धता कक्षा में अवश्य होनी चाहिए। कक्षा–कक्ष एक समावेशी सीखने के लिए अनुकूल वातावरण वाला होना चाहिए जो हर बच्चे को स्वतंत्रता, खुलापन, सार्थकता एवं अपनापन प्रदान करें।

4.6.2 बच्चों के साथ कक्षा–कक्ष के मानदंड बनाना

बच्चों को कक्षा–कक्ष में एक साथ रहने के लिए कुछ मानदंडों का प्रयोग किया जाए और उन्हें कक्षा में किस प्रकार से रहना है उसके लिए निर्धारित मानदंडों से परिचित कराया जाना चाहिए। बच्चों के साथ बातचीत करना और उनके साथ मानदंडों पर सहमत होना, सबसे बेहतर होता है। सकारात्मक कक्षा–संस्कृति पोषण और निर्माण में मदद करते हुए, स्वामित्व और उत्तरदायित्व की एक समृद्ध भावना का विकास करती है। सकारात्मक वाक्यांशों के साथ मानदंड छोटे, स्पष्ट और समझने में आसान होने चाहिए।

कक्षा के लिए निर्धारित मानदंडों को एक पोस्टर पर सूचीबद्ध करके, ऐसे स्थान पर चिपका दिया जाना चाहिए जिससे उस पर सबकी नजर आसानी से जा सके। कक्षा–कक्ष समावेशित, अधिगम वातावरण को समृद्ध करने वाला होना चाहिए ताकि प्रत्येक बच्चे को स्वतन्त्रता, स्वीकार्यता, सार्थकता, सम्बद्धता, सुलभता और चुनौती का अवसर प्रदान किया जा सके।

4.6.2.1 कक्षा के मानदंड

कक्षावार बच्चों के साथ बातचीत करते हुए कक्षा हेतु कुछ मानदण्डों पर सहमत हुआ जा सकता है। इससे उनमें स्वामित्व और जिम्मेदारी में वृद्धि होती हैं, साथ ही सकारात्मक कक्षा–संस्कृति का निर्माण होता हैं। कुछ मानदण्ड निम्नांकित हो सकते हैं–

क) जब कोई दूसरा व्यक्ति बात कर रहा हो तो सुनो।
ख) जब आप समूह में बैठे हों, तो बोलने से पहले अपना हाथ उठाओ।
ग) अपने सहपाठियों और शिक्षक से सम्मानपूर्वक बात करें।
घ) अपने हाथ पैर इधर–उधर न चलाएं और किसी भी वस्तु को अनायास न छेडे।

4.6.3 कठिन व्यवहार का प्रबंधन

कतिपय बच्चे अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं। व्यवहार वह भाषा है जिसके द्वारा बच्चे अपने मनोभावों और विचारों को व्यक्त करते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे हमें परेशान करना चाह रहे हों बल्कि सार्वजनिक रूप से कैसा व्यवहार होना चाहिए, उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता है। कई बार वे स्वयं के प्रति ध्यान खींचने के लिए भी अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं या कभी–कभी उनके द्वारा अपने क्रोध या असहजता को दर्शाने के लिए भी ऐसा व्यवहार किया जाता है। स्वयं को असुरक्षित मानना या

अपमानित होने का भय, कम नींद, खराब पोषण या स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण भी बच्चे अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं।

कक्षा को बाधित करने वाले मुश्किल व्यवहार के कुछ उदाहरणः –

क) आक्रामक व्यवहार (जैसे दूसरे को चोट पहुँचाना, मारना,चुटकी काटना या वस्तुओं को फेंकना आदि)।
ख) असामाजिक व्यवहार (अनुचित भाषा का प्रयोग,सीधे नाम से बुलाना आदि)।
ग) सर्किल टाइम के दौरान बाधाकारी व्यवहार, कक्षा में दौड़ना, सीटी बजाना, दरवाजे पटकना इत्यादि।
घ) अनुचित अभिव्यक्ति, रोना, मुंह फुलाना, चिल्लाना आदि।

4.6.3.1 बच्चों को स्थिर होने में मदद करना, उनके व्यवहार को सकारात्मक रूप से मार्गदर्शन देना

प्रत्येक वयस्क का उत्तरदायित्व है कि वह बच्चों को उचित व्यवहार के लिए उनका मार्गदर्शन, सुधार और उनका समाजीकरण करे। सकारात्मक मार्गदर्शन बच्चों के आत्म नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए अति महत्वपूर्ण है जो बच्चों को जिम्मेदारी की भावना के साथ जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण का विकास करता है।

बुजुर्ग, आस–पड़ोस के बड़े लोग, छोटे बच्चों के वैकल्पिक व्यवहारों का पता लगाने, सामाजिक कौशल विकसित करने और समस्याओं को हल करने के लिए एक सहायक वातावरण बनाते हैं। बच्चे के व्यवहार को समझने से हमें बच्चों से व्यवहार के उचित मानकों को स्थापित करने, बेहतर विकल्प के बारे में सोचने और बच्चों को समझने के तरीकों में मदद मिलेगी।

जब माता–पिता या शिक्षक के द्वारा बच्चे को हर समय किसी न किसी बात पर टोका जाता है तो बच्चा उनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने लगता है। इससे बच्चे की सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है और उसके व्यक्तित्व का विकास रुक जाता है।

4.6.3.2 शिक्षक द्वारा सकारात्मक मार्गदर्शन के उदाहरण

क) बच्चों को नकारात्मक के स्थान पर सकारात्मक कथनों में दिशानिर्देश और सुझाव दें।

यथा–'मुन्नी रोड के बीच में मत जाओ' के स्थान पर 'मुन्नी रोड के किनारे चलो, सड़क पर गाड़ियां आती रहती हैं का उपयोग किया जा सकता है।

चाकू या कैंची प्रयोग करते समय 'मत करो, कट जायेगा' के स्थान पर 'चाकू धारदार या तेज है, इससे आपको नुकसान हो सकता है', कहा जा सकता है।

ख) बच्चे जो कार्य अच्छा करते हैं शिक्षक बार–बार प्रशंसा करके उसे पुनर्बलन दें जैसे 'आफताब, बहुत अच्छा काम किया आपने'।

ग) आप बच्चे से जो काम करवाना चाहते हैं, उस पर जोर देते हुए सुझाव दें या उन्हें याद दिलाएं। बच्चों को झिड़कें नहीं, बल्कि प्यार से बात करें। जैसे पानी गर्म है, हाथ धो लो के बजाय हम कह सकते हैं कि 'रीना मौसम ठंडा है, गरम पानी से हाथ धोना आपको अच्छा लगेगा'।

घ) जब भी संभव हो सकारात्मक पुनर्निर्देशन का प्रयोग करें। जैसे 'चलो बिखरे कागजों को तह में लगाते हैं'।

ड़) प्रोत्साहन का उचित उपयोग करें, बच्चे को अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने की ओर अग्रसर करें। जैसे 'हरि आपने तो दो रंगों को सही पहचान लिया! आप तीसरे रंग को भी अवश्य पहचान लोगे'।

च) अपने द्वारा बताए जा रहे कार्यों की वजह बच्चों को अवश्य बताएं। बच्चों से किसी भी अनुरोध को सरल और सीधे शब्दों में अनुरोध करें। जैसे– 'काजल कॉपी से कागज मत फाड़ो' के स्थान पर 'काजल अगर आप कागज नहीं फाड़ेंगे तो आप की कॉपी सुंदर लगेगी'।

सच बताना

शुरुआती अवस्था में अधिकतर बच्चे स्वाभाविक रूप से ईमानदार और निष्कपट होते हैं। उनमें यह आदत विकसित करना और उसे हर तरह से प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। कई शिक्षक सच बोलने वाले बच्चों को पहचानने और उनकी सराहना करने के सरल तरीके खोजते हैं।

एक शिक्षक का सराहनीय तरीका– मैंने स्कूल के सभी बच्चों को लिखने का कोई कार्य दिया परंतु अगले दिन हरि कार्य करके नहीं लाया। मैंने उससे प्यार से पूछा कि 'कार्य करके क्यों नहीं लाए' तो हरि ने स्पष्ट कह दिया कि उसे कार्य याद नहीं रहा। मैंने देखा कि वह झूठ नहीं बोल रहा है। मैंने भी उसे डांटा नहीं बल्कि उसके सच बोलने की तारीफ की और उसे प्यार से समझा कर कार्य करने को कहा। अब उसके बाद हरि हमेशा कार्य करके लाने लगा।

4.6.4 अनुशासन

अनुशासन, मार्गदर्शन रणनीतियों का एक हिस्सा है, जिसका उपयोग बच्चों को उनके कार्यों के प्रति ज़िम्मेदार बनाने, आत्म नियंत्रण, सीखने और उचित व्यवहार करने में मदद करने के लिए प्रेरित करता है। अनुशासन का अर्थ सजा देना और बच्चों के असामान्य व्यवहार को रोकना नहीं है।

एक अच्छी मार्गदर्शन प्रक्रिया का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को आत्म अनुशासन प्राप्त करने में मदद करना है। बड़ों तथा शिक्षकों को उन तरीकों को अपनाना चाहिए, जिससे बच्चे में खुद को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित हो सके। बच्चों को काम करने के अवसर प्रदान करते हुए, शिक्षक उनमें विश्वास का संचार करते हैं। ऐसे बच्चे सक्षम और सार्थक महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए सैर सपाटे के दौरान बच्चे को एक ऐसा छोटा कपड़े का थैला देना, जिसमें वह स्वयं के द्वारा उपयोग किए गए वेस्ट को रख सके अथवा खेल के लिए लाए गए सभी सामानों को स्वयं उसी जगह पर वापस रखने की जिम्मेदारी निभाना इत्यादि।

आत्मसम्मान के साथ–साथ बच्चे को शिक्षक या बड़ों के सीमित नियंत्रण में रह कर भी रचनात्मक स्वतंत्रता का स्वाद लेने देना चाहिए। हर समय क्या करना है, यह बताने से बच्चे आजादी का सही अर्थ नहीं समझते। जब उन्हें स्वयं को परखने का अवसर मिलेगा तभी वे अपनी क्षमताओं को जान पाएंगे। छोटे बच्चों को अपनी देख रेख में सुरक्षित स्थानों पर सिखाना चाहिए। बड़े बच्चों को उतनी ही स्वतंत्रता देनी चाहिए जितनी जिम्मेदारी बच्चे संभाल सकते हैं।

शिक्षक की आवाज–

आज जब मैं कक्षा में गई तो मैंने देखा कि मोहित रो रहा है। मैंने पूछा तो कक्षा के सभी बच्चों ने बताया कि सोहन ने मोहित को मारा। मोहित ने भी यही बताया, मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि सोहन एक सीधा–साधा लड़का है। मैंने मोहन को बुलाया, उसने कहा कि वह अंदर आ रहा था तो अचानक मोहित से टकरा गया, जिससे मोहित की नाक पर लग गई। मैंने स्थिति को समझा फिर सारी कक्षा को हकीकत समझाई। अब सब समझ गए कि सोहन से गलती से लग गई। मोहित के मन में भी सोहन के प्रति कोई नाराजगी नहीं है। अब कक्षा में शांति थी और कक्षा अनुशासित हो गई। इस कार्य से मैं भी अति प्रसन्न थी।

4.6.5 शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा– जैसे–जैसे शिक्षक समस्या, व्यवहार एवं वातावरण को संभालने का अनुभव प्राप्त करते हैं तो वे सही प्रकार की भाषा उपयोग करना सीख जाते हैं। शिक्षक समझ जाते हैं कि किस बच्चे के लिए आवाज कितनी सख्त होनी चाहिए और कौन से शब्द सबसे अच्छा काम करेंगे और वे कब काम में लाए जा सकते हैं। वे चेहरे के भाव से अवगत हो जाते हैं। चेहरे के हाव–भावों को अभिव्यक्त करना सीख जाते हैं। किस भाग से बच्चों पर क्या असर होगा, वह समझ जाते हैं। इस प्रकार भाषा व्यवहार व भावों से भी अनुशासन का निर्माण कर सकते हैं। नये शिक्षक अनुभव के माध्यम से इन सब बातों को सीख जाते हैं जो बच्चो के संवेगात्मक विकास के लिए आवश्यक हैं।

क. **आवाज**– बच्चों से उसी तरह बात करें जैसे आप दूसरे लोगों से करते हैं आवाज को नियंत्रित करना सीखें और बच्चे आपका अनुकरण करें। इसके लिए अच्छे स्पीच पैटर्न का उपयोग करें। भाषा आसान हो, वह बच्चों को आसानी से स्पष्ट सुनाई दे।

ख. **शब्द**– बच्चों के साथ हमेशा आसान शब्दों में बात करें। शब्द सरल व स्पष्ट कथन ज्यादा प्रभावी होता है। शिक्षकों को शब्दों का चयन सावधानी से करना होगा। उन्हें बच्चे को जो भी अपेक्षित है, ठीक वही बताना चाहिए। जैसे– 'मोहित अपने गुड्डे को रास्ते से दूर रखो ताकि वह रीना की कार से न टकराये'।

ग. **शारीरिक भाषा**– छोटे बच्चों के साथ काम करते समय शिक्षक को स्वयं के शरीर व लंबाई के बारे में ज्ञान होना चाहिए। यदि बच्चों के साथ वैसा ही व गर्मजोशी से बात करनी हो तो स्वयं को बच्चे के आमने–सामने तक लाना होगा। ज्यादा ऊँचाई से की गई बात, ज्यादा प्रभावी नहीं होती है। अतः शिक्षक को स्वयं को बच्चे के सामने ऐसे प्रस्तुत करना होगा जिससे दोनों के मध्य ज्यादा से ज्यादा मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हों। बच्चों का खड़े शिक्षक से ज्यादा सामंजस्य बैठे शिक्षक के साथ होता है। शिक्षक की मधुर आवाज, आँखें मिलाकर देखना और सौम्य मुखाकृति, अच्छा हावभाव छात्रों के साथ ज्यादा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होते हैं।

घ. अभिवृत्ति

अभिवृत्ति बच्चों का मार्गदर्शन करने की अनकही भाषा का हिस्सा है। मनोवृति अनुभव से उत्पन्न होती है। शिक्षक को स्वयं अनुशासित हो कर अपने अनुभवों और भावनाओं को बच्चों के साथ साझा करना होगा। साथ ही बच्चों के प्रति स्वयं की धारणाएं निर्मित ना करके उनके साथ अनुभवों के आधार पर निर्णय लेना चाहिए।

4.6.6 क्या नहीं करना चाहिए

बच्चों को बार–बार यह बताने से बचें कि वे क्या नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार के शब्द कि नहीं, रुको बंद करो, यह नहीं, वह नहीं, इत्यादि शब्दों के प्रयोग से बचा जाए। इस प्रकार की रोक–टोक बच्चों में नकारात्मकता का भाव लाती है। उदाहरण के लिए यह बताने के बजाय कि 'रोहित इस गिलास को मत गिराना' यह कहना चाहिए कि 'रोहित गिलास को अपने सामने ठीक से रखो कि वह आपके हाथ से गिरे नहीं।

- बच्चों के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने से बचें, इससे बच्चा आहत होता है।
- बच्चों की गलती पर कटाक्ष करने से बचें बल्कि उचित प्रतिक्रिया करें।
- बच्चों की उपेक्षा करने से बचें।
- एक दूसरे के सामने बच्चों की उपेक्षा या कटाक्ष करने से बचें ।
- बच्चों को ऐसे उदाहरण कदापि न दिये जाएं जिससे उनके मन में किसी भी प्रकार का भय उत्पन्न हो। इससे उनके व्यक्तित्व विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

मार्गदर्शन के सबसे प्रभावी तरीके स्पष्ट सुसंगत और निष्पक्ष नियम हैं जिन्हें मानवीय तरीकों को ध्यान में रखकर प्रयोग में लाया जा सकता है। बच्चे हमेशा इस बात से परिचित हों कि यदि वे नियम को तोड़ें तो इसका परिणाम क्या होगा। अच्छा मार्गदर्शन बच्चों में हमेशा सकारात्मकता और समस्या समाधान की प्रक्रिया का भाव लाता है।

खण्ड 4.7

वातावरण का सृजन

4.7.1 बैठक व्यवस्था

बैठने के उचित क्रम और तरीके से सीखने का सुन्दर वातावरण निर्मित होता है। इससे बच्चों में सहयोग की भावना का विकास होता है। छोटे समूह में एक साथ बैठाकर बच्चों में दोस्ती एवं आपसी सम्बन्ध मजबूत होते हैं। उदाहरण के लिए बच्चों को छोटे समूहों में या एक बड़े घेरे में खड़ा करके कोई भावगीत या गतिविधि करवाना या कहानी सुनाना आत्मीय सम्बंधयुक्त वातावरण बनाने में मदद करता है।

प्रारम्भिक अवस्था पर कक्षा–कक्ष में बैठक व्यवस्था लचीली होनी चाहिए जो कक्षा में प्रयुक्त किए जा रहे शिक्षणशास्त्र को प्रतिबिम्बित करने या बच्चों के द्वारा देखने और समझने में सहयोगी हो। कभी–कभी बच्चों को एकांत के साथ व्यक्तिगत समय की आवश्यकता होती है। कभी–कभी वे जोड़े या छोटे–छोटे समूहों में काम करते हैं।

चित्र– गोल घेरे में कमरे में बैठे बच्चे

4.7.2 प्रदर्शित करना और प्रिंट समृद्ध वातावरण – बच्चों के काम को प्रदर्शित किया जाना चाहिए न केवल सर्वश्रेष्ठ अपितु सभी के कामों को प्रदर्शित करना चाहिए। यह प्रदर्शन बच्चों की नजर के स्तर पर रखा जाना चाहिए।

आरम्भिक वर्षों में भाषा सीखने पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से एक प्रिंट समृद्ध वातावरण भी निर्मित किया जाना चाहिए जिसमें दीवार पर शब्द, शब्द कार्ड, कक्षा में वस्तुओं पर लेवल और आसान सुलभ कक्षा पुस्तकालय आदि प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

4.7.3 कक्षा–कक्ष में सीखने का कोना–

लर्निंग कॉर्नर अथवा सीखने का कोना कक्षा के सबसे प्रिय स्थान होते हैं, कक्षा में ऐसे स्थान बच्चों को सदैव आकर्षित करते हैं बच्चों को विचारशील बनाते हैं तथा उनकी रुचि और जिज्ञासा को बढ़ाते हैं। लर्निंग कॉर्नर की स्थापना और रखरखाव में

शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाते हैं क्योंकि यह कार्नर बच्चों की सीखने की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

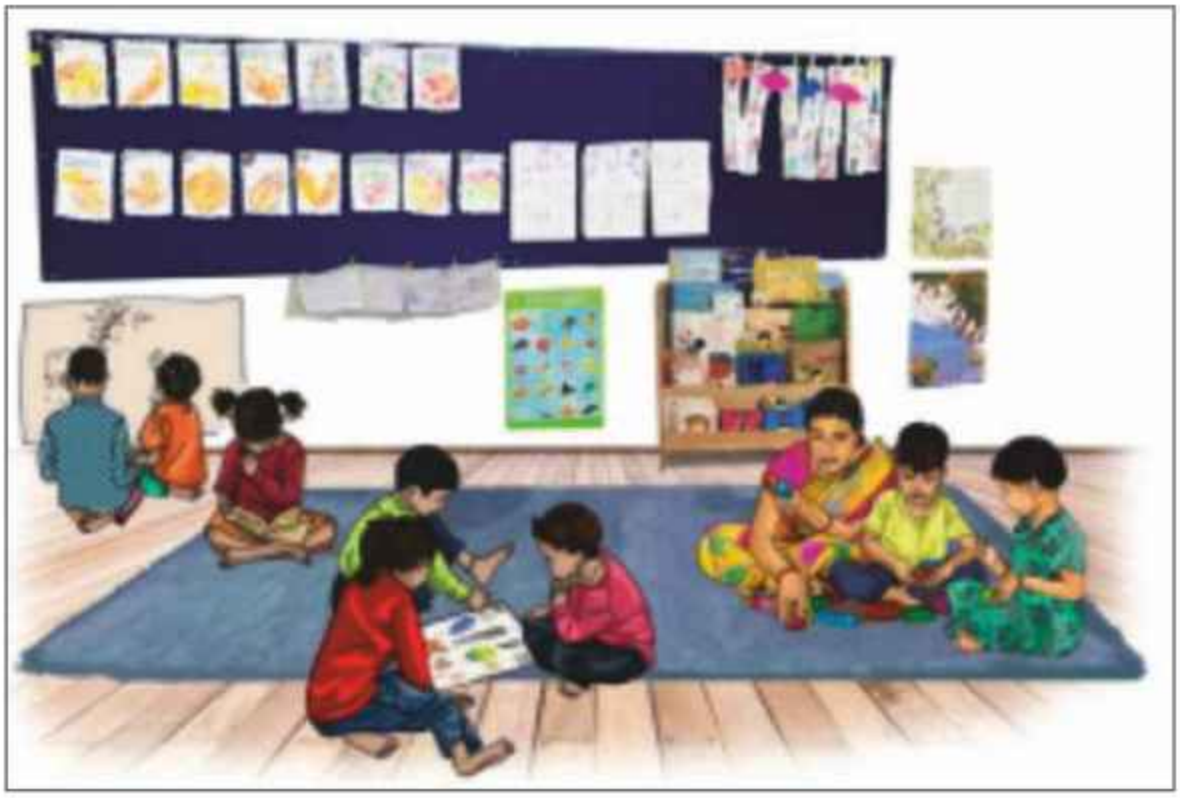

लर्निंग कॉर्नर और जादुई पिटारा

क) शिक्षक को बच्चों के विभिन्न समूहों के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करना चाहिए। ऐसी सामग्री होनी चाहिए जो कि एक अवधारणा की शुरूआत करने वाले बच्चों और कुछ अधिक सीख चुके बच्चों के लिए उपयुक्त हो जिसमें जादुई पिटारा सबके लिए आकर्षण और विविधता से परिपूर्ण हो। बच्चे इससे चीजें निकालने के लिए तत्पर व जिज्ञासु रहते हैं और अत्यन्त आनंद की अनुभूति करते हैं।

ख) बच्चों को सामग्री को छूने, देखने और प्रयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए। शुरुआत में बच्चे केवल एक कोने से दूसरे कोने में आते–जाते हैं, घूमते रहते हैं किंतु धीरे–धीरे वे अपने पसंद की गतिविधियों और सामग्री के साथ गंभीरता से जुडते हैं।

ग) शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को सभी कोनों में जाने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि सीमित सामग्री हो तो शिक्षक प्रत्येक कोने में बच्चों की संख्या को निश्चित कर सकता है। कुछ सामग्री को हर 15 दिन में बदला जा सकता है। इससे बच्चों को नया खोजने के प्रति जिज्ञासा बढ़ेगी। शिक्षक उस अवधि के सीखने के प्रतिफलों के अनुसार भी सामग्री को व्यवस्थित कर सकता है।

घ) जब बच्चे कोनों में खेलते हैं, तो शिक्षक स्वयं भी उनके साथ प्रतिभाग करें। वे बच्चों के आधे समूह को एक ऐसा खेल करवाएं, जिससे वे स्वयं स्वतंत्र रूप से कर सकें और उसी दौरान समूह के दूसरे हिस्से वाले बच्चों के मार्गदर्शित या संरचित खेल पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

ड) जब भी बच्चे कॉनर्स का उपयोग करते हैं, तब शिक्षक को बच्चों का निरीक्षण करना चाहिए। पहेली का अर्थ ढूंढ़ना, किसी विचार पर विस्तार प्रदान कर सकना, कहानी की मदद से किसी बात को समझाना, इस दौरान बच्चों की प्रतिक्रियाओं को डायरी में नोट करना और उनकी जिज्ञासाओं को शांत करना आदि शिक्षक को छोटे–छोटे निर्णय लेने एवं अगले दिन,

सप्ताह या महीने की आगामी योजना निर्माण में मददगार साबित होते हैं। कॉर्नर्स का प्रयोग करते समय बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

खुशी का कोना–सभी कॉर्नर्स को समग्र रूप से खुशी का कोना, नाम दिया जा सकता है। जहाँ बच्चे खेलते हुए आनंदित होते हुए सीखें ।

कला का कोना– जहाँ बच्चों में कला का सृजन हो सके ऐसे कोनों में स्थानीय परिवेश से उपलब्ध सामग्री के साथ विभिन्न प्रकार के पेपर (Ruled and Plane), कलर, पेंसिल, अनुपयोगी सामग्री, चॉक कपड़े की कतरन, पेंट ब्रश, पुराने टूथ ब्रश, टेप, क्ले / मिट्टी, बोर्ड, पुराने अखबार, मैगज़ीन, आइस्क्रीम स्टिक्स, चीड़ का शंकु (छेंता), गेंद आदि सामग्री उपलब्ध हो जिनका प्रयोग कर बच्चे कला करना सीखें।

प्रदर्शन कोना– दीवार पर शब्द कार्ड और विभिन्न प्रकार के पोस्टर लगाए जा सकते हैं।

विज्ञान का कोना– बच्चों को छोटे–छोटे वैज्ञानिक तथ्यों से परिचित करवाने के लिए छोटी–छोटी गतिविधियाँ करवाना जैसे– हवा का एहसास गुब्बारा फुलाकर, पानी या विभिन्न खाद्य वस्तुओं का स्वाद, बुलबुले बनाना आदि।

अध्याय-5

शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में विषयवस्तु का एक महत्वपूर्ण स्थान है। अतः विषयवस्तु का चयन सोच समझ कर किया जाना चाहिए। यह काफी हद तक दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ–साथ अपनाये जाने वाली शैक्षणिक पद्धति (Pedagogical Approach) से निर्धारित होती है। इसमें सीखने का माहौल, अधिगम शिक्षण सामग्री (LTM) और किताबें शामिल हैं।

बुनियादी अवस्था में बच्चे अपने आसपास की भौतिक दुनिया और उस पर्यावरण के साथ सक्रिय रूप से जुड़ कर सबसे प्रभावी ढंग से सीखते है। इस प्रकार बुनियादी अवस्था में सीखने के लिए समुचित वातावरण और उसके सृजन का आयोजन बहुत महत्वपूर्ण है। इस समृद्ध संवेदी अनुभव को सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक चुनी गयी अधिगम शिक्षण सामग्री (LTM) कक्षाओं में एक आवश्यक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

खण्ड 5.1

पाठ्यक्रम का विकास

पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम विकास, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और प्राप्त की जाने वाली दक्षतायें निहित हैं, तथा विभिन्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के लिए समय आवंटन और उसके अनुरूप अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों के बारे में सुझाव भी देती है।

पाठ्यक्रम बनाने वालों को इन सुझावों के अनुरूप स्थानीय संदर्भों–सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश और परंपराओं व शिक्षकों की क्षमता, स्कूलों के बुनियादी ढाँचे, भौतिक एवं मानवीय संसाधन आदि पर विचार करने के बाद पाठ्यक्रम विकसित किया जाना चाहिए।

- पाठ्यक्रम में उपयुक्त विषयवस्तु का चयन तथा सामग्री सीखने के प्रतिफलों पर आधारित होनी चाहिए। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सिद्धान्तों और दिशा–निर्देशों के साथ–साथ स्थानीय स्वाद और सदर्भों के आधार पर चयन किया जाना चाहिए।
- बुनियादी अवस्था हेतु शिक्षकों के लिए गतिविधि पुस्तकें और अन्य पुस्तिकायें (Hand Books) विकसित की जानी होगीं। ये पुस्तकें पाठ्यक्रम और उसमें नियोजित अनुक्रम के विषय में शिक्षकों का मार्गदर्शन करेंगी।
- पाठ्यक्रम में आकलन के लिए व्यापक दिशा निर्देश तैयार किए जाने चाहिए, जो पाठ्यक्रम में अभिव्यक्त सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि की जाँच करता है।

खण्ड 5.2

विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त

दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु विषयवस्तु के उपयोग में निम्नांकित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए–

- विषयवस्तु संवेदनात्मक रूप से आकर्षक होनी चाहिए। (जैसे बच्चे की इन्द्रियों को सक्रिय करना, सौन्दर्यात्मक महत्व का होना) या उसे बच्चे के अनुभवों के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक होना चाहिए।
- विषयवस्तु बच्चे के जीवन के अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए। तथा बच्चे जिन सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक परिवेश में पल बढ़ रहे हैं, वह उसमें प्रतिबिम्बित होना चाहिए।
- विषयवस्तु की सामग्री विविध और समावेशी होनी चाहिए ताकि सभी प्रकार के बच्चों की रूचियाँ उसमें समायोजित हों।
- इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि रूढ़िवादिता को बढ़ावा न मिले।

5.2.1 भाषा के लिए विषयवस्तु

कहानी और कवितायें छोटे बच्चों की कल्पनाशीलता और भाषायी क्षमताओं को बढ़ाती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम में भाषा के लिए स्थानीय परिवेश से सम्बन्धित विषयवस्तु के साथ–साथ कहानियों और कविताओं का एक अच्छा संतुलन होना चाहिए। प्राकृतिक संदर्भों के साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित विषयवस्तु बच्चों को उनके आसपास की दुनिया की समझ हासिल करने में मदद करती है।

क) पाठ्यपरक विषयवस्तु (Textual Content)

- बुनियादी स्तर की पाठ्यपरक विषयवस्तु में पर्याप्त चित्र और दृश्य संकेत होने चाहिएं।
- विषयवस्तु आकर्षक होनी चाहिए।
- उपयोग में लायी जाने वाली शब्दावली में स्थानीय भाषा और पढ़ायी जाने वाली भाषा के शब्दों का एक विवकेपूर्ण मिश्रण हो।

ख) विषयवस्तु का स्वरूप :

- **पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तकें** : कक्षा–1 हेतु पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तक उपलब्ध करवायी जानी चाहिए, लेकिन वे ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे उनके साथ सक्रिय संवाद कर सकें।
- **बाल साहित्य :**

✓ बुनियादी शिक्षा का प्रारम्भ, प्राकृतिक समावेश से होना चाहिए। उदाहरण– पशु–पक्षियों की बोलियां, विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधे, हवा और पानी से जुड़े तथ्य।

✓ साहित्य में स्थानीय संस्कृति की कहानियां और गीत शामिल होने चाहिए। उदाहरण–

बेड़ू पाको बारो मासा नरेण काफल पाको चैत मेरी छैला।

घुगुती घुरोण लागी म्यारा मैत की, बौड़ी बौड़ी ऐगि ऋतु ऋतु चेत की

- **वर्कशीट** : वर्कशीट ऐसी होनी चाहिए जिन्हें बच्चे स्वयं ही चुनने के लिए तत्पर रहें और स्वयं ही उस पर काम करते हुए उसे पूरा कर सकें ।

- **शिक्षण सामग्री** : भाषा और साक्षरता सम्बन्धी गतिविधियों को आकर्षक और रोचक बनाने के लिए फ्लैशकार्ड, खेल, पहेली, अक्षर फॉर्म, कहानी आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- **दृश्य–श्रव्य सामग्री** : कक्षा–कक्ष में अच्छी गुणवत्ता वाले दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

5.2.2 गणित के लिए विषयवस्तु :

- भाषा के समान गणित की विषयवस्तु का भी स्थानीय वातावरण के साथ जुड़ाव होना चाहिए।
- आकृतियों को समझने या गिनने जैसी गणितीय गतिविधियों को प्राकृतिक और मानवीय वातावरण के साथ जोड़ा जा सकता है। अभ्यास कार्य में निम्नवत् सामग्रियों या उनके चित्रों का उपयोग किया जा सकता है–

  माचिस की डिब्बी, बेलन, रोटी, समोसा, बर्थ–डे कैप, लड्डू, लूडो का पासा, गेंद, सूरज का चित्र, चूड़ी, बिन्दी आदि प्रयोग में ला सकते हैं।
- गिनती, जोड़ और घटाव पर आधारित गीत को गाना। जैसे–

एक बड़े राजा का बेटा
दो दिन से बिस्तर पर लेटा
तीन महात्मा सुनकर आये
चार दवा की पुड़िया लाये
पाँच मिनट में गरम करवायी
छह–छह घण्टे बाद पिलायी

.....

- वजन सिखाने हेतु वस्तुओं के वजन का ज्ञान कराया जा सकता है। जैसे–किताब, पत्थर,फूल, मोती, बट्टी आदि।
- खेल के माध्यम से दिनचर्या का ज्ञान करवाया जा सकता है।

राजू, राधा, दो बच्चे हम,
स्वच्छ रखें अपना घर हरदम,
सुबह पिताजी हमें जगाते,
रोज बाग की सैर कराते,
अम्मा हमको नित नहलाती,
साग, चपाती, खीर खिलाती।

.....

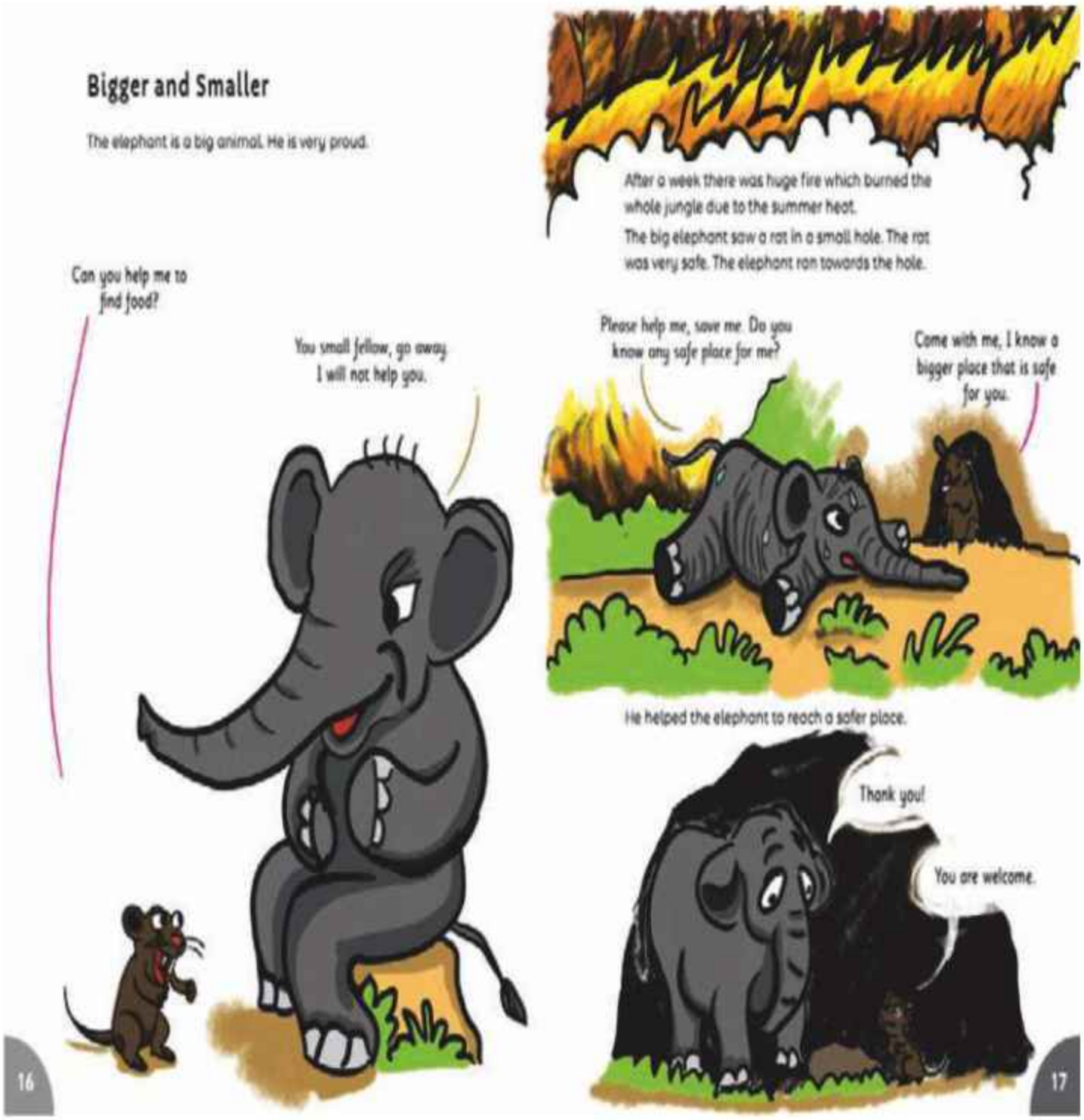

वर्कशीट्स (अभ्यास पत्रक) :

अभ्यास पत्रक का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को गणितीय कौशल का पर्याप्त अभ्यास कराना और उन्हें सीखने के अवसरों को उपलब्ध कराना है। अभ्यास पत्रक का संदर्भ सार्थक होना चाहिए।

नमूना वर्कशीट

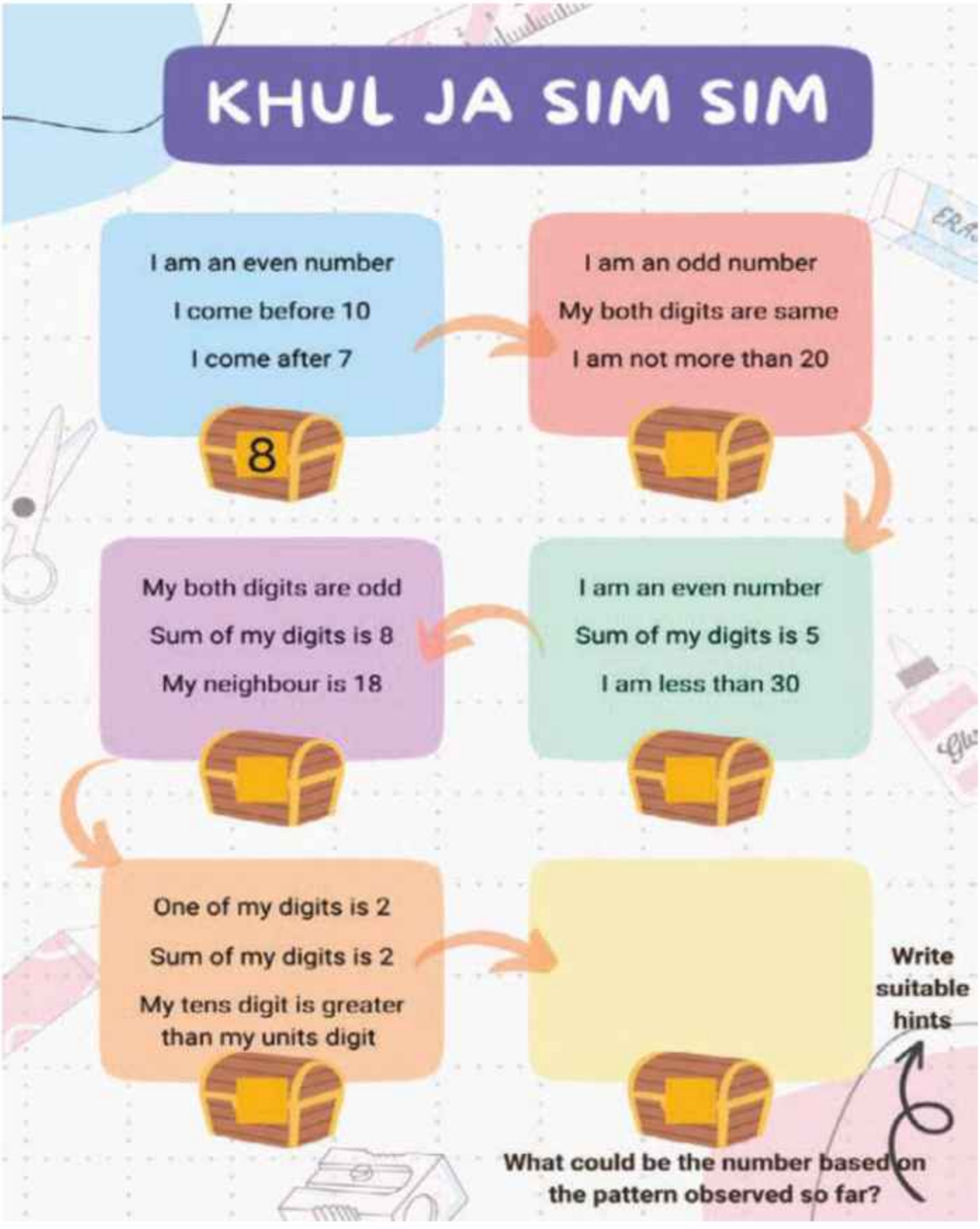
KHUL JA SIM SIM
I am an even number
I come before 10
I come after 7
8
I am an odd number
My both digits are same
I am not more than 20
My both digits are odd
Sum of my digits is 8
My neighbour is 18
I am an even number
Sum of my digits is 5
I am less than 30
One of my digits is 2
Sum of my digits is 2
My tens digit is greater than my units digit
Write suitable hints
What could be the number based on the pattern observed so far?

5.2.3 कला के लिए विषयवस्तु :

- कला सीखने के प्रतिफलों की सम्प्राप्ति का माध्यम होना चाहिए।
- शिक्षक को बच्चों के आसपास के रंगों और पैटर्न के आधार पर कक्षा में दृश्य कला की गतिविधियाँ आयोजित करनी चाहिए।
- कला की कक्षा में उपयोग किए जाने वाले गीत, धुन, नृत्य, कहानियाँ व विभिन्न प्रकार के क्रिया– कलाप स्थानीय आधार पर होने चाहिए। जैसे– रंगोली कला, कोलाज कला, ऐपण कला, रम्माण कला, हस्तशिल्प कला, रॉक पेंटिंग, भित्ति चित्र आदि।
- प्रारम्भिक शिक्षा में कला सीखने के लिए कक्षा–कक्ष में विभिन्न वस्तुओं द्वारा गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं। जैसे– माला बनाना, मिट्टी के गोले बनाना, माचिस की तीलियों से मॉडल बनाना, कागज की नाव बनाना व पेन्सिल के छिलकों से आकृतियाँ बनाना आदि।
- हाथों व पैरों की उंगलियों, आलू, सब्जी, आदि के द्वारा कागज पर ठप्पे लगवाना।
- खाली चित्रों की वर्कशीट पर रंग भरवाना।

खण्ड 5.3

विषयवस्तु को व्यवस्थित करने के तरीके

प्रारम्भिक वर्षों में सीखने के लिए विषयवस्तु को कई तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है। खेल–खेल में बच्चे सर्वाधिक रूचिपूर्ण और लगन से सीखते हैं। सबसे अधिक इस्तेमाल की जानी वाली कुछ पद्धतियाँ (Approaches) निम्नवत् हैं–

अपनायी जाने वाली पद्धतियाँ–

5.3.1 परियोजना आधारित पद्धति (Project-based Approach)-

- यह पद्धति बच्चों के आन्तरिक कौशलों को विकसित करने की एक बृहद् श्रृंखला है।
- इसमें बच्चे के सीखने का तरीका सहज, सरल व छोटा हो जाता है तथा वे प्रत्यक्ष रूप से सीखते हैं, जिससे उनकी सभी रुचियों को प्रदर्शित करने का मौका मिलता है।
- इस पद्धति में बच्चा बिना भय के रचनात्मक ढ़ंग से सीखता है।
- इस पद्धति से बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होता है।
- इस पद्धति से बच्चों का संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक विकास होता है।
- इस पद्धति के क्रियान्वयन हेतु खोज, स्वास्थ्य, कला और वास्तविक जीवन पर आधारित परियोजनाएँ होनी चाहिए। उदाहरणार्थ–
  - ❖ पानी के प्रयोग जैसे वस्तुओं का डूबना, तैरना एवं घुलना आदि।
  - ❖ सब्जियों की आकृतियों का निर्माण करना।
  - ❖ जोड़–तोड़ प्रयोगशाला का निर्माण करना जैसे कुछ बिल्डिंग ब्लॉक्स को बिखेर कर बच्चों से मीनार, घर व ट्रेन का निर्माण करवाना।
  - ❖ प्रत्यक्षतः फूल, फल, पत्तियां, सब्जियों की सूची तैयार कर उनके नामों को बताना।
  - ❖ सूखी पत्तियों, पुराने फूलों, कार्डशीट आदि से विभिन्न कोलाज का निर्माण करवाना।
  - ❖ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनके परिवेश में ले जाकर विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन करवाते हुए बहुसंवेदी अनुभवों द्वारा जानकारी प्राप्त करवाना। जैसे–वस्तुओं को स्पर्श करना, सूँघना (गन्ध), बोलना आदि।

5.3.2 कहानी आधारित पद्धति (Story-Based Approach):

1. कहानियां सम्प्रेषण का सबसे सरल एवं उत्कृष्ट माध्यम होती हैं। यह हमारी संस्कृति, परिवेश एवं समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
2. कहानियों से बच्चों में कल्पना, उत्सुकता, एकाग्रता एवं स्मृति विकसित होती है।
3. कहानी सीखने की प्रक्रिया का सहज एवं सरल माध्यम है। जिसमें बच्चे अपनी शब्दावली का प्रयोग करके कहानी की रचना कर सकते हैं।
4. कहानियाँ भाषा सिखाने में सहायक होती हैं और भावनात्मक, सामाजिक तथा बौद्धिक विकास को प्रेरित करती हैं।
5. कहानियों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को सम्प्रेषित किया जाता है।
6. कहानियों का चयन करते हुए यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये बच्चों की अभिरुचि और ज़रूरत के अनुरूप हो, स्थानीय संदर्भ से प्रेरित हो और संस्कृति व मानवीय आधार से जुड़ी हों। जैसे– लोक कथाएं, कविताएं, जानवरों की कहानियां, गीत, दन्त कथाएं आदि।
7. कहानियों का चयन इस प्रकार होना चाहिए जिससे बच्चे उस पर चिन्तन–मनन भी कर सकें, साथ ही उससे जुड़े संदेशों को भी ग्रहण कर सकें।

लोक कथा (जामुन व उमा)

एक बार की बात है एक गांव में एक पुरोहित थे। उनकी एक पुत्री थी जिसका नाम उमा था। उमा बचपन से ही प्रकृति प्रेमी थी। वह घण्टों तक पेड़ पौधों से बातें किया करती थी। उसके गांव में जामुन के बहुत से वृक्ष थे। उमा को एक छोटे जामुन के वृक्ष से लगाव हो गया, वह उसकी देखभाल करती और उसे पानी देती। इस प्रकार उमा की परवरिश से पौधा शीघ्र ही बड़े वृक्ष का आकार लेने लगा। एक दिन हाथियों का एक झुण्ड भटकते हुए उनके गांव में आ गया। जहां से वह झुण्ड गुजर रहा था, वहीं वह वृक्ष भी था। उमा रोने लगी कि कहीं उसका वह वृक्ष हाथी तोड़ न डालें। परन्तु उसके पिता ने उसे समझाया कि वह वृक्ष को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएँगे। उमा चुप हो गयी। अगली सुबह उसने देखा कि उसके वृक्ष की छाल उतरी हुई है, क्योंकि हाथी उससे रगड़ते हुए निकले थे। वह फिर से रोने लगी। अपनी पुत्री का प्रकृति प्रेम देखकर पिता की आखों में भी आंसू आ गये। उन्होंने पुत्री को प्यार से समझाया कि जैसे हम बीमार होते हैं तो इलाज कराकर शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं इसी प्रकार पेड़ भी उपचार और खाद–पानी पाकर शीघ्र ही हरा भरा हो जाएगा। यह सुन कर उमा प्रसन्न हो कर खिलखिलाने लगी।

इस कहानी के माध्यम से बच्चों में संवेगात्मक विकास, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, आदि गुणों का विकास किया जा सकता है। साथ ही बच्चों के बीच चर्चा करते हुए बहुत से पेड़–पौधों का ज्ञान भी करवा सकते हैं। उन्हें प्रकृति के प्रति संवेदनशील होने की प्रेरणा दे सकते हैं और साथ ही कहानी से जुड़े छोटे–छोटे प्रश्नों का निर्माण करके बच्चों की जिज्ञासा का निवारण भी कर सकते हैं।

कविता

अपनी संस्कृति व राज्य से सम्बन्धी कुछ इस प्रकार की कविताएं भी सुना सकते हैं–

मेरा उत्तराखण्ड कितना अद्भुत है
जहां से उद्गम मां गंगा का, गौमुख जो कहलाता है
हम उस उत्तराखण्ड के वासी
यह सौभाग्य हमारा है
चांदी सी चमक है शिखर नंदा की
जो ताज हिमालय कहलाता है
बद्री, केदार, गंगोत्री यमुनोत्री,सदा यही
इसलिए यह देवभूमि कहलाता है।

5.3.3 थीम (निर्दिष्ट विषयवस्तु) आधारित पद्धति (Theme-Based Approach) :

- थीम आधारित शिक्षण सीखने–सिखाने का वह तरीका है जिसमें पाठ्यचर्या के कई क्षेत्रों को मिलाकर एक विषयवस्तु में समाहित किया जाता है। इससे सार्थक शब्दों को बनाने और एक थीम के भीतर विभिन्न पहलुओं का पता लगाने में मदद मिलती है।
- यह सीखने के विशिष्ट पहलुओं का मार्गदर्शन करती है तथा बच्चे को मानसिक एवं शारीरिक रूप से परिपक्व बनाती है।
- इसमें बच्चे वास्तविक जीवन की प्रक्रियाओं को सहज रूप से समझते हैं और बच्चों की विषय को लेकर एकीकृत समझ विकसित होती है।
- इस विधि में बच्चे अपने बारे में, स्वयं की रुचियों, रिश्तों और लोगों के बारे में तथा अपने आसपास के पर्यावरण से सम्बन्धित विषय के बारे में पता लगाते हैं। इसमें बच्चे अन्वेषण या प्रयोग करने के लिए प्रश्न पूछते हैं और अपने पूर्वज्ञान से नई चीजों को जोड़ते हैं।

- इसमें उप थीम (Sub-themes) होते हैं जैसे थीम / निर्दिष्ट विषय वस्तु पालतू जानवर तथा उप थीम–दूध देने वाले जानवर। जैसे शिक्षक बच्चों के परिवेश में रहने वाले पालतू जानवरों के बारे में खेल, कहानी या कविता के माध्यम से जानकारी देना प्रारम्भ करें तो बच्चे स्वयं ही दूध देने वाले जानवरों की पहचान कर सकते हैं।
- थीम के केन्द्र में बच्चे होने चाहिए।
- शिक्षक एक सुगमकर्ता (Facilitator) की भूमिका में रहना चाहिए तथा शिक्षक को सीखने की प्रक्रिया में मध्यस्थता करनी चाहिए ।
- थीम के माध्यम से बच्चे विभिन्न पहलुओं को समझते हैं। उदाहरणार्थ – चिड़ियाघर, घर, रंगमंच, खेत और जंगल, पहाड़ी और पर्वत, नदियाँ, मेले, खेल और खिलौने, चित्र–पुस्तकालय, बगीचा, प्रदर्शनी कक्ष, वस्तु संग्रहालय आदि।
- छोटे बच्चों को कहानी, कविताएं, गीत सुनना अच्छा लगता है और अगर इनको सुनाने के साथ अभिनय व वास्तविक चित्रण भी किया जाये तो वह बड़े आनन्द व उत्साह के साथ सुनते व सीखते हैं।

5.3.4 चयनशील पद्धतियाँ (Eclectic Approaches):

सभी पद्धतियों की अलग–अलग विशेषताएं होने के बावजूद एक विशेष पद्धति की अनुशंसा नहीं की जा सकती है क्योंकि कुछ पद्धतियों का चुनाव स्कूल व शिक्षक अपनी जरूरतों के आधार पर भी करते हैं।

स्कूल व शिक्षक व्यक्तिगत सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन का उचित नियोजन कर अक्सर कुछ खास तरह की पद्धतियों का उपयोग करते हैं। कभी–कभी किसी विशिष्ट पद्धति का प्रयोग किए बिना भी विषय सामग्री को आकर्षक व प्रभावी बनाया जा सकता है।

उदाहरणार्थ– बच्चों से बातचीत करना, कक्षा–कक्ष से बाहर ले जाकर उनके क्रियाकलापों का आकलन करना। पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु प्रत्येक बच्चे को अलग–अलग गमलों के पौधों का दायित्व देना ताकि वह उससे आत्मीयता से जुड़ सकें।

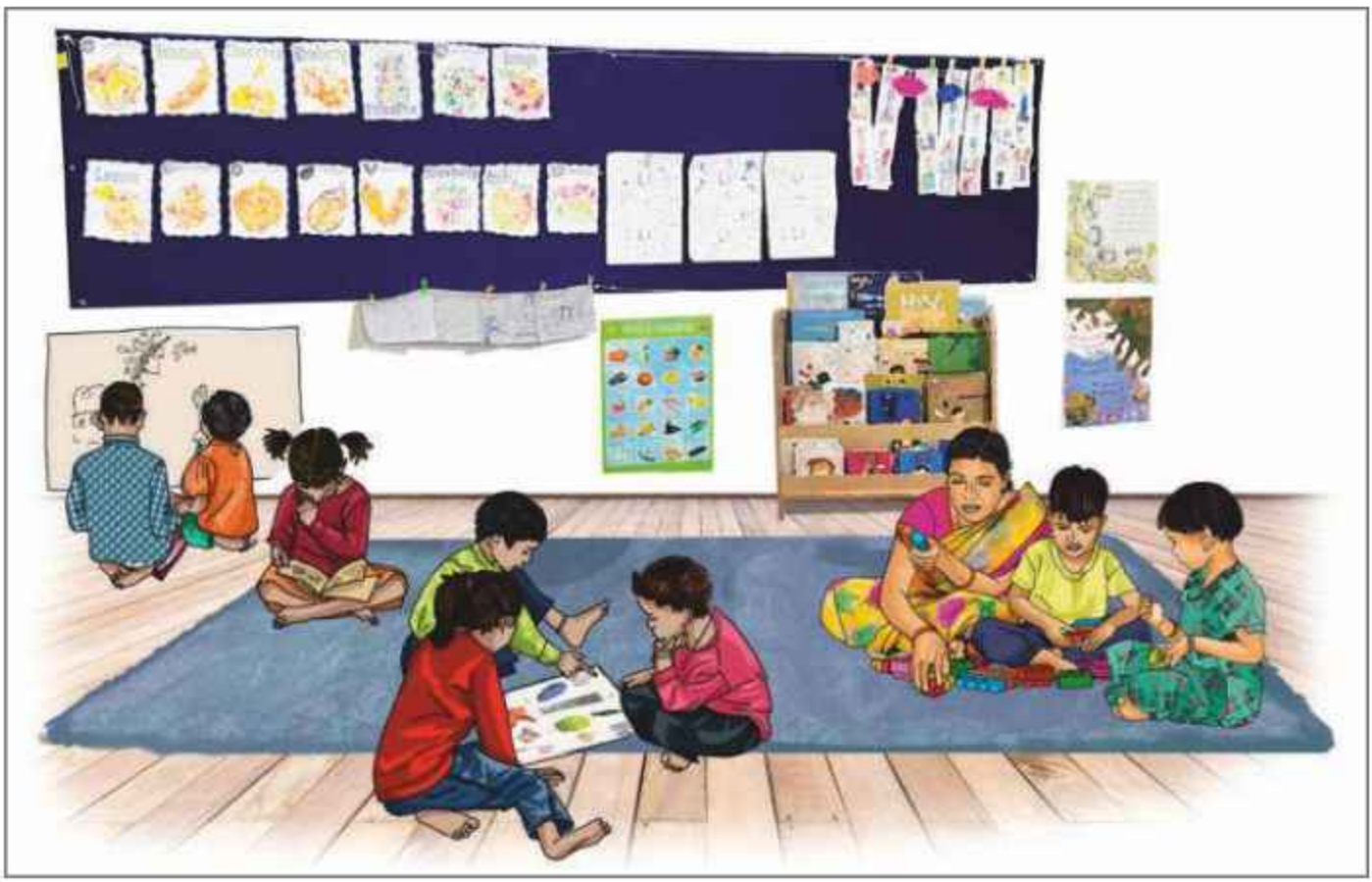

खण्ड–5.4

अधिगम शिक्षण सामग्री

बुनियादी अवस्था में बच्चें तब अधिक सीखते हैं जब वे अधिकाधिक इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। साधारण खिलौनों से लेकर गिनने और संख्या ज्ञान के लिए जोड़–तोड़ वाली सामग्री इस आयुवर्ग के लिए आवश्यक LTM हैं।

बुनियादी अवस्था के बच्चों के लिए बनायी जाने वाली सामग्री आकर्षक, सुरक्षित और टिकाऊ होनी चाहिए। चूंकि 3 साल के बच्चे चीजों को मुँह में रखते हैं इसलिए उचित सामग्री व रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि बच्चों को कोई हानि न पहुंचे। LTM का निर्माण स्थानीय वस्तुओं पर आधारित होना चाहिए, ताकि बच्चों को LTM से सहजता से जोड़ा जा सके। LTM में खरीदी गई सामग्री, स्थानीय रूप से निर्मित सामग्री, शिक्षकों द्वारा निर्मित सामग्री और बच्चों द्वारा बनायी गई सामग्री शामिल होनी चाहिए। खेल से सम्बन्धित सामग्री को अलग–अलग चरणों में बाँटना चाहिए। जब बच्चे आसानी से चरण को पार कर जायें तब ही उन्हें अगले चरण की सामग्रियां उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।

5.4.1 शिक्षक द्वारा तैयार की जाने वाली सामग्री :

शिक्षकों को कम लागत तथा स्थानीय आधार पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग अधिगम शिक्षण सामग्री के रूप में करना चाहिए, तथा शिक्षकों की स्थानीय वस्तुओं से अधिगम शिक्षण सामग्री बनाने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए। सामान्यतः बड़े ढक्कन, बीज, खाली बोतलें, पुराने कागज/अखबार की कतरन, पुराने रंगीन कैलेण्डर, पुरानी सी.डी., पुरानी रस्सी/ऊन, आंवले, रीठे, रिंगाल, पेड़ की सूखी पत्तियां, चीड़ के कोन (छेंता), भट्ट, राजमा, कुलथ (गहत), कोदा, तिल, चावल, चौलाई, टूटे हुए खिलौने, पुराने टायर, पुराने डिब्बे आदि आसानी से अभिभावकों की मदद से प्राप्त किये जा सकते हैं।

5.4.2 बच्चों द्वारा तैयार की जाने वाली सामाग्री :

- बच्चे अपनी कला और शिल्प कार्य से सरल LTM बना सकते हैं।
- रंगीन कपड़े की कतरनों से बच्चों को कठपुतली एवं खिलौने बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- पुराने गत्ते की पेटियों से कूड़ादान ।
- गत्ते तथा रंगीन रैपर पेपर की सहायता से मुखौटे तथा मुकुट बनाना।
- चीड़ के कोन (छेंता) को रंगना।
- आम की गुठली तथा रीठे से सीटी बनाना।
- कागज से नाव व पतंग बनाना।

इन सभी सामग्रियों तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अन्य सामग्रियों के माध्यम से भी कम लागत में सुन्दर सामग्रियों का निर्माण किया जा सकता है।

5.4.3 बाजार से खरीदी जा सकने वाली सामग्री :

- कुछ LTM ऐसी सामग्रियों से बने होते हैं जो स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं हो सकती है। अतः ये सामग्री बाज़ार से खरीदी जा सकती है।
- बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री हेतु शिक्षकों एवं अभिभावकों का सहयोग लिया जा सकता है।
- बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री बच्चों के आयु व संख्या के अनुरूप होनी चाहिए।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की दिव्यांगता के अनुकूल एवं आवश्यकतानुसार यथा उभरे, श्रवणीय, आकर्षक एवं रंगीन, नई–नई सृजनात्मक शिक्षण सहायक सामग्री तथा बड़े–बड़े अक्षरों वाली पुस्तिकाएं, आदि शिक्षण सहायक सामग्री खरीदी जानी चाहिए।

बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री रसोई सेट, डाक्टर सेट, रेखा चित्र, कार्टून, मॉडल, फिल्प स्ट्रिप्स, कठपुतली, स्लाइड, वॉल पेंटिंग, अभ्यास पुस्तिका (Work Book), संख्या चार्ट, सांपसीढ़ी का खेल, रस्सियां, गेंद, रंगीन मोती, खिलौने, ABACUS, रंगीन कागज, गोंद, टेप, रंगीन पेन्सिल, चॉक, चिह्न पुस्तकें व अनेक रंगों से बनी ऐसी चटाइयाँ या दरी जिनसे बच्चों को रंगों की जानकारी दी जा सके इत्यादि।

5.4.4 प्रारम्भिक स्तर (कक्षा–1 और 2) के लिए गणित LTM :

- प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 के बच्चों की गणितीय समझ को विकसित करने के लिए गिनी जा सकने वाली घरेलू तथा स्थानीय परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं को उपयोग में लाया जा सकता है। जैसे थाली, चम्मच, मिट्टी की गोलियां, पेड़–पौधे, कंकड़, पालतू जानवर, घर के सदस्य आदि।
- बाजार आधरित LTM के अन्तर्गत गणित माला, वीडियो गेम, फ्लैशकार्ड, तीलियों का बण्डल, विभिन्न कागज से बनी आकृतियां, कार्ड बोर्ड, गणित के चिह्न, अंक झूला, कंकड़ माला, त्रिकोण, वर्ग, आयत, वृत्त आदि के विभिन्न आकार, मॉडल घड़ी आदि सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग भी किया जाना चाहिए।

छोटे बच्चों को कविता के माध्यम से भी सिखाया जाना चाहिए। जैसे–शिक्षक कक्षा–1 के बच्चों को घटाना सिखाते समय उसे इस प्रकार की कविता सुना सकते हैं, इसी प्रकार जोड़ और अन्य संक्रियाओं को भी सिखाया जा सकता है।

पाँच छोटी चिड़िया खा रही थी अनार,
एक चिड़िया उड़ गयी, बाकी बच गयी चार,
चार छोटी चिड़िया बजा रही थी बीन
एक चिड़िया उड़ गयी बाकी बच गयी तीन,
तीन छोटी चिड़िया खा रही थी केक,
दो छोटी चिड़िया उड़ गयी, बच गयी एक।

5.4.5 पुस्तकालय और बाल साहित्य

- पुस्तकालय के निरंतर उपयोग से बच्चों में पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित होता है। इसलिए पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रह की जगह नहीं, बल्कि वह स्थान है जहां जाकर बच्चा विभिन्न प्रकार की किताबों से परिचित होता है।
- पुस्तकालय के साथ जुड़ाव हेतु एक सक्रिय वातावरण का होना अनिवार्य है, यह भी महत्वपूर्ण है कि राज्य की संस्कृति, परिवेश, खान–पान, वेशभूषा, और रीति रिवाज़ों से संदर्भित बाल साहित्य के अलावा उत्तराखण्ड से जुड़ी कहानियों व कथाओं का बाल साहित्य भी पुस्तकालय में उपलब्ध रहना चाहिए।
- बाल साहित्य आकर्षक व रंगीन चित्रों से भरपूर और आकर्षक होना चाहिए। आकर्षक बाल साहित्य बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि पैदा करता है।
- उत्तराखण्ड से जुड़ी कहानियों व कथाओं को भी बाल साहित्य में शामिल किया जाना चाहिए (खास कर दादा–दादी, नाना–नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कथायें)।
- बच्चों के लिए NCERT द्वारा निर्मित तथा SCERT द्वारा लोकभाषाओं में अनुवादित ''बरखा'' सीरीज बाल साहित्य मील का पत्थर साबित होगा। यह साहित्य हर प्रकार की क्षमता वाले बच्चे का पथ प्रदर्शित करता है।

5.4.6 पुस्तकालय रखरखाव की संस्कृति का विकास

- पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य के उपयोग और रखरखाव की संस्कृति विकसित की जानी चाहिए।
- बच्चों हेतु बाल साहित्य को नियत समय के लिए आवंटित किया जाना चाहिए ताकि बच्चे उस निर्धारित अवधि में उनका सदुपयोग ठीक से कर सकें।
- पुस्तकालय साहित्य के रखरखाव की प्रवृत्ति बच्चों में विकसित की जानी चाहिए, जिससे बच्चे में रखरखाव की प्रवृत्ति व ज़िम्मेदारी का भाव विकसित होगा।
- पुस्तकालय में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि बच्चे पुस्तकें घर ले जा कर पढ़ सकें और समय से वापस लौटा सकें ऐसी संस्कृति विकसित की जानी चाहिए।

5.4.7 तकनीकी, डिजिटल और श्रव्य–दृश्य सामग्री

बच्चों के लिए उनकी आयु के अनुरूप कई भाषाओं में प्रासंगिक विषयवस्तु निर्मित की जानी चाहिए।

क) शिक्षण में तकनीक का प्रयोग

- बच्चों की आयु एवं क्षमता के अनुसार प्रासंगिक विषयवस्तु और सामग्री तैयार की जानी चाहिए ताकि यह सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों तक गतिविधियों के रूप में पहुँच सके।
- शिक्षण सामग्री निर्माण का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के लिए सुखद अनुभूति का निर्माण करना है और उसकी जिज्ञासा को जगाना है।

ख) विषयवस्तु, प्रारूप और पहुँच में विविधता

- विषयवस्तु को विभिन्न स्वरूपों– ऑडियो, वीडियो, सुलभ डिजिटल स्वरूप में टैक्स्ट (Text) चित्र पुस्तकें, खेल, पहेलियाँ, क्विज, रेडियो, लाउडस्पीकर, टीवी, प्रोजेक्टर, स्मार्टफोन, टैबलेट, कम्प्यूटर, स्मार्टबोर्ड तक बच्चों की पहुँच सुलभ कराकर बच्चों की दक्षता को बढ़ाया जाना चाहिए।
- टीवी या प्रोजेक्टर, स्मार्ट फोन, टैबलेट, कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट बोर्ड, थ्री–डी एनिमेशन फिल्म आदि द्वारा बच्चों को किसी घटना, स्थान का अनुभव तथा ज्ञान एवं ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से विभिन्न स्वाद, सामग्री एवं खाद्य पदार्थों की

वास्तविक समझ तथा प्रकृति के सौन्दर्य बोध की समझ विकसित की जा सकती है, जैसे रंगों की समझ, नदी, पहाड़, जंगल का जीवन, सूरज, आसमान, चाँद सितारों की संरचना, स्थानीय जीवन, चौक, ओखली, हाथ–चक्की (जाँदरा), पनचक्की (घट्ट) आदि भौगोलिक परिस्थितियों का ज्ञान।

ग) तकनीकी आधारित LTM के प्रकार :

I) विषयवस्तु (Content)–विस्तृत और विविध पहुँच को सुनिश्चित करना

- अलग–अलग आयुवर्ग के बच्चों से सम्बन्धित ऑडियो और वीडियो कटेंट शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के लिए एक उपयोगी संसाधन है जिनका बालवाटिका, आंगनवाड़ियों तथा स्कूल में पहुँचना अनिवार्य है।
- तकनीकी आधारित कंटेंट के माध्यम से बच्चों को मनोरंजक तरीके से सम्बन्धित विषयवस्तु के विचारों को सहज रूप से समझाया जा सकता है। जैसे– परिवार, जानवर, नदी, भोजन और आस–पास का वातावरण पहाड़, पर्वत, नदी, गधेरे, तालाब, खाल–चाल, घाटियाँ, ग्लेशियर, जंगल, पेड़–पौधे आदि।
- बाल कविताएं व कहानियां जब डिजिटल रूप में शिक्षकों या अभिभावकों तक पहुँचेंगी तो ऐसे माता पिता भी बच्चों को बताने / दिखाने मे सक्षम होंगे जो शिक्षा की भाषा से अपरिचित हैं या पढ़ने में पारंगत नहीं हैं।
- बच्चे द्वारा स्क्रीन का अधिक प्रयोग हानिकारक भी हो सकता है, इसके लिए शिक्षक का केन्द्रीय भूमिका में होना अनिवार्य है। शिक्षकों द्वारा बच्चों को उपयोग के सही तरीके सिखाये जाने चाहिए व समय नियोजन का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का अधिगम डिजिटल माध्यम से किया जाना आवश्यक एवं प्रभावी है। उनकी दिव्यांगता को ध्यान में रखकर ही विषयवस्तु के अनुकूल ऑडियो / वीडियो का निर्माण किया जाना चाहिए। जैसे श्रवण बाधित बच्चे के लिए चलचित्रों के माध्यम से और दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ध्वनि यंत्रों के माध्यम से।
- डिजिटल पहेलियाँ, गीत, कविताएँ, दक्षता आधारित वीडियो कन्टेन्ट एवं गेम का उपयोग बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए किया जाना चाहिए।

ii) डिजिटल Infrastructure Plateforms का लाभ उठाना

- विषयवस्तु निर्माताओं के तंत्र को National Digital Education Architecture (NDEAR) (ndear.gov.in) और विद्यादान (vdn.diksha.gov.) जैसे माध्यमों की सहायता से बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय हेतु विषयवस्तु निर्माण के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जिससे वे डिजिटल कन्टेन्ट का अधिकाधिक प्रयोग कर सकें।
- डिजिटल सामग्री बच्चे के वयवर्ग के अनुरूप होनी चाहिए ताकि कठिन सम्बोधों को रूचिपूर्ण व सरल रूप में समझाया जा सके।
- बहुभाषीय शैक्षणिक तकनीक, शिक्षकों को बच्चों के साथ सहज होने एवं मातृभाषा में संवाद स्थापित करने में सहायता करती है। एल.टी.एम. अनुवाद के लिए भाषिनी (https://bhashini.gov.in/en/) और ULCA (https://bhashini.gov.in/ulca) का उपयोग किया जा सकता है।

iii) बच्चों के लिए डिजिटल (Infotainment) प्रसारण सामग्री–

- वर्तमान परिवेश में सभी उम्र व आयुवर्ग के बच्चे इण्टरनेट के उपयोगकर्ता बन चुके हैं। शिक्षण में बच्चों की आवश्यकतानुसार इसका प्रयोग गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। शुरूआती वर्षों में पहेलियाँ, कहानियाँ और एनीमेशन सीरीज बहुत जरूरी हैं। टी.वी. चैनलों के माध्यम से बच्चों के विकास हेतु स्थानीय भाषाओं में निर्मित कन्टेन्ट का प्रसारण किया जाना चाहिए।
- रेडियो व इन्टरनेट के माध्यम से कम समय में सुनायी जाने वाली कहानियाँ शिक्षण के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक होती हैं। साथ ही उनको आसानी से आपस में साझा भी किया जा सकता है।
- वर्णनकर्ताओं द्वारा पढ़ी गयी कहानियों के वीडियो भी बच्चों के शिक्षण में फायदेमंद होते हैं।

- डिजिटल सामग्री यथा सन्दर्भ आधारित एप, डिजिटल पुस्तकें, पज़ल एवं खेल का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे बच्चे की तार्किकता एवं सृजनशीलता का विकास हो सके।

(घ) समावेशी पहुँच के लिए तकनीकी

- डिजिटल विषयवस्तु द्वारा आरम्भिक भाषा कौशल और संख्या ज्ञान कौशल का विकास, सामान्य बच्चों के साथ–साथ दिव्यांग बच्चों के लिए सरल, सुलभ, रोचक व उनके अनुकूलित तरीके से अधिक सार्थक एवं प्रभावी रूप से किया जा सकता है।
- शिक्षक डिजिटल टूल द्वारा भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के पढ़ने व संख्या ज्ञान के स्तर का आकलन कर सकता है जिससे बच्चे की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण में यथासम्भव परिवर्तन या अनुकूलन किया जा सके।

(ड.) बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा हेतु डिजिटल तकनीकी का उपयोग करने में सावधानियाँ

- बच्चे की सुरक्षा और भागीदारी के सन्तुलित दृष्टिकोण हेतु डिजिटल वातावरण का गोपनीय, सुरक्षित व भेदभाव रहित होना जरूरी है।
- संयुक्त राष्ट्र आयोग ने बच्चों के डिजिटल बाल अधिकार–2021 (सामान्य टिप्पणी–25) को अपनाते हुए जो चार सिद्धान्त बताये हैं, उन्हें ध्यान में रखते हुए डिजिटल परिवेश सुनिश्चित करना चाहिए। बाल अधिकार के चार सिद्धान्त हैं।

(i) भेदभाव रहित : बच्चों के साथ उचित व्यवहार किया जाना चाहिए तथा उनसे भेदभाव नहीं करना चाहिए।

(ii) **उत्तरजीविता और विकास** : बच्चों के लिए डिजिटल तकनीकी का सुरक्षित एवं आवश्यक उपयोग, शिक्षक/अभिभावक के सीमित हस्तक्षेप में सार्थक होगा।

(iii) **बच्चे का सर्वोत्तम हित** : कोई भी निर्णय लेते समय अभिभावकों, शिक्षकों, शैक्षिक विशेषज्ञों, शैक्षणिक व्यवस्था से जुड़े संस्थानों को ऐसी व्यवस्थाओं/योजनाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए जो बच्चे के सर्वोत्तम हित में हो।

(iv) **बच्चों के विचारों का सम्मान–** शैक्षिक गतिविधियों में बच्चे की रूचि, शारीरिक व मानसिक स्तर व उसकी भावनाओं एवं अभिव्यक्ति को महत्व देते हुए सम्मान किया जाना चाहिए ताकि बच्चे के संवेगात्मक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सके।

(ज) संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय बाल आपात निधि (UNICEF) द्वारा अनुशंसित और NDEAR (National Digital Education Architecture) द्वारा स्वीकृत

(i) बच्चों को गोपनीयता और उनके व्यक्तिगत डाटा की सुरक्षा का अधिकार है।

(ii) बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विविध स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।

(iii) बच्चों को उनकी प्रतिष्ठा पर आघात न करने देने का अधिकार है।

(iv) बच्चों की निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उनकी विकसित क्षमताओं के अनुसार संरक्षित और सम्मानित किया जाना चाहिए।

(v) बच्चों को निजता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अपने अधिकारों के उल्लंघन, दुर्व्यवहार और उनकी प्रतिष्ठा पर आघात होने की दशा में उपचार प्राप्त करने का अधिकार है।

(झ) **अन्य चिन्ताएं**– बच्चों द्वारा तकनीकी के उपयेाग से उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को हानि न पहुंचे, इसके लिए उपाय किये जाने अति आवश्यक है।

खण्ड 5.5

किताबें और पाठ्यपुस्तकें

बुनियादी स्तर पर बच्चों को विषयवस्तु के विभिन्न रूपों जैसे चित्र पुस्तकें, कहानी पुस्तकें, सरल से जटिल होती पुस्तकें और वर्कशीट्स के साथ जुड़ने की आवश्यकता है।

5.5.1 बच्चों की किताबें

- हमारी पौराणिक सभ्यतायें, संस्कृति रीति–रिवाज आदि सम्पदायें अब किताबों में कैद होकर रह गयी हैं जिसे अब छोटे बच्चों को इस किताबी दुनिया के माध्यम से बताने हेतु प्रोत्साहित करना औपचारिक शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस हेतु अच्छी गुणवत्तापूर्ण, रोचक, ज्ञानवर्धक, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं मूल्यों पर आधारित बाल साहित्य विकसित किया जाना चाहिए जो बच्चे के भीतर नैतिक मूल्यों, परम्पराओं, पौराणिकता तथा भाषा एवं साक्षरता सहित अपेक्षित दक्षताओं के साथ–साथ सर्वांगीण विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- बच्चों के लिए रंग–बिरंगी, बड़े चित्र वाली किताबें, दिलचस्प कहानियाँ व कविताएं उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।
- विभिन्न भाषाओं में दक्षता को बढ़ाने के लिए अच्छी तरह से डिजाइन की गयी द्विभाषी पुस्तकों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि बाल मन में साहित्य बोध व रूचि को प्रोत्साहित किया जा सके।

5.5.2 06 से 08 आयुवर्ग के बच्चों की पाठ्यपुस्तकों का महत्व–

- रा0शि0नी0–2020 द्वारा पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध की गयी विशेष सिफारिशों के अनुसार विषयवस्तु कम होनी चाहिए। स्कूली पाठ्यचर्या में लचीलापन होना चाहिए जिसके तहत रटने के बजाय रचनात्मक क्रियाकलापों पर जोर दिया जाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण समझी जाने वाली आवश्यक मूल सामग्री (चर्चा, विश्लेषण, उदाहरण और अनुप्रयोगों के साथ) को शामिल करना होगा, इसके साथ ही स्थानीय सामग्री और ज़रूरतों के अनुसार पूरक सामग्री को भी शामिल किया जाना होगा।
- स्कूलों और शिक्षकों के पास राष्ट्रीय और स्थानीय सामग्री वाली पाठ्यपुस्तकों के समूह में से आवश्यकतानुसार पाठ्यपुस्तकें चुनने के विकल्प होने चाहिए। इसके अलावा पाठ्यपुस्तकें प्रिन्ट और डिजिटल दोनों रूपों में भी उपलब्ध की जा सकती है।
- पाठ्यपुस्तकों में प्रश्न–उत्तरों के अभ्यास से बच्चे द्वारा प्राप्त की गयी दक्षताओं का आकलन किया जा सकता है।
- पाठ्यपुस्तकों में न केवल कक्षा शिक्षण के लिए विषयवस्तु होनी चाहिए बल्कि बच्चे को स्वयं करके सीखने के अवसर भी प्रदान किये जाने चाहिए।
- विषयवस्तु और गतिविधियाँ केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं करनी चाहिए बल्कि इनका उपयोग अधिगम के समय सार्थक रूप से किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ शिक्षण सहायक सामग्री हेतु चार्ट, वर्कशीट, मॉडल आदि का भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों को उपयुक्त 'क्यू–आर–कोड' से सन्दर्भित किया जाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकें विषयवस्तु, शिक्षण विधि और आकलन के सन्दर्भ में दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- पाठ्यपुस्तकों से बच्चे अपने परिवेश एवं दुनिया के विषय में समझ विकसित करते हैं।
- पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों एवं शिक्षण शास्त्र से सम्बन्धित सिद्धान्तों, विषयवस्तु को कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में लागू किया जाता है।
- बुनियादी स्तर के पहले तीन वर्षों में, 03 से 06 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कोई निर्धारित अभ्यास पुस्तिका नहीं होनी चाहिए। अपितु इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए बड़ी चित्र वाली आकर्षक व रंगीन पुस्तकें, गतिविधि पुस्तकें शिक्षकों का मार्ग दर्शन कर सकती हैं।

5.5.3 पाठ्यपुस्तक डिजायन के सिद्धान्त

पाठ्यपुस्तक डिजायन के लिए निम्नलिखित सिद्धान्त उपयोगी हो सकते हैं–

1. पाठ्यचर्या सिद्धान्त–बुनियादी स्तर के लिए दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए पाठ्यपुस्तकें बनाने वालों को न केवल उस क्षेत्र विशेष के बारे में पता होना चाहिए बल्कि पूरे चरण की दक्षताओं की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
2. अनुशासन सिद्धान्त– पाठ्यपुस्तक बनाने वाले को भाषा, विज्ञान, गणित और कला का पर्याप्त विषयगत ज्ञान होना आवश्यक है।
3. शिक्षा शास्त्र सिद्धान्त– पाठ्यपुस्तक बनाने वालों को दक्षता और विषयवस्तु के लिए शिक्षणशास्त्र की स्पष्ट समझ होनी चाहिए।
4. तकनीकी सिद्धान्त– पाठ्यपुस्तक बनाने वाले को वर्तमान में उपलब्ध तकनीकी और श्रव्य दृश्य सामग्री का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। बच्चों के सीखने के लिए पाठ्यपुस्तक में डिजिटल तकनीकी युक्त गतिविधियाँ एवं सन्दर्भित सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।
5. सन्दर्भ सिद्धान्त– पाठ्यपुस्तक में स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेशयुक्त वातावरण का समावेश होना चाहिए। सीखने का क्रम ज्ञात से अज्ञात की ओर होना चाहिए। जहाँ ज्ञात संबोध सहज सरल अनूभूत होते हैं तो वहीं अज्ञात संबोध जिज्ञासा बढ़ाते हैं।
6. प्रस्तुति सिद्धान्त– बुनियादी स्तर पर मुद्रित शैक्षणिक सामग्री (Text) और दृश्य सामग्री में से दृश्य सामग्री का प्रयोग अधिक किया जाना चाहिए जैसे– पाठ्यसामग्री रंग योजना, थीम डिजायन तथा कहानी चित्रण से भरपूर हो।
7. विविधता और समावेश–उत्तराखण्ड़ राज्य के अन्दर विभिन्न क्षेत्रीय विविधतायें हैं। बोली, भाषा, गीत, त्योहार, मेले, पकवान, रीति–रिवाज, पारम्परिक वेश–भूषा, नृत्य, आदि इन विविधताओं का समावेश पाठ्यपुस्तक निर्माण में किया जाना चाहिए।

5.5.4 पाठ्यपुस्तक विकास की प्रक्रिया

क) **पाठ्यक्रम का निर्माण**– पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए सुनियोजित पाठ्यक्रम बुनियादी अवस्था के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यपुस्तकों के विकास में स्थानीय परिवेश, संस्कृति पौराणिक भारतीय एवं स्थानीय ज्ञान परम्परा समाहित करते हुए विकसित की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में ऐसी परिवेशीय वस्तुओं एवं मॉडलों का समावेश होना चाहिए, जिससे बच्चे सहजता से विषय से जुड़ते हुए सीख पायें।

ख) पाठ्यपुस्तकों, लेखकों, समीक्षकों, डिजायनरों और चित्रकारों की समिति–

1. **पाठ्यपुस्तक लेखक और समीक्षक**– इस समूह में राज्य के विभिन्न भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए ऐसे शिक्षकों/विषय विशेषज्ञों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो विषय ज्ञान के साथ–साथ भारतीय एवं राज्य की स्थानीय परम्पराओं, पौराणिक इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर, रीति–रिवाजों, कलाओं एवं वर्तमान समसामायिक विषयों पर अच्छी पकड़ रखने वाले एवं बाल मनोविज्ञान से पूर्णतः परिचित हो। विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए अभिभावकों एवं ऐसे बच्चों के लिए दिए गए शैक्षणिक अधिगम प्रक्रिया से युक्त सुझावों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. **डिजायनर एवं चित्रकार** – इस समूह में ऐसे लोगों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिन्हें स्थानीय परिवेश के अन्तर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं कलात्मक धरोहरों की पर्याप्त जानकारी हो ताकि वे पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने में अपनी विशेषज्ञता का लाभ चित्रकारी एवं डिजाइनिंग में दे सके।
3. **तकनीकी विशेषज्ञ**– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुगम एवं सरल बनाने हेतु ऐसे तकनीकी विशेषज्ञों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिन्हें विषय ज्ञान के साथ–साथ आयु अनुरूप बाल–मनोविज्ञान की समझ एवं विषय वस्तु को एनिमेटेड रूप से विकसित करने तथा पुस्तकों/चित्र पुस्तकों में, अपेक्षित फॉन्ट साइज, पुस्तक का परिमाप, पुस्तक में चित्रों के आकार व रंगों का सही समावेश करने की विशेषज्ञता हो। साथ ही वे बच्चों के आयु अनुरूप ऑडियो–वीडियों का सही चयन और निर्माण करने में सक्षम हों तथा वे पुस्तकों में सहायक ई–कन्टेट से जानकारी रखते हुए उनकी विषयवस्तु का क्यू–आर कोड बनाते हुए सम्बन्धित लिंक की जानकारी चित्र पुस्तक/पुस्तक में दे सकें।

ग) विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र (Pedagogy) और आकलन का चुनाव

1. विषयवस्तु पिछले अनुभवों, भाषा और खोज के अनुरूप होनी चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों में गायी जाने वाली लोरी, लोकगीत, लोककथा, कहानियाँ आदि का प्रयोग कक्षाओं में शिक्षण अधिगम को रोचक बनाने में अहम् भूमिका निभाते हैं जैसे– घुघुती बासुती, क्या खान्दी दुध भाती।
2. विषयवस्तु अगली कक्षा के लिए अग्रगामी होनी चाहिए। विषयवस्तु और सीखने के प्रतिफलों के साथ शिक्षणशास्त्र और आकलन के संरक्षण को सुनिश्चित करना आवश्यक है।

घ) पाठ्यपुस्तक की संरचना और प्रयुक्त भाषा

1. पाठ्यपुस्तक की संरचना और भाषा शिक्षक एवं बच्चे के बीच जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।
2. पाठ्यपुस्तक में अभिभावकों द्वारा दिए गए सुझाव व तथ्य भी शामिल होने चाहिए।
3. पाठ्यपुस्तक में स्थानीय भाषा का समावेश होना अनिवार्य है।

ड.) प्रस्तुति और लेखन–

1. पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति और लेखन अत्यधिक आकर्षक होनी चाहिए।
2. प्रस्तुति के लिए पाठ्यपुस्तक में अक्षरों का आकार, रंग, रेखाचित्र एवं छवियों का समावेश आकर्षक होना चाहिए।
3. लेखन के लिए पर्याप्त समय और गहन समीक्षा की आवश्यकता होती है।
4. लेखकों के साथ चित्रकारों की सहभागिता अत्यन्त आवश्यक है।
5. लेखकों का विद्यालयों में भ्रमण होना चाहिए साथ ही कक्षा के अवलोकन, शिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों के साथ बातचीत और पाठ्यपुस्तक के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त करनी चाहिए।

च) पाठ्यपुस्तकों पर शिक्षकों का अभिमुखीकरण–

1. पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण के माध्यम से अभिमुखीकरण किया जाना आवश्यक है।
2. पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के दौरान आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए शिक्षकों के साथ नियमित बातचीत की जानी चाहिए।

5.5.5 पाठ्यपुस्तकें और आकलन

क) पाठ्यपुस्तकों में शिक्षकों को शिक्षण अधिगम के साथ आकलन को सम्मिलित करने के ठोस तरीके अपनाने चाहिए।

ख) पाठ्यपुस्तक में उन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों का उल्लेख स्पष्ट रूप से होना चाहिए जिनको शिक्षक व अभिभावक आसानी से समझ सकें।

ग) शिक्षक को सीखने का आकलन करने के लिए पाठ्यपुस्तक में कई अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

घ) पाठ्यपुस्तक में आकलन अभ्यासों को शामिल किया जाना चाहिए।

ड.) वर्कशीट व गतिविधियों में सरल अभ्यास होने चाहिए जिन्हें बच्चे स्वतंत्र एवं रूचि से कर सकें।

5.5.6 पाठ्यपुस्तकों के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षक सहायता

क) पाठ्यपुस्तक में सुझायी गयी सामग्री का उद्देश्य दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करना होना चाहिए।

ख) पाठ्यपुस्तकों में सीखने के कार्यों, गतिविधियों, परियोजनाओं एवं तकनीकी के सरल प्रयोगों के साथ–साथ आकलन प्रक्रियाओं पर शिक्षकों के लिए दिशा–निर्देश होने चाहिए।

ग) शिक्षकों को स्थानीय सामग्रियों के बारे में सही जानकारी होनी चाहिए जिससे शिक्षण अधिगम सरल एवं रोचक हो सके।

घ) विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु पाठ्यपुस्तक में उनके अनुरूप एल.टी.एम का समावेश होना चाहिए।

खण्ड 5.6

सीखने का परिवेश

कक्षा–कक्ष या इससे बाहर का वातावरण जो भी शिक्षण के लिए उपयोग में लाया जा रहा है वह बच्चे के अनुकूल, आनन्दमय, स्वच्छ और उसको मंत्रमुग्ध करने वाला होना चाहिए। इससे प्रत्येक बच्चा अपनी भागीदारी बड़े उत्साह व आनन्द के साथ करेगा और उसमें सीखने की प्रवृत्ति और जिज्ञासा बढ़ेगी, जिससे वह विद्यालय आने के लिए सदा लालायित रहेगा।

सीखने के माहौल को बच्चे के अनुकूल बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार किया जाना चाहिए।

1. कक्षा–कक्ष में रोशनी एवं हवा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
2. कक्षा–कक्ष की दीवारों पर बने चित्र आकर्षक व रंगीन हों तथा दीवार सुन्दर एवं रंगीन होनी चाहिए।
3. कक्षा–कक्ष में शिक्षक का व्यवहार सरल व स्नेह पूर्ण होना चाहिए ताकि बच्चों को विद्यालय में परिवार जैसा माहौल महसूस हो।
4. कक्षा–कक्ष में ऐसी सामग्री होनी चाहिए जिसका उपयोग बच्चा आसानी से कर सके।
5. कक्षा–कक्ष में बच्चों के साथ कुछ ऐसे क्रियाकलाप किये जाने चाहिए जिसमें वे अपनी भागीदारी के साथ नये.नये अनुभवों को भी प्राप्त कर सकें।

5.6.1 आन्तरिक वातावरण को व्यवस्थित करना

शिक्षकों को कक्षा–कक्ष की व्यवस्था, आन्तरिक वातावरण, कक्षा–कक्ष के आयामों, आकार व स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर उपलब्ध सामग्री से करनी चाहिए।

क) **बैठने की व्यवस्था** :– कक्षा–कक्ष में बच्चों की बैठने की व्यवस्था आनन्ददायक होनी चाहिए। उनको रोज नये–नये क्रम व व्यवस्थाओं में बैठाना चाहिए। जैसे कभी वृत्त में, कभी अर्द्धवृत्त में या कभी आयत की स्थिति में बैठाना चाहिए। जिससे उनको आकारों की पहचान होगी और उनमें उत्सुकता बनी रहेगी।

ख) **वृत्त (circle)**:– बच्चों के लिए सर्कल टाइम में बैठने के लिए फर्श पर संकेन्द्रित वृत्तों का एक सैट बनाया जाना चाहिए जिसे साफ और व्यवस्थित रखा जाना चाहिए।

ग) **रचनात्मक अभिव्यक्ति पट्टिका / श्यामपट्ट**:–कक्षा–कक्ष की तीनों दीवारों के निचले हिस्से को बच्चों के लेखन क्रियाकलापों हेतु प्रयोग में लाया जाना चाहिए। जिसके लिए दीवारों के निचले भाग पर फर्श से आधा फिट छोड़ने के बाद कम से कम तीन फिट की ऊँचाई तक रंगीन लेखन पट्टी बनाई जानी चाहिए, ताकि बच्चे आसानी से अपनी रचनात्मकता को उस पर उकेर सकें।

घ) **सीखने के कोनों की स्थापना** :– शिक्षण हेतु कोनों की व्यवस्था विद्यालय में वह स्थान है जहाँ बच्चा बैठ कर शिक्षक के साथ–साथ स्वयं भी करके सीखता है। उन कोनों में रखी गई सामग्री की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें बच्चा स्वयं उसका उपयोग कर सके।

पंचकोश पर आधारित शिक्षण व्यवस्थाओं को अंगीकृत कर बच्चों को जीवन के घनिष्ठतम अनुभवों के साथ उनको संस्कृति और संस्कारों से भी जोड़ा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आंतरिक वातावरण को सीखने के अनुकूल बनाए जाने हेतु विद्यालय में निम्नलिखित शालाओं / कोनों का सृजन किया जाना चाहिए–

1. **चित्र पुस्तकालय** :– इस कोने में हम बच्चों के लिए कुछ ऐसी कार्ड शीट का निर्माण कर सकते हैं जो विद्यालय में आसानी से निर्मित की जा सकती है। जैसे फल, फूल, सब्जियाँ, वाहन आदि के चित्र, साथ ही कुछ ऐसे चित्रों के कार्ड शीट हम बाजार से भी संग्रहित कर सकते हैं। जैसे– ऐतिहासिक स्थल, सांस्कृतिक झलकियों के चित्र आदि।
2. **वस्तु संग्रहालय** :– इस कोने में हम उन सभी वस्तुओं का संग्रहण कर सकते हैं जो स्थानीय एवं बाहरी स्थलों से संग्रहित की गई हों। इसके लिए अभिभावकों व स्थानीय समुदाय का सहयोग ले सकते हैं। भ्रमण के दौरान भी कई वस्तुओं को

संकलित कर विद्यालय में संग्रहित किया जा सकता है। जैसे पारंपरिक वेशभूषा, बर्तन, वहां की कला से जुड़े चित्र ,विभिन्न आकृतियों के छोटे पत्थर, चीड़ का कोन, रिंगाल की छड़ी, खिलौने , लकड़ी के गुटके , विभिन्न प्रकार की पत्तियों का संग्रह, चिड़ियों के छूटे पंख , विभिन प्रकार की मिट्टियाँ एवं बीज आदि जिससे बच्चा परिचित व अपरिचित परिवेश की जानकारी प्राप्त करता है।

3. **कलाशाला** :– यहां बच्चे केवल रंगों से जुड़े क्रियाकलाप करते हैं। जब बच्चे स्वयं कलाकारी करते हैं तो बच्चों में आनंदमय कोश के साथ ही सृजनात्मकता व सौन्दर्यबोध का विकास भी होता है। बच्चों को कराये जाने वाले कुछ क्रियाकलाप इस प्रकार हो सकते हैं जैसे – कागज पर ठप्पों का कार्य, रंगीन पेपर कार्य, छोटे–छोटे पत्थरों व दीयों को रंगना, चीड़ के कोन को रंगना , विभिन्न रंगों की फूल एवं पत्तियों से चित्रों को रंगना, बनी हुई आकृतियों को रंगना आदि।

4. **कार्यशाला** – बच्चों से विभिन्न क्रियाकलाप कराये जाने चाहिए जिससे बच्चों की इन्द्रियों के विकास के साथ मनोमय कोश का भी विकास होता है। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ती है। इसमें बच्चे स्वतन्त्र रूप से अपनी सृजनशक्ति का उपयोग करते हुए विभिन्न गतिविधियाँ करते हैं। जैसे– मिट्टी के कार्य, बागवानी के कार्य, विभिन्न प्रकार के बीज से आकृतियाँ बनाना, मोती पिरोना , ढक्कनों से आकृतियाँ बनाना, छोटे पत्थरों को रंगना आदि।
5. **विज्ञान प्रयोगशाला**– विज्ञान प्रयोगशाला कोने में बच्चा खेल–खेल में ही विज्ञान के ऐसे छोटे –छोटे प्रयोग करता है, जिससे वह विज्ञान से जुड़ी विभिन्न क्रियाओं को सीख जाता है। जैसे– पानी में विभिन्न वस्तुओं को घोलना, गुब्बारे में हवा भरना, विभिन्न शीर्ष एवं आयामों की आकृतियों का अवलोकन एवं पहचान, भार की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए हल्की एवं भारी वस्तुओं का अवलोकन इसके अलावा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से जुड़े प्रयोग आदि।

6. **घर**– शिक्षण सामग्री के निमित्त एक कोने में हम घर जैसे– माहौल का निर्माण कर सकते हैं। इसके लिए गत्ते के डिब्बों के माध्यम से या दीवारों पर ब्लॉक बनाकर घर से जुड़े विभिन्न स्थानों का प्रतिरूप तैयार कर सकते हैं। बच्चों को परिवार के सदस्यों और घर की वस्तुओं की जानकारी रहती है जिनका वे अच्छा वर्णन करते हैं। इस प्रकार से बच्चों की अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

7. **रंगमंच**– यह कोना बच्चों को बहुत प्रिय होता है क्योंकि बच्चों को गीत–संगीत, कहानियाँ सुनना–सुनाना और अभिनय करना बहुत पसंद होता है। जब बच्चे इनमें सम्मिलित होते हैं तो वे बड़े आनन्दित होते हैं और सीखते हैं। इसके लिए विद्यालय में विभिन्न मुखौटे व वेशभूषायें भी होनी चाहिए। इसके अलावा नुक्कड़ नाटक विधा से बच्चों को परिवेशीय संदर्भ से जोड़ा जाना चाहिए जो बच्चे का संवेगात्मक और भावनात्मक विकास करेगा।

8. **प्रदर्शनी कक्ष**– यह कोना बच्चों द्वारा निर्मित उन वस्तुओं का संग्रह स्थल है जहाँ पर कार्यशाला व कलाशाला में निर्मित वस्तुओं को रखा जा सकता है। मासिक व साप्ताहिक आधार पर अभिभावकों को बुलाकर बच्चों द्वारा निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी लगायी जानी चाहिए। इससे बच्चे के उत्साह और सृजन क्षमता को प्रोत्साहन मिलता है।

9. **पोर्टफोलियो बैग**– बच्चों के काम के रिकॉर्ड को सुरक्षित रखना अनिवार्य है। इसे एक बैग में सुरक्षित रखा जाना चाहिए

जिसे रस्सी से लटकाकर या किसी भी स्थान पर रखा जा सकता है। इसमें प्रत्येक बच्चे के नाम का लेबल सही तरीके से लगा होना चाहिए। यह आकर्षक और सुंदर भी होना चाहिए।

5.6.2 बाहरी व्यवस्थाएँ (उपकरण एवं सामग्रियाँ)

1. **बगीचा व फुलवारी**– बच्चों को अपने हाथों से काम करने के अवसर दिये जाने चाहिए जिससे बच्चे अपने परिवेश को लेकर संवेदनशील बनते हैं। सामूहिक कार्य से शारीरिक श्रम और कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनता है। जीवन्त रूप से बच्चा बाहरी परिवेश से जुड़ा रहता है। पेड़–पौधों के प्रति लगाव और मिट्टी से उसका जुड़ाव यह सभी उसके मन में चिरस्थायी रह जाता है जो पर्यावरण के प्रति दायित्वों को लेकर उसे संवेदनशील बनाता है।

2. **क्रीड़ा आँगन**– बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए उन्हें शारीरिक क्रियाकलापों से जोड़ा जाना अत्यावश्यक है। इसके लिए बच्चों को स्वतन्त्र और निर्देशित रूप से विभिन्न शारीरिक क्रियाकलापों में भागीदारी करायी जानी चाहिए। खेल–खेल में ही उन्हें विभिन्न प्रकार के खेल, योग, आसन सिखाये जाने चाहिए जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक संबल प्राप्त होगा। खेलों के माध्यम से उनमें सहयोग की भावना के साथ–साथ समर्पण, सम्मान और प्रेम की भावना का विकास होता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उनकी क्षमताओं के अनुरूप ही खेल आयोजित किए जाने चाहिए।

3. **तरणताल**– इस व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यालय में रबड़ या प्लास्टिक के छोटे–छोटे बाथटब का प्रयोग किया जा सकता है। उपयुक्त स्थान होने की दशा में अधिकतम एक फिट की गहराई वाले तरणतालों का निर्माण भी किया जा सकता है। इसमें पानी से जुड़े विभिन्न प्रयोग भी कराए जा सकते हैं। साथ ही जलीय जीवों के प्रतिरूप को भी पानी के अन्दर रखकर बच्चों को दिखाया जा सकता है जिससे उनके प्रति बच्चों की समझ विकसित होगी।

4. **चिड़ियाघर**– विद्यालय स्तर पर आस–पास के परिवेश के अनुरूप एक छोटा सा चिड़ियाघर निर्मित किया जा सकता है जिसमें जंगली व घरेलू जानवरों के चित्र या मॉडल रखे जाने चाहिए।

इन सभी बाहरी व आन्तरिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उनकी ज़रूरतों और सहूलियतों के अनुरूप तकनीकी माध्यमों का अधिक सहारा लिया जाना चाहिए। जैसे–टीवी, रीडिंग–राइटिंग स्टैण्ड, उभरी हुई पुस्तकें, सांकेतिक भाषा (Sign Language) विभिन्न प्रकार की आवाजें।

5. खेल मैदान या खेल का सामान– बच्चे तरह तरह के खेल खेलते हैं। इनमें इनडोर और आउटडोर खेल सम्मिलित हैं। बच्चों को शिक्षकों की देख रेख में खेल खिलाना चाहिए।

अध्याय-6

सीखने की प्रगति का आकलन

आकलन– आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण और आवश्यक भाग है। बच्चे किन स्रोतों से क्या–क्या सीख रहे हैं तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों ने क्या सीखा? कहाँ तक सीखा? इसका आकलन के माध्यम से अभिलेखीकरण किया जाता है। यही आकलन अभिलेखों के वे मूल आधार होते हैं जो बच्चों, उनके माता–पिता तथा शिक्षकों को उनकी सीखने की गति के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। यह जानकारी बच्चों को अगले स्तर तक क्या सीखना है तथा कैसे सीखना है उसकी योजना बनाने में सहायक होती है।

सभी बच्चे सीखने की गति की दृष्टि से अलग–अलग होते हैं। आकलन से शिक्षक उन बच्चों की पहचान कर सकता है जो धीरे–धीरे सीख रहे हैं तथा उन्हें अतिरिक्त प्रोत्साहन की ज़रूरत होती है। बुनियादी स्तर हेतु आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त खण्ड 6.1 दिए गए हैं ।

खण्ड 6.1

आकलन के मार्गदर्शक सिद्धांत

6.1.1 आकलन की प्रकृति एवं उद्देश्य

आकलन बच्चों की सीखने की उपलब्धियों का प्रमाण एकत्र करने का आसान तरीका और साधन है। प्रारम्भिक अवस्था पर आकलन नीचे दिए गए उद्देश्यों को पूरा करता है :

क) बच्चे की ज़रूरतों, प्राथमिकताओं और रुचियों की पहचान करना।
ख) बच्चे की सीखने की उपलब्धि के बारे में जानकारी प्राप्त करना जिससे शिक्षक आगे की प्रभावी शिक्षण योजना बना सकें।
ग) प्रभावी आकलन के माध्यम से बच्चे द्वारा अधिगम का समेकन कर पाना।
घ) बच्चों के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर देने की कोशिशों में मदद और समन्वय स्थापित करना।
ङ) बच्चे के अधिगम को प्राप्त करने की गति अनुसार उचित प्रगति दर देना ।
च) कक्षा में बच्चों के सीखने की उपलब्धि का समग्र स्तर पर एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण देना।
छ) विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के सीखने के स्तर एवं गति के अनुरूप आकलन प्रपत्र डिजाइन करना।
ज) बच्चों में सम्भावित विकासात्मक चुनौतियों या सीखने की कठिनाइयों को जान पाना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– बुनियादी स्तर द्वारा प्रस्तावित दक्षता आधारित पाठ्यचर्या में आकलन बच्चों की परीक्षा का मूल्यांकन नहीं है अपितु बच्चों की सतत प्रक्रिया में सीखने की प्रगति का माध्यम है। शिक्षकों द्वारा बच्चों की दक्षताओं की पहचान करने का यह एक आधार है। बालपन से ही प्रतिस्पर्धा की भावना न पनपे बल्कि बालपन की स्वाभाविकता बनी रहे, आकलन की यह एक प्रमुख विशेषता है।

- बुनियादी स्तर हेतु आकलन में बच्चों की स्थानीयता एवं परिवेशीय वातावरण का ध्यान रखा जाय जो उनकी अभिरुचियों, जिज्ञासाओं एवं अर्जित ज्ञान पर आधारित हो। ध्यान रहे L1 भाषा के साथ स्थानीय भाषाओं (गढ़वाली, कुमाऊंनी, जौनसारी आदि) की शब्दावली को समाहित करते हुए आकलन को रूचिपूर्ण बनाने से बच्चों में आकलन के प्रति उत्साह एवं उत्सुकता का भाव विकसित होगा।
- आकलन की प्रश्नावली बच्चों के सतत शिक्षण, खेल एवं व्यवहार के साथ प्रकृति पर आधारित हो जिससे बच्चे की दक्षताओं एवं कमजोर पक्षों को शिक्षक सरलता से पहचान कर सके।
- बुनियादी साक्षरता बच्चे आसानी से प्राप्त कर सकें इसके लिए स्थानीय परिवेश में उपलब्ध शैक्षणिक सामग्री तथा संसाधन का उपयोग शिक्षक द्वारा अधिकाधिक किया जाय।
- अलग–अलग सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमियाँ बच्चे की सीखने की गति एवं शैली को प्रभावित करती हैं। बुनियादी कक्षाओं से ही बच्चों की सीखने की प्रगति में असमानताओं को 'आकलन' के माध्यम से ज्ञात कर बच्चे जिन दक्षताओं को हासिल नहीं कर पा रहे हैं उन संबोधों में बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण दिया जाना चाहिए।
- बच्चों में सीखने की सतत प्रगति के आकलन हेतु दक्षताओं को प्राप्त करने में लगने वाली समयावधि बच्चों की सीखने की प्रगति का बोध करवाती है। इन्हीं आधारों का आकलन करके शिक्षक बाल केन्द्रित दृष्टिकोण से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए विषयवस्तु एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु योजना बनाते हैं।
- प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों को यह बोध नहीं होना चाहिए कि वे सीखने की प्रगति में अपने आयु वर्ग के साथियों से आंशिक रूप से पीछे हैं। ऐसे में बच्चों के उत्साह में हताशा का भाव उत्पन्न होगा जिससे उनकी सीखने की गति बाधित होगी।
- बच्चों हेतु आकलन का बुनियादी प्रारूप सरल, सहज एवं बहुआयामी होना चाहिए, ताकि बच्चे के सभी पक्षों का समग्र आकलन किया जा सके।

- **6.1.2 बुनियादी स्तर में आकलन से सम्बन्धित कुछ विचारणीय बिन्दु**

बुनियादी अवस्था में किया जाने वाला आकलन बच्चों का मूल्यांकन नहीं है अपितु बच्चों द्वारा सीखी गई दक्षताओं की परख करना है ताकि जिन संबोधों की दक्षताओं को वे धीरे से प्राप्त कर रहे हैं उन्हें वे शीघ्रता से हासिल कर सकें। बुनियादी स्तर में आकलन से बच्चों पर ज़रूरत से ज़्यादा बोझ न पड़े। यह आकलन उपकरण सहज, सरल एवं बाल मैत्रीपूर्ण होना चाहिए।

बच्चों का आकलन करते समय निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए–

क) सीखना एक सतत प्रक्रिया है जो स्वाभाविक रूप में बच्चों में चरणबद्ध तरीके से विकसित होती है। 'आकलन उपकरण' इस तरह डिजाइन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों की सीखने में निरन्तरता बनी रहे।

ख) आकलन बच्चों के संदर्भ में सूचना संग्रहण का एक विश्वसनीय माध्यम है। बच्चों की दक्षता एवं सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धियाँ एवं उसके उद्देश्यों का आकलन इसमें भली–भांति प्रतिबिंबित होना चाहिए।

ग) भिन्न–भिन्न आर्थिक, सामाजिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि होने के कारण बच्चों में अनेक प्रकार की विविधता रहती है, जिस कारण बच्चे सीखी गई दक्षताओं को अपने तरीके से व्यक्त करते हैं। इसलिए सीखने के प्रतिफल या दक्षता की उपलब्धि का आकलन करने के पृथक–पृथक तरीके अपनाए जाने चाहिए। शिक्षक में ऐसी क्षमता होनी चाहिए कि वह समान दक्षता का आकलन अलग–अलग तरह के बच्चों के लिए अलग–अलग तरीके से कर सके।

घ) शिक्षक द्वारा बच्चों के आकलन का अभिलेखीकरण इस प्रकार किया जाए ताकि बच्चों की प्राप्त दक्षताओं, अभिरुचियों के अनुरूप शिक्षण कार्य योजना बनाने में सहायक हो सके।

खण्ड 6.2

आकलन के उपकरण और तरीके

बुनियादी स्तर पर बच्चों की दक्षताओं के आकलन के अनेक आधार हो सकते हैं। बच्चों के साथ कक्षा–कक्ष में पढ़ाने वाले शिक्षकों की विस्तृत एवं व्यापक शिक्षण शैली, उनके खोजी स्वभाव व अवलोकन की विशेषज्ञता, परम्परागत एवं आधुनिकता मापदण्डों पर विश्लेषण करने की क्षमता शिक्षक के आकलन को प्रभावी एवं बहुआयामी बना देता है। जैसे– लोक सांस्कृतिक मेले, पर्व, त्यौहार, रीति–रिवाजों एवं उनकी परिवेशीय उत्सुकता व जागरूकता के बारे में बातचीत कर बच्चों की समझ का अवलोकन किया जा सकता है। बच्चों के आकलन एवं उनके तरीकों को सीमित सीमाओं अथवा प्रकारों में नहीं बांधा जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक एवं परिवेशीय विषमताओं में अलग–अलग तरह के बच्चों के लिए अलग–अलग तरीके के आकलन के तरीके हो सकते हैं।

6.2.1 बच्चों का अवलोकन

बच्चों के आकलन का सरल एवं सुगम माध्यम अवलोकन है। आकलन में जहाँ हम कुछ बिंदुओं को आधार बनाते हैं, वहीं बच्चों के आचार, व्यवहार, बोध, दृष्टिकोण, क्रियाकलापों आदि का अवलोकन करके बच्चों की उपलब्धियों को जाना जा सकता है। शिक्षक बच्चों का अवलोकन चुपचाप करता है जिससे बच्चे सहज और नैसर्गिक तरीके से अपना कार्य करते रहते हैं उनमें मूल्यांकन या आकलन का भय नहीं रहता है जिस कारण वे और अधिक सहज हो कर अपनी सीख को अभिव्यक्त करते हैं।

आकलन के लिए अवलोकन के चरण –

क) कार्य योजना बनाना – पाठ्यचर्या के जिन उद्देश्यों का अवलोकन करना है उन दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफल को सूचीबद्ध करें। अवलोकन का तरीका, उसके लिए योजना व इस हेतु आवश्यक उपकरण का चयन भी करे।

ख) प्रमाण जुटाना – एक निश्चित निर्धारित अवधि में चयनित दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफल बच्चों द्वारा प्रदर्शित किए जा सकते हैं। सामाजिक बोध के विकास के आकलन हेतु अनेक सामूहिक गतिविधियाँ जिसमें नाटक, खेल, कठपुतली नृत्य आदि करवाये जा सकते हैं। इन गतिविधियों के दौरान शिक्षक द्वारा प्रत्येक बच्चे के सफल क्रियाकलाप को चिह्नित कर प्रमाण के तौर पर रखना चाहिए।

ग) चिंतन एवं आकलन – शिक्षक द्वारा समय–समय पर किए गए बच्चों के आकलन का अवलोकन करना चाहिए। तथा आकलन या अवलोकन के प्रमाणों के अनुरूप बच्चों के लिए भविष्य की शिक्षण कार्य योजना बनाई जानी चाहिए ताकि बच्चे अपेक्षित दक्षताओं को हासिल कर सकें।

शिक्षक निम्नलिखित गतिविधियों के द्वारा बच्चों का अवलोकन कर सकता है। सामान्य शैक्षणिक प्रक्रियाओं के दौरान अवलोकन के लिए कुछ उदाहरण निम्नवत् हैं–

क) कहानी सुनाना –

i. क्या बच्चा कहानी को ध्यान से सुन रहा है ?
ii. क्या बच्चा व्यक्तिगत अनुभवों को कहानी की घटनाओं से जोड़ रहा है ?
iii. क्या बच्चा जिज्ञासा के साथ कहानी से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछ पा रहा है?
iv. क्या बच्चा कहानी के बारे में पसन्द व नापसन्द व्यक्त कर रहा है ?

ख) मौखिक बोलचाल –

i. क्या बच्चा शिक्षक द्वारा गतिविधि आधारित निर्देशों को सुन रहा है?

ii. क्या बच्चा बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहा है?

iii. क्या बच्चा दूसरों की बात सुनकर अपनी खुशी या अप्रसन्नता व्यक्त कर रहा है?

ग) खेल, स्वतंत्र खेल, मार्गदर्शित या संरचित खेल

i. क्या बच्चा साधारण समस्याओं को हल कर रहा है ?

ii. क्या खेलों द्वारा उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास हो रहा है?

iii. क्या खेल द्वारा बच्चों में अनुशासनात्मक, सामूहिक एवं सहयोगी भाव पैदा हो रहे हैं?

उपरोक्त अवलोकन शिक्षक द्वारा उस समय किया जाना चाहिए जब बच्चे इन गतिविधियों को मातृभाषा/घर की भाषा के माध्यम से संचालित कर रहे हों तब बच्चों की दक्षताओं का सही आकलन कर पायेंगे। खेल एवं स्थलीय भ्रमण के दौरान भी बच्चों का अवलोकन किया जाना चाहिए।

6.2.1.1 अवलोकन अभिलेखीकरण हेतु उपकरण

शिक्षक अपने अवलोकन के अभिलेखन के लिए अनौपचारिक या औपचारिक रूप से जिसमें अवलोकन अनुसूची /चेकलिस्ट/क्रियाकलाप के दौरान परखा गया परीक्षण (Event Sampling) आदि उपकरणों (Tools) का उपयोग कर सकता है।

गतिविधि– वृतान्त अवलोकन रिकार्ड का नमूना

प्रसंग– मैं 05–06 साल के बच्चों की एक कक्षा को पढ़ाती हूँ। जब मैं अपनी कक्षा के बच्चों के साथ उनके माता–पिता के बारे में बात कर रही थी तब मेरा ध्यान एक बच्ची ने आकर्षित किया।

शिक्षक की आवाज 6.2 क

नाम– रमा	**उम्र–** 05 साल
अवलोकन की तिथि/समय–	**स्थान–** कक्षा
अवलोकन का उद्देश्य– भावनात्मक लगाव	

अवलोकन –मैंने अपनी कक्षा में देखा कि रमा सहमी व डरी हुई रहती है। वह पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रही है। मैंने जब इसका कारण जानना चाहा तो रमा ने बताया कि उसके माता–पिता घर पर झगड़ा करते हैं व उसके पिता जी उसकी माँ को मारते हैं। रमा ने बताया कि उसे अपने पिता जी बिल्कुल भी पसंद नहीं हैं।

व्याख्या–

- ऐसा लगता है कि रमा को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का उचित विश्वासपूर्ण वातावरण नहीं मिल पाया।
- इस कारण वह पढ़ाई पर भी ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रही है।
- अन्य बच्चों के साथ भी उसका व्यवहार असामान्य है।

कार्ययोजना–इस बारे में रमा के माता–पिता से बातचीत की गयी। माता–पिता रमा को पूरा समय दें, उसका ध्यान रखें और रमा के सामने प्रेम से रहें व झगड़ा न करें।

(नोट–शिक्षक ऐसी ही किसी दूसरी समस्याओं को ध्यान में रखकर वृत्तांत अवलोकन संरक्षित कर सकते हैं।)

- **चेक लिस्ट/जाँच सूची–**

प्रारम्भिक अवस्था हेतु चेकलिस्ट 'बाल केन्द्रित' हो जिसमें बहुत सरलता हो। इसके माध्यम से बच्चों के क्रमिक दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। आकलन हेतु हाँ/नहीं की प्रश्नावली में बच्चों से विभिन्न निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं। 'चेकलिस्ट' में प्राप्त विश्लेषण केवल बच्चों के संदर्भ में जानकारी जुटाने का एक माध्यम है। यह बच्चे का 'उपलब्धि कार्ड' नहीं है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों के सुधारात्मक पक्षों का विश्लेषण कर सकता है।

दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली आदतें (स्वास्थ्य एवं स्वच्छता)

बच्चे का नाम	वजन	लम्बाई	टीके	एनमिक	हाथों की स्वच्छता	मुँह की स्वच्छता	बालों की स्वच्छता

(नोट– शिक्षक द्वारा प्रत्येक बच्चे के आकलन के लिए जांच सूची भरी जाय ताकि सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त किया जा सकेगा।)

इसी तरह शिक्षक सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए अन्य उपकरणों का भी प्रयोग कर सकता है। भाषा और साक्षरता के कौशल के अवलोकन के लिए एक नमूना चेक लिस्ट नीचे दी गयी है। इसका उपयोग एक बच्चे के लिए और बच्चों के समूह के लिए किया जा सकता है।

तालिका 6.2 ख अवलोकन के लिए नमूना चेकलिस्ट

क्र.	सुनना और बोलना	तिमाही–1	तिमाही–2	तिमाही–3
1	बातचीत और कहानियों को ध्यान से सुनना।			
2	छोटी कविताओं, अभिनय गीतों को सुनाना, दोहराना और संगीत और लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेना।			
3	उचित रूप में प्रयुक्त वाक्यों के माध्यम से सवालों का जवाब देना।			
4	उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करना और किसी विचार/वस्तु/चित्र अनुभव के बारे में पूर्ण वाक्य बोलना।			
5	प्रिंट जागरूकता और अर्थ निर्माण–कक्षा और परिवेश में छपी हुई सामग्री (प्रिन्ट) के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है।			
	शुरूआती पढ़ना (Emergent Reading)			
6	अपने नाम और बोले गए शब्दों व लिखित शब्दों के समूह को जोड़ने और पहचानने में सक्षम होना।			
7	पुस्तकों के साथ जुड़ाव– आयु–उपयुक्त पुस्त कों (जैसे चित्र पुस्तकें, कविता पुस्तकें, कहानी पुस्तकें) की श्रृंखला को जानने–समझने की क्षमता प्रदर्शित करता है।			
8	पढ़ने का नाटक करना– यह किताबों में रूचि, किताबों को देखना और उन्हें पढ़ने की कोशिश करना प्रदर्शित करता है।			
9	चित्र पुस्तकों या कहानी की किताबों में छपी हुई सामग्री (प्रिन्ट) के अर्थ को समझने और व्याख्या करने में सक्षम होना।			

6.2.2 कलाकृति और उसके कुछ उदाहरण–

बुनियादी स्तर में सीखने की सतत प्रक्रिया में काल्पनिक एवं व्यावहारिक सृजनशीलता का अत्यन्त महत्व है। बच्चों द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ उनके मनोभावों की सृजनात्मक दक्षताओं की अभिव्यक्ति है, जिसके माध्यम से शिक्षक बाल मनोभावों की अभिव्यक्ति को आसानी से समझ पाते हैं।

कलाकृतियाँ रचनात्मक व्यवहार को उजागर करती है। बच्चों द्वारा बनायी गई कलाकृतियों को शिक्षक 'मेरी रचनाओं का संसार'/'मेरे पंख मेरी उड़ान'/'सपनों की उड़ान' नाम के पृथक–पृथक फोल्डर में रख सकते हैं जिससे शिक्षक बच्चों की

रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता का उपयोग उनकी दक्षतओं को निखारने में कर सकेंगे।

शिक्षक की आवाज 6.2ग

- **वर्कशीट –**

यह वर्कशीट 07 से 08 आयुवर्ग के बच्चों की दक्षताओं के आकलन का एक उपयोगी माध्यम है, जिसके द्वारा शिक्षक बच्चों की दक्षताओं के साथ उनके कमज़ोर व उपचारात्मक पक्षों को समझकर शिक्षण कार्ययोजना तैयार कर सकेगा।

• मेरा नाम पवन है। • मेरे गाँव का नाम रामणी है। • मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। • मेरे पिता जी का नाम श्री जतन है। • मेरी माता जी का नाम श्रीमती रूकमणी है।	• मेरा नाम ..... है। • मेरे गाँव का नाम ..... है। • मैं ..... कक्षा में पढ़ता हूँ। • मेरे पिता जी का नाम श्री ..... है। • मेरी माता जी का नाम श्रीमती ..... है।

चित्र में आपको क्या–क्या दिखाई देता है उन शब्दों को बताओ।

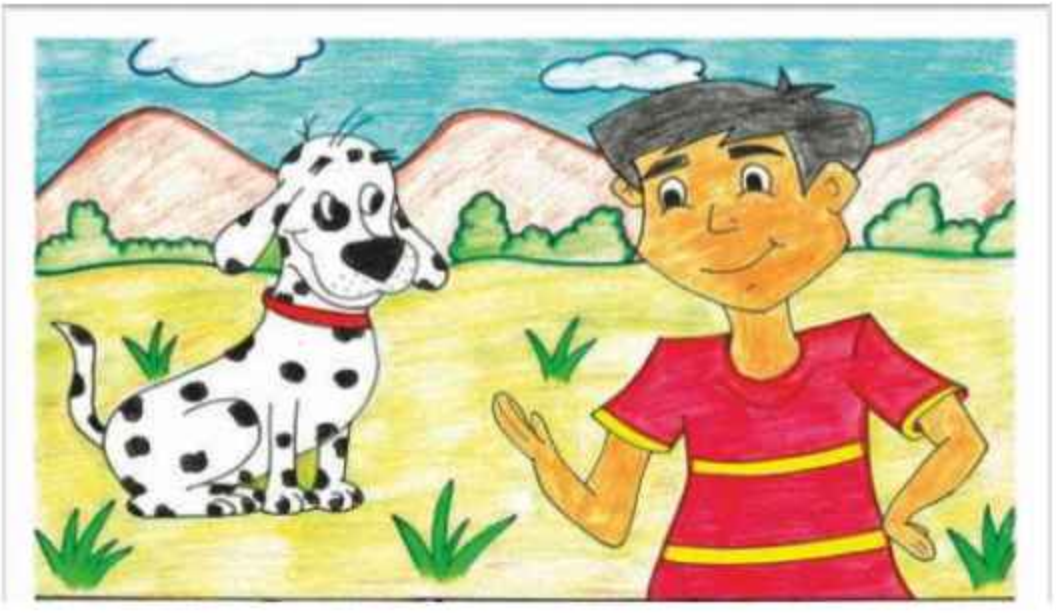

खण्ड 6.3

प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना

आकलन एवं अवलोकन से हमें बच्चों की सीखने की सतत् जानकारी प्राप्त होती है। इन्हीं साक्ष्य अथवा प्रमाणों के माध्यम से शिक्षक बच्चों की रूचियों एवं जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर कक्षा–कक्ष की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का निर्माण करता है। शिक्षकों द्वारा प्रत्येक बच्चे की दक्षता के अनुरूप आकलन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए चक्रीय एवं पुनरावृत्तीय प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए।

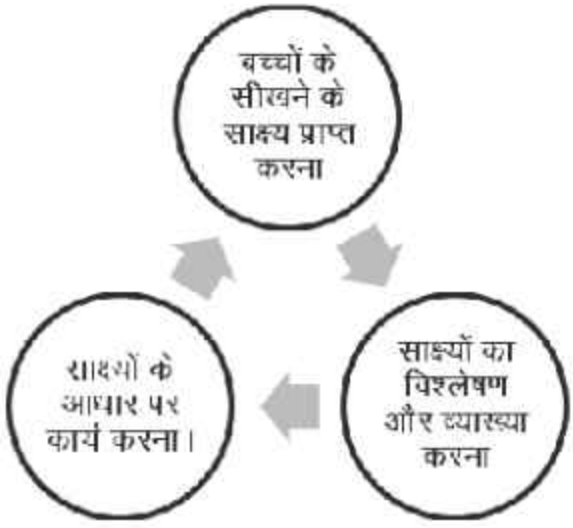

(प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए प्रवाह)

6.3.1 सीखने के प्रतिफलों के आकलन/साक्ष्यों का विश्लेषण –

सीखने के प्रतिफलों पर आधारित बच्चे के आकलन का विश्लेषण कर आगामी अधिगम प्रक्रिया के लिए कार्ययोजना बना सके।

6.3.1.1 आकलन में प्राप्त साक्ष्यों के विश्लेषण करने के लिए पूर्व मापदण्ड–

(क) आकलन के लिए शिक्षक का दर्शन व्यापक, निष्पक्ष, उदार एवं सकारात्मक दृष्टिकोण वाला हो। शिक्षक द्वारा जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक विषमताओं एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

(ख) बुनियादी स्तर हेतु बच्चों की दक्षताओं, क्षमताओं के अनुरूप एवं सीखने के प्रतिफलों पर आधारित आकलन किया जाना चाहिए तथा आकलन के अनुसार आगामी शैक्षणिक कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।

(ग) शिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक विधि/उपकरण के आधार पर आकलन की रणनीति अपनायें।

(घ) शिक्षक के पास औपचारिक एवं अनौपचारिक विधि/उपकरण का एक मानकीय प्रारूप होना चाहिए।

6.3.2 विश्लेषण के आधार पर कार्य योजना –

शिक्षक बच्चे की मौलिक क्षमता एवं अर्जित दक्षता के आकलन एवं अवलोकन के सैद्धान्तिक विश्लेषण के पश्चात बच्चे को अधिक संवर्द्धित करने हेतु शिक्षण कार्ययोजना बनायेगा।

खण्ड 6.4

आकलन का अभिलेखीकरण एवं सम्प्रेषण

आकलन तथा अवलोकन का अभिलेख बच्चे की प्रगति का एक दर्पण है। जिसमें उसकी दक्षताओं एवं अर्जित कौशलों का अभिलेख अंकित रहता है। सभी बच्चों के सीखने एवं समझने का लेखा–जोखा तथा अभिलेख सत्रवार एवं कक्षावार विद्यालय में एक फोल्डर में रखा जाना चाहिए। यह आकलित विश्लेषण का समग्र सारांश, समग्र प्रगति कार्ड (Holistic Progress Card-HPC) कहलाएगा, जिसे शिक्षक द्वारा बच्चे के माता–पिता के साथ साझा भी किया जाना चाहिए।

6.4.1 बच्चे की पारिवारिक पृष्ठभूमि–

बुनियादी अवस्था में 'बाल केंद्रित शिक्षा' में शिक्षकों को बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं स्थानीय परिवेश की जानकारी होनी आवश्यक है। बच्चों से संबंधित उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनकी पसंद–नापसंद, खेल–कूद, गीत–संगीत, कविता आदि जैसी रुचियों की जानकारी होनी चाहिए। बच्चों के हाव–भाव एवं स्वभाव में बदलाव का गहन अवलोकन करते हुए परिवर्तित व्यवहार के अनुसार सुधार के लिए रणनीति बनायी जानी चाहिए।

6.4.2 शिक्षक सारांश (Teacher Narrative Summary)–

शिक्षक द्वारा बच्चे के सम्पूर्ण 'आकलन' में प्रयुक्त उपकरणों (अवलोकन / चेकलिस्ट / क्रियाकलाप) के द्वारा परखे गये परीक्षण (Event Sampling) के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक–सारांश है। इस सारांश में बच्चे की शैक्षणिक एवं गुणात्मक विवरणों को संकलित किया गया है। इस हेतु 'समग्र प्रगति कार्ड' (HPC) विकसित किया गया है, जो शिक्षक, अभिभावक एवं बच्चों तीनों पर केंद्रित होता है।

6.4.3 समग्र प्रगति कार्ड (Holistic Progress Card- HPC)–

यह बच्चों की विशिष्टताओं, अर्जित दक्षताओं एवं कौशलों का बहुआयामी अभिलेख है, जिसमें बच्चे की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर विभिन्न कक्षा स्तरों की शैक्षिक, मनोगत्यात्मक, भावात्मक, संज्ञानात्मक तथा सामाजिक, सामुदायिक एवं सांस्कृतिक आदि पक्षों का विवरण रखा जाता है। जिसमें बच्चे के माता–पिता, अभिभावकों एवं बच्चे द्वारा किया गया स्वः आकलन भी सम्मिलित किया जा सकता है। समग्र प्रगति कार्ड (HPC) द्वारा शिक्षक बच्चों के सतत् विकास हेतु शैक्षिक रूपरेखा तैयार करता है।

बच्चों के लिए स्व–आकलन नमूना प्रपत्र

उस चित्र पर गोला लगाएं जो दर्शाता है कि आपने आज कैसे काम किया।

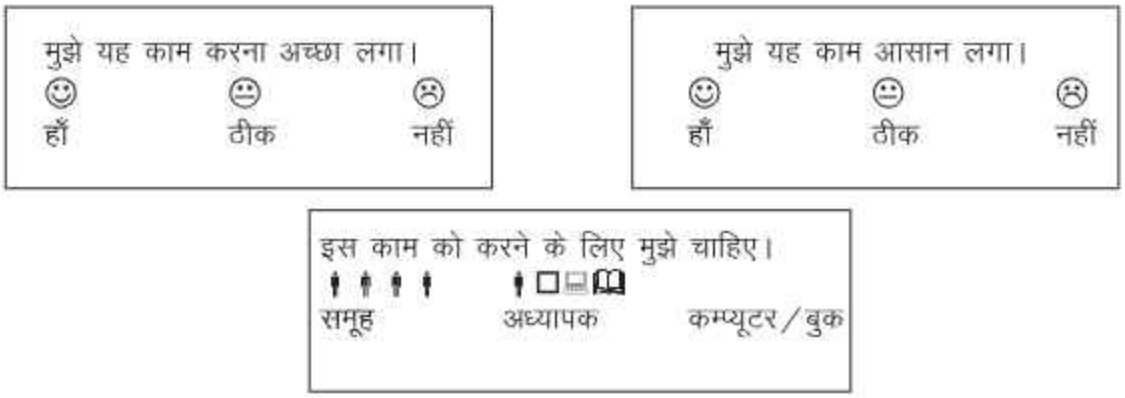

चित्र 6.4 (क) बच्चों के लिए एक नमूना स्व–आकलन प्रपत्र

6.4.3.1 समग्र प्रगति कार्ड (Holistic Progress Card-HPC) में दक्षताएं–

समग्र प्रगति कार्ड दक्षता आधारित होना चाहिए। इसमें पाठ्यचर्या के विशिष्ट उद्देश्यों के लिए परिभाषित प्रत्येक दक्षता के आगे बच्चे की प्रगति को लगातार लिखा जाना चाहिए। सीखने के प्रतिफल के आधार पर इन दक्षताओं को विकास के (A,B,C,D,E) परिवर्तन क्रमों में बाँटा जा सकता है। बच्चे विकास के एक चरण से दूसरे चरण में उस गति से आगे बढ़ सकते हैं, जिसमें वे सहज महसूस करते हैं। कुछ बच्चे इन सम्बोधों को शीघ्रता से सीख लेते हैं, जबकि कुछ को अधिक समय लग सकता है। इन पाँच चरणों में दर्शाये गये सारे संकेतक सीखने के प्रतिफल होते हैं, जो उपलब्धि के आकलन के लिए एक रूब्रिक (Rubrick) के रूप में कार्य करते हैं। (शिक्षक सीखने के निर्धारित विकास के परिवर्तन क्रमों में बच्चे द्वारा अर्जित दक्षता के आगे सही का निशान लगा सकता है।)

तालिका 6.4क

बच्चों को ग्रेड देना	स्तर–I	स्तर–II	स्तर–III	स्तर–IV
बच्चों को उनके सीखने और विकास में सहयोग करने के लिए उनके ग्रेडेशन का विवरण।	दी गयी समय सीमा में शिक्षक की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने का प्रयास करते हैं।	दी गयी समय सीमा में शिक्षकों की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करते हैं।	स्वयं से ही सीखने के प्रतिफलों को हासिल करते हैं।	•सीखने के प्रतिफलों को हासिल करते हैं। •सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने में दूसरों को मदद करते हैं और सहारा देते हैं। •बच्चे को और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य दिये जा सकते हैं।
विवरण	**आरम्भिक** (BEGINNER)	**प्रगतिशील** (PROGRESSING)	**प्रवीण** (PROFICIENT)	**उन्नत** ADVANCED

नोट– प्रत्येक दक्षता में A-I हो सकता है जो कि उपलब्धि का निम्नतम् स्तर है और E-IV उपलब्धि का उच्चतम स्तर है ।

उदाहरण के लिए 'सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनता है और उनकी सराहना करता है।' दक्षता के सीखने के प्रतिफल नीचे दिये गये हैं–

तालिका 6.4 ख

दक्षता: सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनता है और आनन्द लेता है।				
(उम्र 03 से 08 वर्ष)				
A (उम्र 3–4)	**B** (उम्र 4–5)	**C** (उम्र 5–6)	**D** (उम्र 6–7)	**E** (उम्र 7–8)
•अलग– अलग तरह के गीतों और कविताओं को सुनना	नियमित रूप से आस–पास सुने जाने वाले अलग–अलग भाषाओं के तरह तरह के गीतों को सुनना और उन्हें आनन्द लेते हुए गुनगुनाना।	लम्बे गीत/कविताएं ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना।	लम्बे (अपरिचित) गीत/कविताएं ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना।	किसी खास स्तर के गीतों और कविताओं को सुनने में पसंद और नापसंद करना तथा नापसंद करने की वजह बताना।

•किसी गीत व तुकबन्दी को दोहराना	स्वर और हावभाव के साथ गीत और तुकबंदी गाना / सुनाना	स्मृति के सहारे छोटे–छोटे (4–5 वाक्य के) गीत–गाना / कविता सुनना।	स्मृति के सहारे छोटे–छोटे (10 वाक्य के) गीत गाना / कविता सुनाना	स्मृति आधारित कई छन्दों वाले गीत गाना / कविता सुनाना।

अगर बच्चे गीत और कविताओं को सुनने में अपनी पसन्द व्यक्त करते है और अपनी स्मृति से कई छन्दों वाली कविता पढ़ते या गाते हैं तो इस योग्यता की HPC में E-IV के रूप में दर्ज किया जाएगा। यह अंकन मानता है कि बच्ची ने पिछले चरणों (A से E) के सीखने के प्रतिफलों को हासिल कर लिया है।

निष्कर्ष–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 बुनियादी स्तर हेतु सीखने की सतत् प्रक्रिया को सरल, सहज, रोचक एवं बालकेन्द्रित बनाती है। इस नीति का मूल भाव बच्चों के भीतर छुपी क्षमता, कौशल एवं सृजनशीलता को निखारने के साथ–साथ नैतिक मूल्यों, भारतीय एवं राज्य की ज्ञान संस्कृति एवं परम्पराओं को आधार बनाते हुए सर्वांगीण विकास का आकलन करना है।

अध्याय-7

समय प्रबन्धन

बच्चों के लिए एक सहज व सुव्यवस्थित दिनचर्या का होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सुव्यवस्थित दिनचर्या बच्चों को सुरक्षा का एहसास और कार्यबोध की संस्कृति का अभ्यास कराती है। इस प्रकार बच्चों को पता रहता है कि दिन भर में क्या–क्या गतिविधि होगी। यह अहसास उन्हें विद्यालय में सामूहिक वातावरण में सहज रूप से रहने और एक दूसरे के साथ घुलने मिलने में मदद करता है।

खण्ड 7.1

दिवस नियोजन

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य समय का उचित नियोजन करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे को सभी क्षेत्रों में सीखने के अवसर और अनुभव आसानी से उपलब्ध कराये जा सकें। उत्तराखण्ड की विविध और विषम भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप यह नियोजन परिवर्तित किया जा सकता है। समय प्रबन्धन/नियोजन करते समय निम्नलिखित निर्देशों का पालन अवश्य किया जाना होगा–

खुशी का कोना

1.चित्र पुस्तकालय
2.विज्ञान प्रयोगशाला
3. वस्तु संग्रहालय
4. कलाशाला
5. कार्यशाला
6. घर
7. रंगमंच
8. क्रीड़ा आंगन
9. बगीचा
10. चिड़ियाघर
11. तरणताल
12. प्रदर्शनी

1. प्रदत्त नियमों के अनुरूप विद्यालय/केन्द्र में सीखने के लिए निर्धारित दिनों की संख्या और काम के लिए आवंटित घण्टों के आधार पर कार्यदिवस का नियोजन किया जाना चाहिए।
2. गतिविधि की योजना बनाते समय बच्चों के ध्यान केंद्रित करने की अवधि (Attention Span) और शिक्षक द्वारा करायी जाने वाली गतिविधियों में एक अच्छा सन्तुलन रखा जाना चाहिए। जैसे खेल के बाद शांत गतिविधि, सामूहिक गतिविधि के बाद व्यक्तिगत गतिविधि तथा बाहर की गतिविधियों के बाद आन्तरिक गतिविधियाँ करायी जानी चाहिए।

- 03 से 06 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रतिदिन की दिनचर्या का चित्रण।

03 से 06 वर्ष की आयु के बच्चों की प्रतिदिन की दिनचर्या को सुनिश्चित करने के कई तरीके हो सकते हैं। इसके दो उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

पहला उदाहरण– उन संदर्भों के लिए ज्यादा उपयुक्त है, जहाँ बच्चे सर्कल टाइम, कहानी समय, अवधारणा के लिए समय, संख्या–पूर्व ज्ञान जैसी शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधियों से अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ बच्चों के लिए फ्री–प्ले और कार्नर टाइम जैसे अलग और स्वतंत्र गतिविधियाँ होती हैं।

तालिका 7.1 क

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या/खेल गतिविधि/खुशी का कोना			
9:30	10:15	45 मिनट	सत्कार/बातचीत/सर्कल टाइम
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	10:45	15 मिनट	कविता/गीत/संगीत/उछल–कूद
10:45	11:45	1 घंटा	अवधारणा पर काम/संख्या पूर्व अवधारणाएँ
11:45	12:15	30 मिनट	कला/शिल्प/स्वतन्त्र खेल (फ्री प्ले)
12:15	1:00	45 मिनट	खुशी का कोना/कार्नर टाइम
1:00	1:45	45 मिनट	भोजनावकाश **(03–04 साल के बच्चों की छुट्टी का समय)**
1:45	2:30	45 मिनट	शुरूआती पढ़ना–लिखना/कहानी समय
2:30	3:00	30 मिनट	खेल–कूद और छुट्टी का समय

दूसरा उदाहरण– उन संदर्भों हेतु ज़्यादा उपयुक्त है जहाँ कम बच्चे हैं और उनके पास काफी अलग–अलग तरह की उपयुक्त सामग्री भी अन्तःक्रिया के लिए उपलब्ध है। वहाँ स्वयं से सीखने पर अधिक बल दिया जाता है और बच्चे स्वयं ही ध्यानपूर्वक शिक्षण सामग्री का उपयोग करना सीखते हैं।

बच्चों को गतिविधि संचालन के लिए कार्य–समय (Work time) दिया जाता है और इस दौरान वे जो गतिविधि करना चाहते हैं, उसका चयन वे स्वयं कर सकते हैं। शिक्षक बच्चों की गतिविधियों को ध्यानपूर्वक देखें और आवश्यकता अनुसार बच्चों की मदद करें। बच्चों द्वारा सम्पन्न की गई गतिविधि के आधार पर शिक्षक हर बच्चे के लिए आगे की गतिविधियाँ तय करें। विकास के विभिन्न क्षेत्रों (उदाहरण के लिए शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषा, कला आदि) को ध्यान में रखते हुए गतिविधियाँ और इन गतिविधियों के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध और व्यवस्थित की जानी चाहिए।

तालिका 7.1 ख

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या / खेल गतिविधि / खुशी का कोना / चुपचाप खेले जाने वाले खेल			
9:30	10:15	45 मिनट	सत्कार / बातचीत / सर्कल टाइम
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	12:15	1 घण्टा 45 मिनट	कार्य समय
12:15	1:00	45 मिनट	कला / शिल्प / स्वतन्त्र खेल (फ्री प्ले)
1:00	1:45	45मिनट	भोजनावकाश **(03–04 साल के बच्चों की छुट्टी का समय)**
1:45	3:00	1 घण्टा 15 मिनट	भाषा और शुरूआती पढ़ना–लिखना

इन उदाहरणों में विद्यालय का कुल समय साढ़े पाँच घण्टे है। इसमें लगभग साढ़े चार घण्टे, 04 से 06 वर्ष के बच्चों को सक्रिय रूप से निर्देशित सीखने–सिखाने के लिए है।

- **06 से 08 वर्ष के बच्चों के लिए दैनिक / साप्ताहिक दिनचर्या का विवरण–**

06 से 08 वर्ष के बच्चों के लिए प्रतिदिन की दिनचर्या थोड़ी लम्बी और अधिक व्यवस्थित भी है। जहाँ 03–06 वर्ष के बच्चों के साथ सभी भाषाओं पर एक साथ काम किया जा सकता है। वहीं 06–08 वर्ष के बच्चों हेतु अन्य भाषाओं के लिए कुछ निश्चित समय देना आवश्यक है। साक्षरता, संख्या ज्ञान और कला के लिए विशेष समय तय किए जाने चाहिए। प्रथम भाषा L1 के लिए 90 मिनट और द्वितीय भाषा L2 के लिए 60 मिनट का समय दिया जाना चाहिए। गणित और संख्या ज्ञान के लिए भी 60 मिनट का समय अवश्य दिया जाना होगा।

तालिका 7.1 ग

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
9:00	9:30	30 मिनट	सर्कल टाइम–गीत / उछल–कूद / प्रार्थना सभा
9:30	10:00	30 मिनट	L1- मौखिक भाषा
10:00	10:30	30 मिनट	L1- शब्द पहचानना
10:30	10:45	15 मिनट	नाश्ता
10:45	11:45	1घण्टा	गणित
11:45	12:15	30 मिनट	कला और शिल्प
12:15	12:45	30 मिनट	L1- पढ़ना / लिखना
12:45	1:30	45 मिनट	भोजनावकाश
1:30	2:30	1घण्टा	L2- मौखिक भाषा, शब्द पहचान
2:30	3:00	30 मिनट	खेल

पर्याप्त समय होने से विभिन्न गतिविधियों जैसे कला, खेलकूद, बागवानी आदि के लिए भी समय मिल जाएगा अतः इन गतिविधियों को भी सम्पन्न करवाया जाना चाहिए।

नोट– उक्त समय तालिकायें सुझावात्मक हैं संस्थाएँ / विभाग समय तालिका निर्मित कर सकेंगे।

विद्यालय का वार्षिक कैलेंडर–

विद्यालय का कैलेंडर वार्षिक योजनाओं के अनुसार निर्मित किया जाता है, जो यह बताता है कि वर्ष में कब, कौन से विशेष कार्यक्रम होंगे। शिक्षक इसी के अनुरूप अपनी कक्षा गतिविधियों की योजनाएं बनाते हैं और बच्चों व उनके परिवारों को स्कूल में कब क्या होने वाला है इससे अवगत कराते हैं, ताकि अभिभावक भी बच्चों के साथ तैयारी में जुट सकें। स्कूल का यह कैलेंडर अभिभावकों और परिवार सहित सभी की पहुँच में होना चाहिए। इसे बनाने में स्थानीय आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। विद्यालयों / केन्द्रों को अपनी परिस्थिति के अनुरूप इसमें छोटे–मोटे परिवर्तन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

अध्याय-8

अतिरिक्त महत्वपूर्ण क्षेत्र

सीखने और विकास के लिए बुनियादी अवस्था बहुत महत्वपूर्ण होती है इस स्तर पर बच्चों को एक सुरक्षित, सहायक और उत्तरदायी वातावरण प्रदान किया जाना नितांत आवश्यक है जिसमें हर बच्चे की सीखने के साथ गरिमा बनी रहे।

खण्ड 8.1

विकासात्मक विलम्ब (Developmental Delay) और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN)

विकासात्मक विलम्ब अथवा दिव्यांगता– प्रत्येक बच्चा प्रकृति से एक भिन्न प्रकार की विशेषता व कौशल युक्त होता है और प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति एवं शैली भी भिन्न–भिन्न होती है। विकासात्मक दक्षताओं को सभी बच्चे एक ही समय में एक साथ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। कुछ इन दक्षताओं को शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं जबकि कुछ इन दक्षताओं को सीखने में अधिक समय लेते हैं। इसी प्रकार विद्यालय में करायी जाने वाली गतिविधि में भाग लेने में कुछ बच्चों को कठिनाई होती है जिसके कुछ कारण अस्थाई हो सकते हैं और कुछ लम्बे समय तक चलने वाले हो सकते हैं। इन व्यक्तिगत अंतरों के कारण सभी बच्चे विकास के प्रत्येक पड़ाव को साथ–साथ प्राप्त नहीं कर सकते।

बच्चा जब अपनी आयु के सापेक्ष सामान्य परिस्थिति में विकास के चरण उचित रूप से पूर्ण नहीं कर पा रहा हो तो उसे हम **विकासात्मक विलम्ब** कहते हैं। यह विलम्ब दिव्यांगता के कारण भी हो सकता है जिसमें कोई बच्चा अपने किसी अंग विशेष की क्षति अथवा मानसिक क्षय या अपूर्णता के कारण अपनी आयु अनुरूप दक्षता प्राप्त नहीं कर पाता है या गतिविधि करने में असफल होता है।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अंतर्गत वर्णित दिव्यांगता को निम्न श्रेणियों में रखा गया है। 'प्रशस्त' में वर्णित दिव्यांगता की स्थिति–

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अंतर्गत वर्णित दिव्यांगता को निम्न श्रेणियों में रखा गया है। 'प्रशस्त' में वर्णित दिव्यांगता की स्थिति–

दिव्यांगताएँ

1. गति विषयक दिव्यांगता
2. कुष्ठ रोगयुक्त व्यक्ति
3. प्रमस्तिष्क पक्षाघात
4. बौनापन
5. पेशीय दुष्पोषण (मस्कुलर डिसट्रोफी)
6. तेज़ाबी आक्रमण पीड़ित (एसिड अटैक के शिकार)
7. अंधता
8. कम दृष्टि/अल्प दृष्टि
9. श्रवण दोष (बधिर)
10. वाणी और भाषा दिव्यांगता
11. बौद्धिक दिव्यांगता
12. विशेष अधिगम अक्षमता
13. स्वपरायणता स्पेक्ट्रम विकार
14. मानसिक रुग्णता
15. मल्टीपल स्क्लेरोसिस
16 पार्किन्सन रोग
17 हीमोफिलिया
18. थैलेसीमिया
19. सिकल सेल रोग
20. बहुदिव्यांगता
21. राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित कोई अन्य दिव्यांगता।

बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष वृद्धि और विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। ये वर्ष उन रास्तों को निर्धारित करते हैं जिन पर भविष्य का विकास आधारित है। जितनी जल्दी हम सीखने और विकास में आने वाली किसी भी चुनौती को पहचानते और उसका समाधान करते हैं, उसके निवारण और सफलता का मौका उतना ही बेहतर होता है। सर्वोत्तम पोषण और देखभाल करने वाला उचित वातावरण इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। बुनियादी स्तर पर हमें बच्चों को इस प्रकार सहारा देने की आवश्यकता है कि उनकी प्रारम्भिक शिक्षा आगे की शिक्षा के लिए एक सेतु का कार्य करे।

8.1.1 विकासात्मक विलम्ब (Developmental Delay) और दिव्यांगता (Disability) की पहचान

विकासात्मक दिव्यांगता जैसे (Autism, Spectrum Disorder, Cerebral Palsy) बौद्धिक दिव्यांगता, दृष्टिबाधित, सुनने में परेशानी आमतौर पर शैशवावस्था या बचपन के दौरान स्पष्ट हो जाती है और इसे सीखने, भाषा, सम्प्रेषण, संज्ञान, व्यवहार, समाजीकरण या गतिशीलता में विलम्बित विकास और कार्यात्मक सीमाओं (Functional limitations) द्वारा चिह्नित किया जाता है।

कभी–कभी विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता के बीच के अन्तर को जानना मुश्किल होता है। यही नहीं कभी–कभी इन शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है। निरन्तर सहयोग और प्रोत्साहन से विकासात्मक विलम्ब को दूर किया जा सकता है या काफी हद तक सुधार लाया जा सकता है, या लम्बे समय तक चलने वाली हो तो स्नेह, अनवरत प्रयास और मानसिक सम्बल देकर उसे भी एक सीमा तक प्रबन्धित किया जा सकता है।

समय से विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता के जोखिम वाले बच्चों की पहचान करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। समय से की गई पहचान बच्चे के विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता दोनों के निवारण के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

8.1.2 बुनियादी स्तर के संस्थानों का उत्तरदायित्व

शैक्षणिक संस्थान और शिक्षक विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता का निदान करने के लिए अधिकृत नहीं हैं। यह काम अधिकृत चिकित्सक/विशेषज्ञों का है। तथापि शिक्षक विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता के जोखिम वाले बच्चों की पहचान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और इनके निदान में मदद कर सकते हैं। उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में जहाँ विकट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण चिकित्सालय तक पहुँच सहज और सुगम नहीं है, ऐसे में शिक्षक और शैक्षणिक संस्थाओं का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। शिक्षक विकासात्मक विलम्ब और दिव्यांगता वाले बच्चों की पहचान करके उन्हें सही परामर्श प्रदान कर उनकी मदद कर सकता है ताकि भविष्य की कठिनाइयों को यथासम्भव कम किया जा सके। इस हेतु कुछ विशिष्ट बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

क) शिक्षकों को यह भली–भाँति समझना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है। बढ़ती उम्र के साथ विकास और सीखने के स्तरों में अन्तर अवश्य आता है।

ख) यदि शिक्षक को बच्चे के सभी विकासात्मक क्षेत्रों में कोई सतत् समस्या दिखाई देती है तो बच्चे की गतिविधियों को समझने के लिए उनका ध्यानपूर्वक अवलोकन किया जाना चाहिए।

ग) कुछ बुनियादी सवालों के आधार पर बच्चे के दैनिक या साप्ताहिक अवलोकन का रिकार्ड रखा जाना चाहिए। नीचे दी गई विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की दस प्रश्नों वाली सूची का उपयोग जोखिम वाले (At risk) बच्चों की पहचान करने और उनका अवलोकन करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में किया जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की दस प्रश्नीय जाँच (Ten Questions Screening)

1. *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में अधिक देर होती है ?*
2. *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को दिन या रात में देखने में कठिनाई होती है ?*
3. *क्या बच्चे को सुनने में कठिनाई होती है ?*
4. *जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते हैं, तो क्या वह समझ नहीं पा रहा है कि आप क्या कह रहे हैं ?*
5. *क्या बच्चे को चलने या हाथ हिलाने में कठिनाई होती है या उसके हाथ या पैर में कमजोरी या अकड़न है ?*
6. *क्या बच्चे को कभी–कभी दौरे पड़ते हैं, उसका शरीर कठोर हो जाता है, या होश खो बैठता है ?*
7. *क्या बच्चा अपनी आयु के अन्य बच्चों की भांति आयु अनुरूप काम करना सीखता है ?*
8. *क्या बच्चा बोल पाता है (क्या वह स्वयं के शब्दों में समझा सकता है ? क्या वह कोई पहचानने योग्य शब्द कह सकता है) ?*
9. *03 से 09 साल के बच्चों के लिए पूछें– क्या बच्चे का बोलना किसी भी तरह से सामान्य से अलग है ? (उसके परिवार के अलावा अन्य लोगों द्वारा स्पष्ट समझने के लिए पर्याप्त नहीं है) ? दो साल के बच्चे से पूछें– क्या वह कम से कम एक वस्तु (उदाहरण के लिए, एक जानवर, एक खिलौने, एक कप, एक चम्मच) का नाम बता सकता है ?*
10. *अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चा किसी भी प्रकार से सुस्त या धीमा दिखाई देता है ?*

घ) यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सभी बच्चों को पोषण और देखभाल की आवश्यकता होती है, चाहे उनकी गतिविधि या विकास का स्तर कुछ भी हो। शिक्षक को जोखिम वाले बच्चे के साथ वैसे ही खेलना और काम करना चाहिए जैसे वे अन्य बच्चों के साथ करते हैं। कभी–कभी, चीजों को व्यवस्थित करने के लिए बच्चों के दैनिक कार्यक्रम में थोड़े अतिरिक्त ध्यान या अकेले में कुछ समय या आहार में बदलाव की आवश्यकता होती है।

ङ.) यदि शिक्षक अपने स्तर से सन्तुष्ट हो जाए कि बच्चे के विकास में कोई तथ्यात्मक समस्या है तो उसे परिवार के साथ सम्पर्क और सामंजस्य के फलस्वरूप योग्य चिकित्सक से परामर्श प्राप्त करना चाहिए, तथा विकासात्मक विलम्ब या दिव्यांगता के निवारण हेतु सुझाए परामर्श के अनुरूप कोशिश करनी चाहिए।

च) प्रत्येक बच्चे का प्रोफ़ाइल बनाकर उसे अपडेट करना।

छ) माता–पिता व अभिभावकों से नियमित संवाद करना।

ज) चिकित्सकीय सलाह व उपयुक्त उपकरण उपलब्ध कराना।

झ) गम्भीर दिव्यांगता होने पर उच्चाधिकारियों को सूचित करना।

NCERT की प्रशस्त (PRASHAST) एक चेकलिस्ट है जो जोखिम वाले (At-risk) बच्चों की पहचान करने में सक्षम बनाती है। इस चेकलिस्ट के दो भाग हैं। पहला भाग– प्रथम स्तर की स्क्रीनिंग नियमित शिक्षकों द्वारा उपयोग के लिए है और दूसरा भाग–दूसरे स्तर की स्क्रीनिंग विशेष शिक्षकों और अन्य लोगों द्वारा उपयोग के लिए है जो कि (Unscientific diagnosis) अवैज्ञानिक निदान और बच्चों की अनावश्यक labelling से बचाव करता है तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (RPWD Act 2016) के अनुरूप है।

शिक्षक कक्षा में नियमित निम्न क्रियायें कर सकते हैं–

- जितना हो सके बच्चे के विषय में जानें व उसे अपने पास बैठाएं।
- सरल, परिचित भाषा का प्रयोग करें तथा स्पष्ट रूप से और धीरे–धीरे बोलें।
- उदारतापूर्वक प्रशंसा और प्रोत्साहित करें।
- जानकारी को यथासम्भव पुख्ता बनाएं।
- किसी कार्य को पूरा करने के लिए अत्यधिक अभ्यास और समय दें।
- दिखाना, प्रदर्शित करना और मॉडल बनाना– इस चक्र को जितनी बार सम्भव हो दोहराएँ।
- अन्य बच्चों के साथ बातचीत को बढ़ावा दें।
- विभिन्न क्षमताओं को उजागर करने वाली कहानियों, अभिनयात्मक गतिविधि (Role play) का उपयोग करें।
- अन्य बच्चों को, जोखिम वाले बच्चे (At-risk) के साथ संवाद करना / खेलना सिखाएँ और प्रोत्साहित करें।
- जोखिम वाले बच्चे (At-risk) के लिए बाकी कक्षा में से एक मेंटर / दोस्त चुनें (इस चुने जाने को एक बड़े सम्मान की तरह बताएँ)
- जोखिम वाले बच्चों (At-risk) के प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग व व्यवहार न करें जो उसे आहत करने वाले व अपमानजनक हों।
- जोखिम वाले बच्चे (At-risk) की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या करें और क्या न करने की एक स्पष्ट सूची बनायें और अन्य सभी बच्चों को इसके बारे में बतायें।
- जोखिम वाले बच्चे (At-risk) के विषय में नकारात्मक टिप्पणी न करें और न ही दूसरों को ऐसा करने दें।

वैयक्तिक शिक्षा योजना (Individualized Education Plan- IEP): नमूना

शशांक साढ़े पाँच साल का बच्चा है। उससे जो कुछ कहा जा रहा है, वह पूरी तरह समझ सकता है और लगभग बीस शब्द अर्थपूर्ण ढंग से बोल सकता है। वह एक बार में एक शब्द बोलता है। हालांकि वह स्वतंत्र रूप से नहीं चल सकता, लेकिन कुछ मदद से वह खड़ा हो सकता है और वह कुछ कदम आगे चलने की कोशिश करता है। अधिकांश समय उसकी लार बहती रहती है।

यह तीन महीने की वैयक्तिक शिक्षा योजना (IEP) है जिसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के लिए तैयार किया गया है।

उद्देश्य	सीखने के प्रतिफल	विशिष्ट कक्षा गतिविधियाँ
शारीरिक विकास	बिना सहारे के खड़े रहना सहारे के साथ दस कदम आगे चलना।	•एक रेखा खींचे और एक लाल गेंद (जो उसकी प्रिय है) को अन्तिम बिन्दु पर रखें। •गेंद तक चलने के लिए उसे सहारा दें। •जब वह सहारे के साथ कदम उठाता है, तो उसके कदम 1 से 10 तक गिनें। •ऐसा करते समय उसे लगातार प्रोत्साहित करें।
भाषा विकास	50 अर्थपूर्ण शब्द बोलना, दो शब्दों का उपयोग करके आवश्यकताओं को इंगित करना, मुँह की मांशपेशियों को मजबूत करके लार आना कम करना।	•उसके पास एक रंगीन बॉक्स में विभिन्न वस्तुओं जैसे गेंद, कप, प्लेट रखें। •एक बार में एक वस्तु निकालने में उसकी मदद करें और उसे उनका नाम बताने के लिए कहें। •वस्तुओं या लोगों की स्पष्ट तस्वीरों का उपयोग करके यही गतिविधि दोहरायी जा सकती हैं। •गीत और कविता गाते/सुनाते समय उसे जानवरों की आवाज निकालने और गतिविधि दर्शाने वाले शब्द कहने के लिए प्रोत्साहित करें। •खेल गतिविधियों का उपयोग करें जैसे कि गुड़िया को खाना खिलाना, उसे नहलाना, उसे सुलाना और उसे इन सभी गतिविधियों को शब्दों में वर्णित करने के लिए कहें। •मुँह के आकार और जीभ के स्थान को निर्दिष्ट करते हुए, प्रत्येक ध्वनि को कैसे निकालना है, यह दिखाने के लिए एक दर्पण का उपयोग करें। •मुँह की मांसपेशियों के विशिष्ट व्यायाम दिन में चार बार करवाएँ।
स्वयं–सहायता (Self-Help)	अपने दाँतों को स्वयं ब्रश करना, स्वयं खाना, शब्दों और इशारों का उपयोग करके शौचालय सम्बन्धित ज़रूरतों को इंगित करना।	•प्रत्येक गतिविधि को सरल चरणों में बाँटे और उसे प्रत्येक चरण से गुजारें। •वह यह कैसे कर रहा है यह दिखाने के लिए एक दर्पण का प्रयोग करें। •वह जो कर रहा है उसे इंगित करने में उसकी मदद करने के लिए चित्रों का उपयोग करें। •प्रत्येक गतिविधि के लिए आरम्भिक ध्वनियों का प्रयोग करें। जैसे शौचालय की ज़रूरतों के लिए "सु" ब्रश करने के लिए "ईई", खाने के लिए "उम"।
संज्ञानात्मक विकास	श्रेणियों के आधार पर वस्तुओं को छाँटना, चित्रों से वस्तुओं का मिलान करना, 1 से 10 तक अर्थपूर्ण ढंग से गिन पाना।	•विभिन्न श्रेणियों की वस्तुओं को एक साथ मिलाएँ, जैसे जानवर और फल। उसके सामने दो कटोरे रखें उन वस्तुओं को दो कटोरों में छाँटने/अलग करने में उसकी मदद करें।

		•मेज पर उसकी परिचित तस्वीरें (जैसे गेंद, कप, गुड़िया) रखें। उसे तस्वीर के अनुरूप वस्तु दें और बच्चे को उसके अनुसार तस्वीर वाली वस्तु का नाम बोलने को कहें। •बिल्डिंग ब्लॉक्स या कपड़े सुखाने वाली चिमटी (cloth clips) का इस्तेमाल करें और उन्हें सही तरीके से फिट करने में उसकी मदद करें। एक बार हो जाने के बाद अर्थपूर्ण ढंग से गिनने में उसकी मदद करें और जो संख्या मौजूद है उसे बतायें। संख्याओं में बदलाव करें और बच्चे को गिनने में मदद करें।
सामाजिक–भावनात्मक विकास	एक समूह में बैठना, साथियों की उपस्थिति को स्वीकार करना, अभिवादन करना और अपने दोस्तों को बुलाना	•बच्चों के एक समूह को जोखिम वाले बच्चे के साथ एक घेरे में बैठकर पासिंग बॉल खेलने के लिए कहें। जैसे ही वह गेंद को पास करता है, उसे अपना और दूसरों का नाम बोलने के लिए प्रेरित करें और प्रोत्साहित करें। •उसे टॉफी का एक पैकेट दें– उसे समूह में प्रत्येक बच्चे को नाम से बुलाने और प्रत्येक को एक टॉफी देने के लिए कहें। इस प्रक्रिया में दूसरों द्वारा धन्यवाद देना भी सीखा जा सकता है।

उत्तराखण्ड की विषम भौगोलिक परिस्थितियों में जहाँ शारीरिक रूप से गम्भीर दिव्यांग बच्चे शिक्षण संस्थाओं तक अपनी पहुंच बनाने में सक्षम नहीं हैं वहाँ निम्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए–

- हाइब्रिड मोड में गृह आधारित शिक्षण की व्यवस्था ।
- अनुदेशक की व्यवस्था ।
- ऑनलाइन मोड में अभिभावकों का संवेदीकरण एवं परामर्शन।
- दिव्यांगता के आधार पर उपयुक्त उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- पठन सामग्री से युक्त गैजेट की उपलब्धता।
- दृष्टिबाधित एवं मूकबधिर बच्चों के लिए ब्रेल लिपि की पुस्तकें तथा संकेतात्मक भाषा की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- हस्तविहीन बच्चों हेतु वॉइस कमाण्ड सिस्टम वाले गेजेट्स की उपलब्धता।

खण्ड 8.2

विद्यालय में सुरक्षा और संरक्षण

शैक्षणिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत सभी संस्थाएँ ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो न केवल प्रेरणात्मक और आनन्दमय हों, बल्कि सुरक्षित और संरक्षित भी हो।

8.2.1 शारीरिक सुरक्षा

क) विद्यालय समय में बच्चे पूर्णतः शिक्षक की निगरानी में रहें। मध्यान्तर समय और खेल के दौरान भी शिक्षक को जिम्मेदारी से बच्चों की निगरानी करनी चाहिए।

ख) सभी भवनों और उपकरणों में सुरक्षा मानकों का पालन किया जाना चाहिए। जैसे खिड़कियों पर जाली, बालकनी पर रेलिंग, सुरक्षित विद्युत कनेक्शन, अर्थिंग वाले विद्युत उपकरण, कुएँ ढके हुए आदि होने चाहिए।

ग) सभी सुरक्षा उपकरण (जैसे अग्निशमन यंत्र) उपयोग में लाए जाने लायक और सुलभ होने चाहिए।

घ) खिड़कियाँ कक्षा में अन्दर की ओर नहीं खुलनी चाहिए, क्योंकि वे अक्सर दुर्घटनाओं की वजह बनती हैं अच्छा हो स्लाइडिंग खिड़कियाँ हों।

ड) सभी चीजें जो सम्भावित रूप से खतरनाक हो सकती हैं उन्हें बच्चों की पहुँच से दूर रखा जाना चाहिए और उनका उपयोग किसी की देखरेख में किया जाना चाहिए (जैसे चाकू, कैंची, सफाई हेतु तरल पदार्थ आदि)।

च) विद्यालय में उपयोग में लाए जाने योग्य 'प्राथमिक उपचार किट' होना चाहिए तथा शिक्षकों और बच्चों की देखभाल करने वालों को प्राथमिक चिकित्सा की सामान्य जानकारी का प्रशिक्षण अवश्य दिया जाना चाहिए।

छ) पौष्टिक मध्याह्न भोजन (mid-day-meals) सुरक्षित,स्वच्छ और साफ–सुथरे परिवेश में परोसा जाना चाहिए।

ज) दुर्घटना या चिकित्सकीय आपातस्थिति में शिक्षक/प्रधान शिक्षक या उनकी देखभाल करने वालों को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ तत्काल उचित निर्णय लेना चाहिए और तुरन्त उनके माता–पिता या अभिभावक को सूचित करना चाहिए।

झ) यदि कोई बच्चा विद्यालय में अस्वस्थ महसूस करता है, लेकिन यह कोई आपात चिकित्सा (Medical Emergency) की स्थिति नहीं है, तो शिक्षक माता–पिता से सम्पर्क कर बच्चे को घर ले जाने के लिए कह सकता है या यदि सम्भव हो तो स्कूल के कर्मचारी द्वारा यह सुनिश्चित हो जाने के बाद कि घर में कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति मौजूद है तो बच्चे को घर छोड़ा जा सकता है। अन्यथा की स्थिति में अवकाश के समय तक विद्यालय/केन्द्र में बच्चे को आराम करने के लिए लेटाया जा सकता है।

8.2.2 भावनात्मक सुरक्षा

क) स्कूल में कोई भी शिक्षक या उनकी देखरेख करने वाला या अन्य कोई वयस्क बच्चों के साथ शारीरिक हिंसा या शारीरिक दण्ड का प्रयोग नहीं कर सकता है।

ख) विद्यालय या केन्द्र में बच्चों को डराना–धमकाना (bullying), परेशान या भयभीत नहीं करना चाहिए और न ही उनका मानसिक उत्पीड़न किया जाना चाहिए। उनके प्रति अपमानजनक या नीचा दिखाने वाली भाषा का इस्तेमाल कदापि नहीं किया जाना चाहिए। या बच्चों को किसी उपनाम का विशेषण नहीं देना चाहिए जो उन्हें पसंद न हो।

ग) शिक्षकों को सभी बच्चों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना चाहिए और दैनिक गतिविधियों में सभी की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

घ) शिक्षकों को हर समय बच्चों के साथ सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

ड.) बच्चों की संवेदनशील जानकारी (जैसे बच्चे की विशेष परिस्थितियों के सम्बन्ध में) की गोपनीयता बनाए रखी जानी चाहिए।

8.2.3 बाल यौन शोषण

क) यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम 2012 के अनुसार बाल यौन शोषण के प्रति किसी भी तरह की उदारता नहीं होनी चाहिए।

ख) शिक्षकों सहित विद्यालय या आँगनबाड़ी केन्द्र में कार्यरत सभी देखभाल और शिक्षा देने वालों को बाल यौन शोषण और पॉक्सो (POCSO) अधिनियम के विषय में पता होना चाहिए। उन्हें यौन शोषण के सम्भावित संकेतकों को पहचानना आना चाहिए (उदाहरण के लिए चेहरे, पैर या शरीर पर आगे या पीछे खरोंचे या चोट या स्वयं को अलग–थलग कर लेना, आक्रामक होना या आत्मघाती होना)।

ग) कहानियों और नाटकों (जैसे कठपुतली का उपयोग) के माध्यम से शिक्षक बच्चों को सुरक्षित स्पर्श और असुरक्षित स्पर्श (Safe touch and Unsafe touch) के विचारों से परिचित करा सकते हैं।

घ) यदि शिक्षक बच्चे के व्यवहार में कोई अनापेक्षित बदलाव महसूस करते हैं, तो उन्हें तुरन्त इसकी सूचना प्रधानाध्यापक / प्राचार्य / पर्यवेक्षक को देनी चाहिए।

ङ) गोपनीयता बनाए रखना आवश्यक है। सम्भावित बाल शोषण की जानकारी केवल आवश्यकता (Need-to-Know) के आधार पर साझा की जानी चाहिए।

च) ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए सभी प्रक्रियाओं से बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। ऐसे सभी मामलों में सबसे महत्वपूर्ण कार्य और विचार बच्चे की सुरक्षा को ध्यान में रखने वाला होना चाहिए।

8.2.4 अन्य समग्र सुरक्षा उपाय

क) माता–पिता के पते और फोन नम्बर नियमित रूप से अपडेट किए जाने चाहिए और उन्हें पहुँच के अन्दर रखा जाना चाहिए। सभी बच्चों / उनकी देखभाल करने वालों और अभिभावकों के पास आपातकालीन सम्पर्क नम्बर उपलब्ध होने चाहिए।

ख) बच्चे की किसी विशेष चिकित्सा स्थिति (Medical Condition) के विषय में और सम्बन्धित दवा या निवारक उपायों की जानकारी प्रवेश देते समय प्राप्त कर लेनी चाहिए और नियमित रूप से इससे अपडेट रहना चाहिए। यह जानकारी सभी सम्बन्धितों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जो कि सभी बच्चों और विशेष रूप से जोखिम वाले बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। विद्यालय या आँगनबाड़ी केन्द्र के प्रत्येक व्यक्ति को अस्थमा, मिर्गी या ज्ञात एलर्जी वाले बच्चों के बारे में पता होना चाहिए। इन बच्चों का इलाज करने वाले डॉक्टर द्वारा बतायी गई मिर्गी–रोधी या एलर्जी–रोधी दवाईयां विद्यालय या केन्द्र में उपलब्ध रहनी चाहिए। इनका उपयोग करने के लिए विद्यालय या केन्द्र के पास माता–पिता या अभिभावक द्वारा देखभाल की लिखित सहमति होनी चाहिए।

ग) विद्यालय या आँगनबाड़ी केन्द्र में निकटतम चिकित्सा केन्द्र, अस्पताल, डॉक्टर, एम्बुलेंस, फायर स्टेशन और पुलिस स्टेशन के टेलीफोन नम्बर केन्द्रीय स्थान पर इस तरह मोटे अक्षरों में लिखे जाने चाहिए जहाँ से उनका उपयोग आपात स्थिति के समय तुरंत किया जा सके।

(घ) बच्चों को स्वयं की सुरक्षा एवं बचाव के तरीकों का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

उपरोक्त के अतिरिक्त साइबर सुरक्षा व मोबाइल फोन के सुरक्षित व समुचित प्रयोग पर भी पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

अध्याय-9

प्रिपरेटरी स्टेज/प्राथमिक स्तर तक की कड़ियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 5+3+3+4 विद्यालयी संरचना की अनुशंसा करती है। जब भी कोई बच्चा एक स्तर से दूसरे स्तर में अर्थात् फाउंडेशन स्टेज (बुनियादी स्तर) से प्रीपेरेटरी स्टेज (प्राथमिक स्तर) में और प्रिपेरेटरी स्टेज (प्राथमिक स्तर) से मिडिल स्टेज (उच्च प्राथमिक) स्तर में प्रवेश करता है तो इसमें एक स्तर का जुड़ाव दूसरे स्तर से होना चाहिए। एक स्तर से दूसरे स्तर में जाने के लिए स्कूली संरचना 5+3+3+4 में निरंतरता एवं परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

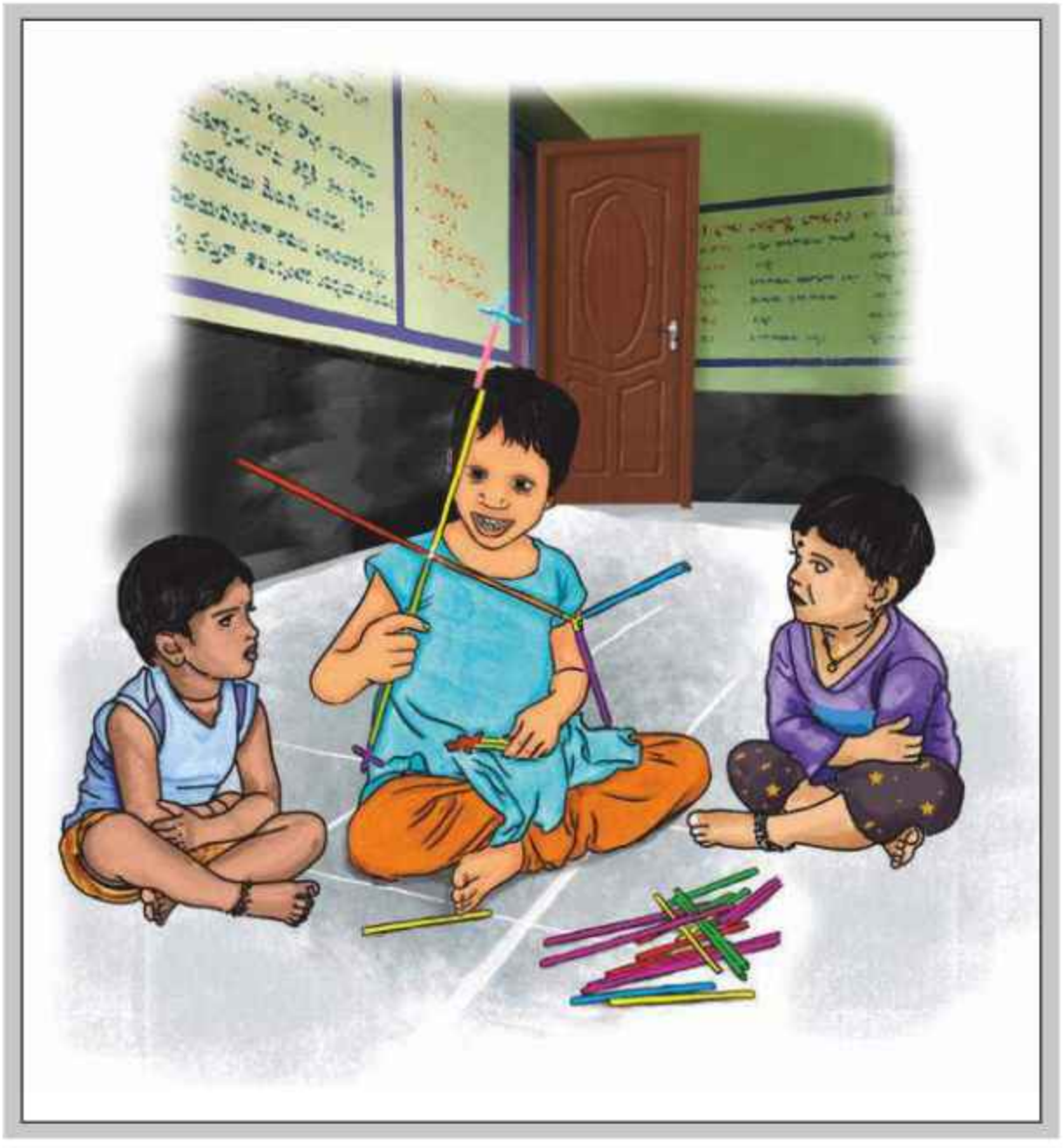

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन फाउंडेशनल स्टेज में विकासात्मक कल्पना से उन क्षमताओं और कौशलों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने से जुड़ा है जो हमारे आसपास की दुनिया की एक व्यवस्थित समझ हासिल करने के लिए आवश्यक है। ये क्षमताएं हैं– साक्षरता, संख्या ज्ञान तथा परिकल्पना करने, अवलोकन करने, आंकड़ों को एकत्र करने और आँकड़ों का विश्लेषण करने की क्षमता । इन शैक्षिक क्षमताओं के साथ, कला और खेल में संलग्नता प्रिपरेटरी स्टेज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है, साथ ही मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक क्षमताओं का विकास भी होता है। कक्षा 3 के अन्त तक बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त कर लें जो कि प्रिपरेटरी स्टेज का प्रथम भाग है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार फाउंडेशनल स्टेज (03–08 वर्ष) में लचीली, बहुस्तरीय, खेल/गतिविधि आधारित अध्ययन और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र शामिल होंगे। प्रीपेरेटरी स्टेज तीन वर्ष की होगी जो फाउंडेशनल स्टेज की खेल, खोज और गतिविधि आधारित शिक्षणशास्त्रीय शैली से आगे बढ़ेगी और इसमें आंशिक रूप से पाठ्यपुस्तकों पर आधारित शिक्षण को भी शामिल किया जायेगा। इस स्तर पर बच्चे औपचारिक और संवादात्मक शैली के माध्यम से अध्ययन– अध्यापन की ओर अग्रसर होंगे जिसमें पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित शामिल होंगे।

फाउंडेशनल स्टेज से प्रीपेरेटरी स्टेज तक के जुड़ाव हेतु अपेक्षित परिवर्तन के क्षेत्रों को मुख्य रूप से निम्नवत् वर्गीकृत किया गया है।

1. पाठ्यचर्या के क्षेत्र
2. विषयवस्तु
3. कक्षा–कक्ष का प्रबंधन एवं सीखने–सिखाने की प्रक्रिया।
4. आकलन

फाउंडेशनल स्टेज से प्रिपेरेटरी स्टेज के जुड़ावों को उक्त परिवर्तनों के मध्य निम्नांकित रूप में देखा जायेगा। यह दी गई तालिका से स्पष्ट होगा।

	फाउंडेशनल स्टेज/ बुनियादी स्तर	प्रीपेरेटरी स्टेज/प्राथमिक स्तर
पाठ्यचर्या लक्ष्य (Curricular Goals)	विकासात्मक क्षेत्र Developmental Domains (Physical, Cognitive, Socio-Emotional, Aesthetical, Language & literacy)	पाठ्यचर्या क्षेत्र Curricular Areas (Language, Mathematics, EVS)
सामग्री (Content)	मूर्त अनुभव Concrete Experiences (Toys, Puppet, Story,Poems etc)	अमूर्त सामग्री (Abstract Content) (Situation, Experiment, Exercises etc)
शिक्षाशास्त्र (Pedagogy)	शिक्षार्थी केन्द्रित लचीला वातावरण (Learner Centered) (Play way Method, Exploratory Method, Less Formal)	स्व–निर्देशित औपचारिक वातावरण (Self Directional) (Project Based, Experimental, Assignment, More Formal etc)
आकलन (Assessment)	अधिकांशतः शिक्षक अवलोकन पर आधारित चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो (Teacher Observation) Check List- Portfolio	मूल्यांकन कार्य (आंशिक/कम महत्व) समयबद्ध मौखिक एवं लिखित कार्य, वर्कशीट इकाई परीक्षा आदि (Assessment Tasks : Oral & Written Tasks) worksheet , Unit Test

खण्ड 9.1

विकासात्मक क्षेत्रें से पाठ्यचर्या के क्षेत्रें तक

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि फाउंडेशनल स्टेज पर पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को विकासात्मक क्षेत्रों यथा शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा और साक्षरता, सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक तथा सकारात्मक सीखने की आदतों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। वहीं प्रिपेरेटरी स्टेज पर पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को पाठ्यचर्या के क्षेत्रों यथा भाषाएं, गणित, हमारे आस–पास की दुनियाँ, कलाएँ, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा के रूप में संगठित किया जायेगा।

क) **भाषाएँ** :– बच्चे प्रिपेरेटरी स्टेज में पहले वर्ष में L1 (मातृभाषा/स्थानीय भाषा/घर की भाषा) में बुनियादी साक्षरता हासिल करेंगे व प्रिपेरेटरी स्टेज के अंत तक L2 (द्वितीय भाषा) में साक्षरता प्राप्त करेंगे। प्रिपेरेटरी स्तर के अंत तक अपेक्षित भाषाओं में स्वतंत्र रूप से पढ़ने व लिखने की क्षमताओं को विकसित करने का लक्ष्य होगा।

ख) **गणित** :– प्रिपेरेटरी स्टेज में पहले वर्ष के अंत तक बच्चों से बुनियादी संख्या ज्ञान प्राप्त कर लेने की अपेक्षा की जायेगी।

ग) **हमारे आसपास की दुनिया** :– प्रिपेरेटरी स्टेज में बच्चे फाउंडेशनल स्टेज के संज्ञानात्मक क्षेत्र का विस्तार करेंगे। वे अपने आसपास के प्राकृतिक एवं मानवीय वातावरण के साथ व्यापकता और गहराई से जुड़ेंगे। वे परिकल्पना बनाने और सत्यापित करने के लिए अवलोकन, आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण से अपने कौशलों को और विकसित करेंगे। वे अपने आसपास की मानवीय दुनिया की सामाजिक– सांस्कृतिक समझ भी प्राप्त करेंगे।

घ) **कला** :– फाउंडेशनल स्टेज पर जहाँ कला स्वाभाविक रूप से अधिक स्वतंत्र एवं खोजपूर्ण है वहीं प्रिपरेटरी स्टेज पर बच्चे कला के विभिन्न स्वरूपों से सम्बन्धित विशिष्ट कौशलों को ग्रहण करेंगे जो इन्हें अधिक विस्तार से अभिव्यक्त करने के अवसर देंगे।

ङ) **शारीरिक शिक्षा** :– जहां फाउंडेशनल स्टेज पर खोजपूर्ण और मुक्त खेल पर बल दिया जाता है वहीं प्रिपेरेटरी स्टेज में खेलों के परिचय और शारीरिक गतिविधि में अधिक औपचारिक भागीदारी पर बल दिया जायेगा।

च) **व्यावसायिक शिक्षा** :– फाउंडेशनल स्टेज में व्यावसायिक शिक्षा को "सेवा" के रूप में समझा गया है। इस स्तर पर सेवा से अभिप्राय समुदाय के साथ सुखद सम्बन्ध बनाने के साथ–साथ समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने हेतु तैयार करना है। वहीं प्रिपरेटरी स्टेज में सेवा को और अधिक विस्तार दिये जाने की अपेक्षा की गयी है ताकि बच्चे उत्पादक कार्य में भाग ले सकें।

छ) **सामाजिक, भावनात्मक, नैतिकता और सकारात्मक सीखने की आदतों का निर्माण** :– पूर्व बाल्यावस्था के बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं एवं फाउंडेशनल स्टेज पर पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक, भावनात्मक, नैतिकता और सकारात्मक सीखने की आदतों का निर्माण किये जाने पर विशेष बल दिया गया है। प्रिपरेटरी स्तर पर विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करते हुए इसे आगे बढ़ाया जाना है।

खण्ड 9.2

विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरन्तरता और परिवर्तन

- इसी प्रकार से विषयवस्तु के संदर्भ में प्रिपरेटरी स्टेज में बच्चे केवल मूर्त अनुभवों के स्थान पर अधिक सारगर्भित विषयवस्तुओं का उपयोग करने के लिए तैयार होते हैं। इस स्तर पर पाठ्यपुस्तकें और कार्य पुस्तिकायें सीखने को व्यवस्थित करने में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं। विषयवस्तु समझ का विस्तार भी कर सकती है लेकिन इसे बच्चों के अनुभवों के साथ पूर्ण रूप से जोड़े जाने की आवश्यकता है।
- कक्षा संचालन और सीखने–सिखाने की प्रकिया में बच्चों को अपने स्वयं के अन्वेषण और जिज्ञासा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया जारी रखने की आवश्यकता होगी लेकिन प्रिपरेटरी स्टेज स्तर में यह और अधिक औपचारिक कक्षा के वातावरण में प्रवेश करेगी और सीखने के अनुभव समूह आधारित होंगे। इस अवस्था में बच्चों से अधिक स्वनिर्देशित कार्य करने की अपेक्षा की जा सकती है। कौशलों को मजबूत और गहन करने के लिए अधिक दोहराव और अभ्यास की आवश्यकता होगी। शिक्षार्थी केन्द्रित दृष्टिकोण को यहां भी जारी रखना महत्वपूर्ण है।
- अन्ततः फाउण्डेशनल स्टेज से प्रिपरेटरी स्टेज तक के जुड़ाव हेतु आकलन के तरीकों में भी परिवर्तन अपेक्षित है। इस स्टेज में अधिक स्पष्ट आकलन कार्यों की शुरूआत की जा सकती है। हालांकि आकलन को कम महत्व का रखा जायेगा। वर्कशीट के अलावा बच्चों को लिखित आकलन कार्य दिये जा सकते हैं जिन्हें निर्धारित समयावधि में पूरा करने की आवश्यकता होगी।

अध्याय-10

एक सहयोगी पारिस्थितिकी (Ecosystem) तंत्र का निर्माण

राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की मुख्य परिवर्तनकारी शक्ति में एक है। प्रारम्भिक अवस्था में राज्य पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के स्तर पर कई काम करने होंगें। इन सब के लिए एक सहयोगी माहौल की नितान्त आवश्यकता होगी। इसे संभव बनाने के लिए इस अध्याय में अध्यापकों, अधिकारियों, अभिभावकों और समुदाय की भूमिका पर चर्चा की गई है।

खण्ड 10.1

शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना

शिक्षक ही बच्चों के भविष्य को ढालते हैं। शिक्षक के माध्यम से ही बच्चों में ज्ञान, सहानुभूति, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य, जीवन कौशल और सामाजिक ज़िम्मेदारियों का विकास होता है। अतः एक शिक्षक जोश से भरा, प्रेरित करने वाला, शिक्षणशास्त्र में निपुण और विद्वान होना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों में देखभाल करने, ऊर्जा, मेहनत, धैर्य, सृजनात्मक और रूचिकर तरीके से काम करने जैसे विशिष्ट गुण होने चाहिए ताकि वे नन्हें विद्यार्थियों के साथ अध्यापन कर सकें।

10.1.1 शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाने वाला वातावरण सृजित करना

एक अच्छे स्कूल की कार्य संस्कृति परस्पर विश्वास और सम्मान पर टिकी होती है जो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के साथ–साथ परस्पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करती हो। यह तभी संभव होगा जब वहाँ का वातावरण खुला, रचनात्मक, संवेदनशील, सहयोग की भावना, और समावेशी संस्कृति वाला होगा। फाउण्डेशनल स्टेज पर बच्चों के साथ कार्य करने वाले शिक्षक देखभाल करने वाले, ऊर्जा, धैर्य और विनोद के साथ सकारात्मक व सृजनात्मक वातावरण निर्मित करने वाले तथा विशेष गुणशील होने चाहिए। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि शिक्षकों से कोई भी गैर शिक्षण कार्य न कराया जाए, ताकि वे पूर्ण मनोयोग और क्षमता से बच्चों को सिखाने का काम कर सकें। शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध करायी जानी चाहिए और स्थानीय संदर्भ की शिक्षापयोगी सामग्री विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

10.1.2 सहायक सुविधाएं और काम का वातावरण

स्वच्छ पेयजल, पानी वाला सुविधायुक्त शौचालय और हाथ धोने की मूलभूत सुविधाओं के साथ विद्यालयों में समुचित व सुरक्षित भवन तथा अन्य सुविधा सहित सीखने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए। फाउण्डेशनल स्टेज पर प्रभावी ढंग से पढ़ाने व सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए कक्षा–कक्ष एवं उससे बाहर गतिविधियों के आयोजन के लिए पर्याप्त संसाधन जैसे–LTM, तकनीकी संसाधन, बाल साहित्य, कला एवं शिल्प पर आधारित खिलौने आदि की आवश्यकता होती है।

10.1.3 सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा

फाउण्डेशनल स्टेज पर योग्य शिक्षकों की आपूर्ति के लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (NCTE) के मानकों पर आवश्यकतानुसार शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु चार वर्षीय ITEP (Integrated Teacher Education Programme) कोर्स तैयार किया जाना चाहिए, जिसके अन्तर्गत फाउण्डेशनल स्टेज के लिए बालवाटिका तथा कक्षा 1 व 2 के स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए समुचित अभ्यास के अवसर सुनिश्चित किये जाने चाहिए। शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) को सभी स्तरों पर शिक्षक भर्ती प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाया जाना आवश्यक है तथा लिखित परीक्षा के साथ–साथ साक्षात्कार और कक्षा में पढ़ाने का प्रदर्शन भी इस प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए। उत्तराखण्ड राज्य द्वारा चलाये जा रहे डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में फाउण्डेशनल स्टेज पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समझ पर आधारित प्रश्नों (बाल मनोविज्ञान एवं आयु वर्ग अनुरूप व्यावहारिक ज्ञान) को भी समाहित किया जाय। जिससे 3 से 8 वर्ष के बच्चों के प्रति भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति को परखा जा सके। फाउण्डेशनल स्टेज के बालवाटिका स्तर तक के शिक्षकों की अहम भूमिका को देखते हुए उन्हें 'Mother Teacher' नाम से सम्बोधित किया जा सकता है। सेवापूर्व शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जहाँ नवाचारी शिक्षणशास्त्र के साथ बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान, बहुस्तरीय शिक्षण और मूल्यांकन, CWSN शिक्षण, आधुनिक तकनीकी का प्रयोग और अधिगम केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया जाता हो।

10.1.4 सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा, मेंटरिंग और सहयोग

विद्यालयों के वातावरण और संस्कृति में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों की क्षमताओं को अधिकतम स्तर तक ले जाने की आवश्यकता होती है, जिस हेतु शिक्षकों को सतत् पेशेवर विकास के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। बुनियादी स्तर के शिक्षकों के कैडर को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय–01 के बिन्दु संख्या 1.7 में कहा गया है 'ईसीसीई शिक्षकों के शुरूआती कैडर को तैयार करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों/शिक्षकों को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित पाठ्यक्रम/शिक्षण शास्त्रीय फ्रेमवर्क के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से प्रशिक्षण दिया जायेगा। 10+2 और उससे अधिक योग्यता वाले आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों/शिक्षकों को ई.सी.सी.ई. के 06 माह का प्रमाणपत्र कार्यक्रम करवाया जायेगा और कम शैक्षणिक योग्यता रखने वाले को एक वर्ष का डिप्लोमा कार्यक्रम करवाया जायेगा जिसमें ई.सी.सी.ई. के अन्य प्रासंगिक पहलुओं को भी शामिल किया जायेगा। इन कार्यक्रमों को डिजिटल/दूरस्थ माध्यम अर्थात् डीटीएच चैनलों के साथ–साथ स्मार्ट फोन के द्वारा भी चलाया जा सकता है, जिससे शिक्षकों को अपने वर्तमान कार्य में न्यूनतम व्यवधान के साथ ई.सी.सी.ई. योग्यता प्राप्त करने में सहूलियत मिल सके। आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों/शिक्षकों के ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षण को शिक्षा विभाग के संकुल संसाधन केन्द्र द्वारा मेंटर किया जाएगा और निरंतर मूल्यांकन के लिए कम से कम एक मासिक कक्षा भी चलाई जाएगी। फाउण्डेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर में कार्यरत शिक्षकों को बच्चों के समग्र विकास के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण एवं समृद्ध वातावरण प्रदान करना होगा। इस वातावरण के निर्माण के लिए सहायक सामग्री विकसित करने, क्षमता संवर्द्धन सत्र आयोजित करने, कार्यस्थल का निरीक्षण करने तथा गुणवत्ता की निगरानी व देखभाल का कार्य एस.सी.ई.आर.टी., डायट, बी.आर.सी., सी. आर.सी. द्वारा किया जायेगा और समय–समय पर उनके द्वारा शिक्षकों एवं स्कूलों को अकादमिक मेंटरिंग एवं अकादमिक सहयोग प्रदान किया जाएगा जिससे शिक्षण संस्थान यह सुनिश्चित करेंगे कि शिक्षक को पेशेवर/कौशल विकास के अवसर सदैव मिलते रहें।

शिक्षकों के लिए पेशेवर विकास –उदाहरणात्मक घटक

तालिका 10.1 क

पेशेवर विकास के घटक	
वैश्विक अनुसंधान	• मस्तिष्क विकास • विकासात्मक अवस्थाएं, विकासात्मक पड़ाव • बच्चे कैसे सीखते हैं, • परिवारों और समुदाय को समझना • स्कूल में सीखने पर समझ
विषयवस्तु की समझ	• विकास के सभी पक्ष • प्रारम्भिक भाषा व साक्षरता एवं संख्या ज्ञान
पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएं , सीखने के प्रतिफल	• पाठ्यचर्या के उद्देश्य को समझना • शिक्षा के लक्ष्य और तर्क तथा विकासात्मक क्षेत्रों के साथ सम्बन्ध • दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ • कक्षा –कक्ष में प्रयोग
शिक्षाशास्त्र	• बच्चों को सुरक्षा, आराम, सम्मान और प्रोत्साहन महसूस कराना • खिलौनें, कहानियों, कला, संगीत एवं बातचीत का उपयोग • कक्षा में पढ़ना–लिखना
विषयवस्तु एवं सामग्री	• उपयुक्त विषयवस्तु की पहचान करना– चयन के लिए तर्क • उपयुक्त विषयवस्तु का चुनाव • स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए उपयुक्त सामग्री बनाना • तकनीकी का प्रयोग करना
आकलन	• आकलन के सिद्धान्त • आकलन के लिए उपयुक्त टूल व तकनीकों का प्रयोग • शिक्षण एवं सीखने को बेहतर बनाने के लिए आंकड़ों का प्रयोग करना।

जोखिम में बच्चे	• बच्चे के विकास में विलम्ब और डिसेबिलिटी की पहचान • उपयुक्त कक्षा –कक्षीय प्रक्रियाएँ • विशेषज्ञों के साथ काम
योजना	• सीखने के सभी क्षेत्रों में बच्चों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण योजना पर कार्य करना
अभिभावकों और समुदाय के साथ काम करना	• सकारात्मक सम्बन्ध बनाना • स्कूल में अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी
शिक्षण अधिगम समुदाय का निर्माण	• शिक्षकों के पारस्परिक सम्पर्क हेतु मंच– फेस टू फेस, तकनीकी का प्रयोग
शोध एवं अभिलेखीकरण	• शोध साहित्य का प्रयोग • केस स्टडी लिखना • चाइल्ड प्रोफाइल

पेशेवर विकास के मोड्स	
विद्यालय के भीतर प्रकियाएँ	• योजना बनाना, साप्ताहिक बातचीत, साझा करने की बैठकें, एक–दूसरे की कक्षा का अवलोकन और फीडबैक
विद्यालय में संबलन (scaffolding) और सहयोग	• सी.आर.सी., बी.आर.सी., डायट और अन्य सहायक संस्थाएँ स्कूलों में नियमित तौर पर विजिट कर सकते हैं। इन विजिट के दौरान वे शिक्षकों का अवलोकन कर सकते हैं, उनके साथ विचार–विमर्श कर सकते हैं, शिक्षण विधि को प्रदर्शित कर सकते हैं, सामग्री विकास में शिक्षकों के साथ काम कर सकते हैं और आगामी कार्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में उन्हें जानकारी दे सकते हैं।
औपचारिक कार्यशालाएँ	• ये सीखने और विकास के सभी क्षेत्रों पर आमने–सामने (फेस–टु–फेस) किए गए सत्र हैं। शिक्षकों के बड़े समूहों के लिए 3 दिवसीय आवासीय कार्यशालाओं से लेकर शिक्षकों के छोटे समूहों के लिए खास शीर्षकों पर आधे दिन के सत्र तक ये कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती है।
सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशालाएँ	• शुरूआती वर्षों में शिक्षा के लिए बहुत सारी शिक्षण अधिगम सामग्री की ज़रूरत होती है। अगर शिक्षकों के समूह (मसलन किसी बड़े विद्यालय के भीतर या संकुल या विकासखण्ड स्तर पर) साथ मिलकर ये सामग्री विकसित कर सकें तो यह उन सबके लिए सीखने का बेहतरीन मौका होगा।
शिक्षक मंच	• फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर के शिक्षकों के लिए सामूहिक क्रियाकलाप पर बातचीत के लिए मासिक बैठकें कर सकते हैं जिससे शिक्षक किसी खास विषय के लिए शिक्षण की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं और उस विषय पर शिक्षण योजना और संसाधन बना कर उसे समूह के सदस्यों के साथ साझा किया जा सकता है। इससे पाठ योजना तैयारी का भार घटेगा और शिक्षक इन संसाधनों को अपने–अपने विद्यार्थियों के अनुकूल उपयोग कर सकेंगे।
सोशल मीडिया समूह	• सोशल मीडिया के मंचों पर ऐसे समूहों को खुद शिक्षकों द्वारा चलाया जा सकता है जिसमें वे अनुभव व शिक्षण संसाधन को साझा कर सकते हैं। एक तरह से सोचने वाले शिक्षकों या किसी खास विषय के शिक्षकों के बीच विचार–विमर्श में मदद कर इसे बहुउपयोगी बना सके।

हैंडबुक	• ऐसी हैंडबुक्स तैयार की जा सकती हैं, जो शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल हासिल करने की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शित करें। ऐसी अतिरिक्त सामग्री के सन्दर्भ इन हैंडबुक्स को और मूल्यवान बना सकते हैं, जिन्हें शिक्षक पढ़ सकें/जिन तक उनकी पहुँच हो सके।
DIKSHA का इस्तेमाल	• शुरूआती वर्षों की शिक्षा के लिए DIKSHA पर उपलब्ध सामग्री का इस्तेमाल किसी एक शिक्षक या शिक्षकों के समूह द्वारा किया जा सकता है।
मेंटर शिक्षक	• हर संकुल के लिए अनुभवी और समर्पित शिक्षक चिह्नित किए जा सकते हैं। वे दूसरे विद्यालयों में विजिट कर सकते हैं और दूसरे शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। सहयोग चाहने वाले शिक्षक इन मेंटर शिक्षकों के पास स्वतंत्र रूप से भी पहुँच सकते हैं।
वार्षिक शिक्षक संगोष्ठियाँ	• बड़े स्तर पर कम समयावधि वाले कार्यक्रम, जो खास विषयों पर केन्द्रित हों, जिनमें शिक्षक अपने विचारों/प्रक्रियाओं/सामग्री की प्रस्तुति कर सकते हैं और विशेषज्ञ वक्ताओं को सुन सकते हैं। शिक्षकों को शिक्षण सम्बन्धी नए और अलग विचारों से शिक्षण के शुरूआती वर्षों में परिचित कराया जा सकता है।

10.1.5 सतत् पेशेवर विकास (Continuous Professional Development) की सम्भावनाएँ

स्कूली शिक्षा के बुनियादी स्तर के लिए सुयोग्य शिक्षकों की आवश्यकता होगी। शिक्षकों को विभिन्न अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि वे अपने अनुभवों, प्रैक्टिसेस और विचारों को एक दूसरे के साथ साझा कर अपने ज्ञान को सुदृढ़ कर सकें। शिक्षकों को शोध करने और अल्प समयावधि के सर्टिफिकेट कोर्स करने के अवसर दिए जाने चाहिए जिससे वे पेशेवर ज्ञान को विकसित और साझा कर सकें। शिक्षकों को सीखने की विभिन्न विधियों में से चयन करने के अवसर दिए जाने चाहिए। शिक्षक प्रत्येक वर्ष में अपने चयनित माध्यमों से CPD में कम से कम 50 घंटों के कार्यक्रमों में अवश्य भाग लें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में सेवा शर्तों में समानता की बात करती है। शिक्षकों का वेतन और सेवा शर्तें उनकी सामाजिक और पेशेवर ज़िम्मेदारियों के अनुरूप होनी चाहिए। यह प्रतिभाशाली शिक्षकों को शिक्षण के पेशे में बनाये रखने और आकर्षित करने की दृष्टि से तय की जानी चाहिए। बुनियादी से माध्यमिक स्तर तक सभी शिक्षकों को उनके कार्य की आवश्यकताओं के अनुसार मानक सेवा शर्तों और समान वेतन ढांचे पर भर्ती किया जाना उचित होगा। सभी शिक्षकों को प्रगति करने (वेतन, पदोन्नति, आदि के संदर्भ में) के अवसर मिलने चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की उचित बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु सेवारत शिक्षकों को सतत पेशेवर विकास (CPD) के अन्तर्गत सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान किए जाने चाहिए।

10.1.6 शिक्षक की स्वायत्तता और जवाबदेही

विद्यालय में पाठ्यचर्या के अनुसार आयोजित होने वाली क्रियाओं की जवाबदेही के लिए शिक्षक ही उत्तरदायी होंगे। इस हेतु शिक्षक का सशक्तिकरण और उसको पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए। सीखने की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए सक्षम और योग्य शिक्षक महत्वपूर्ण है। विद्यालयों के भीतर सहयोगी माहौल और पारिस्थितिकी तंत्र शिक्षक के प्रभाव को बढ़ा देता है। शिक्षकों को अपने बच्चे की आवश्यकता एवं परिवेश के अनुसार पाठ योजना बनाने, उसे सुनियोजित करने, परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षण विधियों एवं गतिविधियों का चयन करने व आकलन करने के लिए पूर्ण स्वायत्ता दी जानी चाहिए। यह सब फाउण्डेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर के लिए निर्धारित पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्र पद्धतियों एवं सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

खण्ड 10.2

सीखने का समुचित वातावरण सुनिश्चित करना

10.2.1 योजनाबद्ध कल्पना (Design Imagination)

फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर पर सीखने को सहज बनाने के लिए सुरक्षित, रूचिकर, आरामदेह और आनन्ददायक वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए। ऐसे स्थानों की योजना बनाने और क्रियान्वयन के लिए अत्यधिक रचनात्मक कल्पना की आवश्यकता होगी और यह लागत–अनुकूलन, संचालन सम्भावना और क्रियान्वयन क्षमताओं के व्यावहारिक पहलुओं पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए। यह रचनात्मक कल्पना केवल फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर संस्थान तक ही सीमित न रहे अपितु इसमें उनके आसपास के वातावरण को भी शामिल करना होगा।

10.2.2 बुनियादी ढाँचा (Infrastructure) और सीखने के संसाधन

समुचित और ढाँचागत सुविधाएं एवं संसाधन सीखने के वातावरण पर गहरा प्रभाव डालते हैं। अभिभावक और समुदाय की नजर में बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता, पूर्णता और रखरखाव एक अच्छे विद्यालय और बहुत अच्छे विद्यालय के बीच का एक महत्वपूर्ण अंतर है। बेहतर तरीके से सीखने के लिए प्रत्येक बच्चे को समुचित व शैक्षणिक उद्देश्यों से परिपूर्ण सुविधायुक्त बुनियादी ढाँचा एवं शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। सीखने के माहौल को बनाने के लिए एक उच्च गुणवत्ता वाला कार्यक्रम जो बच्चों की जिज्ञासा को संतुष्ट करने वाला, परिवेश को आजादी देने वाला, अन्तःक्रिया के अवसर उपलब्ध कराने वाला और उनका समग्र विकास करने वाला होना चाहिए।

बच्चे का विकास केवल शिक्षक और उसके बीच की अन्तःक्रिया पर निर्भर नहीं करता वरन् उसके संवेदी अनुभवों पर भी निर्भर करता है। अतः प्रत्येक दिन बच्चे को शिक्षण सामग्री से जुड़ने, बाहर खेलने, एक दूसरे से अन्तःक्रिया करने आदि के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

निर्धारित मानकों के अनुसार सुरक्षित, शैक्षणिक सामग्री से सुसज्जित और पर्याप्त भौतिक बुनियादी ढांचा उपलब्ध होना चाहिए। भवनों और उपकरणों की व्यवस्था सुरक्षा मानकों के अनुरूप होनी चाहिए। बुनियादी ढाँचे के विकास, रखरखाव और शिक्षण–अधिगम सामग्री के लिए पर्याप्त बजट और उसका समुचित उपयोग होना चाहिए। और निम्नांकित बातों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए–

- साफ, स्वच्छ, सुरक्षित, निरन्तर जलापूर्ति वाला शौचालय और शुद्ध पेयजल।
- सुरक्षित और पौष्टिक भोजन (प्रतिबद्ध मानदंडों के अनुसार) और सभी बच्चों के लिए स्वास्थ्य सहायता।
- साफ हवादार और पर्याप्त रोशनी वाली कक्षाएँ।
- सीखने का स्थान खाना बनाने वाले अन्य स्थानों से अलग हो, जिससे बच्चे की सुरक्षा और सीखने की प्रकिया में कोई व्यवधान न पहुंचे।
- कक्षा 1 और 2 के लिए अलग–अलग कक्षाएँ।
- सुरक्षित बाहरी स्थान और बच्चों के खेलने के लिए छोटे बगीचे।
- इमारतों और दीवारों को खुशनुमा रंगों से रंगा जाय (बच्चे इस पेंटिंग में भाग ले सकते हैं)।
- उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण संसाधन, सामग्री और किताबें हो।
- उपयुक्त सुरक्षा के लिए चीजें अपनी नियत जगहों पर व्यवस्थित तरीके से रखी जाय जैसे–सफाई सामग्री या चाकू, कैंची जैसी वस्तुएँ बंद जगहों में रखी जायें।
- सीखने के कोने और उपयुक्त सामग्री का प्रदर्शन बच्चों की आंखों के स्तर व पहुंच में हो।
- विद्यालय/केन्द्र तथा उसके आसपास साफ–सफाई व स्वच्छता बनाए रखना।

10.2.3 विद्यार्थी शिक्षक अनुपात (PTR)

विद्यार्थी शिक्षक अनुपात (Pupil–Teacher Ratio) को केवल एक संख्या के रूप में नहीं बल्कि एक ऐसे उपाय के रूप में देखना महत्वपूर्ण है, जो बच्चे को सीखने के बेहतर परिणामों की ओर ले जाएगा। अनुकूल PTR वातावरण विद्यालयी प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से लागू करने में सहायता करता है।

फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर के सभी बच्चे 3 वर्ष से 8 वर्ष की आयुवर्ग के होते हैं। इस अवस्था में उन्हें शिक्षक द्वारा व्यक्तिगत देखभाल की अधिक आवश्यकता होती है अतः इस स्तर पर विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात (PTR) का निर्धारण बच्चों की आयु, आवश्यकता एवं संख्या को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। फाउंडेशनल स्टेज पर सभी बच्चों के लिए पर्याप्त शिक्षक होने चाहिए। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात को बनाए रखने के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता एवं योग्यता के साथ कोई समझौता नहीं होना चाहिए। सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से ऐसे पिछड़े क्षेत्र जहाँ सीखने का वातावरण अनुकूल न हो वहां PTR अनुपात शिक्षण के सर्वाधिक अनुकूल होना चाहिए।

10.2.4 प्रवेश की आयु

RTE 2009, राष्ट्रीय ECCE नीति 2013 और NEP 2020 जैसे नीतिगत दस्तावेजों में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बच्चों को 03 से 06 वर्ष की आयु में प्री–स्कूल या आंगनवाड़ी में प्रवेश दिया जाना चाहिए। इसी के पश्चात वे प्राथमिक विद्यालयों के ग्रेड 1 में प्रवेश करेंगे। रा0शि0नी0– 2020 के अनुसार बुनियादी स्तर 03 से 08 वय वर्ग के लिए परिभाषित किया गया है, जिसके अन्तर्गत प्री–स्कूल से लेकर कक्षा 2 तक का शिक्षण कार्य सम्पन्न कराया जायेगा। प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क के विकास की तीव्र गति और बच्चे के समग्र विकास को देखते हुए, कुछ महीनों का अंतर भी महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम इस तरह से तैयार किया गया हैं कि 06 वर्ष की आयु का बच्चा कक्षा–01 में अपेक्षित दक्षताएं हासिल कर सकेगा। इस प्रकार कक्षा–01 में प्रवेश की आयु 6 वर्ष होनी चाहिए जिससे बच्चे के आगे की सीखने की प्रक्रिया में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

खण्ड 10.3

अकादमिक और प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका

10.3.1 प्रधानाध्यापक

प्रधानाध्यापक विद्यालय का नेतृत्वकर्ता होता है। उसकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्वायत्तता प्रदान करने और जवाबदेही सुनिश्चित करने वाली प्रक्रियाओं के माध्यम से विद्यालय में सीखने–सिखाने की एक सशक्त संस्कृति का निर्माण करना है। प्रधानाध्यापकों द्वारा शिक्षकों को हर तरह से सहयोग प्रदान करना चाहिए, जैसे–कक्षाओं की योजना बनाने में, उपयुक्त संसाधनों तक शिक्षकों की पहुंच प्रदान करना, कक्षाओं का अवलोकन करना, रचनात्मक फीडबैक देना और एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना, जहां शिक्षक बच्चों के सीखने और शिक्षण कार्य को सहज रूप से कर सके।

बच्चों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाने तथा उनके व्यवहार और समस्याओं को समझने की दृष्टि से यह अच्छा होगा कि प्रधानाध्यापक समय–समय पर बच्चों के साथ अन्तःक्रिया करता रहे। छोटे बच्चों की नियमित उपस्थिति और अभिभावक / परिवार को बच्चे के सीखने तथा विकास के स्तर को समझाने के लिए प्रधानाध्यापक को अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के सम्पर्क में रहना चाहिए और अन्य शिक्षकों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करना चाहिए, इसके विस्तार से बच्चे के सन्दर्भ में जानकारी जुटायी जा सकती है, जो शिक्षण योजना बनाने में कारगर होगी। ऐसा सम्पर्क एक ओर बच्चे के मजबूत पक्ष को प्रोत्साहित करने का अवसर देता है वहीं दूसरी ओर बच्चे के विकास में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में भी सहायक होता है।

10.3.2 अकादमिक अधिकारी

विद्यालय अनुश्रवण, कक्षा अवलोकन और शिक्षकों को रचनात्मक फीडबैक देने में संकुल एवं विकासखण्ड स्तर के अधिकारी सहयोगकर्ता के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। उन्हें नियमित तौर पर कक्षाओं का अवलोकन करना चाहिए और शिक्षकों को हर समय प्रेरित करना चाहिए कि वे बेहतर शिक्षण विधियों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल करें।

संकुल स्तर की बैठकों में कक्षा प्रक्रियाओं पर चर्चा होनी चाहिए और कुछ महीनों में एक बैठक विशेष रूप से फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर पर कक्षा के अनुभवों पर चर्चा करने के लिए आयोजित की जा सकती है। अकादमिक अधिकारी को समुदाय के साथ बच्चों की नियमित उपस्थिति और विद्यालय में संचालित गतिविधियों को लेकर भी चर्चा करनी चाहिए। विद्यालय में की जाने वाली शैक्षणिक पहल जैसे सीखने का कोना, बाल साहित्य, खेल आधारित गतिविधि तथा संसाधनों की व्यवस्था आदि के संचालन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

DIETs में अकादमिक अधिकारियों / सहयोगकर्ताओं को स्थानीय भाषाओं और फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर के सन्दर्भ में बच्चों और शिक्षकों के लिए आकर्षक, रोचक, आनंदमय और सीखने की नवीन सामग्री विकसित करने पर बल देना चाहिए। इस सामग्री का उपयोग करने के लिए एक समग्र शिक्षक सहयोग योजना बनाई जा सकती है। प्रत्येक डायट को अपने जनपद के प्रत्येक ब्लॉक में फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर पर शिक्षकों को सहयोग देने के लिए विशेषज्ञ अकादमिक विद्वानों का एक समूह भी विकसित करना चाहिए। डायट द्वारा फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर के शिक्षकों के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण साहित्य का निर्माण एवं प्रशिक्षण तथा कार्यशालाओं को आयोजन किया जाना चाहिए। SCERT में अकादमिक अधिकारियों / सहयोगकर्ता का ध्यान फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर के लिए ऐसी पाठ्यपुस्तकें तथा वर्कबुक को विकसित करने पर होना चाहिए जो बदलती परिस्थितियों के अनुरूप हो।

10.3.3 प्रशासनिक अधिकारी / सहयोगकर्ता

पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन हेतु विद्यालयों / केन्द्रों में विद्यार्थी शिक्षा अनुपात के अनुरूप शिक्षकों तथा उनकी देखभाल करने

वालों की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। साथ ही शिक्षण अधिगम सामग्री जैसे खेल–खिलौने, शिक्षण सामग्री, किताबें, अभ्यास पुस्तिकायें तथा विद्यालय के भौतिक संसाधनों को भी समय से उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है। शिक्षण अधिगम सामग्री तथा शिक्षकों के सतत पेशेवर विकास के लिए समुचित बजट का प्रबन्धन भी महत्वपूर्ण है।

फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर पर पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, शिक्षण अधिगम संसाधनों (जैसे, खेल सामग्री, पुस्तकें, गतिविधि पुस्तकें) की आपूर्ति और वितरण को समय से उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या आवश्यकताओं और शिक्षक पेशेवर विकास (Professional Development) के लिए नियमित निगरानी और प्रक्रिया की समीक्षा के साथ समुचित बजट का प्रावधान किया जाना चाहिए।

सावधानीपूर्वक नियोजित और सोच–समझकर एकत्र किया गया डाटा सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (SEDGs) तक पहुँच सुनिश्चित करने में मदद करेगा। विशेष रूप से 03–08 वर्ष की आयु के बच्चों की जनसंख्या का सटीक अनुमान होना आवश्यक है, जिससे उचित योजना बनाई जा सके। इसके प्रोजेक्शन और ट्रैकिंग की आवश्यकता होगी। जहां तक सम्भव हो इस कार्य के लिए तकनीकी का प्रयोग किया जाय जिससे सटीक डाटा प्राप्त हो सके।

फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर में शिक्षा की गुणवत्ता के सूचक–प्रतिफलों की उपलब्धि, विशेष रूप से ग्रेड 03 तक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान से संबंधित प्रतिफलों की उपलब्धि होनी चाहिए। NAS तथा SLAS के माध्यम से इनकी निगरानी सम्भव है। जनसेवा संदेशों और मीडिया अभियानों के माध्यम से बड़े स्तर पर प्रचार प्रसार, अभिभावको से सीधी बातचीत और बड़े पैमाने पर उन सहज विधियों और सामग्रियों को प्रसारित करने की योजना बनानी चाहिए जिनसे अभिभावकों को अपने बच्चों की शुरूआती शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिले ।

खण्ड 10.4

अभिभावकों और समुदाय की भूमिका

10.4.1 अभिभावक और परिवार

बच्चे के सीखने और विकास में अभिभावक और परिवार विद्यालय के सह–भागीदार हैं। शुरुआती वर्षों में अभिभावक के लिए यह समझना और भी महत्वपूर्ण है कि विद्यालय में क्या होता है? साथ ही शिक्षकों को बच्चे के घर के वातावरण की जानकारी होनी चाहिए, जिससे वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अपनी शिक्षण योजना को उनके अनुकूल बना सकेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चों की व्यक्तिगत समस्याओं का भी समाधान कर सकेगा। अभिभावक और समुदाय की विद्यालय के साथ भागीदारी को और भी अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि समय–समय पर विद्यालय में संचालित हो रही गतिविधियों, बच्चे की सीखने की प्रक्रिया, उसके मजबूत पक्षों एवं आ रही चुनौतियों पर बातचीत की जाए।

प्रारम्भिक वर्षों में समग्र विकास के लिए यह जरूरी है कि अभिभावकों द्वारा बच्चों को घर पर शैक्षणिक वातावरण देने, स्वास्थ्य और पोषण की आवश्यकताओं को पूरा करने, सीखने के विभिन्न क्षेत्रों में सहायता करने के लिए जागरूक व प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जैसे– विद्यालय के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भागीदारी और स्थानीय परिवेश में उपलब्ध सामग्रियों से बच्चों को परिचित करवाने। कुछ अभिभावक विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए अन्य अभिभावकों और विद्यालय के बीच कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर पारदर्शी संवाद सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी भी ले सकते है।

10.4.2 समुदाय

स्थानीय समुदाय को अभिभावक, परिवार, पड़ोसियों, युवा समूहों, समुदाय के नेताओं और स्थानीय सरकारी संस्थानों के रूप में परिभाषित किया गया है। समुदाय कई तरीकों से स्कूल में शामिल हो सकता है और उसका समर्थन कर सकता है। उदाहरण के लिए सभी शालागम्य विद्यार्थियों का नामांकन और नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना, शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करना व अपने अवलोकन के अनुभव साझा करना, सीखने की सामग्री, बच्चों के भोजन या अन्य सेवाओं के लिए सहायता व संसाधन प्रदान करना (जैसे, ग्राम पंचायत पानी का कनेक्शन प्रदान करने के लिए या अन्य आवश्यकताओं के लिए धन का प्रबन्ध कर सकती है)।

विद्यालय, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को स्कूल के साथ सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित करें और विद्यालय को समुदाय के अभिन्न अंग के रूप में संचालित किया जा सकता है।

अभिभावकों एवं समुदाय की भूमिका के कुछ उदाहरण–

1. ***प्रवेशोत्सव/शगुनोत्सव***
2. ***बाल मेला***
3. ***प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार या किसी निर्धारित तिथि को उस माह में जन्मे बच्चों का जन्मदिवस मनाना व अभिभावकों को आमंत्रित करना।***
4. ***बच्चों के जन्मदिवस पर अभिभावकों को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित करना।***
5. ***विशिष्ट दिवसों व त्योहारों पर अभिभावकों व समुदाय की विद्यालय कार्यक्रमों में भागीदारी।***
6. ***फाउंडेशनल स्टेज/बुनियादी स्तर पर करवायी जानी वाली खेल गतिविधियों व गतिविधि आधारित सामग्री के प्रदर्शन एवं संचालन में समुदाय व अभिभावक की भूमिका।***
7. ***गतिविधि कैलेण्डर के माध्यम से अभिभावकों को घर पर बच्चों के साथ कार्य करने के लिए दिशा निर्देश प्रदान करना।***
8. ***बच्चों की माताओं के लिए माह में एक बार ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जिसमें कि सभी माताएँ अपने से सम्बन्धित किसी***

कौशल या दक्षता का प्रदर्शन करेंगी, जैसे–नृत्य, गाना, कोई सामान बनाना, बुनाई, कढ़ाई, बाँस की टोकरी बनाना, अचार बनाना, पायदान बनाना, बचे कपड़ों से कठपुतली, गुड़िया बनाना आदि जिससे माताओं के कौशल का लाभ बच्चों को मिलेगा जिससे विद्यालय लाभान्वित होगा और समुदाय में सहयोग की भावना बढ़ेगी।

9. *बच्चों की माताओं को केन्द्र अथवा विद्यालय में करायी गयी गतिविधि दोहराने, कहानी सुनाने, घर में कामों में बच्चों से सहयोग लेने हेतु प्रेरित करना।*
10. *अभिभावक–शिक्षक संगोष्ठियों को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए।*

खण्ड 10.5

तकनीकी का लाभ

तकनीकी का उपयोग शिक्षण कार्य के अतिरिक्त समृद्ध और अनुकूल वातावरण निर्मित करने में किया जा सकता हैं। विशेषकर फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर में जहाँ पर 03 वर्ष से 08 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चे होते है, जब बच्चे गतिविधियों से थकने लगे या अरूचि दिखाने लगे तो ऐसे में तकनीकी के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को रोचक, ज्ञानवर्धक और आनन्दमय बनाया जा सकता है बच्चों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में निरंतरता बनाई जा सकती है।

उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में जहाँ अधिकतम पहाड़ी क्षेत्र है और भौगोलिक परिस्थितियां भी अनुकूल नहीं है, ऐसे दूरस्थ स्थानों में शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए तकनीकी सहायक प्रणाली महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सकती है।

10.5.1 क्षमता संवर्द्धन के लिए तकनीकी

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की समझ बढ़ाने के लिए डिजिटल पाठ्यक्रम, नवाचारी प्रयोग, शिक्षण की योजना, बाल साहित्य कई भारतीय भाषाओं सहित अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। जिन्हें विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाली भाषा के साथ स्थानीय संदर्भ में भी अधिक बेहतर बनाया जाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर में मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल देती है। उत्तराखण्ड राज्य की एक मुख्य विशेषता हैं उसकी विविध बोलियां जैसे– गढ़वाली, कुमाऊंनी, जौनसारी आदि के साथ, कहीं–कहीं अन्य राज्यों की भाषाओं व बोलियों का प्रभाव भी देखने को मिलता है। राज्य में इन बोलियों और भाषाओं की विविधता को देखते हुए यह आवश्यक है कि फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर से सम्बन्धित डिजिटल विषयवस्तु को स्थानीय भाषा में भी तैयार किया जाय। ऐसा डिजिटल पाठ्यक्रम आरम्भिक वर्षों में बच्चे की समझ को बढ़ाने में और शिक्षकों एवं अभिभावकों को बच्चों के स्तर के अनुरूप उनके साथ कार्य करने में सहायक सिद्ध होगा। शिक्षक और बच्चों के बीच शिक्षण अधिगम को सहज, सरल व रूचिपूर्ण बनाने के लिए उत्तराखण्ड राज्य की SCERT, DIET को स्थानीय बोलियों में डिजिटल सामग्री विकसित करनी चाहिए, जिन्हें DIKSHA जैसे मंचों पर भी अपलोड किया जा सकता हैं। इस तरह की विविध विषयवस्तु निर्मित करने के लिए NDEAR-National Digital Education Architecture (राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला) का प्रयोग किया जाना चाहिए। यदि सम्भव हो तो दीक्षा की तर्ज पर राज्य अपना भी एक APP तैयार कर सकता है जिसमें फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर से सम्बन्धित विविध प्रकार की विषयवस्तु स्थानीय भाषा / बोलियों के साथ–साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए, यह APP शिक्षकों को भी फाउंडेशनल स्टेज / बुनियादी स्तर पर आधारित विषयवस्तु बनाने व उसे APP में अपलोड करने का अवसर प्रदान करेगा। शिक्षक तकनीकी का उपयोग कर ऐसी डिजिटल सामग्री को सीखने–सिखाने की शैक्षिक प्रक्रिया में सम्मिलित कर सकता है।

10.5.2 डिजिटल अवस्थापन, मंच और उपकरण से लाभ उठाना

ऐसे विषयवस्तु निर्माताओं को जो डिजिटल सामग्री निर्मित करने में सक्षम और समर्पित हैं उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे वे ndear.gov.in (NDEAR) और विद्यादान vdn.diksha.gov.in की क्षमताओं का उपयोग करके बच्चों, शिक्षकों, माता–पिता और समुदाय के लिए विषयवस्तु निर्माण में अनवरत योगदान देते रहें।

QR कोडयुक्त पुस्तकों का प्रयोग प्रासंगिक विषयवस्तु तक आसान पहुँच के लिए किया जाना अत्यावश्यक है। इसके प्रयोग से विषयवस्तु को किसी भी समय अपडेट या संशोधित किया जा सकता है। व्यावहारिक और प्रभावी तकनीकी सक्षम उपकरण प्रशासनिक कामकाज को आसान बनाते हैं और शिक्षक का समय बचाते हैं। तकनीकी, अभिभावक–शिक्षक समुदायों को जोड़ने में भी सहयोगी होती है। बहुभाषिक स्थितियों में तकनीकी उपकरण शिक्षकों के सहयोगी हो सकते हैं। शिक्षक इनकी मदद से प्रत्येक बच्चे की जरूरत का ध्यान रख सकते हैं।

Artifical Intelligence (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का इस्तेमाल कुछ चुनौतियों का हल निकालने में किया जा सकता है। जैसे–अनुवाद के लिए (भाषिनी https://bhashini.gov.in/en/ और ULCA https://bhashini.gov.in/ulca) का इस्तेमाल किया जा सकता हैं। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों के द्वारा प्रासंगिक सामग्री खोजने के लिए भी तकनीकी मंच का प्रयोग किया जा सकता हैं।

10.5.3 अभिभावक और समुदाय के लिए तकनीकी

वर्तमान समय में तकनीकी का प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष और समाज की प्रत्येक इकाई में देखने को मिलता है। आज के समय में रिस्पोन्सिव पेरेंटिग (बच्चे की उचित देखभाल करने और बच्चे के साथ उपयुक्त संवाद करना) पेरेंटिग का एक अहम टूल माना जाता है। प्रसारण मीडिया जैसे–रेडियो, सामुदायिक रेडियो, टीवी, OTT (OVER–THE-TOP) मंचों के साथ–साथ IVR (Interactive voice response) और अन्य माध्यमों द्वारा अभिभावकों को रिस्पोन्सिव पेरेंटिंग के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। अभिभावक एवं समुदाय को Educational App के बारे में जानकारी प्रदान करना तथा बच्चों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

अनुलग्नक 1:
सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण

यहाँ हर दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण दिए गए हैं। ये फाउंडेशनल स्टेज के पाँच वर्षों में सीखने के trajectories हैं, जो सम्बन्धित दक्षता हासिल करने की तरफ़ आगे ले जाते हैं।

- *जैसे पाठ्यचर्या के उद्देश्य विकासात्मक हैं, उसी तरह दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल भी विकासात्मक हैं।*
- *इस चरण पर, हर आयु वर्ग के लिए, अधिगम के सभी प्रतिफल विकासात्मक trajectory होते हैं। ख़ास उम्र में हासिल किए जाने वाले उद्देश्यों की बजाय इन्हें एक सातत्य और trajectory के रूप में देखा जाना चाहिए।*
- *3 से 8 वर्ष की उम्र विकासात्मक होती है। अलग-अलग बच्चों में यह विकास अलग-अलग रफ़्तार से होता है। एक समय में सभी बच्चे समान उम्र-वार सीखने के प्रतिफल नहीं हासिल कर पाएंगे।*
- *नीचे दिया गया उम्र-वार वर्गीकरण निर्देशात्मक है और यह कक्षा में हर बच्चे के सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने में शिक्षकों की मदद करेगा।*
- *हर सीखने का प्रतिफल अवलोकनीय है, इनकी जाँच हो सकती है। सीखने के प्रतिफलों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षक, बच्चे की दक्षताओं का अवलोकन या जाँच कर पाएंगे।*
- *सीखने के प्रतिफलों को cumulative के रूप में समझा जाना चाहिए। पहले के उम्र समूहों में बच्चे द्वारा सीखे हुए को बाद के स्तरों पर भी दिखना जारी रहना चाहिए। उदाहरण के लिए अगर 4-5 वर्ष के लिए सीखने का प्रतिफल 'बिना बिखराए खाना' है तो यह 5-6 साल और उसके बाद भी जारी रहना चाहिए।*

नीचे के हिस्से में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को CG-1, CG-2, CG-3... और योग्यताएँ को C-1.1, C-2.1, C-3.1... की तरह लिखा गया है। सीखने के प्रतिफल, दक्षताओं के अनुसार हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सीखने के प्रतिफलों को एक निरन्तरता में देखा जाना चाहिए। नीचे दी गई तालिका में उन्हें रीडिंग ग्रिड में रखा गया है - खड़ी सूची में 1, 2, 3,... और आड़ी सूची में A, B, C,... केवल सन्दर्भ की आसानी के लिए रखा गया है। जैसे पाठक इस उदाहरण सूची के भीतर एक विशिष्ट सीखने के प्रतिफल को इंगित करने के लिए दक्षता C-2.1 के आगे सीखने का प्रतिफल D.1 का उल्लेख कर सकते हैं।

1.1.1 शारीरिक विकास (Physical Development)

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग़ रहता है। इसी स्तर पर बच्चे चपल गतिविधियों में शामिल होने के लिए अपनी सभी इन्द्रियों और पूरे शरीर का इस्तेमाल सीखते हैं। इसलिए यहाँ स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन करने, स्वच्छता सम्बन्धी आदतें विकसित करने, सुरक्षा के प्रति जागरूक होने, संवेदी ध्यान को बेहतर बनाने, कसरत करने और विभिन्न मांसपेशी समूहों को समन्वित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

CG-1: बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं

बच्चे, स्वस्थ भोजन की आदत और पोषण की समझ, दोनों विकसित करते हैं। खाने की विविधता का स्वाद विकसित करने के लिए शुरू में ही विभिन्न तरह के भोजन-समूहों से परिचय कराया जाना ज़रूरी है। स्वच्छता की कमी के कारण अक्सर स्वास्थ्य ख़राब होता है और बच्चे पोषक खाने से हासिल किया गया स्वास्थ्य लाभ खो देते हैं। इसलिए स्कूल के शुरुआती वर्षों में बेहतर स्वच्छता व्यवहार विकसित करना महत्त्वपूर्ण है। इस लिहाज़ से शुरुआती बचपन बहुत महत्त्वपूर्ण है, जब बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो रही होती है। चूँकि बच्चे, झुण्ड में स्कूल आते हैं, इसलिए स्कूल के लिहाज़ से कुछ बुनियादी स्वच्छता व्यवहार ज़रूरी हो जाते हैं।

चूँकि स्कूल सार्वजनिक स्थान हैं, इसलिए उनको तैयार करने में सुरक्षा और संरक्षण पर विशेष ध्यान अनिवार्य रूप से ज़रूरी है। सुरक्षा और संरक्षण के ख़ास व्यवहार हासिल करने के बाद बच्चे स्कूल में सीखने के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो पाते हैं। स्कूल, जो कि उनके घर से भौगोलिक और सांस्कृतिक, दोनों रूप से दूर है।

दक्षताएँ हासिल करने में समय लगता है, इसलिए सीखने की उपलब्धियों का अंतरिम चिह्नक (interim markers) ज़रूरी है। ये अंतरिम चिह्नक, सीखने के प्रतिफल हैं। नीचे दिए गए उदाहरण दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों को दर्शाते हैं। तालिका में हर कॉलम (A-E) milestone है। Milestones का यह क्रम किसी दक्षता को हासिल करने के लिए सीखने की trajectory को दर्शाता है।

C-1.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

C-1.1: पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाते है तथा भोजन बर्बाद नहीं करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• उन चीज़ों को पहचानती है जिन्हें खाया जा सकता है और जिन्हें नहीं खाया जा सकता • खाने की शुरुआत करती है और वयस्कों के कहने पर तरह-तरह के खाद्य पदार्थों का नाम लेती है	• वयस्कों के सहयोग से अलग-अलग खाद्य समूहों से तरह-तरह का खाना खाती है - अनाज, सब्जियाँ, फल, और प्रोटीन (मसलन दाल, बीन्स, मेवे और दूध से बने खाद्य)	• अलग-अलग खाद्य समूहों से स्वतंत्र रूप से खाती है	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की विविधता का आनन्द लेती है	• पोषण की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विविधता खोजती है
2	• कुछ स्वास्थ्यकर और कुछ अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों के नाम बताती है	• किसी दुकान पर स्वास्थ्यकर और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को पहचानती है • तर्क देती है कि कुछ खाने की चीजें स्वास्थ्य के लिए क्यों अच्छी हैं	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की चीज़ें पहचानती और उनके लाभ/हानि बताती है • अच्छे पोषक खाद्य पदार्थों के कुछ गुण बताती है (मसलन अण्डे और दाल से ताक़त मिलती है, पालक से 'ख़ून साफ़ होता है' दूध से दाँत मज़बूत होते हैं)	• मदद के साथ परिचित खाने की मुख्य सामग्री को पहचानती है (मसलन सांभर में दाल या चटनी में मूंगफली) • सामग्री और पोषण के बीच के सम्बन्ध को बताती है (मसलन चिक्की में गुड़ और मूँगफली स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं)	• पके भोजन की सामग्रियों का अनुमान लगाती है और बताती है कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छी हैं या बुरी • डिब्बाबन्द खाने की सामग्रियों को पहचानती है (मसलन बिस्कुट, नूडल) और बताती है कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छी हैं या बुरी।
3		• सरल नाश्ता बनाने के लिए चित्रों द्वारा खाना बनाने की विधि का अनुसरण करती है	• वयस्कों की मदद से पोषक नाश्ता बनाने में भागीदारी करती है (मसलन उबले चने, अंकुरित सलाद, भेलपूरी मिलाना)	• खाना बनाने की विधि का इस्तेमाल करते हुए स्वतंत्र रूप से पौषक नाश्ता बनाती है	
4		• बिना बिखराए खाती है	• उचित मात्राओं में परोसे गए भोजन को बिना बर्बाद किए खाती है	• खाने की उचित मात्रा मांगती है	• बिना बिखराए अपने लिए खाने की उचित मात्रा लेती है

C-1.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 2

C-1.2: अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• खाने या शौच के पहले और बाद हाथ धोने और सुखाने के लिए मदद लेती है	• खाने या शौच के पहले और बाद हाथ धोना और सुखाना शुरू करती है	• खाने या शौच के पहले और बाद हमेशा हाथ धोती और सुखाती है	• शौचालय का समुचित इस्तेमाल प्रदर्शित करती है	• अपनी देखभाल और स्वच्छता के बुनियादी व्यवहार में आत्मनिर्भर हो जाती है
2	• कपड़े पहन सकती है (बटन बन्द किए बग़ैर) और वयस्कों की मदद से चप्पल-जूता पहन सकती है	• स्वतंत्र रूप से कपड़े और जूते-चप्पल पहन सकती है	• किसी के निरीक्षण में छोटी-मोटी सिलाई के लिए सुई-धागे का इस्तेमाल शुरू करती है	• किसी की मदद के साथ सुई-धागे से बटन लगा लेती है, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा सिल लेती है	• स्वतंत्र रूप से सुई-धागे से बटन लगा लेती है, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा सिल लेती है
3		• स्वयं व्यक्तिगत देखभाल की चीज़ों (कंघी, टूथब्रश) का इस्तेमाल शुरू कर देती है		• व्यक्तिगत देखभाल की चीज़ों का समुचित इस्तेमाल करने लगती है	

C-1.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 3

C-1.3: स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• अपने सामानों जैसे झोला, बोतल, जूते और रूमाल आदि के बारे में जागरूक रहती है	• अपने निजी सामान को सही जगह पर रखती है और वहीं से लेती है	• निजी सामानों को अच्छी हालात में रखती है	• पढ़ने की सामग्री को ध्यान से इस्तेमाल करती है	• स्कूल की सम्पत्तियों, किताबों, सामग्रियों और फ़र्नीचर का ध्यान रखती है
2	• गन्दी प्लेटों और बर्तनों को वयस्कों की मदद से निर्धारित स्थान पर रखती है	• स्वतंत्र रूप से साफ़ गिलासों और प्लेटों की पहचान और उनका उपयोग करती है तथा गन्दी प्लेटों और बर्तनों को निर्धारित स्थान पर करीने से रखती है	• अपनी थाली और बर्तन धोती है	• कक्षाओं, खेल के मैदानों आदि में स्वच्छता बनाए रखना शुरू करती है	• कक्षाओं और खेल के मैदानों की सफ़ाई में भाग लेती है
3	• किसी की सहायता के साथ कूड़ेदान का उपयोग करती है	• कचरे के निपटान के लिए कूड़ेदान का उपयोग करना शुरू करती है	• कचरे के निपटान के लिए हमेशा कूड़ेदान का उपयोग करती है	• कचरे (गीला कचरा और सूखा कचरा) को अलग करना शुरू करती है	• कचरे को उचित तरीके से अलग करती है

C-1.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 4

	A	B	C	D	E
	C-1.4: सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• आग, गर्म स्टोव, चाकू, बिजली के प्लग जैसी हानिकारक वस्तुओं को न छूकर ख़तरे से बचती है	• कैंची, चाकू, माचिस की तीली जैसी हानिकारक या ख़तरनाक वस्तुओं को सावधानी से सम्भालती है	• किसी की देखरेख में चाकू, कैंची का इस्तेमाल करती है	• नाखून काटने वाली मशीन और छोटे चाकू का इस्तेमाल किसी की देखरेख में ध्यान से करती है	• नाखून काटने की मशीन, कैंची और छोटे चाकू का इस्तेमाल स्वतंत्र रूप से करती है

C-1.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 5

	A	B	C	D	E
	C-1.5: गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करती है और समुचित तरीके से ये कार्य करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• सड़क सुरक्षा के महत्त्व को पहचानते हैं , वयस्कों का हाथ पकड़कर सड़क पर चलती है	• सड़क पार करने से पहले दोनों तरफ़ देखती है, साथियों या वयस्कों का हाथ पकड़ती है और सुरक्षित रूप से चलती है	• स्वतंत्र रूप से सड़क सुरक्षा नियमों (किनारे पर चलना, सड़क पार करना आदि) का पालन करती है • यातायात चिह्नों (सिग्नल लाइट, चिह्न- ज़ेब्रा क्रॉसिंग, यू-टर्न, ब्रिज/रेलवे ब्रिज आदि) को पहचानती है	• सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी सुरक्षा नियमों का सड़क पर, साइकिल चलाते समय आदि में पालन करती है	• साइकिल चलाते समय, सड़क पर चलते हुए यातायात नियमों का पालन करती है • ज़्यादातर सुरक्षा चिह्नों (बिजली, आग, मरम्मत, खुदाई आदि) को पहचानते हैं और ख़तरे से बचती है

C-1.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 6

	A	B	C	D	E
	C-1.6: असुरक्षित स्थितियों को समझती है और मदद मांगते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिचित और अजनबी वयस्कों के बीच अन्तर करती है	• पूछे जाने पर विश्वसनीय वयस्कों को असुविधा के बारे में बताती है • अजनबियों से खिलौने, चॉकलेट, पैसे या अन्य चीज़ें स्वीकार नहीं करती	• सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बीच अन्तर को समझती है • अजनबियों से दूरी बनाए रखती है • भरोसेमन्द वयस्कों के साथ ख़ुद ही असुविधा के बारे में बात करती है	• वयस्क और साथियों की मदद लेने के लिए थोड़ी-बहुत भाषा का इस्तेमाल करती है	• किसी भी ख़राब स्पर्श/व्यवहार की सूचना देते हैं, उचित दूरी बनाए रखती है
2			• चोट (मसलन, घुटने में खरोंच, जलना, बिजली का झटका) लगने पर वयस्कों से मदद मांगती है • आपात स्थिति में मदद करने वाले समुदाय के लोगों - डॉक्टर, अग्निशामक आदि की पहचान करती है	• बुनियादी सुरक्षा प्रोटोकॉल को समझते हैं और उनका उपयोग करती है (मसलन जलने के बाद ठण्डे पानी से धोना)	

CG-2: बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

हर तरह के सीखने के लिए संवेदी विकास बुनियादी है। हमारे संवेदी रिसेप्टरों, विकसित होती अनुभूतियों, विचारों और यहाँ तक कि हमारी चेतना के बीच गहरे तंत्रिका सम्बन्ध धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं। संवेदी विकास के लिए समुचित अनुभवों को सिर्फ़ संज्ञानात्मक विकास के पूर्ववर्ती के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। इसे बच्चे के समग्र विकास के लिए एक स्वतंत्र क्षमता के रूप में भी देखा जाना चाहिए। संवेदी विकास पर ध्यान देने से उन कठिनाइयों का जल्दी पता लगाने का मौक़ा भी मिल जाता है, जो सीखने को प्रभावित कर सकती हैं।

C-2.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 7

	A	B	C	D	E
	C-2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफ़ेद, भूरे) में अन्तर करती है और उनके नाम बताती है	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (यानी, हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अन्तर करती है	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करती है (मसलन नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाती है	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करती है और रंगों का इस्तेमाल करती है
2	• रंग के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लाल चीज़ें एक साथ)	• आयाम- लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लम्बी चीज़ें एक साथ)	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)	• पैटर्न बनाती है, पहेलियाँ सुलझाती है, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनका समूह बनाते हुए खेल खेलती है	

C-2.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 8

	A	B	C	D	E
	C-2.2: प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• एक जैसे पैटर्न, ओरिएंटेशन व आकार वाली दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करती है (मसलन को से मिलाना, ∞ को ∞ से मिलाना)	• एक जैसे पैटर्न पर अलग ओरिएंटेशन व आकार वाली दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करती है (मसलन को से मिलाना, ∞ से को मिलाना	• स्मृति से दृश्य प्रतीकों को याद करती है और उनका मिलान करती है (मसलन काईस का इस्तेमाल करके स्मृति खेल)		

C-2.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 9

	A	B	C	D	E
	C-2.3: ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिवेश की ध्वनियों को मनुष्यों, जानवरों, वाहनों, ताली की आवाज़, नल, चीज़ों की आवाज़ आदि के रूप में अलग करती है	• पक्षियों व जानवरों की आवाज़, वाद्ययंत्र और मनुष्य की आवाज़ में ऊँचे स्वर और नीचे स्वर के बीच भेद कर पाती है	• मध्यम स्वर पहचान पाती है	• यदि कोई दो ध्वनि/सुर, पिच या वॉल्यूम के लिहाज़ से मेल खाते हैं तो उन्हें पहचानती है	• दिए गए स्केल में संगीत के स्वरों की रेखीय और ग़ैर-रेखीय प्रगति के बीच अन्तर कर पाती है
2	• तेज़ और मृदु ध्वनि में अन्तर करती है	• ताल में धीमी और तीव्र गति का अन्तर कर पाती है	• वॉल्यूम और टेम्पो में मध्यम स्तर को पहचानती है	• संगीत के दिए गए किसी अंश में गति (tempo) का बदलाव पहचान लेती है	

C-2.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 10

	A	B	C	D	E
	C-2.4: विभिन्न गन्धों और स्वादों के बीच अन्तर करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• सुगन्ध और दुर्गन्ध (इत्र, फूल, कचरा आदि) की पहचान करती है	• फूल, इत्र और खाद्य पदार्थों आदि की सुगन्ध में भेद करती है	• उन गन्धों को पहचानते हैं जो ख़तरे का संकेत देती है (मसलन धुआँ, सड़े हुए अण्डे)		
2	• मीठे, नमकीन, कड़वे, खट्टे और गर्म (मसालेदार) स्वाद की पहचान करती है	• विभिन्न प्रकार के भोजनों से तरह-तरह के व्यंजन और स्वादों की खोज करती है			

C-2.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 11

	A	B	C	D	E
	C-2.5: स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदरी और चिकनी सतहों में अन्तर करती है।	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदुरी और चिकनी के आधारों पर दो वस्तुओं की तुलना करती है	• सही शब्दावली के साथ कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदुरी और चिकनी के आधार पर 3-5 वस्तुओं को क्रमबद्ध करती है (सबसे चिकना, चिकना, कठोर, उससे ज़्यादा कठोर, सबसे ज़्यादा कठोर)	• सूक्ष्म विविधताओं के आधार पर बनावटों की तुलना को विस्तृत करती है, जैसे गुदगुदा, फर वाला, बुना हुआ, चुभने वाला, गड्ढेदार आदि	

C-2.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 12

	A	B	C	D	E
	C-2.6: अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• ताक़त लगाकर साँस फेंकती है।	• हल्की चीज़ें (मसलन काग़ज़) फेंकती है।	• लय में साँस लेती-छोड़ती है	• साँस लेने की तुलना में लम्बे समय तक धीरे-धीरे साँस छोड़ना	• अनुलोम-विलोम श्वसन करती है
2		• थोड़ी देर के लिए स्थिर बैठती या लेटती है	• स्थिर बैठती है और अपनी साँस पर थोड़ी देर के लिए ध्यान देती है	• स्थिर बैठती है और थोड़ी देर के लिए अन्य संवेदी अनुभूतियों पर ध्यान देती है	• स्थिर बैठती है और अपने विचारों का प्रवाह देख पाती है

CG-3: बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं

विभिन्न मांसपेशी समूहों की कसरत और ख़ास उद्देश्यों को हासिल करने के लिए उनमें समन्वय बनाने के अवसर इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण विकासात्मक ज़रूरत है। स्थूल मोटर विकास (Gross motor development) में बड़ी मांसपेशियों का समन्वय शामिल होता है, जो मूवमेंट को प्रभावित करने वाले सन्तुलन को प्रभावित करता है। सूक्ष्म मोटर विकास (Fine motor development) में आँखों और हाथों से जुड़ी छोटी मांसपेशियाँ शामिल होती हैं। मांसपेशी समूहों में समन्वय भी महत्त्वपूर्ण है।

C-3.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 13

	A	B	C	D	E
	C-3.1: विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• बहुत ही बुनियादी नियंत्रण के साथ गेंदों को लपकना, फेंकना और गेंद को पैर से मारना शुरू करती है	• बड़ी गेंद लपक लेती है, फेंक लेती है और ताक़त के साथ गेंद को पैर से मारती है • कम दूरी के भीतर निशाना लगाकर फेंकने में थोड़ी सटीकता दिखाती है	• विभिन्न आकार की गेंदों को लपकने, फेंकने और पैर से मारने में बेहतरी प्रदर्शित करती है	• खेल/खेल की स्थितियों में गेंदों को लपक लेती है, फेंक लेती है और पैर से मार लेती है	

C-3.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 14

	A	B	C	D	E
	C-3.2: विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सन्तुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• सहारे/मदद के साथ एक पैर पर खड़ा होती है।	• बिना सहारे के एक पैर पर अपेक्षाकृत देर तक खड़ा रहती है • 4-5 क़दम कूदती है	• आराम से 10-15 क़दम कूदती है	• कूदती है और पूरा खेल खेलती है	• आराम से रस्सी कूदती है
2	• एक पैर पर थोड़ी देर के लिए सन्तुलन बनाती है	• अलग-अलग सतहों (मसलन ईंट, सीढ़ी) पर सन्तुलन बनाती है	• सिर/हाथ पर चीज़ों को संतुलित करती है (मसलन सिर पर किताब रखकर चलना) • बेहतर शारीरिक सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन बिना सहारे के साथ साइकिल चलाना)	• अच्छे सन्तुलन और तकनीक के साथ भारी चीज़ें, कुर्सियाँ/ मेज़/झोला उठा लेती है • रफ़्तार के साथ अच्छा शारीरिक सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन रफ़्तार के साथ साइकिल चलाना)	• फुर्ती और सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन पेड़ों पर चढ़ना, पार्क के ढाँचों पर उतरना-चढ़ना) • दूसरे पैर को मोड़कर एक पैर के सहारे एक मिनट तक खड़ा रह सकती है (मसलन ध्रुवासन)

C-3.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 15

	A	B	C	D	E
	C-3.3 : हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• सरल गतिविधियों (मसलन गोंजा-गांजी, काग़ज़ फाड़ने, चिपकाने, मुक्त तरीके से रंगने और मिट्टी के काम) में बेहतर मोटर कौशल (motor skill), आँख व हाथ के समन्वय और मांसपेशियों की ताक़त को प्रदर्शित करती है	• उन कामों के लिए मोटर नियंत्रण (motor control) प्रदर्शित करती है जिनमें मध्यम सटीकता के साथ सही मोटर (motor) और आँख-हाथ समन्वय की ज़रूरत होती है (मसलन बड़े आकार काटना, बड़े मोतियों को पिरोना, बटन लगाना, बोतलों का ढक्कन खोलना-बन्द करना, क्रेयॉन से चित्र बनाना)	• उन गतिविधियों पर काम करने के लिए सही मोटर मांसपेशियों के समन्वित संचालन का इस्तेमाल करती है जिनमें कुछ सहायता के साथ ज़्यादा सटीकता की ज़रूरत होती है (मसलन पेंसिल से चित्र बनाना, सीधी या घुमावदार रेखा के आधार पर काटना, छोटे मोती पिरोना, अक्षरों का सुपाठ्य लेखन, फूलों की माला बनाना, बन्द आकृति के भीतर रंग भरना)	• शिल्प और कलाकृति का निर्माण करती है जिसमें बिना किसी मदद के छोटी मांसपेशियों के आँख और हाथ की गति में समन्वय की सटीकता की ज़रूरत होती है (जैसे, tracing, स्पष्ट लेखन और चित्र बनाना, छोटी गेंद को पकड़ना, ज्यामितीय आकृतियों की नक़ल करना, पैटर्न बनाना)	• उन गतिविधियों में सटीकता और ब्यौरों के साथ काम करती है जिनमें लम्बी अवधि के लिए सही मोटर नियंत्रण (motor control) की ज़रूरत होती है (मसलन सुई में धागा डालना, सुई से काम करना, चित्रकारी, रेखांकन)

और उदाहरण		
उम्र 3-4	**उम्र 4-6**	**उम्र 6-8**
• एक हाथ से गिलास पकड़ती है • अंगूठे और उंगलियों से क्रेयॉन पकड़ती है • अपने से चित्रकारी करती है: गोंजा-गांजी, कलाइयों का इस्तेमाल करते हुए रंगना • मिट्टी का गोला बनाती है या उसे टेढ़े-मेढ़े कीड़े जैसा बनाती है • चम्मच पकड़ते हुए उसमें से कम द्रव छलकाती है • काग़ज़ का एक स्तरीय सरल मोड़ मोड़ लेती है • मोती पिरोने, छेदों में छोटी चीज़ें घुसाने, बड़े बटन कसने, भोथरी कैंची से काग़ज़ काटने, बड़े काग़ज़ पर छोटे काग़ज़ के टुकड़े चिपकाने आदि में समन्वित संचालन प्रदर्शित करती है • छोटे ब्लॉकों से सरल संरचना बनाती है	• बिना मदद के ख़ुद को भोजन परोसती है • खाना खाते समय चम्मच का सही तरीके से इस्तेमाल करती है • विभिन्न ड्रॉइंग और कला सामग्रियों (क्रेयॉन, ब्रश, फिंगर पेंट, आदि) का इस्तेमाल करती है • ब्लॉकों वाली किताब में दिखाई गई आकृतियों की नक़ल करती है • सीधी या घुमावदार रेखा में काट लेती है • जटिल कामों को पूरा करने के लिए समन्वित संचालन का इस्तेमाल करती है जैसे कि एक रेखा के साथ काटना, उड़ेलना, बटन लगाना, बड़े ज़िपर का उपयोग करना आदि • छोटे ब्लॉकों से टावर बनाती है (8-10 ब्लॉक) • स्ट्रिंगिंग बोर्ड पर माला बनाती है, पूरे फूलों की माला बनाती है (सम्भव है कि किसी एक पैटर्न का अनुसरण न करें) • चीज़ों को बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से दोनों हाथों का इस्तेमाल करती है • कुछ अक्षर या अंक लिखती है जिसे पहचाना जा सकता है • चित्र बनाने या लिखने के लिए लगातार एक हाथ का इस्तेमाल करती है	• फ़र्श से उछलती गेंद पकड़ लेती है • मनचाहे पैटर्न पर फूल और मोती गूँथ लेती है • पेंसिल को सही ढंग से पकड़ती है, काटने, पकड़ने, सिलाई, बटन लगाने आदि के दौरान उंगलियों और हाथ की गतिविधियों का सहज व नियंत्रित उपयोग करती है • लिखने/रंगने के उपकरणों का इस्तेमाल करते समय समन्वित संचालन का उपयोग करती है • लेखन और चित्रकला के उपकरणों का इस्तेमाल करते समय नियंत्रण और उचित दबाव प्रदर्शित करती है • ब्लॉकों (2"x 2" ब्लॉक) की outlines को trace कर लेती है • सरल ज्यामितीय आकृतियों और डिज़ाइनों की नक़ल करती है

C-3.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 16

C-3.4 : ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• सीधी रेखा में चलती है • पीछे की ओर चलने में सक्षम होती है • पंजों पर चल सकती है (6+ कदम) • दिशा और गति को आराम से बदलते हुए चलती है और आसानी से दौड़ती है	• सीधी और घुमावदार/ टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में आराम से चलती है • सन्तुलन के साथ 6 इंच चौड़े रास्ते पर चलती है • पैर बदलते हुए ऊपर-नीचे आराम से चलती है • सुरंगों में रेंग सकती है आदि	• शरीर की गतिविधियों में सामंजस्य बिठाते हुए आसानी से चलती और दौड़ती है • सिर के ऊपर हाथ उठाकर पंजों के बल 10 मीटर तक चलती है (मसलन ताड़ासन)	• अलग-अलग रास्तों पर आसानी से एक किमी या उससे अधिक पैदल चलती है • सर के ऊपर हाथ स्थिर करके एक मिनट तक रहती है (मसलन ताड़ासन)	• अलग-अलग रास्तों पर लम्बी दूरी (2-3 किमी) चलने में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करती है
2	• एक जगह पर कूदती है, एक छोटी बाधा पार कर लेती है • कूदकर अपने पैरों पर उतर पाती है (ऊँचाई 2½-3 फीट)	• दोनों पैरों को उठाते हुए बिना सहारे/या थोड़े सहारे के कूदती है और छोटी चीज़ों के ऊपर से कूद पाती है	• ठीक-ठाक ऊँचाई से आसानी से कूद पाती है (मसलन 2 या 3 कदम, 3 फीट ऊँची बेंच)	• आसानी से चढ़ती और कूदती है (मसलन छोटे पेड़)	• चारों ओर दौड़ती है और चीज़ों के ऊपर से आसानी से कूद पाती है
3	• छोटे भार उठाकर चल पाती है (मसलन मग या बालू उठा कर एक जगह से दूसरी जगह ले जा पाती है)	• बड़े मांसपेशी समूहों के इस्तेमाल की ज़रूरत वाले कामों के लिए ताकत लगाने की इच्छा दिखाती है (मसलन कक्षा में छोटे फर्नीचर को इधर-उधर करने में मदद करती है)	• खेलने में ताकत की ज़रूरत वाले काम आराम से करती है (मसलन रस्साकशी खेलना)	• काम और खेलने की स्थितियों में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करती है (मसलन बगीचे में छोटे बर्तन उठाना, पानी की बाल्टी रखना, 15 मिनट तक दौड़ना)	

1.1.2 सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ बच्चे के भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। यह स्थापित तथ्य है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनाओं को समझने और उनका प्रबन्धन करने की क्षमता का, संज्ञानात्मक बुद्धिमत्ता से अगर ज़्यादा नहीं तो बराबर का महत्त्व है। अपनी भावनाओं को समझने और उनका प्रबन्धन करने के साथ-साथ दूसरों की भावनात्मक स्थिति को समझना हमें समानुभूति और करुणा निर्मित करने में मदद करता है। सीखने के प्रतिफलों के ज़रिए इस चरण में भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता के लिए एक मज़बूत बुनियाद की बात साफ़-साफ़ कही गई है।

CG-4: बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

इसमें शामिल हैं :

- सकारात्मक 'स्व-अवधारणा' : 'स्व' के विचार में परिवर्तन और निरन्तरता को पहचानने और जागरूक होने की क्षमता पर निर्देशित ढंग से ध्यान देने की ज़रूरत है।
- भावनात्मक जागरूकता और नियमन : अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक होना और उनका उचित तरीक़े से नियमन करने की क्षमता विकसित करना महत्त्वपूर्ण है। इसे पहले से ही विकसित किया जाना चाहिए। यह समझना चाहिए कि इस तरह का नियमन स्वैच्छिक अभ्यास के माध्यम से विकसित कौशल है। इसे किसी ख़तरे की डर भरी प्रतिक्रिया की तरह नहीं होना चाहिए। भावनात्मक विकास वास्तव में करुणामय माहौल में ही हो सकता है।
- सामाजिक विकास : सामाजिक बुद्धिमत्ता, नैतिक, मानवतावादी और संवैधानिक मूल्यों के विकास की बुनियाद है। इसका विकास दूसरों से अन्तःक्रियाओं से शुरू होता है और इन अन्तःक्रियाओं के माध्यम से दूसरों की ज़रूरतों और भावनात्मक अवस्थाओं को पहचानने से होता है। पृष्ठभूमि की विविधता और दूसरों की ज़रूरतों की पहचान के साथ यह "अन्य/दूसरों के बारे में" छोटे बच्चों में मूल्यवान क्षमताएँ विकसित करता है।

C-4.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 17

	A	B	C	D	E
	C-4.1: परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• एक व्यक्ति के रूप में स्व के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करती है (मसलन पसन्दीदा शर्ट या बैग या चीज़ें बताती है)	• स्व को परिवार, पड़ोस, स्कूल, शहर के सदस्य के रूप में पहचानती है, जहाँ अलग-अलग लोग अलग-अलग भूमिकाएँ निभाती हैं		• समाज में योगदान करने के लिए अपनी क्षमताओं और रुचियों को व्यक्त करना शुरू करती है - बड़ा होकर मैं किसान, डॉक्टर, पायलट, सैनिक आदि बनना चाहती हूँ	
2	• अपना पहला और आखिरी नाम बताती है	• दूसरों की पहचान वाली सूचनाएँ साझा करती है (मसलन अभिभावकों का नाम)	• व्यक्तिगत पहचान सम्बन्धी जानकारियाँ साझा करती है, मसलन घर का पता, परिवार के सदस्यों का विवरण, स्कूल आदि	• परिवार के सदस्यों के व्यवसाय और उनके काम की जगह के निजी विवरण साझा करती है • परिवार के वयस्क सदस्यों के काम को महत्व देती है (मसलन मेरी माँ किसान हैं और उनके काम से हम सभी को अच्छा खाने में मदद मिलती है)	

C-4.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 18

	A	B	C	D	E
	C-4.2 : अलग-अलग भावनाओं को पहचानती है और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• अपनी चाहतों और भावनाओं की पहचान करती है (मसलन मैं आज रंग भरना नहीं चाहती, मैं बाहर जाना चाहती हूँ) • सरल भावनाओं (भय, ख़ुशी, उदासी) को पहचानती है	• भावनाओं को शब्दों और चेहरे के भावों से जोड़ती हैं • मौखिक और ग़ैर-मौखिक के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त करती है • तरीके (मसलन इशारे, चित्रकारी)	• अपनी भावनाओं और उनके कारणों का वर्णन करती है (मसलन मैं गुस्सा हूँ क्योंकि उसने मेरा ब्लॉक टॉवर तोड़ दिया) • दूसरे लोगों (दोस्तों व परिचित वयस्कों) के साथ भावनाएँ साझा करती है	• सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीक़ों से अपनी भावनाओं का वर्णन करती है (मसलन रोना बन्द करके बताती है कि क्यों रो रही थी)
2			• परेशान/गुस्सा होने पर ख़ुद को शान्त करने में मदद के लिए गतिविधियों में बदलाव के लिए सहमत होती है	• समुचित भावनाओं के साथ प्रतिक्रिया देती है (मसलन सर्कल टाइम के समय सुनाए गए चुटकुलों पर हँसती है, परेशान होने पर चुपचाप बैठ जाती है) • ख़ुद को शान्त करने के लिए सचेत रूप से रणनीतियों का उपयोग करती है (मसलन साँस लेना, गतिविधि बदलना)

C-4.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 19

	A	B	C	D	E
	C-4.3 : अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिवार के करीबी सदस्यों/ख़ास वयस्कों को पहचान लेती है /उनका नाम लेती है • परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है		• कम परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करना शुरू करती है	• परिचित और कम परिचित वयस्कों के साथ सत्तम्मान बातचीत करती है (मसलन नमस्ते, कृपया, धन्यवाद, क्षमा करें)	

2	• माता-पिता या परिचित वयस्कों के बिना कक्षा में आराम से रह पाती है	• परिचित बच्चों के साथ खेलने में स्वत:स्फूर्तता और वरीयता प्रदर्शित करती है, यदि ज़रूरत हुई तो वयस्कों की मदद से खेलने वाले बच्चों के समूह में शामिल हो जाती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने और काम करने में रणनीतियों का प्रदर्शन करती है (मसलन उन्हें खेलने के लिए आमंत्रित करती है, आपसी नियमों, बातचीत और खेलने में भूमिकाओं को समायोजित करती है	• दूसरे बच्चों के साथ समन्वित तरीके से खेलती है, मित्रों के साथ परस्पर रुचियों को पहचानती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने में विशिष्ट (प्रक्रियात्मक) नियमों को समझती है और अपनी प्रतिक्रिया देती है
3			• ज़्यादातर समय साथियों के साथ खेलने के लिए वयस्कों से स्वेच्छा से अलग हो जाती है	• साथियों की संगति में रहना अच्छा महसूस करती है	• साथियों के साथ लम्बा समय बिताती है और किसी अजनबी माहौल में वयस्क की मदद से साथ रह पाती है (लम्बी क्षेत्र-यात्राएँ)
4			• कम-से-कम किसी एक बच्चे के साथ घनिष्ठ मित्रता बनाती और कायम रखती है • परिचित वयस्कों से मदद मांगती है		• स्कूल में दोस्तों का एक समूह बनाती है • ज़रूरत पड़ने पर कम परिचित वयस्कों से मदद मांगती है • ज़रूरत पड़ने पर वयस्कों या अन्य बच्चों की मदद करती है

C-4.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 20

	A	B	C	D	E
	C-4.4 : दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना शुरू करती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना पसन्द करती है	• अन्य बच्चों के साथ खेलना शुरू करती है और योजना बनाती है (मसलन क्या, कैसे और कब खेलना है)	• खेल के दौरान दूसरों के विचारों को शामिल करने की इच्छा प्रदर्शित करती है • दूसरों के साथ खेलते समय खेल के नियमों का पालन करती है	• दूसरों के साथ खेलने के लिए नियम बनाती है और उन नियमों का पालन करती है

C-4.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 21

C-4.5 : कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझती है और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में भाग लेती है	• दूसरे बच्चों के साथ रोज़मर्रा की गतिविधियों का आनन्द लेती है	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में स्वावलम्बन प्रदर्शित करती है • ख़ुद का काम पूरा करने की ज़िम्मेदारी लेती है • असुविधाएँ साझा करती है और ज़रूरत पड़ने पर मदद मांगती है	• गतिविधि आयोजित करने के लिए पहल करती है • अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग काम करने का कौशल प्रदर्शित करती है, अन्य बच्चों के साथ ज़िम्मेदारी और काम पर बातचीत करती है	• साथ में खेलते या काम करते समय अपनी बात अभिव्यक्त करती है • एक काम लेती है और उसे पूरा करती है
2	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करती है	• अपनी बारी की प्रतीक्षा करती है	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करती है	• निर्देशों/नियमों का पालन करती है • नियमों के उल्लंघन के परिणामों को समझती है	

C-4.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 22

C-4.6 : दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• दूसरे बच्चों और वयस्कों के प्रति स्नेह दिखाती है	• चीज़ों को संभालने में एहतियात प्रदर्शित करती है	• दूसरी जीवित चीज़ों से पेश आने में एहतियात और कोमलता दिखाती है	• समूह में दूसरों के प्रति दया और स्नेह प्रदर्शित करते हुए साझा काम करती है	

C-4.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 23

	A	B	C	D	E
	C-4.7 : दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझती है और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• पृष्ठभूमि या क्षमता की परवाह किए बिना सभी बच्चों के साथ खेलती और बातचीत करती है	• बच्चों के बीच समानताएँ और अन्तर (मसलन ऊँचाई, जेण्डर, त्वचा का रंग, बोलने का तरीक़ा, खाने की प्राथमिकता) चिह्नित करना शुरू करती है	• कक्षा की गतिविधियों के लिए मिले-जुले समूहों में अच्छी तरह से काम करती है • दूसरे बच्चों को मतभेदों के कारण धमकाती नहीं/लेबल नहीं करती है	• "अपने से अलग" लोगों में जिज्ञासा और रुचि प्रदर्शित करती है • लोगों के बीच समानताओं और अन्तर पर प्रश्न बनाती है • समानताएँ और भिन्नताएँ जानने के बावजूद विविध दोस्तों के समूह के साथ आराम से अन्तःक्रिया करती है	

CG-5: बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं

C-5.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 24

	A	B	C	D	E
	C-5.1 : दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखती है	• शिक्षक की मदद करती है और कक्षा को व्यवस्थित करती है	• खाने के बाद ख़ुद की प्लेट या टिफ़िन साफ़ करती है • घर और/या स्कूल में उपयुक्त काम करती है (मसलन सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)	• स्थानीय पेड़ों का अंकुरण करती है और उनकी देखभाल करती है	• TLM बनाने में शिक्षक की मदद करती है • रसोई में सफ़ाई और काटने के काम में मदद करती है

CG-6: बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं

C-6.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 25

	A	B	C	D	E
	C-6.1: सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• पौधों और जानवरों को देखने की उत्सुकता प्रदर्शित करती है	• पौधों और जानवरों को ग़ैर-ज़रूरी तरीक़े से नुकसान नहीं पहुँचाती है	• स्थानीय वातावरण में पौधों और जानवरों के साथ जुड़ने में ख़ुशी प्रदर्शित करती है • प्रकृति के साथ शारीरिक अन्तःक्रिया में कोई असुविधा नहीं दिखाती है (मसलन बगीचे या पार्कों में)	• ख़ास वनस्पतियों और जीवों को पहचानने में जिज्ञासा और रुचि दिखाती है • अंकुरों और पौधों की देखभाल और पालन-पोषण की जिम्मेदारी लेती है	• बिल्ली के बच्चों, पिल्लों, मुर्गियों जैसे जानवरों की देखभाल और पालन-पोषण की जिम्मेदारी लेती है • क़ुदरत की सैर के लिए बाहर जाने में तथा पौधों और जानवरों को देखने से ख़ुश होती है

1.1.3 संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

इस आयु वर्ग के बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर आसपास की दुनिया के बारे में तेज़ी से अवधारणाएँ विकसित कर रहे होते हैं। समझ के साथ सीखने और औपचारिक शिक्षा में अवधारणाओं के विकास के लिए अनुभव और समझ के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। केवल तथ्य याद करा देने का इरादा नहीं होना चाहिए। यहाँ संज्ञानात्मक विकास को वस्तुओं के ज्ञान के विकास, तार्किक चिंतन और समस्याओं के समाधान की सामान्य क्षमताओं के विकास, गणितीय क्षमताओं और चिन्तन के विकास और बच्चे के आसपास के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित अवधारणाओं के विकास के माध्यम से देखा गया है।

CG-7: बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं

बच्चे आस-पास की दुनिया को वस्तुओं और उनके बीच की अन्तःक्रियाओं के माध्यम से पहचानने की ताकतवर, सम्भवतः जन्मजात क्षमता के साथ आते हैं। समुचित ध्यान और अवसर देने पर ये क्षमताएँ और सुदृढ़ होंगी। अगर छोटे बच्चों की तार्किक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित करें तो वे लगातार जिज्ञासु और आजीवन सीखने वाले बने रहेंगे।

C-7.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 26

	A	B	C	D	E
	C-7.1: वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखते- समझते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• मदद के साथ सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानती है और उनका नाम बताती है	• ख़ुद से सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानती है और उनका वर्णन करती है	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/ मॉडलों में आम वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों व पक्षियों के सामान्य विवरण चिह्नित करती है और उनका वर्णन करती है (मसलन घर में बड़ा दरवाज़ा)	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/मॉडलों में वस्तुओं, संकेतों, स्थानों व सामान्य गतिविधियों के बारीक विवरण की पहचान करती है और उनका वर्णन करती है (मसलन छोटे हरे घर में बड़ा भूरा दरवाज़ा)	
2	• परिचित वस्तु की परिचित तस्वीर के गायब हिस्से की पहचान करती है	• परिचित वस्तु की तस्वीर के 3 से 5 गायब हिस्सों की पहचान करती है	• परिचित वस्तु की तस्वीर के 4 से 6 गायब हिस्सों की पहचान करती है	• दी गई वस्तुओं/चित्रों की तुलना करती है और उनमें समानता और अन्तर की पहचान करती है	
3	• श्रेणियों के भीतर hierarchical सम्बन्धों को पहचानती है (मसलन जानवर और उनके छोटे बच्चे) • श्रेणियों के भीतर और उनके बीच तुलना करती है • चीज़ों को बदल कर उनका इस्तेमाल करते हुए खेलती है (मसलन केले को टेलीफोन के रूप में इस्तेमाल करती है) • वस्तुओं और उनके उपयोग के बीच सम्बन्ध बनाती है (मसलन चम्मच खाने के लिए है, बाल्टी नहाने के लिए है, मैकेनिक गैराज में होते हैं, जैसे डॉक्टर अस्पताल में होते हैं)				

C-7.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 27

	A	B	C	D	E
	C-7.2 : प्रकृति में कार्य-कारण सम्बन्धों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखती व समझती है और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का इस्तेमाल करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1			• एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर प्रभाव पहचानती है (मसलन अगर मैं पानी में नमक डालूंगी तो घुल जाएगा, अगर मैं धूप में बर्फ़ रखूंगी तो वह पिघल जाएगी) • वस्तुओं पर सरल क्रियाओं के प्रभावों की व्याख्या करती है (मसलन मैं गेंद को जितनी ज़ोर से मारूंगी, वह उतनी ही आगे जाएगी) • कारण वाले सम्बन्ध बनाती है (मसलन अब्दुल स्कूल नहीं आया क्योंकि वह बीमार था, पौधा मर गया क्योंकि बारिश नहीं हुई) • कारण वाले सम्बन्धों के आधार पर पूर्वानुमान लगाती है (मसलन अगर आसमान में सफ़ेद बादल हैं तो बारिश नहीं होगी)		
2	• अवलोकनों के आधार पर विचारों का इस्तेमाल करती है (मसलन खाने से पहले गर्म भोजन को फूँक मारकर ठण्डा करने में वयस्कों का अनुकरण करती है)	• ज्ञात जानकारी को नए सन्दर्भ में लागू करती है (मसलन कहानी की किताब में देखे गए महल को ब्लॉकों से बनाना)	• अवलोकन करती है और फ़िर सामान्यीकरण करती है (मसलन उन चीज़ों पर ध्यान देती है जो लुढ़कती हैं- टायर, चूड़ियाँ, सब "गोल" आकृति की होती है)	• सरल परिकल्पनाएँ बनाती और उनका परीक्षण करती है (मसलन प्लेटें तैरती हैं और पिन डूब जाती है, काग़ज़ का एक टुकड़ा और एक पत्थर, एक साथ गिराकर देखती है कि कौन पहले ज़मीन पर पहुँचेगा) • सरल समस्याओं को हल करने के लिए अपनी समझ का इस्तेमाल करती है (मसलन रेत का घर बनाते समय, उस संरचना को सहारा देने के लिए एक डण्डे का इस्तेमाल करे, या इसे व्यवस्थित करने के लिए पानी डाले)	
3	• दिन और रात में अन्तर करती है	• गर्मी और सर्दी पहचानती है • आसमान में मौजूद चीज़ों के नाम लेती है (मसलन सूरज, चांद, तारे, बादल)	• गर्मी और सर्दियों के लिए कपड़ों और भोजन पर बातचीत करती है • सूर्योदय और सूर्यास्त को दिन और रात से जोड़ती है	• गर्मी, सर्दी और मानसून के मौसम में अन्तर करती है • बताती है कि सूरज और चन्द्रमा कहाँ उगते और अस्त होती है	• दिशाओं का नाम लेती है (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम)
4	• चयन करते हैं और प्राथमिकताएँ अभिव्यक्त करती है	• अपनी प्राथमिकताएँ और रुचियाँ अभिव्यक्त करती है और चयन करती है	• ज़िम्मेदारी लेती है और अपनी प्राथमिकताओं और रुचियों के आधार पर चयन करती है	• खेलती है / गतिविधियों में भाग लेती है और अपनी पसंद, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर दोस्त बनाती है	• अपनी पसन्द, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर खेल / खेल उपकरण चुनती है

5		• शिक्षकों और दोस्तों की मदद से भौतिक परिवेश में घटी घटनाओं तथा परिघटनाओं के बारे में सरल प्रश्नों के उत्तर देती है	• जाँची जा सकने वाली प्राकृतिक परिघटनाओं से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए दोस्तों के साथ साझेदारी करती है (मसलन क्या तैरता है और क्या डूब जाता है, किन वस्तुओं को चुम्बक आकर्षित करती है)	• प्राकृतिक परिघटनाओं सम्बन्धी बड़े सवालों को समझने के लिए छोटे सवालों की तालिका विकसित करती है • प्राकृतिक परिवेश में पैटर्न्स के बारे में सवाल पूछती है (मसलन अलग-अलग क़िस्म की पत्तियाँ और फूल, सूर्योदय व सूर्यास्त)	• प्राकृतिक परिघटनाओं सम्बन्धी 'क्यों' वाले सवाल पूछती है, अनसुलझे सवाल पूछती है, संवाद और/या खोज के ज़रिए इनके जवाब ढूँढ़ती है (मसलन बारिश क्यों होती है, अगर सूरज की रोशनी न हो तो क्या होगा)
6	• किसी एक की क्रियाओं/व्यवहार का दूसरे पर क्या असर पड़ा, इसकी व्याख्या करती है (मसलन कुत्ते को पत्थर से मारना असहाय प्राणी को चोट पहुँचाना है, नल को बन्द न करने से पानी बर्बाद होता है)	• पौधों, पक्षियों और जानवरों की ज़रूरतों पर विचार व्यक्त करती है	• साझा प्राकृतिक संसाधनों की अवधारणा की व्याख्या करती है (मसलन पानी का इस्तेमाल हम, पक्षी और पौधे, सब करते है)	• प्राकृतिक पर्यावरण और मनुष्यों के बीच आपसी निर्भरता पर बातचीत करती है (मसलन घरों में पानी जलाशयों से आता है)	• मानव समाज की ज़रूरतों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच सन्तुलन कैसे बनाए रखा जाना चाहिए, इस पर बातचीत करती है (मसलन अगर हम जानवरों के प्रति दयालु होंगे तो वे हमारे साथ काम करने में सक्षम होंगे, बीमारियों से बचने के लिए कचरे का सही निपटान ज़रूरी है)

C-7.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 28

	A	B	C	D	E
	C-7.3 : दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• चित्र बनाने/रंगने के सरल उपकरणों का इस्तेमाल करने में निपुणता दिखाती है	• खेलते समय सरल उपकरणों के उपयोग के प्रति झुकाव प्रदर्शित करती है • डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री के साथ अन्तःक्रिया करते समय ध्यान और नियंत्रण प्रदर्शित करती है	• खेत में काम करते हुए या कला/शिल्प में उचित काम के लिए उचित उपकरण चुनती है • शिक्षक की मदद से डिजिटल तकनीकी मसलन स्मार्टफोन / टैबलेट से जुड़ती है	• काम की स्थितियों में औज़ारों और उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करती है • सीखने की स्थितियों में डिजिटल तकनीक का सरल उपयोग करती है (मसलन श्रव्य-दृश्य सामग्री को शुरू करना/रोकना)	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में इस्तेमाल के लिए सरल औज़ार और उपकरण बनाती है • सीखने की स्थितियों में डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग करने में धाराप्रवाहिता और सहजता दिखाती है

CG-8: बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

बहुत ज़रूरी है कि प्रतीक रूप में संख्याओं और संक्रियाओं (जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि) के परिचय से पहले बच्चों को गिनना, क्रमबद्धता, छाँटना जैसी गणित-पूर्व अवधारणाओं और पैटर्न संबंधी कार्य से जोड़ा जाए। इससे संख्या ज्ञान (numeracy) संबंधी प्रक्रियात्मक प्रवाह के साथ-साथ अवधारणात्मक समझ विकसित करने में बेहद मदद मिलती है।

C-8.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 29

	A	B	C	D	E
	C-8.1 : चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• आकार, लम्बाई, ऊँचाई और वज़न के आधार पर चीज़ों को दो समूहों में छाँटती है (बड़ा-छोटा, लम्बा-छोटा)	• आकार, लम्बाई, ऊँचाई और वज़न के आधार पर चीज़ों को तीन समूहों में छाँटती है (छोटा आकार-बड़ा आकार-उससे बड़ा आकार)	• चीज़ों को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटती है, जिन्हें वह पहचानती है	• चीज़ों को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटती है जिन्हें वह पहचानती है, और इस छाँटने के नियम बताती है, (समान परिवेश में रहने वाले जानवरों को छाँटना - कुत्ते, बिल्लियाँ, चूहे, साँप; इन जानवरों में वह घास खाने वाले और मांस खाने वाले जानवरों के बीच छँटनी कर पाती है)	• चीज़ों को समूहों और उप-समूहों में छाँटती है (मसलन ब्लॉकों के एक समूह में, पहले रंग के आधार पर छाँटना, फ़िर रंग के भीतर आकृति के आधार पर छाँटना, फ़िर आकार के आधार पर छाँटना। पेड़ों और लताओं के बीच छाँटना, इनमें फलदार और ग़ैर-फलदार को छाँटना, उसके भीतर खाद्य या अखाद्य को छाँटना)

C-8.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 30

	A	B	C	D	E
	C-8.2 : अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानते और उनका विस्तार करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• चीज़ों, चित्रों व आकृतियों के पैटर्न्स को जोड़े में पहचानती और दोहराती है - (पत्ती, फूल, पत्ती, फूल, A B A B A B A B A B A B A पैटर्न में) • ध्वनियों के पैटर्न को पहचानती और दोहराती है (दा-मा-गा, दा-मा-गा, आदि) • गतियों के पैटर्न को पहचानती है और दोहराती है (उछलो-खड़े हो, उछलो-खड़े हो)	• दोहराए जाने वाले पैटर्न को पहचानती है, और तीन से चार चीज़ों/ चित्रों/ आकृतियों को ABC|ABC|ABC (कलम-किताब-पेंसिल; कलम-किताब-पेंसिल) के पैटर्न पर बढ़ाती है • क्रियाओं / ध्वनियों के पैटर्न को पहचानती, दोहराती और बढ़ाती है • तीन अलग-अलग शारीरिक गतिविधियों के पैटर्न को स्पष्ट रूप से पहचानती और दोहराती है	• अलग-अलग विशेषताओं - रंग, आकृति व आकार पर आधारित नए पैटर्न बनाती है • पैटर्न के नियम बताते हुए विभिन्न वस्तुओं में नए पैटर्न बनाती है (टहनियों, फूलों के साथ गुच्छे बनाना)	• वयस्कों की मदद से विभिन्न रूपों में दोहराए जाने वाले सरल पैटर्न्स (मसलन लाल - नीला, लाल, नीला, लाल, __;) के बीच ग़ायब तत्वों को भरती है।	• पैटर्न के नियमों को बताते हुए इन्हें संख्या व प्रतीक जैसे अमूर्त पैटर्नों और analogic विचार पैटर्नों पर लागू करती है (मसलन रेखांकन करते हुए या चित्र बनाते हुए रंगों का इस्तेमाल। प्रतीकों या बिन्दुओं की समान मात्रा का अलग-अलग पैटर्न्स में इस्तेमाल Analogical

C-8.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 31

	A	B	C	D	E
	C-8.3 : सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• सही क्रम/सन्दर्भ के साथ मौखिक रूप से 5 तक संख्याओं का नाम बोलती/गाती है • 3 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करते हुए गिनने में वयस्कों की नक़ल करती है • वस्तुओं को 3 तक गिनती है और 3 तक कुल मात्रा (cardinality) की समझ विकसित करती है (मसलन एक समूह की 3 चीज़ों को गिनती है और कहती है कि वे 3 हैं) • घालमेल में दी गई या वस्तुओं को गिनती है और अधिकतम 5 चीज़ें उठा और छोड़ सकती है। • 3 वस्तुओं तक, दो समूहों के बीच मात्रा की तुलना करती है और उनमें अन्तर कर सकती है कि वे बराबर हैं या कम-ज़्यादा	• संख्याओं को सही क्रम में 10 तक बोलती/गाती है और 5 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करती है • कुल मात्रा (cardinality) की समझ के साथ वस्तुओं को 5 तक गिनती है (समूह की मात्रा को पहचान पाना) • संख्या बोध की समझ प्रदर्शित करती है (मसलन 5, अलग-अलग 5 वस्तुएँ - 5 लोग, 5 किताबें, 5 पेंसिलें हो सकती है) • 5 तक ठोस और discrete वस्तुओं तथा अमूर्त चीज़ों को गिनमें में प्रवाह दिखाती है (मसलन 5 क़दम, 5 तालियाँ) • स्मृति से सही क्रम में 10 तक गिनती करती है • 20 तक गिनती करना शुरू करती है	• संख्याओं को सही क्रम में 20 तक बोलती/गाती है और 10 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करती है • कुल मात्रा (cardinality) की समझ के साथ वस्तुओं को 10 तक सही-सही गिनती है • किसी दिए गए समूह में वस्तुओं को किसी भी क्रम में सही-सही गिनती है और समझती है कि मात्रा समान ही रहती है, चाहे जिस क्रम में वस्तुओं की गिनती की जा रही हो (मसलन मुट्ठी भर मोती देने पर बच्ची किसी भी क्रम में उन्हें गिन सकती है और सही मात्रा बता सकती है) • किसी समूह में वस्तुओं को कम करके गिनती (उल्टी गिनती करती) हुई 0 की अवधारणा को एक संख्या के रूप में समझती है (मसलन 3 मोतियों में से एक-एक कम करके उल्टी गिनती करती हुई, 1 मोती के बाद क्या बचा?) • संख्या की कुल मात्रा या मान (face value) और क्रम (positioning value-ordinality) दोनों के रूप में समझ और किसी वस्तु की दाहिने से बाएँ या बाएँ से दाहिने क्रम में स्थिति को प्रदर्शित करती है (ordinal position) • उदाहरण : नीचे दिए गए क्रम में 	• 20 से ज़्यादा वस्तुओं को 99 तक के संख्या नामों का उपयोग करके गिनती है और 99 तक की संख्याओं को 10-10 के समूहों के पैटर्न में देखती है • किसी ख़ास संख्या (0 से 99 के बीच) से सीधी और उल्टी गिनती करती है	• सीधी बढ़ती हुई संख्या रेखा या ब्लॉकों/ तस्वीरों में 2 या 3 छोड़कर गिन सकती है • दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके भारतीय numerals को निन्यानवे तक पढ़ती और लिखती है • 10-10, 20-20 और 30-30 के समूहों में 99 तक गिनती है

• 2 या 3 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है	• 4 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है (मसलन 4 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स)	• 6 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है (मसलन 6 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स)	• 2 समूहों में मात्राओं को पहचानती है (मसलन 10 के दो समूह मिलकर 20 बन जाते हैं)

C-8.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 32

	A	B	C	D	E
	C-8.4 : 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिचित प्रसंगों/ घटनाओं/वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करती है (जैसे, दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, 2 से 3 आकार	• वस्तुओं को 3 स्तरों तक के आकार के आधार पर व्यवस्थित करती है और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताती है (बड़ा - छोटा - उससे छोटा; लम्बा - छोटा - उससे छोटा; ऊँचा - नीचा- उससे नीचा)	• आकार/लम्बाई / वज़न के आधार पर 5 वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करती है	• वस्तुओं के विभिन्न गुणों (मसलन आकार/ लम्बाई/वज़न/रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग-अलग क्रम में व्यवस्थित करती है	• संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

C-8.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 33

	A	B	C	D	E
	C-8.5 : दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानते और उनका उपयोग करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• 3 तक की दो संख्याओं की (मौखिक रूप से) तुलना करती है व अधिक और कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• 5 तक के अंकों को पहचानती है • 5 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• 9 तक के भारतीय अंकों को पहचानती है • 9 तक के भारतीय अंकों को आराम से लिख लेती है • 9 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• वस्तु/चीज़ की अनुपस्थिति को दिखाने के लिए शून्य के प्रतीक चिह्न को पहचानती है • 20 तक की संख्याओं को पहचानती और लिखती है और 10 तक की संख्याओं को शब्दों में लिखती है • 20 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करके 99 तक के संख्या नामों और संख्या चिह्नों को पहचानती, पढ़ती और लिखती है (दी गई संख्याओं के बिना दोहराव या दोहराव के साथ) • दो अंकों की सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्या बनाती है और उनकी तुलना करती है

C-8.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 34

	A	B	C	D	E
	C-8.6 : संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• मौखिक जवाब की बजाय समूह बनाने (grouping) और समूह को खोलने (ungrouping) के ज़रिए बहुत ही छोटे समूहों / मात्राओं (कुल 3 तक) को पास लेती /हटाती है	• 5 वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाती / एकत्र करती है और फ़िर से गिनती है (मसलन मेरे पास 2 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर, व गिनकर मुझे बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं) • किसी समूह से अधिकतम 5 चीज़ें निकालती है और उन्हें फ़िर से गिनती है	• 9 वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाती / एकत्र करती है और फ़िर से गिनती है (मसलन मेरे पास 5 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर, व गिनकर मुझे बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं) • किसी समूह से अधिकतम 9 चीज़ें निकालती है और उन्हें फ़िर से गिनती है	• वास्तविक जीवन की स्थितियों और ठोस वस्तुओं के इस्तेमाल से, जोड़ तथ्यों का उपयोग करते हुए 18 तक के जोड़ का मॉडल बनाती है और हल निकालती है • वास्तविक जीवन की स्थितियों और ठोस वस्तुओं के इस्तेमाल से, घटाव तथ्यों का उपयोग करते हुए 9 तक के घटाव की समस्याओं का मॉडल बनाती है और हल निकालती है (मसलन दी गई चॉकलेटों के समूह से चॉकलेट निकालना) • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्ध विकसित करती है • जोड़ और घटाव की संक्रियाओं के +/- चिह्नों को पहचानती है	• लचीली रणनीतियों का इस्तेमाल करते हुए संख्याओं के संयोजन (साथ मिलाने) और वियोजन (समूह में से निकाल देने) का मेल हासिल करती है, (मसलन 57 + 33 के जवाब के लिए बच्ची 33 में से 3 निकाल सकती है, उसे 57 में जोड़कर 60 बना सकती है और फ़िर उसमें 30 जोड़कर 90 तक पहुँच सकती है) • स्थानीय मान की अवधारणा का इस्तेमाल करते हुए दो संख्याओं को जोड़ती है (जिनका योग 99 से ज़्यादा न हो) और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं / परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करती है • स्थानीय मान की अवधारणा का इस्तेमाल करते हुए 99 तक की किन्हीं दो संख्याओं को घटाती है और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं / परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करती है • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्ध को समझती है और उन्हें लागू करती है • परिचित स्थिति/सन्दर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करती है • सरल इबारती सवालों (word problems) को समझती है और हल करती है

C-8.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 35

	A	B	C	D	E
	C-8.7 : गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानते-समझते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1			• चीज़ों के छोटे समूह बनाती है और वस्तुओं और समूहों की कुल संख्या गिनती है	• समूहीकरण के ज़रिए छोटी संख्याओं के गुणा के सवालों को हल करती है • गुणा संक्रिया के चिह्न को पहचानती है	• 99 तक की संख्या में बार-बार जोड़कर गुणा के सरल सवालों को हल करती है
2	• दिए गए चीज़ों के समूह को कई प्राप्तकर्ताओं (recipients) में बाँटती है	• 2 प्राप्तकर्ताओं में चीज़ों (6 तक) को बराबर बाँटती है	• 4-5 प्राप्तकर्ताओं में चीज़ों (20 तक) को बराबर बाँटती है	• भाग के सवालों को हल करने के लिए trial and error तथा समूहों में बाँटने का तरीक़ा इस्तेमाल करती है • भाग संक्रिया के चिह्न को पहचानती है	• भाग के सवालों को हल करने के लिए कितने समूह बनेंगे, यह पता करने के लिए बार-बार घटाव का इस्तेमाल करती है

C-8.8: सीखने के प्रतिफल

तालिका 36

C-8.8 : बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझते व समझाते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• किसी एक गुण, आकृति, आकार या रंग द्वारा चीज़ों का मिलान करती है • आकृति, रंग और आकार जैसे किसी एक कारक के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है • सरल निर्देशों का पालन करती है और आकृति, रंग और स्थिति के आधार पर वस्तुओं को रखती है - मसलन लाल गुब्बारा यहाँ लाओ, मेज़ पर गोल गेंद रखो	• विभिन्न आकारों और रंगों की आकृतियों का मिलान करती है • दो कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है (मसलन आकृति और रंग, रंग और आकार) • विभिन्न ठोसों/ आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होती है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं) • स्थितिबोधक शब्दों (positional words) को समझते हुए कोई पैटर्न बनाने के लिए अलग-अलग आकृतियों, रंगों व स्थितियों के लिहाज़ से दिए गए कई चरणों वाले निर्देशों को समझती है (मसलन स्थितिबोधक शब्दों- बीच में, ऊपर, नीचे, को समझकर कई चीज़ों से गुच्छों / मंडलों का निर्माण करती है; कोलाज बनाती है)	• विभिन्न आकार और orientation की आकृतियों का मिलान करती है (मसलन अलग ओरिएंटेशन में रखे त्रिभुज और आकार?) • तीन कारकों (जैसे आकृति, रंग व आकार) के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है • चीज़ों का वर्णन करने के लिए स्थितिबोधक शब्दों का इस्तेमाल करती है (मसलन बगल में, अंदर, नीचे) • विभिन्न ठोसों/आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होता है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं) • किसी समतल सतह पर त्रिविमीय आकृतियों के फलकों की tracing करके द्विविमीय आकृतियों की पहचान करती है • थोड़ी सटीकता और नियंत्रण के साथ द्विविमीय आकृतियों को फ्री हैण्ड से बना लेती है	• स्थानिक सम्बन्ध (जैसे, ऊपरी (top), निचला (bottom), ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर, पास, दूर, पहले, बाद) की शब्दावली विकसित करती है और उसका इस्तेमाल करती है • परिवेश से अलग-अलग आकार और आकृति वाली चीज़ें इकट्ठी करती है (मसलन कंकड़, डिब्बे, गेंद, शंकु, पाइप) • आकृति और अन्य अवलोकनीय गुणों के आधार पर वस्तुओं को छाँटती व वर्गीकृत करती है और उनका वर्णन करती है • विभिन्न ठोसों/आकृतियों की भौतिक विशेषताओं को देखती है और उनका वर्णन अपनी भाषा में करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है, बॉक्स सरकता है) • ख़ास विशेषताओं (मसलन लम्बाई, क्षेत्रफल, आयतन) के आधार पर आकृतियों की तुलना करती है	• त्रिविमीय आकृतियों को उनके नाम (मसलन घनाभ, बेलन, शंकु और गोला) से पहचानती है और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताती है (मसलन एक घन के छह फलक होते हैं) • द्विविमीय आकृतियों को उनके नाम (मसलन वर्ग, आयत, त्रिभुज और वृत्त) से पहचानता है और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताती है (मसलन किसी पुस्तक के पृष्ठ आयताकार होते हैं और उनमें 4 भुजाएँ व 4 कोने होते हैं) • सीधी और घुमावदार रेखाओं के बीच भेद करती है और विभिन्न orientations (मसलन लम्बवत, क्षैतिज, तिरछी) में सीधी रेखाएँ खींचती / प्रदर्शित करती है • त्रिविमीय वस्तुओं की द्विविमीय outlines को trace करती है • वस्तुओं की छाया देखकर उनकी पहचान करती है

C-8.9: सीखने के प्रतिफल

तालिका 37

	A	B	C	D	E
	C-8.9 : अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	**लम्बाई** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से लम्बाई व्यक्त करने के लिए शब्दावली (लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई व दूरी) का इस्तेमाल करती है	**लम्बाई** • दो वस्तुओं की तुलना उनकी लम्बाई के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा लम्बी है और कौन ज़्यादा छोटी, कौन ज़्यादा ऊँची है और कौन ज़्यादा छोटी	**लम्बाई** • तीन वस्तुओं की तुलना उनकी लम्बाई के सन्दर्भ में करती है कि कौन सबसे ज़्यादा लम्बी है और कौन सबसे ज़्यादा छोटी, कौन सबसे ज़्यादा ऊँची है और कौन सबसे ज़्यादा छोटी	**लम्बाई** • पास-दूर, पतला-मोटा, उससे लम्बा/बड़ा- उससे छोटा, ऊँचा-नीचा में अन्तर करती है • छोटी लम्बाइयों को असमान इकाइयों में मापती है (खेल के सन्दर्भ में मसलन 'गुल्ली-डंडा', कंचों का खेल) • कम दूरी और लम्बाई का अनुमान लगाती है, और असमान व अमानक इकाइयों की सहायता से उनकी पुष्टि करती है (मसलन बालिश्त, हाथ (forearm), कदम, अंगुल)	**लम्बाई** • समान (अमानक) इकाइयों का उपयोग करके लम्बाई और दूरी के साथ छोटे और लम्बे रास्तों को मापती है और इसे बड़ी लम्बाइयों तक में इस्तेमाल करती है • छड़ी/पेंसिल, कप/चम्मच/बाल्टी जैसी अमानक इकाइयों का उपयोग करके लम्बाई/दूरी और बर्तनों/पात्रों की धारिता का अनुमान लगाती है और मापती है
2	**वज़न** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से वज़न व्यक्त करने के लिए शब्दावली का इस्तेमाल करती है	**वज़न** • दो वस्तुओं की तुलना उनके वज़न के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा भारी है और कौन ज़्यादा हल्की	**वज़न** • तीन वस्तुओं की तुलना उनके वज़न के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा भारी है और कौन ज़्यादा हल्की	**वज़न** • भारी और हल्की वस्तुओं की तुलना करती है और उन्हें भारी से हल्की और हल्की से भारी के क्रम में लगाती है	**वज़न** • सामान्य तराजू (simple balance) की ज़रूरत को समझती है • सामान्य तराजू (simple balance) का उपयोग करके दी गई वस्तुओं के वज़न की तुलना करती है
3		**आयतन** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से आयतन को व्यक्त करने के लिए शब्दावली का इस्तेमाल करती है	**आयतन** • दो बर्तनों, बोतल, गिलास, बाल्टी आदि के आयतन की तुलना करती है	**आयतन** • कप/चम्मच/मग जैसी समान अमानक इकाइयों का इस्तेमाल करके बर्तनों/पात्रों के आयतन का अनुमान लगाती है और उन्हें मापती है	**आयतन** • अपनी धारणा के आधार पर बर्तनों/पात्रों को उनके आयतन के लिहाज़ से क्रमवार लगाती है और उड़ेलकर (by pouring out) पुष्टि करती है

C-8.10:सीखने के प्रतिफल

तालिका 38

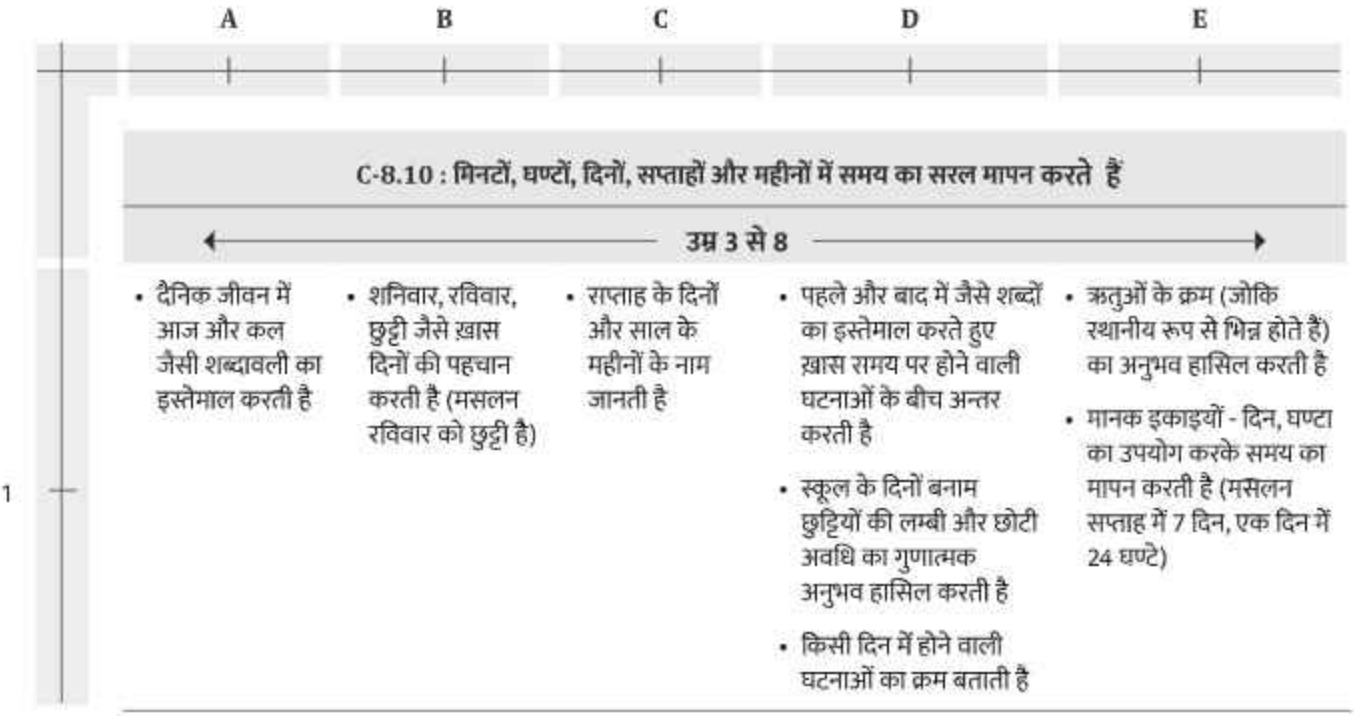

C-8.11:सीखने के प्रतिफल

तालिका 39

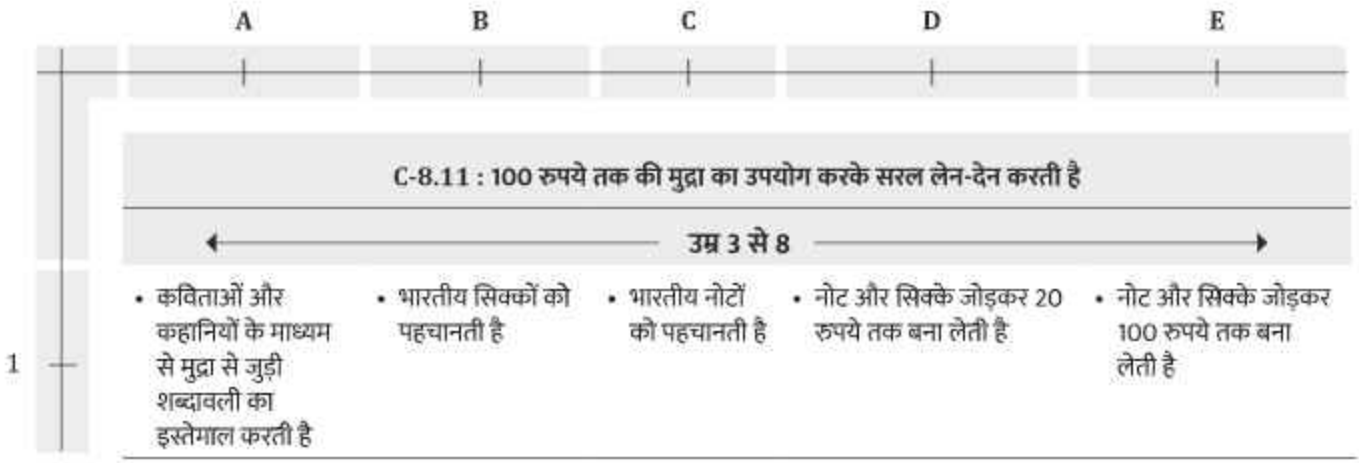

C-8.12:सीखने के प्रतिफल

तालिका 40

	A	B	C	D	E
	C-8.12: मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• आकृतियों के नाम और उनके कुछ गुण बताती है	• संख्या नामों और आकृतियों के नामों का इस्तेमाल करते हुए आसान निर्देशों को सुनती और समझती है • संख्या नामों और आकृतियों के नामों का समुचित इस्तेमाल करती है	• संख्या नामों व संक्रियाओं और आकृतियों के नामों और मापन का समुचित इस्तेमाल करती है	• मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित गणितीय समस्या बताने के लिए पूरे वाक्यों का निर्माण करती है	• Texts को समझती है और उनमें अन्तर्निहित सरल गणितीय समस्याओं को निकाल लेती है • सरल गणितीय पहेलियाँ (riddles and puzzles) बनाती है

C-8.13:सीखने के प्रतिफल

तालिका 41

	A	B	C	D	E
	C-8.13 : मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• ज्यामितीय और ग़ैर-ज्यामितीय आकृतियों के सहारे सरल इनसेट पहेलियों को हल कर लेती है	• टैनग्राम (tangram) आकृतियों से विशिष्ट figure बना लेती है	• सरल पहेलियों को हल करने के लिए अपने संख्या ज्ञान का इस्तेमाल करती है	• वास्तविक दुनिया की स्थितियों को सरल गणितीय समस्याओं के रूप में पहचानती है • विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके सरल संख्यात्मक समस्याएँ हल करती है	• सामान्य गणितीय समस्या हल करने के विभिन्न तरीक़ों के बारे में बातचीत करती है • गलती पकड़ने के लिए सवालों के हल की फ़िर से जाँच करती है • उन खेलों और पहेलियों से जुड़ते हैं जिनमें मात्रात्मकता की ज़रूरत होती है

1.1.4 भाषा और साक्षरता विकास

भाषा और साक्षरता विकास, शिक्षा के मूलभूत लक्ष्यों में शामिल हैं। हर तरह की समझ हमारी भाषाई क्षमताओं के ज़रिए ही बनती है। हमारी भाषाई क्षमताओं और संज्ञान के बीच बहुत गहरा रिश्ता होता है। चाहे वह सम्प्रेषण के रूप में हो, समझ के माध्यम के रूप में हो या सौन्दर्यात्मक अनुभवों के रूप में हो, भाषा, इन्सानी अनुभव के केन्द्र में होती है। हमारे इन्सानी बायोलॉजी में भाषा जन्मजात रूप से होती है, पर साक्षरता चूँकि एक सांस्कृतिक उपलब्धि है और इसलिए इसकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होती है। साक्षरता, सिर्फ़ टेक्स्ट को पढ़ लेना (decoding) नहीं है, बल्कि उससे अर्थ निर्माण करना है, उस दुनिया का अर्थ निकालना है, जिसका ये टेक्स्ट प्रतिनिधित्व करते हैं।

CG-9: बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं

बच्चे की मौखिक भाषा के विकास के लिए फाउंडेशनल स्टेज पर पर्याप्त समय और प्रयास की ज़रूरत है। मौखिक भाषा दक्षताओं की मज़बूत नींव पर बुनियादी साक्षरता विकसित होती है। समय से पहले बहुत छोटे बच्चों को, जो अभी मौखिक भाषा हासिल करने के शुरुआती स्तर पर हों, लिपि से परिचय कराना उनके साक्षरता विकास के प्रतिकूल पड़ सकता है।

C-9.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 42

	A	B	C	D	E
	C-9.1 : सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनते-सराहते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• विभिन्न तरह के गीत और कविताएँ सुनती है	• घर और आस-पड़ोस में नियमित रूप से विभिन्न भाषाओं में तरह-तरह के गीत सुनते और गुनगुनाते हुए उनका आनन्द लेती है	• बड़े (4-8 वाक्य के) (परिचित) गीत व कविताएँ ध्यान से सुनती है और उनके बारे में बातचीत करती है	• बड़े (4-8 वाक्य के) (अपरिचित) गीत व कविताएँ ध्यान से सुनती है और उनके बारे में बातचीत करती है, सवाल पूछती है	• कुछ ख़ास तरह के गीतों और कविताओं को सुनने की रुचि दिखाती हैं और अपनी पसन्द का कारण बताती है
2	• सामान्य गीत या तुकबन्दी को दोहराती है	• गीतों और तुकबन्दियों को स्वर व हावभाव के साथ गाती है	• छोटे गीतों/कविताओं (4-5 वाक्य वाली) का पाठ करती है, गाती है	• बड़े गीतों/कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करती है, गाती है	• दो या तीन छन्दों वाले गीतों/कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करती है, गाती है

C-9.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 43

	A	B	C	D	E
	C-9.2 : ख़ुद सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिचित गीतों और कविताओं का आनन्द लेती है	• गानों और कविताओं में तुकांत वाले शब्दों का आनन्द लेती है	• परिचित कविताओं से तुकांत वाले शब्दों की पहचान करती है और नए तुकांत वाले शब्द बनाती हैं	• शिक्षक की मदद से छोटी कविताओं / तुकबन्दी का विस्तार/ निर्माण करती है	• अपने शब्दों में स्वतंत्र रूप से छोटी कविताएँ/ तुकबन्दियाँ बनाती है

C-9.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 44

	A	B	C	D	E
	C-9.3 : धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• ध्यान से सुनती है और आसपास के परिचित लोगों के साथ छोटी-छोटी बातचीत करती है	• स्कूल में तरह-तरह की स्थितियों में हर रोज़ अपने दोस्तों और शिक्षकों से बातचीत शुरू करती है	• घटनाओं, कहानियों या अपनी ज़रूरतों के आधार पर बातचीत में शामिल होती है और सवाल पूछती है	• बातचीत में शामिल होती है, बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार करती है, और दूसरों को बोलने देती है	• तरह-तरह के भाषिक आदान-प्रदान में भी बातचीत के सूत्र को बनाए रखती है
2	• छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से अपनी ज़रूरतों और भावनाओं को व्यक्त करती है	• दैनिक अनुभवों को सरल वाक्यों में बताती है और क्या/कब/कैसे/ किससे आदि का उपयोग करते हुए सरल सवाल पूछती है	• दैनिक अनुभवों का विस्तृत विवरण वर्णन करती है और क्यों वाले सवाल भी पूछती है	• कक्षा में पढ़कर सुनायी गई या जिस पर चर्चा हो, ऐसी ग़ैर-कथात्मक सामग्री के साथ जुड़ती है, ज्ञान को अपने ख़ुद के अनुभवों से जोड़ने में सक्षम है और इसके बारे में बात करती है	• किसी विषय के बारे में चर्चा में शामिल होती है, सवाल उठाती है और सवालों के जवाब देती है

C-9.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 45

	A	B	C	D	E
	C-9.4 : किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• छोटे निर्देशों को सुनती है और उनका पालन करती है (मसलन ब्लॉक यहाँ लाओ, अच्छी तरह से हाथ धोओ आदि)	• कई चरण वाले कुछ सरल निर्देशों (एक बार में 2 से 3 निर्देश) का पालन करती है	• कई चरणों वाले निर्देशों का पालन करती है - जिनमें एक बार में 4 से 5 निर्देश हों	• कई चरणों वाले निर्देशों का पालन करती है - जिनमें एक बार में 8 से 9 निर्देश हों	• सशर्त विभाजनों (conditional branching) वाले निर्देशों का पालन करती है (मसलन यदि बारिश हो रही है, तो पौधों को पानी मत दो, बजाय इसके निराई करो, अगर बारिश न हो तो पौधों को पानी दो)
2			• छोटे काम पूरे करने के लिए दूसरे बच्चों या वयस्कों को स्पष्ट निर्देश देती है	• कई चरणों वाले स्पष्ट निर्देश (एक बार में 8-9 निर्देश) देती है	• स्पष्ट निर्देश देती है जिसमें गणित शामिल हो (मसलन सटीक दिशाएँ, स्थान और समय सम्बन्धी आयाम)

C-9.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 46

	A	B	C	D	E
	C-9.5 : सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, को पहचानते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• थोड़े समय (5-7 मिनट) के लिए कहानियों को ध्यान से सुनती है	• सुनाई गई कहानी के पात्रों और कुछ घटनाओं को याद करती है और उसे अपने शब्दों में फ़िर से बता लेती है	• कहानी में कथानक और पात्रों की पहचान करती है और कहानी की शब्दावली का उपयोग करके सही क्रम में फ़िर से कहानी बताती है	• कहानी में पात्रों व कथानक के आशय की व्याख्या करती है और कहानी को अलग रूप में फ़िर से कहती है	• कहानी लिखने के लिए लेखक की प्रेरणाओं की व्याख्या करती है और कहानी को फ़िर से बतौर लेखक कहती है

C-9.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 47

	A	B	C	D	E
	C-9.6 : स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• कहानी के अन्त की कल्पना ख़ुद करती है और उसे सुनाती है	• सरल कथानकों और पात्रों के साथ ख़ुद की छोटी कहानियाँ सुनाती है	• जटिल कथानकों और कई पात्रों के साथ ख़ुद की कहानियाँ बनाती है (समूह में)		

C-9.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 48

	A	B	C	D	E
	C-9.7 : प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका इस्तेमाल करते हैं और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• कुछ सामान्य और परिचित वस्तुओं व अनुभवों के लिए उपयुक्त शब्दावली का इस्तेमाल शुरू करती हैं (मसलन अपना नाम, दोस्तों के नाम, सामान्य चीज़ें, चित्र, मीठा, खट्टा, गोल, बड़ा)	• ख़ास प्रसंगों और कक्षा में प्रस्तुत विषयों से प्राप्त शब्दावली का अपनी बातचीत में इस्तेमाल करती है	• क्रियाबोधक शब्दों, वर्णनात्मक शब्दों, काल आदि के सायास इस्तेमाल के साथ विस्तृत शब्दावली का प्रयोग करती है	• चित्र और सन्दर्भ संकेतों का इस्तेमाल करते हुए अनजान शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाती है	• पाठों में सामने आए अनजान शब्दों के अर्थ जानने के लिए बच्चों के शब्दकोषों का उपयोग करती है

CG-10: बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

मौखिक भाषा का विकास भाषाई माहौल में तल्लीनता और समाजीकरण के ज़रिए स्वाभाविक रूप से होता है। लिखित भाषा एक सांस्कृतिक artefact होती है, जो स्वाभाविक रूप से प्राप्त नहीं होती। बच्चों को अपनी हासिल मौखिक भाषा और उसी भाषा की लेखन प्रणाली (लिपि) के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। पहले यह समझना होगा कि हम उन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें अर्थ होता है, इन शब्दों को उन ध्वनियों में विभाजित किया जाता है जिन्हें लिपि में प्रतीकों के रूप में दिखाया जाता है। लिपि पढ़ने और लिखने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। बच्चा लिपि के सभी वर्ण सीख ले, इसके इन्तज़ार में अर्थ-निर्माण को स्थगित नहीं किया जाना चाहिए।

C-10.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 49

C-10.1 : L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• तुकबन्दी गाती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करती है		
2	• शब्दांश (syllables) ध्वनियों की नक़ल और पुनरुत्पादन करती है	• शब्दों में शुरुआत और अन्त के शब्दांशों की पहचान करती है	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ती है		
3		• 2-3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाती है	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ती है		

C-10.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 50

C-10.2 : किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा के आईडिया को समझते हैं, और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• सामान्य संकेतों, प्रतीक चिह्नों और लेबलों को पहचानती/जानती है (मसलन, ऊपरी आवरण के रंग के आधार पर बिस्कुट का ब्रांड, साबुन का ब्रांड)	• किताब लेकर उसे खोलते और खोजने की जिज्ञासा में पन्ने पलटती है	• बताती है कि छपी हुई सामग्री (किताब, अख़बार, पर्चा) जानकारी प्रदान करती है		
2	• छपे हुए टेक्स्ट और चित्रों के बीच अन्तर करती है	• किसी छपे हुए पृष्ठ पर बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे तक शब्दों का अनुसरण करती है		• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) को पहचानती है	• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) का उचित इस्तेमाल करती है

3	• कहानी में चित्रों पर आधारित परिचित किताबें पढ़ने का नाटक (pretend) करती है	• किसी टेक्स्ट का अनुसरण करते हुए शब्द-जैसी समुचित ध्वनियाँ निकालते हुए पढ़ने का बहाना करती है	• आवरण पृष्ठ को देखकर किताब के बारे में बात करती है (आवरण के संकेतों का इस्तेमाल करके अनुमान लगाती है)

C-10.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 51

C-10.3 : लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• जानती है कि शब्द अक्षरों से बने होते हैं	• अक्षरों (मूलाक्षर/बारहखड़ी/कगुनीता) को देखकर पहचानती है और उन्हें संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू कर देती है	• ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानती है और सम्बन्धित ध्वनियों से उन्हें जोड़ती है	• सभी अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानती है और उन्हें सम्बन्धित ध्वनियों से जोड़ती है	
2		• दो-अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते हैं	• तीन से चार अक्षरों वाले सामान्य शब्दों (ऐसे शब्द भी जिनमें आमतौर पर व्यंजन दो बार आते हैं) को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते हैं	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) को पढ़ लेती है	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) को और ग़ैर-शब्दों (non-words) को सटीक ढंग से पढ़ती है
3		• अपने परिवेश की चीज़ों के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है	• आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली चीज़ों, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है		

C-10.4:सीखने के प्रतिफल

तालिका 52

	A	B	C	D	E
	C-10.4 कहानियों और गद्यांशों को (L1 में) सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• अलग-अलग अक्षर ध्वनियों और दृश्य शब्दों (sight words) को पहचानकर ज्ञात शब्दों वाले छोटे वाक्यों को पढ़ती है	• परिचित शब्दों वाले कुछ वाक्यों को सटीक ढंग से पढ़ती है	• उपयुक्त लय और विराम के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक तरीक़े से पढ़ती है	• उपयुक्त लय, विराम और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक और धाराप्रवाह ढंग से पढ़ती है	

C-10.5:सीखने के प्रतिफल

तालिका 53

	A	B	C	D	E
	C-10.5 : छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझते हैं (L1)				
	उम्र 3 से 8				
1	• "बोल कर पढ़े गए" को सुनती है और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देती है	• शिक्षक के साथ "साझा पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• शिक्षक के साथ "निर्देशित / मार्गदर्शित पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• समान पाठ्य और दृश्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है	• दृश्य सामग्री की तुलना में अधिक पाठ्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है
2	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करती है	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है, पात्रों और कथानक की पहचान करती है और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताती है	• छोटे सरल texts वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ती है, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फ़िर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और टेक्स्ट का इस्तेमाल करती है	• कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करती है और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझती है • कथानक और पात्रों की पहचान करती है	• पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ती और पहचानती है

C-10.6:सीखने के प्रतिफल

तालिका 54

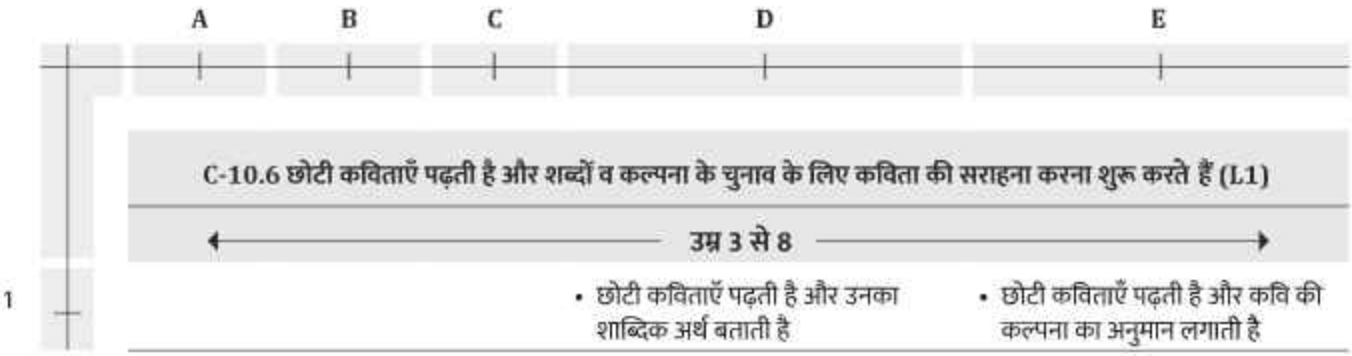

C-10.7:सीखने के प्रतिफल

तालिका 55

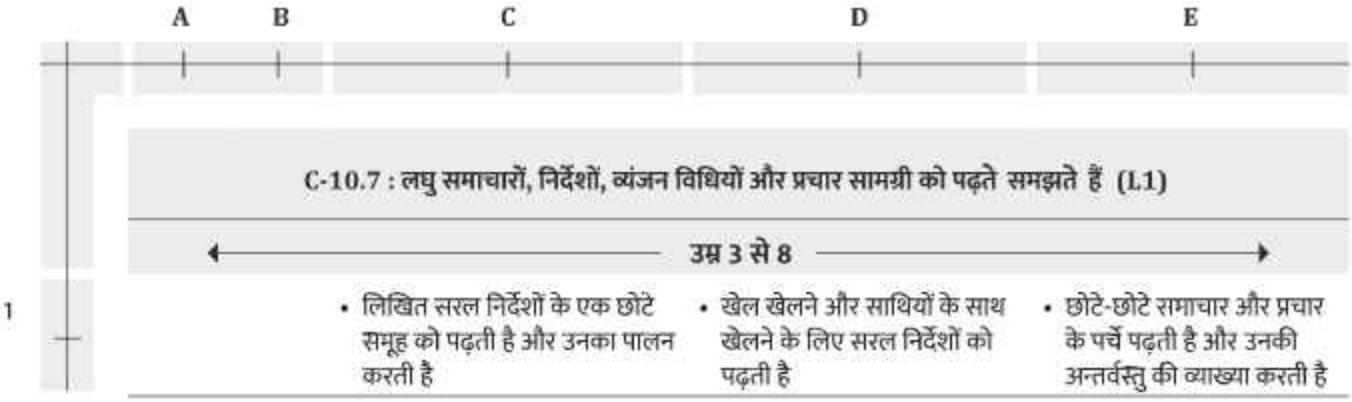

C-10.8:सीखने के प्रतिफल

तालिका 56

C-10.8: अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• विभिन्न लेखन उपकरणों का उपयोग करती है मसलन चॉक का टुकड़ा, पेंसिल, रंगीन पेंसिल, रंगने वाली कूँची	• आसानी और प्रवाह के साथ लेखन/रेखांकन उपकरणों का इस्तेमाल करती है			
2		• ऐसे अक्षर लिखना शुरू करती है जिन्हें वे पहचानती है और उनका उपयोग सरल शब्द बनाने के लिए करती है	• सटीक ढंग से अक्षरों को लिखती है और सरल शब्द व वाक्य बनाती है	• श्रुतलेख कार्य में सटीक तरीक़े से 3 या 4 अक्षरों वाले शब्द लिखती है	• श्रुतलेख कार्य में छोटे वाक्य लिखती है
3	• रेखांकन करती है, चित्र बनाती है और अपने रेखांकन के आशय को मौखिक रूप से व्यक्त करती है	• ज़्यादा सटीक तरीक़े से दृश्य रूपों और वस्तुओं को रेखांकित करती है, रंगती है और मौखिक रूप से रेखांकन/चित्र को समझाती है	• रेखांकन करती है/चित्र बनाती है और रेखांकन/चित्र में सरल शब्द/वाक्य जोड़ती है (अपनी आविष्कृत वर्तनी सहित)	• चित्रों का एक क्रम बनाती है और उनके साथ छोटे वाक्य लिखती है	• चित्रों का एक क्रम बनाती है और उनके साथ सटीक ढंग से छोटे वाक्य लिखती है
4				• शब्द और छोटे वाक्य लिखकर चित्र-कार्ड का वर्णन करती है	• चित्र पुस्तक से अनुमान लगाकर एक कहानी लिखती है
5				• सरल प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए सहपाठियों के लिए संक्षिप्त निर्देश लिखती है	• घटनाओं व अनुभवों के छोटे जर्नल और विवरण लिखती है

C-10.9:सीखने के प्रतिफल

तालिका 57

C-10.9 : विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाते हैं (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• बोलकर पढ़ी जा रही कहानियों और कविताओं में रुचि दिखाती है	• शिक्षक द्वारा दी गई कई पुस्तकों में से एक को चुनती है और बताती है कि उन्होंने पुस्तक को क्यों चुना	• छोटी चित्र पुस्तकों को ख़ुद चुनती और पढ़ती है, दूसरे बच्चों से पुस्तक के बारे में बात करती है	• पुस्तक चुनने में अपनी पसन्द स्पष्ट करती है, नियमित आवृत्ति पर छोटी पुस्तकें पढ़ती है	• तरह-तरह की कथा और ग़ैर-कथा, दोनों तरह की किताबों में दिलचस्पी दिखाती है और उन्हें पढ़ती है
2	• किताबों का ध्यान रखती है	• किताबों को कक्षा में उनके उचित स्थान पर वापस रखती है			• स्कूल के पुस्तकालय में किताबों की मरम्मत करती है और उन्हें ठीक करती है

CG-11: बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं

C-11.1:सीखने के प्रतिफल

तालिका 58

C-11.1 : ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1			• तुकबन्दियाँ गाती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करती है
2			• शब्दांश (syllabic) ध्वनियों की नक़ल और पुनरुत्पादन करती है	• शब्दों में शुरुआत और अन्त के शब्दांशों की पहचान करती है	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ती है
3				• 2-3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाती है	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ती है

C-11.2:सीखने के प्रतिफल

तालिका 59

C-11.2 : लिपि की वर्णमाला के बार-बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का इस्तेमाल सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1				• अक्षरों को देखकर पहचानना और संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू करती है	• वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है
2				• दो-अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते है	• तीन या चार अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित होते हैं • आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली चीज़ों, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है
3				• अपने परिवेश की चीज़ों के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है	
4				• बोला हुआ सुनकर छोटे शब्द लिख लेती है	

1.1.5 सौन्दर्य बोध और सांस्कृतिक विकास

इस आयु वर्ग के बच्चे न केवल कला और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का आनन्द ले रहे होते हैं, बल्कि वे कला के साथ जुड़ाव के माध्यम से अपनी संवेदी और सूक्ष्म मोटर क्षमताओं (fine motor abilities) का भी विकास कर रहे होते हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति, भावनात्मक अभिव्यक्ति और नियमन का भी माध्यम है। कला में बातचीत और काम की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पैटर्न्स का अवलोकन, पुनरुत्पादन और उनका विस्तार करना, सभी कला रूपों के लिए केन्द्रीय कौशल होता है। इसलिए दृश्य कला, संगीत, गतिविधि और नाटक के माध्यम से कला के साथ जुड़ाव, बुनियादी शिक्षा स्तर पर विकास के सभी पहलुओं के साथ समग्र जुड़ाव है। याद रखना होगा कि विकास के इस स्तर पर कौशल निर्माण की बजाय बच्चे की मुक्त और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए।

CG-12: बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

C-12.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 60

	A	B	C	D	E
	C-12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• ज़रूरी कला सामग्रियों, उपकरणों और औज़ारों को पकड़ती है	• कला सामग्रियों, औजारों और उपकरणों (मसलन डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूँचियाँ, क्रेयॉन्स, पाउडर, कैंचियाँ) का इस्तेमाल करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ों का पता लगाती है		• गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों/रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होती है	
2	• दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, गोंजा-गांजी करते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्विआयामी और त्रिआयामी आकृतियों को समझती है		• साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (मसलन फ़र्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाती है	• उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर ख़ुद के काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होती है (मसलन मिट्टी की एक छोटी गुड़िया, या काग़ज़ की एक बड़ी गुड़िया बनाना)	
3	• सामग्रियों (मसलन मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाती है	• मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को बेलकर और थपथपाकर त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाती है	• अपनी व्यवस्था के लिहाज़ से अलग-अलग गाढ़ेपन, रंग और गठन की सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाती है • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रि-आयामी व्यवस्था/संयोजन बनाती है		
4	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे (imprints) बनाती है		• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल पैटर्न बनाती है	• सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के लिहाज़ से मिलाकर और व्यवस्थित करके पैटर्न बनाती है	• किसी सामग्री के साथ जोड़-तोड़ करके तरह-तरह के गठन बनाती है (मसलन मिट्टी, कपड़ा, काग़ज़, रबड़, लकड़ी)

C-12.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 61

	A	B	C	D	E
	C-12.2 : संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करते हैं, उनसे खेलते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• आवाज़ और शरीर के माध्यम से लय की खोज करती है (ताली बजाती है, थपकी देती है, हाथ हिलाती है, कूदती है, उछलती है, लय में गीत पढ़ती है)	• आवाज़, शरीर या दूसरी चीज़ों के साथ लय खोजते समय तेज़ और धीमी गति को अलग करती है	• आवाज़, शरीर या दूसरे वाद्ययंत्रों के साथ खेलते हुए तेज़, मध्यम और धीमी गति में अन्तर करती है	• धीमी और मध्यम गति में सरल लयबद्ध पैटर्न के साथ खेलती है	• गाने और गति में ताल का अनुसरण करती है और परिचित ताल पैटर्न के आधार पर ख़ुद विविधताओं की खोज करती है
2	• आवाज़, शरीर, वस्तुओं और उपकरणों को बजाकर कई तरह की आवाज़ें पैदा करती है	• रोल-प्ले, एकल या समूह संगीत व्यवस्थाओं, नक़ल आदि में आवाज़, शरीर या वाद्ययंत्रों का उपयोग करके सन्दर्भ/स्थिति के अनुसार विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ पैदा करती है	• अपने गाने और बोलने की आवाज़ के बीच अन्तर की पड़ताल करती है और दोनों का उपयोग मस्ती से करती है • गायन और वादन के बीच अन्तर करती है और दोनों को सुनती है	• आवाज़, शरीर, यंत्रों और चीज़ों का इस्तेमाल करके परिचित गीतों या स्थितियों में ध्वनि सुधार करती है (मसलन किसी गीत पर शरीर के विभिन्न अंगों/उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए ताल देना, ध्वनियों के माध्यम से किसी नाटकीय दृश्य का माहौल बनाना)	
3	• आवाज़ या शरीर का उपयोग करते समय या यंत्रों और वस्तुओं को बजाते हुए आवाज़ (तेज़ और धीमी) और पिच (उच्च और निम्न) समझती है		• विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने, संगीत बनाने, चरित्र विकसित करने और स्थितियाँ बनाने के लिए आवाज़ और पिच का उपयोग करती है	• संगीत, स्थान, सन्दर्भ और स्थिति के मुताबिक आवाज़ और पिच को बदलती है	• आवाज़ या वाद्य यंत्र का इस्तेमाल करके पिच का मिलान करने की कोशिश करती है
4	• दैनिक जीवन की परिस्थितियों में मौन और स्थिरता की खोज करती है	• संगीत, नाटक और गतिविधियों के ज़रिए मौन और स्थिरता के क्षणों से खेलती है		• स्थान, सन्दर्भ और स्थिति के मुताबिक मौन और स्थिरता की अलग-अलग अवधियों की खोज करती है	

C-12.3:सीखने के प्रतिफल

तालिका 62

	A	B	C	D	E
	C-12.3 : कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करती है और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• ख़ुद की खोजों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए अपने परिवेश, स्थानीय संस्कृति और कला के उदाहरणों पर ग़ौर करती है	• कलाओं के सम्बन्ध में अपने विचारों, औज़ारों और काम के तरीक़ों को साझा करती है और परिचित उदाहरणों के आधार पर उनमें बदलाव करती है	• कला के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों, विचारों और भावनाओं की पहचान करती है, इनकी व्याख्या करती है और इन्हें अपनी कलात्मक खोजों में लागू करती है	• ख़ास विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए कई दृष्टिकोणों या विविधताओं की खोज करती है (मरालन शरीर, आवाज़, मुखौटे, कठपुतली या गति संयोजनों का इस्तेमाल करके बिल्ली की भूमिका निभाने के कई तरीक़ों के बारे में सोचना) • अपने संसाधनों और कई समाधानों की खोज करते हुए चुनौतियों का अनवरत सामना करती है
2	• वस्तुओं, लोगों और भावनात्मक अनुभवों को प्रतीक के रूप में दिखाने के लिए तरह-तरह के दृश्य विधानों, शारीरिक गतिविधियों और ध्वनियों का निर्माण करती है	• दृश्य और प्रदर्शन के ज़रिए लोगों, जानवरों, पौधों व चीज़ों आदि की कुछ पहचानने योग्य भौतिक और व्यावहारिक विशेषताओं की नक़ल करती है	• अपने विचार और अनुभव व्यक्त करने के लिए रूपों, रंगों, चरित्रों, ध्वनियों, स्थानों व स्थितियों को कल्पना के ज़रिए जोड़ती है	• कला बनाते हुए और उसे देखते हुए विषयवार ब्योरों, भौतिक सामग्री (बनावट, रंग, आकार और रूप), स्थान और परिस्थिति पर ध्यान देती है

C-12.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 63

	A	B	C	D	E
	C-12.4 : कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• व्यक्तिगत और समूह में पैदा होने वाली ध्वनि और गति को समझती है	• दोस्तों के साथ साझेदारी में विभिन्न किस्म की बातें, गतियाँ, आवाज़ें और दृश्य कलाएँ उत्पादित करती है	• जोड़े या समूह में खेलते या प्रदर्शन करते समय बातचीत, गति और ध्वनि का समन्वय करने का प्रयास करती है • किसी जगह पर कला को व्यवस्थित करने या उसके प्रदर्शन में साथियों और सुगमकर्ताओं की मदद करती है	• साथी / समूह के साथ तालमेल बिठाने के लिए ख़ुद की आवाज़, पिच और गति को बदलती है	• रोल-प्ले, संगीत, नृत्य और गति के चरणों का प्रदर्शन करते समय उनके क्रम पर ध्यान देती है

C-12.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 64

	A	B	C	D	E
	C-12.5 : कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करते हैं और इनकी सराहना करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• कलाकृतियों के सम्बन्ध में पसन्द, नापसन्द और अन्य विचारों को मौखिक/ग़ैर-मौखिक रूप से को व्यक्त करती है	• कलाकृतियों के विभिन्न पहलुओं या स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर विचार देती है (मसलन किसी चरित्र की आवाज़ बेहद ऊँची और डरावनी थी)	• विभिन्न कलाकृतियों/व्यवस्थाओं/सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की तुलना करती है और तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ देती है		
2	• कला से सम्बन्धित गतिविधियों के दौरान दूसरों की उपस्थिति को पसन्द करती है	• साथियों के समूह से कला प्रक्रियाओं के दौरान प्रतिक्रियाएँ और विचार साझा करती है	• स्वीकार करती है कि कला में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की निजी प्राथमिकताएँ भिन्न होती है	• कलात्मक विचार और अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में बहुत-सी प्रतिक्रियाओं को साझा करती है और प्रतिक्रियाओं में बहुलता की सराहना करती है	

1.1.6 सीखने की सकारात्मक आदतें

मौजूदा शोध बताते हैं कि विकास के जाने-पहचाने क्षेत्रों के साथ-साथ, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में उच्च स्तरीय कार्यकारी कार्यों (executive functions) और स्व-नियमन पर ध्यान देने से स्कूल के लिए बच्चे की तैयारी पर बहुत असर पड़ता है।

CG-13: बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करते हैं

C-13.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 65

	A	B	C	D	E
	C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म: विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• ख़ुद शुरू की गई गतिविधियों पर थोड़े समय के लिए ध्यान केन्द्रित करती है (मसलन पहेली पर काम करना) • ऐसे एक या दो कामों में रुचि बनाए रखती है जो उन्हें व्यस्त रखते हैं (मसलन संवेदी तालिका से 5-10 मिनट खेलती है)	• वयस्कों के संकेतों और मदद से गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करती है, जैसे रुकावट या विचलन के बावजूद थोड़े वक्त के लिए किसी समूह के लिए पढ़ी जाने वाली कहानियों को सुनना) • अपनी रुचि वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों पर टिकती है (मसलन नाटक में भूमिका निभाती है और 10 मिनट के लिए किसी इलाके की सीमा बनाती है)	• बढ़ती हुई स्वतंत्रता के साथ चित्रकारी या ब्लॉक निर्माण जैसे कामों व गतिविधियों पर लम्बे समय तक ध्यान केन्द्रित करती है • अपनी रुचि वाले कामों के साथ लम्बे समय तक व्यस्त रहती है (मसलन 20 मिनट तक चित्र बनाना) • वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेना शुरू करती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी)	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी) • लम्बे समय (20 मिनट) तक लगातार किसी काम में टिकती है	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी) • लम्बे समय (30 मिनट) तक लगातार किसी काम में टिकती है

C-13.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 66

C-13.2 : स्मृति और मानसिक लचीलापन : समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करते हैं जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेंगे

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• न दिखने वाले चित्र या किसी कहानी को याद करने या मौखिक रूप से वर्णित करने के ज़रिए स्मृति का अभ्यास करती है • याद करती है कि परिचित परिवेश में चीज़ें कहाँ रखीं हैं (मसलन अलमारी से अतिरिक्त कपड़े निकालना)	• अपनी देखभाल या खेलने के लिए ज़रूरी चीज़ों की तालिका को दोहराती है • स्मृति और मिलान करने के सामान्य खेल खेलती है • सरल कामों को पूरा करने के लिए 2 चरण वाले निर्देशों को याद रखती है और उनका पालन करती है (मसलन "अपने हाथ धोओ, फ़िर नाश्ता तैयार करने में मदद करो या नाश्ता खाओ") • कहानियों या गीतों के साथ होने वाली क्रियाओं को याद रखती है	• बहुत से चरणों वाले निर्देशों को पूरा करने के किए कई चरणों को क्रमवार याद रखती है (मसलन पहेली पूरा करो, फ़िर से उसे अलमारी पर रखो, और वापस समूह में शामिल हो जाओ) • दी गई गतिविधि के लिए उठाए गए क़दमों के बारे में दूसरे बच्चों को सिखाती है (मसलन दोस्त को बताती है कि नाश्ता करने से पहले हाथ धोने के लिए साबुन का इस्तेमाल कैसे करें) • 5 वाक्यों तक की छोटी कहानियों और गीतों को याद रखती है और सुना सकती है	• याद करती है और तुरन्त सुना सकती है (मसलन एक ही क्रम में दोहराए गए 4 अंक)	• याद कर सकती है और सुना सकती है, लापता चीज़ों की पहचान कर सकती है (मसलन दो समान दृश्यों, जिनमें एक या दो महत्त्वपूर्ण अन्तर हों, का अध्ययन करती है और अन्तर की पहचान करती है)

2	• दिनचर्या में बदलाव के साथ समायोजन करती है • गतिविधियों के बीच बदलाव के संकेतों को पहचानती है • दैनन्दिन कामों में एक काम से दूसरे काम में संक्रमण कर लेती है	• जब कोई चीज़ पहली बार काम नहीं करती है, तो किसी वयस्क की मदद से किसी अन्य नज़रिए को लागू करने की कोशिश करती है और "संज्ञानात्मक लचीलापन" प्रदर्शित करती है (मसलन किसी संरचना पर चढ़ने का पहला प्रयास जब काम नहीं करता है तब पहुँच से बाहर की चीज़ को अन्य तरीके, अन्य औज़ार या अन्य इन्सान के ज़रिये हासिल करने की कोशिश करती है) • ज़रूरत पड़ने पर किसी काम या गतिविधि से दूसरे काम या गतिविधि पर ध्यान बदल देने की क्षमता प्रदर्शित करती है	• खेल या गतिविधि के नए नियमों से अनुकूलित हो जाती है (मसलन पहले रंग और फ़िर आकृति के आधार पर पत्तों की छँटाई) • समाधान या रणनीति खोजने के लिए वयस्कों और दूसरे बच्चों के विचारों पर ध्यान देती है • वयस्कों के ज़्यादा प्रोत्साहन के बिना लचीलेपन और अनुकूलन की क्षमता प्रदर्शित करती है (मसलन खिलौने साझा करना या नई चीज़ें आजमाना) • अलग-अलग गतिविधियों को आज़माने के वयस्कों के सुझावों पर लगातार प्रतिक्रिया देती है	• कक्षा की स्थितियों को अपनाती और उनके अनुकूल बनती है • कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती है और सुधार के लिए सुझाव लेती है	• सीखने के अनुकूल कक्षा स्थितियों का निर्माण करती है, उन्हें अपनाती है और उनके अनुकूल बनती है • सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती है, सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करती है
3	• अपनी बारी का इन्तज़ार करती है और वयस्क की मदद से थोड़े समय के लिए लाइन में इन्तज़ार करती है	• किसी दोस्त के व्यवहार या बातचीत से दुखी होने पर वयस्कों की मदद खोजती है • दोस्तों के साथ परेशानी जताने के लिए (काटने या धक्का देने की बजाय) वयस्कों की मदद से शब्दों, संकेतों या इशारों का उपयोग करना शुरू कर देती है • वयस्कों की मदद से आवेगमय व्यवहार को रोकना शुरू करती है (मसलन कहानी सुनते वक्त किसी सवाल का जवाब देने की शुरुआती प्रतिक्रिया को शिक्षक के याद दिलाने पर रोक लेती है)	• अधिक स्वतंत्रता के साथ आवेगों को नियंत्रित करती है (मसलन दौड़ने की बजाय चलती है; झपटने की बजाय खिलौने के लिए अपनी बारी के लिए पूछती है; बीच में बोल पड़ने की बजाय विचार साझा करने के लिए इन्तज़ार करती है) • अपने कामों को बार-बार नियंत्रित करने के लिए रणनीतियों का इस्तेमाल करती है, जैसे शारीरिक दूरी बनाना या कोई दूसरा खिलौना या गतिविधि खोजना	• भावनाओं का प्रबन्धन करती है, अपनी बारी का इन्तज़ार करती है, नियमों का पालन करती है, नियम बनाती है, नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करती है और गतिविधियों में बदलाव के लिए सुझाव देती है	

C-13.3:सीखने के प्रतिफल

तालिका 67

	A	B	C	D	E
	C-13.3: अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण: वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करते हैं, सवाल पूछते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• बगीचे में/बाहर समय बिताने में ख़ुश होती है	• प्राकृतिक वातावरण के प्रति जिज्ञासा और आश्चर्य व्यक्त करती है	• अपनी ख़ुशी और आश्चर्य को व्यक्त करने के लिए रेखांकन करती है, चित्र बनाती है, गाती है और नृत्य करती है	• खेल, संगीत और नृत्य के सहारे दूसरे बच्चों के साथ अपनी खुशी साझा करना पसन्द करती है	• अपनी खुशी को अभिव्यक्त और स्पष्ट करने के लिए भाषा का उपयोग करती है
2	• वयस्कों की मदद से तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छान-बीन में उत्सुकता दिखाती है	• वयस्कों की मदद या उसके बिना तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छान-बीन में उत्सुकता दिखाती है	• प्रकृति / आस-पास के परिवेश में मौजूद चीज़ों की छान-बीन करने में जिज्ञासा और उत्सुकता दिखाती है	• उत्सुकता दिखाती है और आस-पास के परिवेश की छान-बीन करने की पहल करती है, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करती है (किसी वयस्क के निर्देशन में)	• दूसरों के साथ निडरता से लेकिन सम्मानपूर्वक अन्तःक्रिया करती है • उत्सुकता दिखाती है और आस-पास के परिवेश की छान-बीन करने की पहल करती है, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल ज़िम्मेदारी से करती है

C-13.4:सीखने के प्रतिफल

तालिका 68

	A	B	C	D	E
	C-13.4: कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करती है और उनका अनुसरण करती है	• शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों का पालन करती है और इसमें दूसरों की मदद करती है • शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेती है और नियमों के अनुरूप व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेती है और उनके अनुसार व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है, उन्हें दर्शाती है; ज़िम्मेदारी से उनका अनुसरण करती है

अनुलग्नक 2: उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ

शिक्षकों के कक्षा अनुभव से कुछ दृष्टान्त लिए गए है। जिसमें एक दिन, एक सप्ताह और एक वर्ष के लिए योजना और तैयारी के उदाहरण के साथ शुरू करते हैं, इसमें वे गतिविधियां हैं जो कक्षा में की जा सकती है। इन्हे इसलिए नहीं चुना गया कि ये परिपूर्ण है बल्कि इसलिए कि ये इस राज्य पाठ्यचर्या की रूप रेखा की भावना के अनुकूल हैं।

1. सीखने के लिए योजना

इस खण्ड में दो प्रकार के दृष्टान्त शामिल हैं - खण्ड 1.1 में पूरे शैक्षणिक वर्ष के लिए शिक्षक की शिक्षण योजना है, जिसमें दर्शाया है कि इसे दैनिक योजना में कैसे शामिल किया जाए; खण्ड 1.2 में भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक और दैनिक योजनाओं के नमूने हैं -

1.1 लीला की योजना

लीला एक गाँव के सरकारी प्राथमिक स्कूल में पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाती है। कक्षा में बच्चों का मिश्रित समूह है, यानी पिछले 3 वर्षों में कुछ बच्चे आँगनवाड़ी जाते रहे, जबकि कुछ के लिए यह किसी भी तरह की स्कूली शिक्षा से पहला परिचय है। वे अपनी शिक्षण योजना बनाते और तैयारी करते समय यह बात ध्यान में रखती हैं।

उनके रिकॉर्ड, वार्षिक योजना, तिमाही योजना, कम अवधि - हफ़्तों, दिनों के लिए नमूना शिक्षण योजनाएँ, और सीखने के प्रतिफल से संबंधित नमूना अवलोकन नीचे दिए गए हैं।

1.1.1 कक्षा 1 के लिए वार्षिक शिक्षण योजना

तालिका 1

उप-डोमेन	सीखने के प्रतिफल
सुनकर समझना और बोलना	1. भाषा की विविध विधाओं जैसे गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र दृश्य पर चर्चा आदि। 2. ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक समझना। 3. परिवेश एवं सन्दर्भ से सम्बन्धित सामग्री को समझना। 4. गति एवं हाव-भाव के अनुसार बोलना। 5. परिचित एवं नवीन परिस्थितियों में सहजता से अपने विचार प्रस्तुत करना। 6. प्रश्न बनाना व पूछना। 7. घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बैठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना। 8. सुनी हुई बात को अपने शब्दों में कहना। 9. पढ़ी गई सामग्री को अपने शब्दों में कहना। 10. गीत कविता, कहानी को अपने विचारों को अकेले तथा समूह में प्रस्तुत करना। 11. सुने हुए गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप आदि में अपने अनुभव को जोड़कर अपनी बात कहना। 12. अपने अनुभव एवं कल्पनालोक की बातों को सहज ढंग से कहना। 13. सुनी, पढ़ी सामग्री में क्या कौन, कब, कैसे कहाँ जैसे प्रश्न पूछ पाना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना। 14. कविता, कहानी को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हुए बोलना। 15. ध्वन्यात्मक शब्दों के साथ खेलने व गढ़ने के अवसर का लाभ उठाना, जैसे अक्कड़ बक्कड़
पढ़कर समझना	1. अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना। 2. शब्दों और वाक्यों को वर्ण जोड़कर पढ़ने की बजाय इकाई रूप समझकर पढ़ना। 3. अपने परिवेश में उपलब्ध सामग्री का अनुमान लगाकर समझते हुए पढ़ना। 4. परिवेश में उपलब्ध सन्दर्भों, चित्रों व छपी हुई सामग्री को पढ़कर समझना।
लेखन अभिव्यक्ति	1. शब्द और वाक्य को स्पष्ट रुप से लिख सकना। 2. सुनी हुई विषयवस्तु अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना। 3. किसी कविता या कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखना। 4. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना। 5. सुनी हुई विषयवस्तु को यथारूप लिखना। (श्रुतलेख) 6. तार्किक चिन्तन के आधार पर सरल रचनाएँ करना एवं अपनी बात लिखना।
व्यावहारिक व्याकरण	(वास्तविक सन्दर्भ में समझना एवं प्रयोग में लाना।) चन्द्रबिन्दु, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, 'र' के रूप, पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, लिंग, वचन आदि को पहचानना तथा प्रयोग में लाना।

1.1.2 तिमाही योजना

तालिका 2

#	महीना	विषयवस्तु	अधिगम उद्देश्
1	जुलाई	• आरम्भिक गतिविधियाँ • मेरा गाँव, हमारा शहर, पक्षी एवं जानवर, जानवर, फल, सब्जी, हमारा शरीर, शरीर के अंग, चित्र पठन • पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें (कहानी)	• **सुनकर समझना और समझकर बोलना** • सुनी हुई सरल छोटी कविता / बालगीत / कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें। • कविता बाल गीत को लय, गति और हावभाव का तालमेल करते हुए सुना सकें। • **पढ़ना और पढ़कर समझना** • चित्रों की सहायता से चित्र के नाम की आकृति (शब्द) का पठन कर सकें। • चित्र की मदद से परिचित शब्दों को पढ़कर मिलान कर सकें और परिचित शब्दों को स्वतंत्र रूप से (बिना चित्र की सहायता से) पहचान कर सकें एवं पढ़ सकें। • शब्दों से सम्बन्धित वर्णों को पढ़ सकें। • आ और इ की मात्रा की अवधारणा के साथ चित्र व बिना चित्रों की सहायता से शब्दों को पढ़ सकें। • सम्बन्धित तुकबन्दियों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें। • **लिखना** • दिए गए अक्सर आने वाले शब्दों पर पेन्सिल फेर सकें। • अक्षर / सरल शब्दों को देखकर लिख सकें। • चित्र की मदद से शब्दों को लिख सकें। • सीखे गए वर्णों से शब्द बना कर लिख सकें। • **सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • चित्रों में रंग संयोजन कर सकें। • अपने मन से परिचित वस्तु का चित्र बना सकें।
2	अगस्त	• कविता • वर्ण पहचान घ र च ल • वर्ण पहचान अ ब म न • पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें	
3	सितम्बर	• कविता • वर्ण पहचान ज ख आ और आ की मात्रा • कविता "तितली और कली" • वर्ण पहचान द त इ और इ की मात्रा • पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें	

1.1.3 2 सप्ताहों के लिए गतिविधि योजना

पहले 2 हफ़्तों की शिक्षण योजना बच्चों को कक्षाओं में बैठने की आदत डालने, कक्षा के मानदण्डों का पालन करने, अपने साथियों को जानने और शिक्षक के साथ-साथ स्कूल के माहौल के साथ सहज होने के लिए स्कूल रेडीनेस गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करेगी। इससे पहले, लीला प्रत्येक सीखने के प्रतिफलों के लिए आकलन संकेतकों को परिभाषित करती हैं ताकि वे कक्षा में प्रत्येक बच्चे के प्रदर्शन का अवलोकन कर सकें और बच्चों की जरूरतों के अनुसार अपनी शिक्षण शैली / फोकस को संरेखित (align) कर सकें।

क) आकलन संकेतकों का एक उदाहरण :

तालिका 3

#	सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक (स्तर 1< स्तर 2< स्तर 3)		
1	सुनकर समझना और सोचकर बोलना विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/ स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं जैसे- कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभव साझा करना|	**अपनी आपसी बातचीत में घर की भाषा का प्रयोग करते हैं।**		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग बहुत कम कर पाते हैं	आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग थोड़ा कर पाते हैं	आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग सहजता से कर पाते हैं
		अपनी आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं।		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग बहुत कम या नहीं कर पाते हैं	आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग थोड़ा कर पाते हैं	आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं।
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी बहुत कम या सुना नहीं पाते हैं	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुनाने का प्रयास करते हैं पर पूरी नहीं सुना पाते हैं	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं
		स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		नहीं सुना पाते हैं	स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी थोड़ा बहुत सुना पाते हैं	स्कूल की भाषा में कविता / कहानी सुना पाते हैं

लीला उन सभी गतिविधियों का सारांश बनाती हैं, जिनकी वह किसी विशेष पाठ के लिए योजना बना रही हैं, ताकि वे जान सकें कि इन दो हफ़्तों में उन्हें किस सामग्री की आवश्यकता होगी।

ख) सप्ताह की योजना का एक उदाहरण :

तालिका 4

गतिविधि	उद्देश्य	अवधि
परिचय	बच्चों से परिचय प्राप्त करना व स्वयं का परिचय देना। बच्चों के बाद परिवारजनों का परिचय देना व लेना। अनौपचारिक बातचीत	शिक्षण व अभ्यास हेतु कालांश (Class-es)-10 +1 कालांश (शनिवार गतिविधि एवं बच्चों के काम के फोटो एवं विडियों शेयरिंग) दिनांक 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 (2 weeks) 60 Min/Day 20 Min सुनकर समझना और समझकर बोलना 20 Min पठन 20 Min लेखन
बालगीत व कविताएं गाना	छोटे परिवेशीय गीत, बालगीत व कविताएं हाव भाव के साथ गाना।	
कहानी सुनना – सुनाना	बच्चों को मौखिक कहानी सुनाना व सुनना चित्र आधारित कहानियाँ सुनाना व उन पर चर्चा करना।	
हस्त संतुलन	खड़ी आड़ी , घुमावदार डॉटेड लाइन / चित्र पर पेंसिल या रंग फेरना / मिलान करना। स्वतंत्र रूप से चित्र बनाकर उसमें रंग भरना।	
ध्वनि पहचान	शांत बैठकर आस पास हो रही आवाजों को सुनना और बताना। अपने नाम में आने वाली अंतिम ध्वनि की पहचान करना व उस ध्वनि से बनने वाले 2-2 शब्द बताना। अपने नाम में आने वाली ध्वनियों को अक्षरों में तोड़-तोड़ कर बोलना और उनकी आवाजों को गिनते हुए जानना कि उनके नाम में कितनी ध्वनियाँ हैं? इसी प्रकार से अन्य शब्दों को ध्वनियों में तोड़तें हुए पहचान करना।	
अनुमान लगाना	एक कपड़े के नीचे या किसी कपड़े के थैले में रखी कुछ खास वस्तुओं को छू कर अनुमान से उनके नाम बताना। जो छोटे बालगीत और कविताएं कक्षा में गाए जा चुके हैं उन्हें एक शीट पर लिखना और बच्चों की सामने उनके शब्दों पर अंगुली रख-रख कर हमारे द्वारा पढ़ना फिर बच्चों को भी इसी प्रकार से अनुमान के द्वारा कविताएं पढ़ने के लिए प्रेरित करना।	

अब अन्त में, हर दिन से पहले वह सारे दिन के लिए विस्तृत गतिविधि योजना तैयार करती हैं। इस योजना में वह पिछले दिन से टिप्पणियों को शामिल करने का प्रयास करती हैं।

ग) मेरी दैनिक गतिविधि योजना का एक उदाहरण :

तालिका 5

दिन/अवधि	गतिविधियों का विवरण	उपयोग की गई सामग्री	टिप्पणियाँ
दिन 10 60 मिनट	• खेल से शुरुआत "चूहा दौड़ बिल्ली आई नेता नेता चाल बदल" • प्रश्नोत्तर संवाद • कहानी वाचन हाव भाव एवं चित्रों के साथ कहानी सुनाना • प्रमुख शब्द बोर्ड पर लिखना • कहानी से संबंधित प्रश्न पूछना *कहानी में कौन-कौन हैं?* *बंदर कहाँ बैठा हैं ?* *बंदर की पूंछ कैसी हैं?* *पूँछ को झूला किसने समझा ?* *क्या आपने बंदर और गिलहरी कहीं देखे हैं कहाँ ?* • कहानी से संबंधित दो-तीन लाइन बोर्ड पर लिखना फिर हमारे द्वारा अंगुली फेरते हुए पढ़ना। • बच्चों को अंगुली फेरते हुए पढ़ने के अवसर देना। • इसके बाद नीचे दी गई वर्कशीट दी जाए:		Kavita, Ram ने अंगुली फेरते हुए पढ़ने का अच्छा अभ्यास किया और साथ ही किताब पढ़ने को लेकर बेहद उत्सुक लगे। और इच्छा जाहीर की। Kavita ने 1 कहानी पूरी पढ़ी और साथ ही और किताब लाने को कहा। आगामी योजना के साथ-साथ पुस्तकालय से चित्र कथा एवं स्तर एक की किताबों का चयन कर कक्षा पुस्तकालय से परिचय कराते हुए पुनः शुरुआत होगी।

हैलो दोस्तों! अपने बारे में कुछ बताओं, कुछ लिखों चित्र बनाओं

- मेरा नाम पवन है।
- मेरे गाँव का नाम रामणी है।
- मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ।
- मेरे पिता जी का नाम श्री जतन है।
- मेरी माता जी का नाम श्रीमती रूकमणी है।

- मेरा नाम ..... है।
- मेरे गाँव का नाम ..... है।
- मैं ..... कक्षा में पढ़ता हूँ।
- मेरे पिता जी का नाम श्री ..... है।
- मेरी माता जी का नाम श्रीमती ..... है।

अपनी पंसद/नापसंद के बारे में चित्र भी बना सकते है और लिख भी सकते हैं।

घ) दैनिक अवलोकन के कुछ उदाहरण :

तालिका 6

#	नाम	मुखर / शर्मीला	भागीदारी / सहभागिता / अन्यमनस्कता	चित्र के साथ अक्षरों की पहचान	हस्त सन्तुलन / स्क्रिबलिंग
5	अमित	मुखर	शामिल रहता है और सहभागिता करता है निर्देशों को याद दिलाने की ज़रूरत है	कुछ	हाँ उचित लेखन तथा एक शब्द और दूसरे शब्द के बीच उचित अन्तर का अभ्यास करने की आवश्यकता है।
13	नीता	मुखर	शामिल रहती है और सहभागिता करती है निर्देशों की याद दिलाने की जरूरत है	कुछ	हाँ समय पर लिखने के लिए और नियमित कार्य करने के लिए गति की आवश्यकता है।
18	रानी	शर्मिली (नया प्रवेश)	शामिल रहती है और सहभागिता करती है	मदद चाहिए	हिन्दी नोटबुक में शब्दों को दो पंक्तियों के बीच लिखने की ज़रूरत है।

1.2.2 हिन्दी भाषा शिक्षण की योजना

क) साप्ताहिक योजना

तालिका 4

सप्ताह			
दिन	**मौखिक भाषा विकास एवं सम्बंधित लेखन (25-30 मिनट)**	**डिकोडिंग एवम सम्बंधित लेखन (40-45 मिनट)**	**दिन**
1	• कविता/बालगीत • मौखिक रूप से कहानी सुनाना: • चित्र बनाना	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य:	• बिग बुक से कहानी पढ़कर सुनाना व् सामान्य चर्चा:
2	• कविता/बालगीत • चित्र चार्ट पर चर्चा: • स्वतंत्र लेखन	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य:	• बिग बुक से कहानी पढ़कर सुनाना व् विस्तृत चर्चा:
3	• कविता/बालगीत • चित्र चार्ट पर चर्चा: • स्वतंत्र लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य:	• बिग बुक से साझा पठन:
4	• कविता/गाना: • कहानी पढ़कर सुनाना (पुस्तकालय की किताबें) • साझा लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य:	• लोगोग्राफिक पठन: बिग बुक
5	• कविता/गाना: • सामाजिक एवम भावनात्मक विकास की गतिविधि • कविता में आए मुख्य शब्दों को लिखना	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: (साप्ताहिक) • डिकोडिंग का खेल	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना
6	• कविता/बालगीत • मौखिक खेल गतिविधि • पाठ्यपुस्तक से गतिविधि	• अभ्यास पुस्तिका (साप्ताहिक आकलन) • सीखने में पीछे छूटे बच्चों के साथ योजनाबद्ध तरीके से समूह में कार्य)	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना
अभ्यास पुस्तिका में सप्ताह के अंत में दिए गए 'स्वतंत्र कार्य' पत्रक पर कार्य.			

ख) सप्ताह 7 के पहले दिन की योजना

खण्ड – 1

कहानी सुनकर समझना और सरल प्रश्नों के उत्तर देना।

तालिका 5

मौखिक भाषा (25-30 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	शिक्षक के लिए मुख्य बातें
• कविता • कहानी • कहानी पर खुले और बंद छोर के प्रश्नों की सूची पहले से तैयार रखे	• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें • बच्चों को अपनी भाषा में अलग अलग श्रेणियों से जुड़े नामों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें • कक्षा का माहौल रोचक बनाये रखें
कविता पर कार्य:	
• शिक्षक पहले बच्चों को कविता लय के साथ गाकर सुनाएं। • शिक्षक कविता गाएं व् बच्चों को साथ दोहराने के लिए कहें। • ऐसा 2-3 बार करें, ताकि बच्चे कविता की लय और शब्दों को अच्छे से पकड़ पाएं। • सुनाई गयी कविता के विषय से जुड़ी कोई और कविता को याद दिलाएं और उन्हें सुनाने को कहें। अगर कोई ऐसी कविता नहीं है तो पिछली सुनी हुई कविता उनसे सुने।	
मौखिक कहानी सुनाना	
• अब बच्चों को गोल घेरे में बैठाएं और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जायें और कहें – आज मैं आप सभी को एक कहानी सुनाऊंगा/सुनाउंगी, जिसका नाम है – 'कछुआ और खरगोश'. अब बच्चों से कहानी के नाम से अनुमान लगाने के लिए कहें, जैसे – बच्चों के अनुसार कहानी में कौन-कौन होगा? क्या हुआ होगा? आदि। • अब शिक्षक 'कछुआ और खरगोश' कहानी को बच्चो को आवाज़ में उतार-चढाव और हाव-भाव का उपयोग करते हुए कहानी मौखिक रूप से सुनाए। • कहानी सुनाते समय अधिक चर्चा करने से बचें. बीच-बीच में 1-2 अनुमान लगाने वाले प्रश्नों को पूछकर यह सुनिश्चित करें कि बच्चों का पूरा ध्यान सुनने पर है या नहीं। जैसे – क्या खरगोश जीत जायेगा? खरगोश क्यों बीच में रुका होगा? अब कछुआ क्या करेगा? आदि। • कहानी सुनाने के दौरान यदि कोई कठिन या अनजान शब्द आता है तो बच्चों को उनका अर्थ सन्दर्भ के साथ समझाएं, जैसे – जीत, गति, रेस आदि। • कहानी सुनाने के बाद बच्चों से कहानी से सम्बंधित बंद छोर (तथ्यात्मक) और खुले छोर (उच्च स्तरीय चिंतन) दोनों तरह के प्रश्न पूछें. जैसे – कहानी में कौन-कौन था? दौड़ लगाने की बात किसने की थी? दौड़ में जीत किसकी हुई? अगर खरगोश काम नहीं करता तो कौन दौड़ जीतता? कहानी में कछुआ की जगह अगर लोमड़ी होती तो कौन दौड़ जीतता? इस कहानी को आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है? आदि।	

लेखन कार्य
• सुनी गयी कहानी पर बच्चों को चित्र बनाने को कहें| • बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र सभी को दिखाने और उसके बारे में बताने को कहें|
शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा
• क्या सभी बच्चों ने इस गतिविधि में प्रतिभाग किया? • यदि नहीं, तो उन बच्चों को पहचान कर, अगले खंड में उन्हें थोड़ें और मौके दें और उन्हें प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित करें|

खण्ड – 2

'ग' वर्ण पहचानना और लिख पाना

तालिका 6

डिकोडिंग (40-45 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• बोर्ड, चाक, बच्चों का नाम चार्ट| • 'ग' से शुरू होने वाले कुछ सरल शब्दों की सूची बनाकर रख लें|	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य करने के लिए बच्चों को उदाहरण सहित निर्देश दें| • बच्चों को आपस में कार्य करने के पर्याप्त मौके दें|
'ग' वर्ण की पहचान	
• कक्षा की शुरुआत स्थानीय कविता या गीत को हाव-भाव के साथ गाकर करें. इसमें सभी बच्चों को हिस्सा लेने के लिए उनका प्रोत्साहन करें. इस खेल गतिविधि के लिए 5-7 मिनट का ही समय दें| • बच्चों को गोल घेरे में बिठाएं और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जायें| • शिक्षक बच्चों के साथ किसी परिचित शब्द (जैसे – गमला) को मौखिक रूप से तोड़कर–जोड़कर बोलें, जैसे – (गमला – 'ग', 'म', 'ला') और ('ग', 'म', 'ला' - गमला). अब बच्चों से शब्द की पहली आवाज़ ('ग') पहचानने को कहें. इस प्रक्रिया को 3-4 सरल एवम परिचित शब्दों के साथ करें| • अब 'गमला' शब्द को बोर्ड पर लिखें और उसकी पहली आवाज़ के प्रतीक ('ग') पर घेरा लगाएं और बच्चों को 'ग' का उच्चारण करके बताएं| • फिर बच्चों को 'ग' वर्ण का कार्ड दिखाएं और 3-4 बार 'ग' वर्ण का उच्चारण करें. अब बच्चों से 'ग' वर्ण से शुरू होने वाले अन्य शब्द या नाम बताने को कहें और आप उन्हें बोर्ड पर लिखते जायें, जैसे – गमला, गरमी, गधा, गला आदि. शिक्षक लिखे हुए सभी शब्दों को बच्चों के साथ मिलकर पढ़ें और उनकी पहली आवाज़ के प्रतीक 'ग' वर्ण पर गोला लगवाएं| • बच्चों को 'ग' वर्ण कक्षा में प्रदर्शित सामग्री और पाठ्यपुस्तक से ढूंढकर बताने को कहें. शिक्षक पाठ्यपुस्तक में 'ग' वर्ण पर गोला लगाने को भी कह सकते हैं| • बच्चों को डिकोडिंग के खेल के माध्यम से 'ग' वर्ण लिखने का अभ्यास करवाएं, जैसे – सभी बच्चों को गोल घेरे में खड़े होने को कहें. अब शिक्षक हवा में ऊँगली से 'ग' वर्ण लिखें और सभी बच्चों को दोहराने के लिए कहें| अब यही प्रक्रिया अलग-अलग प्रकार से करें और करवाएं जैसे – 'ग' को पैर से, सिर से, कंधे से, कमर से, कोहनी से, घुटने से, ज़मीन पर चलकर आदि लिखने का प्रयास करवाएं| • अंत में, 'ग' वर्ण लेखन से सम्बंधित अभ्यास कार्य को अभ्यास पुस्तिका में पूरा करवाएं| • सभी बच्चों को अभ्यास पुस्तिका से कार्य करने को कहें और आवश्यकता अनुसार उनकी सहायता करें| • आप बच्चों के कार्य का अवलोकन घूम-घूमकर करें|	

शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा
• क्या सभी बच्चों ने अभ्यास पुस्तिका का कार्य पूरी तरह से किया है? • जिन बच्चों को कार्य करने में परेशानी हो रही है, उनकी पहचान करें| उने बातचीत करें और कार्य पूरा करने के लिए प्रोत्साहन दें|

खण्ड – 3

बिगबुक की कहानी सुनकर समझना

तालिका 7

पठन (15-20 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• बिग बुक • शिक्षक बिग बुक की कहानी को पहले से पढ़ लें	• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें| • सभी बच्चों की बातों को ध्यान से सुनें और सकारात्मक प्रतिक्रिया दें|
बिगबुक पर सामान्य चर्चा	
• कालांश की शुरुआत छोटी कविता से करें. बच्चों को चलने-फिरने/उठने-बैठने का मौक दें| • बिगबुक का मुख्य प्रष्ठ सभी बच्चों को दिखाएं और बिगबुक के मुख्य पृष्ठ में दिख रहे चित्र और कहानी के शीर्षक के बारे में बातचीत करने एवम अनुमान लगाने को कहें| • बिगबुक के सभी पृष्ठों को एक-एक करके पलटते जायें और बच्चों से पृष्ठों पर बने चित्रों के आधार पर कहानी का अनुमान लगाने को कहें| बिगबुक का आदर्श रूप से पठन कम से कम 2-3 बार करें| • बच्चों को यह भी समझने का मौक़ा दें कि इस किताब के हर पृष्ठ पर जो चित्र बने हैं, कहानी में क्या हो रहा है, उससे सम्बंधित है. अंत में, बच्चों ने चित्रों को देखकर जो अनुमान लगाए गए थे, उन पर बातचीत करें|	
शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा	
• क्या सभी बच्चों ने कहानी समझी है? • यदि नहीं, तो ऐसे बच्चों की पहचान करें, तब उन पर थोड़ा अधिक ध्यान दें|	

दिवस 2,3 और 4 पर दिवसवार योजना के अनुसार इसी तरह कार्य करें।

2. कक्षा-कक्ष में

इस खण्ड में कक्षा-कक्ष में चल रहे दृश्य को प्रस्तुत किया गया है। हम उस दिन का वर्णन करने वाली एक शिक्षक पत्रिका के एक अंश से शुरू करते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं कि शिक्षक विभिन्न गतिविधियों को कैसे चुनते और संचालित करते हैं।

2.1 शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध : दीपा की डायरी

यह नोट एक शिक्षिका दीपा की डायरी से है। यह उन तरीक़ों पर प्रकाश डालता है जिसमें एक शिक्षिका अपनी कक्षा में सीखने की जगह बनाती व बच्चों का लालन-पालन करती है। वह पालन-पोषण करने वाली, शिक्षिका, परामर्शदाता और मित्र जैसी कई भूमिकाएँ निभाती है।

---

29 जुलाई 2014

आज वही दिन था, जब मुझे लगा कि एक शिक्षक के पास कम से कम 4 जोड़ी हाथ और 3 जोड़ी आँखें होनी चाहिए! दिन की शुरुआत हमेशा की तरह बच्चों के साथ एक गोल घेरे में आकर गाने के साथ हुई थी। मैंने आरम्भिक संख्यात्मक गतिविधियों को जारी रखने की योजना बनाई थी जो हमने कल ब्लॉकों के साथ की थी। यह हिट थी, बच्चों ने इसे पूरी तरह से पसन्द किया और चूँकि यह उनकी इस बारे में यादें ताज़ा थीं, इसलिए मुझे अगले स्तर की अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए इसे जारी रखने की उम्मीद थी। जैसे ही हम अपने सर्कल टाइम के लिए तैयार होने वाले थे, मैंने देखा कि अरुण बाहर निकल रहा है और अपने मुँह के बल गिर गया है। मैं उसकी तरफ़ दौड़ी और उसे उठा लिया। वह फूट-फूट कर रोने लगा था। उसकी कुहनी छिल गई थी और खून बहने लगा था। उसने मुझे कसकर पकड़ रखा था। मैंने उसे अपनी बाँहों में उठाया, उसे शान्त करने की कोशिश की और घाव को साफ़ करने और मरहम लगाने के लिए उसे अन्दर ले गई। मैंने बड़े बच्चों में से एक, लक्ष्मी से कक्षा में रखे पानी के बर्तन से थोड़ा पानी लाने के लिए कहा, ताकि उसे पानी पिला सकूँ। प्राथमिक चिकित्सा पेटी अलमारी में रखी थी। मैंने अरुण को नीचे बिठाया, प्राथमिक चिकित्सा किट ली, उसके घाव को ध्यान से साफ़ किया, पट्टी बाँधी और उसे अपनी गोद में बिठा लिया। आख़िरकार उसने रोना बन्द कर दिया। दूसरे बच्चे कनखियों से मुझे देख रहे थे। मैंने मन-ही-मन सोचा, आज का दिन चला गया-कक्षा आज नहीं चल सकेगी। फिर भी मैंने कोशिश की। अरूण को सँभालते हुए, मैंने जिस गतिविधि की योजना कक्षा के लिए बनाई थी, उसके लिए विद्यार्थियों को वापस बुलाया। मुझे आश्चर्य हुआ। बहुत जल्दी प्रतिक्रिया देते हुए वे अपने समूहों में वापस चले गए। उन्होंने विभिन्न प्रकार और ब्लॉक के रंगों को वर्गीकृत करना शुरू कर दिया। अरुण अभी भी मेरी बाँहों में था, मैं उनके बीच जाकर बैठ गई, और उन्हें रंगों के अँग्रेज़ी नामों से परिचित कराना शुरू कर दिया। हमने चार रंगों के नाम सीखे - लाल, पीला, नीला, हरा। अरुण अब पहले से अधिक शान्त था और मेरे पास से जाने के लिए तैयार था। मैंने उसे टॉय कॉर्नर के पास बैठाया। मैं सर्कल टाइम एक्टिविटी (जो अन्तहीन की तरह महसूस हो रही थी) को समाप्त करने वाली थी, तभी मैंने देखा कि हर्ष और शोभा, लाल ब्लॉक को किस ढेर पर जाना चाहिए, इस पर बहस कर रहे हैं। मैं रुक गई और इन्तजार करने लगी कि वे इसे आपस में सुलझा लें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैंने थोड़ी देर बाद बीच-बचाव किया और उनसे पूछा कि क्या समस्या है। जब दोनों एक साथ बोलने लगे तो मैंने मुस्कराते हुए उन्हें रोका और कहा, 'प्लीज़, यह अच्छा नहीं होगा कि एक बार में एक ही बच्चा बोले?' मैंने उन्हें लाल और हरे रंग के ब्लॉक दिखाए और उनके रंग फिर से दोहराए। जिसकी तरफ़ मैंने इशारा किया, उन्होंने उन ब्लॉकों के रंगों को दोहराया।

इस डायरी प्रविष्टि से कुछ विचार :

क) अरुण के गिरने पर दीपा को उसकी माँ बनना पड़ा। उसे उसकी शारीरिक और भावनात्मक ज़रूरतों का भी ख़्याल रखना था। बच्चे बहुत चौकस और संवेदनशील होते हैं। उन्होंने जो कुछ हुआ था, उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया देखी और देखा कि वह उनकी परवाह करती है। इससे शिक्षक के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना पैदा होती है। (उन्होंने अपनी गतिविधि में वापस आने के लिए उसके निर्देशों का जवाब दिया।)

ख) घाव को साफ़ करने की प्रक्रिया भी बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सीख है। कच्चे घाव से बाहर से आने वाली गन्दगी और कीटाणुओं को रोकने के लिए घावों को अन्दर से बाहर तक साफ़ करने की ज़रूरत होती है। दीपा को अरुण के घाव को सही तरीक़े से साफ़ करते हुए देखकर बच्चे एक महत्त्वपूर्ण कौशल से परिचित हुए।

ग) बेशक, उसे एक शिक्षिका भी रहना था! उसने पिछले दिन शुरू की गई गतिविधि को जारी रखा, नए आयामों का निर्माण करने के साथ-साथ पिछले वाले को मज़बूत किया। एक शिक्षण दृष्टिकोण से अनुक्रमण पर ध्यान देना और ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना महत्त्वपूर्ण है।

घ) हर्ष और शोभा को अपने मुद्दे को सुलझाने के लिए समय देकर, वह उन्हें अपने दम पर चीज़ों को समझने का मौक़ा दे रही थी, यह बच्चों में स्वायत्तता विकसित करने के लिए दीपा की एक महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रिया थी। जब उसने देखा कि चीज़ें आगे बढ़ रही हैं तो उसने बच्चों के लिए एक सुगम विकल्प भी सुझाया। दीपा ने यह भी सुनिश्चित किया कि एक बार में एक ही बच्चा बोले। इससे दो मक़सद पूरे हुए : एक, उसने बच्चों को अपनी बारी का इन्तजार करना सिखाया और दूसरा, वह उनकी भाषा दक्षताओं का आकलन करने में सक्षम थी। इसलिए, आकलन के एक तत्व को बातचीत में एकीकृत किया गया। दीपा ने बच्चों को रंगों के नाम स्पष्ट करने के लिए व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया।

2.2 खेल के माध्यम से सीखना : कमल का किचन कॉर्नर

कमल को खाना बनाना बहुत पसन्द है और वे चाहते हैं कि खाना पकाने के लिए जो प्यार उनमें है, वही प्यार बच्चों में भी विकसित हो! इसलिए उन्होंने सचेत रूप से 3-6 वर्षीय बच्चों की अपनी कक्षा के साथ एक गतिविधि की योजना बनाई, जिसे अवसर मिलने पर किया जाना था। उन्होंने संक्षेप में इस सारी गतिविधि को साझा किया है।

सीता बहुत शर्मीली लड़की है और आम-तौर पर अपने-आप तक ही सीमित रहती है। एक दिन, वह उदास चेहरे के साथ स्कूल आई, उसे कुछ भी करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। कुछ देर उसे देखने के बाद कारण जानने के लिए मैं उसके पास गया। सीता धीरे-धीरे मेरे साथ अपनी भावनाएँ साझा करने लगी। उसने बताया कि उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए वह रसोई में उसकी मदद करना चाहती थी, लेकिन उसकी माँ ने उसे अपने पास से दूर जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उसके लिए आग, धारदार चाकुओं और खाना पकाने के गर्म बर्तनों के आस-पास रहना बहुत ख़तरनाक था। मैंने सोचा, बच्चों को 'किचन कॉर्नर' से परिचित कराने का आज सही दिन है।

2.2.1 शिक्षण योजना और आकलन

नीचे दी गई गतिविधियाँ बच्चों को एक गोले में बैठाकर की गईं। कक्षा की संख्या-सीमा 24 है; जिनमें से 4-4 बच्चों को एक-एक गतिविधि दी गई। ये गतिविधियाँ मौखिक, तार्किक, दृश्य-संबंधी, शारीरिक गतिसंवेदी, अन्तर्वैयक्तिक (interpersonal), अंतरावैयक्तिक (intrapersonal) और संगीतात्मक जैसी कई तरह की बुद्धिमत्ता को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। इस गतिविधि

के लिए छह रसोई सेट और दाल, राजमा, चना, मूँगफली (कोई अन्य मोटा अनाज), सब्ज़ियाँ, पानी, नमक, चीनी जैसी खाना पकाने की सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

क) समूह गतिविधि 1 : दाल पकाने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश: एक छोटा भगोना लें और उसे अपने सामने खिलौने के चूल्हे पर रखें। अब भगोने में एक कप दाल डालें। दाल को बाएँ से दाएँ सावधानी से चलाने के लिए करछुल (स्पैचुला) का प्रयोग करें, सुनिश्चित करें कि यह गिरे नहीं।

साथ में गाएँ :

भूनो, भूनो, भूनो दाल

भूनो, भूनो, भूनो चना

भूनो तब तक जब तक भुन ना जाए

आकलन : देखें कि क्या बच्चा उचित सन्तुलन के साथ तल रहा है। दाल नहीं फैलनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो बच्चे को दोहराने के लिए कहें। देखें कि क्या बच्चा भगोना, भुनना और करछुल जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

ख) समूह गतिविधि 2 : रोटी बेलने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश: लोई से अपनी हथेलियों के बीच गोल-गोल लड्डू बनाकर चपाती के पटे पर रख दीजिए। इसे बेलन से बेल लें। गोल-गोल चपाती बना लीजिए।

"रोटी चपाती रोल रोल

मम्मा की बिन्दी गोल गोल

पापा का पैसा गोल गोल

दादू का चश्मा गोल गोल

...सारी दुनिया गोल गोल"

(परिचित वस्तुओं के साथ गोल आकार का परिचय)

आकलन: चपाती के आकार और फैलाव को देखें। जाँचें कि क्या बच्चा चीज़ों को साफ-सुथरा रख सकता है; हालाँकि यह वास्तव में अपेक्षित नहीं है, इसके अपवाद हो सकते हैं। देखें कि क्या बच्चा कविता में आए नए शब्दों को याद कर सकता है।

ग) समूह गतिविधि 3 : निश्चित मात्रा में दाल डालना

बच्चों के लिए निर्देश: कण्टेनर को टेबल पर रखें। कण्टेनर पर निशान देखें। अंकों की संख्या गिनें। तीन अँगुलियों की सहायता से दाल को नीचे से कण्टेनर के पहले निशान तक डालें। इसे एक अलग कण्टेनर में रख दें। अब दाल को दूसरे निशान तक डालें।

डालो, डालो, डालो अनाज
निशान तक भरो इसे

...

आकलन: देखें कि क्या बच्चा दाल को एक कण्टेनर से दूसरे कण्टेनर में स्थानान्तरित कर सकता है। जाँचें कि दाल दिए गए निशान से ऊपर है या नहीं। देखें कि क्या बच्चा मात्राओं की तुलना कर सकता है (प्रत्येक मामले में कम या ज़्यादा)। देखें कि क्या बच्चा डालना और अनाज जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

घ) समूह गतिविधि 4: चना, राजमा और मूँगफली जैसे अनाजों को छाँटना

बच्चे निगल न पाएँ, ऐसा मोटा अनाज चुनें। बच्चों को केवल तीन अँगुलियों का उपयोग करके मिश्रित अनाज को अलग-अलग कटोरे में छाँटना चाहिए। बालगीत इन सभी गतिविधियों का हिस्सा हो सकते हैं। उपलब्ध बालगीतों का प्रयोग करें या ऊपर बताए अनुसार सरल बालगीत बनाएँ। बच्चों को धुन के साथ गाना पसन्द होता है।

बच्चों के लिए निर्देश: बच्चों, तुम्हें तीन तरह के अनाज दिए गए हैं। वे एक-दूसरे से अलग दिखते हैं। ये हैं चना, राजमा और मूँगफली। अब आप इन्हें अलग करके एक अलग बर्तन में निकाल लें।

(बच्चे समानता और अन्तर की अवधारणा को सीखेंगे। यह गतिविधि उनकी एकाग्रता में सुधार करने में भी मदद करती है।)

आकलन: देखें कि क्या बच्चा समान अनाज की पहचान कर सकता है। जाँचें कि क्या बच्चा अलग किए गए अनाज को अपने सम्बन्धित कण्टेनरों में स्थानान्तरित कर सकता है। देखें कि क्या बच्चा अनाज, चना, राजमा,सूखी मटर और मूँगफली जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

ङ) समूह गतिविधि 5: सब्जियों से खेलना

बच्चे सब्जियाँ लेंगे, उन्हें धोएँगे और कपड़े से पोछेंगे। मटर की फली छीलना, हाथ से फलियों को तोड़ना और एक गाजर को एक कुन्द छिलनी से छीलना गतिविधि में शामिल किया जा सकता है।

बच्चों के लिए निर्देश: बच्चों को सब्जियाँ पकाने से पहले उन्हें धोना, पोंछना और काटना चाहिए। मज़बूत बनने के लिए खूब सारी सब्जियाँ खाएँ। सब्जियाँ हमें तदुरुस्त रखती हैं। मटर की फली लें और उन्हें छील लें। मटर को एक-एक करके निकाल लें। इन्हें कटोरे में रखे पानी से धो लें। फिर बीन्स लें और उन्हें धो लें। अपनी पहली तीन अँगुलियों का उपयोग करके बीन्स को तोड़ लें। सभी टुकड़े एक ही आकार के होने चाहिए। गाजर लें, धोकर पोछ लें। छिलनी से छीलें। छिलनी का इस्तेमाल सावधानी से करें।

बाज़ार जाओ, गाजर ख़रीदो

गाजर धोओ, गाजर पोंछो

गाजर छीलो, गाजर खाओ

कैसा इसका स्वाद?

गाजर मीठी और कुरकुरी सेहतमन्द

रोज एक गाजर खाओ डॉक्टर को रक्खो दूर

देखें कि क्या बच्चा फली को छील सकता है और सब्जियों को लगभग समान आकार में तोड़ सकता है। जाँचें कि क्या बच्चा गाजर छील सकता है। देखें कि क्या बच्चा फली, बीन्स, गाजर, धोने, पोंछने और छिलनी जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

च) समूह गतिविधि 6: मीठा, नमकीन और खट्टा

मेज़ पर चीनी व नमक के कटोरे और नींबू का एक टुकड़ा रखा जाता है। पानी का एक मग, और तीन गिलास दिए जाते हैं।

बच्चों के लिए निर्देश: छोटे टोंटीदार पात्र (beakers) का प्रयोग कर तीन पारदर्शी गिलासों में पानी डालें। पहले गिलास में एक चम्मच चीनी डालें और मिलाएँ। देखें कि चीनी का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। दूसरे गिलास में एक चम्मच नमक डालें और मिलाएँ। ग़ौर कीजिए कि नमक का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। तीसरे गिलास में नींबू का टुकड़ा निचोड़ें और मिलाएँ। देखें कि नींबू की बूँदों का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। अब, नीचे दिए गए सवालों का जवाब दीजिए –

कौन सा तेज़ी से घुलता है, चीनी, नमक या नींबू?

पहले गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

दूसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

तीसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

(बच्चे पानी डालना और सन्तुलन बनाना सीखेंगे। वे पानी में नमक, चीनी और चूने को घुलते हुए देखते हैं, और एक निष्कर्ष पर आते हैं। वे स्वाद से अवगत हो जाते हैं।)

आकलन: देखें कि क्या बच्चा प्रत्येक घोल के स्वाद को पहचानने में सक्षम है। जाँचें कि क्या बच्चा यह देख सकता है कि पहले क्या घुला। देखें कि क्या बच्चा नमक, चीनी, नींबू और निचोड़ जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

सत्र के आख़िर में सीता के साथ-साथ सभी बच्चे बहुत खुश थे। मैं भी खुश था क्योंकि मैं अपने सभी बच्चों के लिए रसोई को सकारात्मक तरीक़े से पेश करने में सक्षम था।

2.4 भाषा शिक्षण के माध्यम से 6-7 साल की उम्र के लिए सीखने की सकारात्मक आदतें

सकारात्मक सीखने की आदतों से सम्बन्धित कौशल, विशेष रूप से शुरुआती ग्रेड्स में सबसे अच्छा तब प्राप्त होता है जब उन्हें कक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षण पद्धति को शामिल किया जाता है इस उद्देश्य से नीचे सुझाई गई कुछ रणनीतियों को सभी शैक्षणिक विषयों की पाठ योजनाओं में शामिल किया जा सकता है। नीचे दी गई पाठ योजना भाषा के पाठ का एक उदाहरण है, जिसे बच्चों को पाठ के दौरान अधिक ध्यान केन्द्रित करने और ध्यान देने में मदद करने के लिए संरचित किया जा सकता है।

2.4.1 सीखने के प्रतिफल और आकलन संकेतक:

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. कक्षा में शिक्षक और साथियों के साथ बातचीत पर ध्यान केन्द्रित करता है	1. बातचीत की सामग्री को याद करने में सक्षम और समझ बढ़ाने के लिए सवाल पूछना
2. किसी दिए गए कार्य को अन्त तक पूरा करना और पूरा करने की दक्षता	2. किसी दिए गए गतिविधि को बिना विचलित हुए निर्धारित समय में पूरा करने में सक्षम
3. ऑडियो इनपुट को सुनने और ख़ुद को उससे जोड़ने में सक्षम	3. किसी दी गई कहानी को सुनने, समझने और सोचने में सक्षम

कक्षा में ध्यान के सन्दर्भ में विचार किया गया है :

क) ऑडियो इनपुट (निर्देश, कहानी, बातचीत) पर ध्यान देना।

ख) किसी के कार्यों पर ध्यान देना।

दिन को पढ़ने/लिखने की गतिविधि का कॉर्नर, सर्कल टाइम, भाषा के खेल, निर्देश, व्यक्तिगत कार्य और शिक्षक द्वारा पुस्तक पढ़ने में विभाजित किया गया है। नीचे दी गई पाठ योजना इस बात का सूचक है कि कैसे गतिविधियों को संरचित किया जा सकता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे गतिविधियों में शामिल हों और समूह गतिविधियों पर ध्यान भी केन्द्रित करें।

क) सारांश

तालिका 2

#	गतिविधि	अवधि	उद्देश्य	सामग्री
1	उपस्थिति अंकन	5 मिनट	लिखित भाषा पर ध्यान देना, और उससे जुड़ना	कक्षा की दीवार पर उपस्थिति चार्ट लगाना और मार्क करना
2	पढ़ने और लिखने का कॉर्नर टाइम	15 मिनट	बच्चों को कक्षा के वातावरण में लाकर उन्हें बाहरी दुनिया के विकर्षणों से दूर कक्षा में अपना ध्यान केन्द्रित करने में मदद करना	रीडिंग कॉर्नर (किताबें) और राइटिंग कॉर्नर (काग़ज़ात, रंगीन क्रेयॉन, पेंसिल, स्केच पेन आदि)
3	सर्कल टाइम – मूलाक्षर 'म' के निर्देश की ओर एक क़दम	15 मिनट	सुनना, दूसरे क्या कह रहे हैं उस पर ध्यान देना, यह जानने पर ध्यान देना कि कब किसी की बारी आने वाली है ज़ोनिंग आउट करने के बजाय गतिविधि पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है	गेंद
4	छोटे समूहों में भाषा के खेल - शब्दों में 'म' ध्वनि खोजें	30 मिनट	ऑडियो और फिजिकल मूवमेण्ट का समन्वय। श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें।	तीन पेपर कप और तीन कंचे
5	शारीरिक खेल और गीत	10 मिनट	ऑडियो और फिजिकल मूवमेंट का समन्वय श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें	कोई नहीं
6	पुस्तक पठन	20 मिनट	कहानी पर ध्यान देना और सक्रिय सुनना	किताब

ख) गतिविधियों का विवरण

i. शिक्षक उपस्थिति दर्ज करने के बजाय सामान्य उपस्थिति पत्रक (common attendance sheet) पर अपने नाम से हस्ताक्षर करें। बच्चे अपना नाम खोजने के लिए उपस्थिति पत्रक से पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और फिर उसके सामने अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। यह गतिविधि बच्चों को लिखित सामग्री पर अपना ध्यान केन्द्रित करने और उसके साथ जुड़ने में मदद करती है।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे बिना चूके या हर बार याद दिलाए बिना अपने नाम के आगे अपनी उपस्थिति लगा सकते हैं।
- बच्चे अन्य नामों की सूची से अपना नाम पहचान सकते हैं।

ii. जब बच्चे कक्षा में आते हैं, तब वे विचलित अवस्था में होते हैं। दो कॉर्नर्स (पठन और लेखन) में से एक में स्थिर होने की आदत से उन्हें कक्षा के काम पर अपना ध्यान केन्द्रित करने और बाहरी विकर्षणों को दूर रखने में मदद करती है। बच्चों में प्रिण्ट जागरूकता विकसित करने के लिए यह एक अच्छा अभ्यास है।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे जब पठन-लेखन कॉर्नर में बैठ जाते हैं तो शान्त हो जाते हैं और किताब पढ़ना, चित्र बनाना या कुछ लिखना शुरू कर देते हैं।
- वे एक-दूसरे से कम बात करते हैं और अपने द्वारा चुनी गई गतिविधि पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।
- बच्चे सर्कल टाइम में पढ़ने और लिखने (अप्रत्याशित साक्षरता) की दिशा में पहला कदम उठाते हैं।

iii. शिक्षक मूलाक्षर 'म' की ध्वनि के फिर से दोहराने के एक खेल आयोजित करता है। शिक्षक 'म' की ध्वनि वाला एक शब्द कहता है और गेंद को किसी बच्चे की ओर फेंकता है। गेंद पाने वाला बच्चा शब्द को दोहराता है और 'म' ध्वनि वाला ही एक नया शब्द कहता है। इसके बाद, गेंद दूसरे बच्चे की ओर फेंकी जाती है। चूँकि घुमावों का कोई निश्चित क्रम नहीं है, सभी बच्चों को सतर्क रहना और खेल से जुड़ना चाहिए, ऐसा न हो कि वे अपनी बारी से चूक जाएँ। उन्हें कहे जा रहे शब्दों पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उन्हें अन्तिम शब्द को दोहराना होगा। इससे उन्हें अपनी बारी खत्म होने के बाद मानसिक रूप से साइन आउट करने के बजाय खेल की पूरी अवधि में गतिविधि पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है। इस प्रकार, बच्चे 'म' की ध्वनि को डिकोड कर सकते हैं और उन शब्दों को बता सकते हैं जिनमें 'म' ध्वनि होती है।

आकलन के मानदण्ड :

- गेंद पर नज़र रखते हैं और ध्यान देते हैं कि किसकी बारी है।
- सक्रिय रूप से सुनता है और खेल में कहे जा रहे शब्दों को याद रखता है।
- विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता) के बीच अन्तर कर सकते हैं।

iv. बच्चे जोड़े में बैठते हैं। प्रत्येक जोड़ी को तीन पेपर कप और तीन कंचे दिए जाते हैं। काग़ज़ के कपों को पहले, मध्य और आख़िरी के रूप में एक पंक्ति में व्यवस्थित किया जाता है, और दोनों बच्चे कप के एक ही तरफ़ बैठते हैं। एक बच्चा एक शब्द कहता है जिसमें 'म' ध्वनि होती है। दूसरा बच्चा कंचे को पहले, मध्य या आखिरी प्याले में इस आधार पर रखता है कि शब्द में 'म' की आवाज़ कहाँ सुनाई देती है। उदाहरण के लिए 'कमळ' शब्द के लिए बच्चे को बीच के प्याले में कंचे लगाना चाहिए। मामा शब्द के लिए बच्चे को पहले प्याले में एक और आखिरी प्याले में एक कंचे रखना चाहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- शब्द को ध्यान से सुनते हैं०, विशिष्ट ध्वनि के स्थान की पहचान कर सकते हैं ०और उसके अनुसार कंचे को रख सकते हैं।
- विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता) के बीच अन्तर कर सकते हैं।

v. शिक्षक बच्चों को 'भैर-भितर' के खेल में शामिल करता है। बच्चे एक घेरे में खड़े होते हैं और हाथ पकड़ते हैं। जब शिक्षक 'भितर' कहते हैं, तो बच्चे अन्दर की ओर कूदते हैं, और जब शिक्षक 'भैर' कहते हैं, तो वे बाहर की ओर कूदते हैं। बच्चे को शिक्षक द्वारा कहे जा रहे विशिष्ट शब्द पर ध्यान देकर हैं उसके अनुसार कार्य करना होगा। जब तक वे ध्यान नहीं देते वे खेल को जारी रखने में असमर्थ होते हैं।
शिक्षक बच्चों को ज्ञात कविता के शब्दों को गाए बिना क्रिया करता है, बच्चे क्रियाओं को देखते हैं और कविता गाते हैं। कक्षा में नियमित अन्तराल पर शारीरिक गतिविधि बच्चों का ध्यान आगे आने वाली गतिविधियों में बढ़ाने में मदद करती है।
आकलन के मानदण्ड: ऑडियो और शारीरिक क्रियाओं को एक साथ समन्वयित करता है।

vi. अनुवर्ती गतिविधि के रूप में, शिक्षक बच्चों को कोई भी उपयुक्त कहानी ज़ोर से पढ़ने के लिए कह सकती है। वह बच्चों को चित्र दिखा सकती है, कहानी के बारे में सवाल पूछ सकती है और बच्चों को आगे की घटनाओं का अनुमान लगाने के लिए कह सकती है।
आकलन के मानदण्ड :

- कहानी को आखिर तक समझते हैं ।
- पूछे गए सवालों के जवाब कहानी से जोड़ सकते हैं।
- कहानी किस दिशा में ले जाएगी, इसके बारे में अनुमान लगा सकते हैं।

2.5 आसपास के जानवरों के माध्यम से गणित सीखना

तारकेश्वर में इस ग्रामीण स्कूल के आसपास का समुदाय कई जानवरों और पक्षियों को आश्रय देता है, विशेष रूप से जिन्हें पालतू या घरेलू जानवरों के रूप में पाला जाता है। समुदाय के परिवार इन जानवरों को खाना और जगह देकर उनकी देखभाल करते हैं। अन्य जानवर भी मानव आवास के निकट रहते हैं।

शिक्षिका बरसा अपनी शिक्षण प्रक्रिया में इसका व्यापक रूप से उपयोग करती हैं। यहाँ 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण योजनाओं का एक नमूना है। जबकि यह योजना अधिगम के अन्य प्रतिफलों को प्राप्त करती है; यहाँ आसानी के लिए संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र से सम्बन्धित और इसके भीतर गणितीय समझ व दक्षताओं को विकसित करने के पाठ्यचर्या के उद्देश्य को इस उदाहरण में रेखांकित किया गया है।

एक चरवाहे की कहानी सुनाइए। जो कुछ इस तरह है :

"बहुत-बहुत समय पहले की बात है, तारकेश्वर में एक चरवाहा परिवार रहता था। उनके पास बहुत सारी गायें थीं। हर दिन दोपहर में देबंशी और दीपांदन उन्हें चराने जाते थे। वे मन्दिर की गली से गुजरते हुए गाँव के बाहर के जंगल में जाते और देर शाम को सभी गायों को इकट्ठा करके लौट आते।

एक दिन, देबंशी अचानक सोचने लगी... अगर कोई गाय गुम हो गई या खो गई, तो हमें कैसे पता चलेगा। वह परेशान थी। वह सोचने लगी कि क्या किया जाए। अपनी इस परेशानी को उसने अपने भाई को भी बताया। वे उस समय तक कोई संख्या या गिनती नहीं जानते थे।

जब उन्होंने इसे अपने पड़ोसी बाल्मीकि बताया, तो उन्होंने एक योजना सुझाई। बाल्मीकि ने कहा कि उनके दरवाज़े से निकलने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक बोरी में एक कंकड़ डालें और जब वे चरकर घर लौटती हैं और जब प्रत्येक गाय उनके द्वार में प्रवेश करती है, तो उसी बोरे में से एक कंकड़ निकाल लें। इस तरह आप जान पाएँगे कि क्या सभी गायें वापस आ गई हैं। देबंशी और दीपंजन अभी भी हैरान थे, क्योंकि उन्हें समझ नहीं आया कि यह कैसे काम करता है। बच्चों, क्या आप समझ गए कि बाल्मीकि की योजना कैसी है, क्या यह गायें वापस आई हैं या नहीं पता लगाने में मदद करती है या नहीं?

देबंशी और दीपांजन इस विचार को आजमाना चाहते थे और देखना चाहते थे कि यह कैसे होता है। अगले दिन उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा बाल्मीकि ने सुझाया था। जैसे ही एक-एक गाय दरवाजे से निकली, उन्होंने बोरी के अन्दर एक-एक कंकड़ डालना शुरु कर दिया। जब वे लौटे, तो उन्होंने दरवाजे में प्रवेश करने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक कंकड़ निकाला। अचानक, वे समझ गए कि यह कैसे काम करता है और बहुत खुश थे। उस शाम उन्होंने बाल्मीकि को धन्यवाद दिया और उन्हें कृतज्ञता के रूप में चावल और दूध से बनी खीर भेंट की।

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए कथन को प्रश्नों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करें।

कहानी के अन्त में बच्चों को एक गतिविधि में शामिल करें। एक कंचों भरा और एक खाली डिब्बा लें। जैसे ही बच्चे बाहर जाते हैं, वे पहले डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और दूसरे डिब्बे में डालते हैं। जैसे ही वे वापस अन्दर आते हैं, वे दूसरे डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और उसे पहले वाले बक्से में वापस रख देते हैं।

नोट : हमें बच्चों से तुरन्त प्रतिक्रिया नहीं भी मिल सकती है। यह देखने और सोचने के अवसर प्रदान करने के बारे में अधिक है। अधपके निर्देश ज़्यादा मदद नहीं करते हैं।

अगले दिन, इसी कहानी वहीं से शुरू करें, जहाँ वह छूटी थी। कुछ इस तरह :

"देबंशी और दीपंजन गायों के झुण्ड पर नज़र रखने के नए तरीक़े से खुश हैं। एक दिन जब वे शाम को गायें चराकर लौटे और जब एक-एक गाय अन्दर जाने लगी तो उन्होंने बोरी से एक-एक कंकड़ निकालना शुरू कर दिया। लेकिन वे हैरान और परेशान थे। दो कंकड़ अभी भी बचे थे लेकिन उन्हें बाहर कोई गाय नहीं दिखाई दी। बच्चों, आपको क्या लगता है कि देबंशी और दीपंजन हैरान और परेशान क्यों थे? इसका क्या मतलब है? किसी और दिन, बोरी खाली थी, क्योंकि सभी कंकड़ निकाल दिए गए थे। लेकिन फिर भी एक गाय बाहर थी। इसका क्या मतलब है, बच्चो? क्या यह सम्भव है?"

अगले दिन, जितनी बच्चों की संख्या है, फ़र्श से सटे बोर्ड पर उतने लकीरें खींचे। बच्चों से कहे कि हर दिन जब वे कक्षा में आए, तब एक लकीर उस पर खींचा करें।

कुछ महीनों बाद बच्चों से यह पूछें और इसका पालन करें, "आज हम केवल बोर्ड को देखकर पता लगा सकते हैं कि कुछ बच्चे स्कूल आए हैं और कुछ स्कूल नहीं आए हैं। अगर हम यह जानना चाहते हैं कि कौन स्कूल आए हैं और कौन-कौन नहीं आए तो हमें क्या कर सकते हैं?

2.6 कक्षा 2 में गणित के लिए समूहवार अलग-अलग सीखना (Differentiated Learning)

उत्पल मोरीगाँव में दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ाते हैं। वह बच्चों के लिए जोड़ और घटाव से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं, अवधारणाओं व पैटर्न को शामिल करने, तलाशने एवं खोजने के लिए विभिन्न परिदृश्यों, सन्दर्भों व अवसरों को प्रस्तुत करते रहे हैं। कुछ दिनों के अवलोकन के बाद अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने देखा कि बच्चे अलग-अलग स्तरों और स्थितियों पर थे। उत्पल ने अपने अवलोकनों के आधार पर कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया है।

2.6.1 समूह क

प्रियोम, आसीन और ताशी अभी भी संख्याओं के नाम और दो अंकों की संख्याओं की गिनती में महारत हासिल करना सीख रहे हैं। इससे उन्हें दो अंकों की संख्या वाले बुनियादी गणित करते समय भी परेशानी होती है। आसिन को घटाव के अर्थ के बारे में कुछ और जानकारी की आवश्यकता है। दीपशिका गिनती में काफ़ी सहज है, लेकिन फिर भी जोड़ना और घटाना सीख रही है।

इस समूह के लिए उत्पल ने नीचे दी गई गतिविधियों की योजना बनाई :

क) संख्या कार्ड गतिविधि: इसे जोड़ियों में किया जाना चाहिए, जहाँ संख्या कार्ड (संख्या 1-20) पर एक पैटर्न होता है। कार्ड को मिलाकर 2 बच्चों में बाँट दें। हमारे पास बीच में रखी साधारण वस्तुओं का एक साझा ज़खीरा भी है (बटन, बीज आदि)। कार्ड को बगल में रखी गई वस्तुओं की संख्या के बगल में सीधा रखा जाता है, जहाँ वस्तु और कार्ड पर छपी संख्या समान होती हैं। अपनी हरेक बारी पर खिलाड़ी को अपने पास के कार्ड्स में से एक कार्ड को चुनकर बीच के ढेर पर रखकर कार्ड से मिलान वाली संख्याओं की वस्तुओं को मिलाना या निकालना होगा। इसलिए, हर बार उन्हें यह देखना होगा कि कितनी वस्तुओं को मिलाना/निकालना है, मतलब कि उन्हें अन्तर जानना होगा।

ख) 1, 2, 3, ... 100 की गिनती करना और 10, 20, 30 की गिनती छोड़ना, इस गतिविधि को उल्टे और सीधे दोनों ओर से किया जा सकता है, इस प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे को सही कर सकते हैं।

ग) घटाव के अर्थ पर ज़ोर देने और जोड़ के साथ सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए :

बच्चों के गिनने योग्य कुछ वस्तुओं (मान लीजिए 10 बटनों) को रखा जाता है। अब मान लीजिए, जैसे ही आसीन अपनी आँखें बन्द करती है, ताशी कुछ वस्तुओं को अपने हाथ में छिपा लेती है (जैसे 4 बटन) और अपना हाथ पीछे कर लेती है। जब आसीन अपनी आँखें खोलती है, तो उसे बताना होगा कि ताशी ने कितनी वस्तुएँ उठाई हैं। शिक्षक पहले इसे प्रदर्शित कर सकता है, और नीचे दिए गए सवाल पूछ सकता है :

केस 1: उत्पल अपनी आँखें बन्द करते हैं, और आसीन बटन उठाती और छुपाती है। इसके बाद, उत्पल अनुमान लगाते हैं कि आसीन के पास कितने बटन हैं।

i. मैं यह कैसे बता पाया? क्या यह कोई जादू की ट्रिक है?

केस 2 : अगले दौर में आसीन अपनी आँखें बन्द कर लेती है और टीचर बटन उठाकर छुपा देता है। इसके बाद, आसीन अनुमान लगाती है कि उत्पल के पास कितने बटन हैं।

i. क्या आप आसीन से सहमत हैं?

ii. आपको क्यों लगता है कि 4 बटन छिपे हुए हैं?

iii. आपको कैसे पता चला?

iv. क्या आप सभी सहमत हैं कि मेरे हाथ में 4 कंचे हैं? क्या आपको यकीन है?

v. हम कैसे पता लगा सकते हैं?

vi. क्या आपका कोई सवाल है?

ऐसे प्रश्न/संकेत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उत्पल को बच्चों की चिंतन प्रक्रिया का आकलन करने में मदद करेंगे, और उन्हें सोचने, स्पष्ट करने और व्यक्त करने के अवसर प्रदान करेंगे। धीरे-धीरे, वस्तुओं की संख्या बढ़ाई जा सकती है। (ज़मीन पर मौजूद 6 वस्तुओं से 10 तक गिनना और 10 से 4 वस्तुओं को उठाकर वापस गिनना जैसी गतिविधि की जा सकती है।)

2.6.2 समूह ख

हालाँकि त्सेवांग, जावेद और तोशीली इसका अर्थ समझते हैं, लेकिन उन्हें अभी भी औपचारिक प्रतीकात्मक निरूपण को समझना/आत्मसात करना बाकी है (अर्थात, 4 पेंसिल एवं 3 और पेंसिल, बराबर है / वही संख्या है / है 7 पेंसिल => 4 +3 = 7)।

इस समूह के लिए जोड़ के माध्यम से घटाव के लिए वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ उत्पल द्वारा दी जाती है।

क) समस्या : रिंटू और पिंकी के पास कुल मिलाकर 14 सीपियाँ हैं। रिंटू का कहना है कि उसके पास 5 सीपियाँ हैं। क्या हम बता सकते हैं कि पिंकी के पास कितनी सीपियाँ हैं?

ख) समस्या : सतपिदा के पास 3 नींबू हैं, लेकिन सभी के लिए नींबू पानी बनाने के लिए उसे कुल 10 नींबू की आवश्यकता होगी। उसे बाज़ार से और कितने नींबू लाने चाहिए?

ग) समस्या : 13+___=29

घ) समस्या : ___+45 = 59

ङ) सरल ग्रिड जोड़ पहेली जैसे:

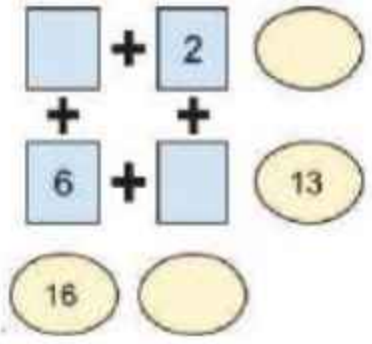

च) उत्पल ने समझा कि वे छोटी संख्याओं के साथ सरल घटाव के इबारती सवालों (word problems) को हल कर सकते हैं और उनसे सम्बन्धित प्रतीकात्मक संकेतन दिखाने के लिए संवाद करते हैं। वे उन उदाहरणों/परिदृश्यों का उपयोग करते हैं जो उन्होंने पहले काम में लिए थे।

छ) अपनी बातचीत के दौरान, उन्होंने पाया कि स्थानीय मान (place value) की समझ अभी भी पर्याप्त नहीं थी, और त्सेवांग कभी-कभी बड़ी और छोटी संख्याओं की पहचान करने में चूक जाता था। उत्पल ने 10 से स्किप काउंटिंग खेलने का सुझाव दिया और बच्चों को यह देखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की कि प्रत्येक संख्या नाम का क्या अर्थ है, चालीस और आठ यानी 40 + 8 ही अड़तालीस है।

ज) 1-100 नम्बर चार्ट का उपयोग करके एक गतिविधि/खेल दिया गया था : संख्या चार्ट पर कुछ खजाने (वस्तुओं) को यादृच्छिक रूप से (randomly) रखा जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी के मोहरे को चार्ट पर अलग-अलग स्थानों पर बेतरतीब ढंग से रखा जाता है। प्रत्येक मोड़ पर एक खिलाड़ी या तो +1, -1, +10 या -10 कर सकता है (चलते समय उन्हें अपनी पसन्द को ज़ोर से कहना होगा)। उद्देश्य क़ीमती वस्तुओं की अधिकतम संख्या एकत्र करना है।

झ) उत्पल ने महसूस किया कि स्थानीय मान प्रणाली (place value system) को ग्रहण करने के लिए पर्याप्त समय तक पूरी कक्षा को खेल के साथ जोड़ना बेहतर था। उनके पास कुछ विचार थे - शुरू करने के लिए, टूथपिक्स, फिर flats-longs-units और फिर एक्सप्लोडिंग डॉट्स विधि का उपयोग करें; उन्होंने सोचा कि इस पर बाद में सोचकर योजना बनाएंगे।

2.6.3 समूह ग

कबीर, प्रोनोई और रिधिमा अलग-अलग हालातों में अपने खुद के तरीक़ों का इस्तेमाल करके जोड़ और घटाव का सामना कर सकते हैं, पहचान सकते हैं और काम में ले सकते हैं। वे मुख्य रूप से 10s तक स्किप काउंटिंग का उपयोग कर रहे हैं और 1s के साथ काउंटिंग ऑन/बैक कर रहे हैं, यानी, संख्याओं को दहाई और इकाई में तोड़ रहे हैं और संक्रियाएँ कर रहे हैं। प्रोनोई इबारती सवालों को समझने में थोड़ा संघर्ष करता है, लेकिन जब उत्पल उसे समझने में मदद करते हैं, तो वह समस्या का समाधान कर सकता है। बच्चे 20 तक की संख्या वाली समस्याओं के लिए मानसिक गणना करने में भी सक्षम होते हैं, लेकिन कभी-कभी बड़ी संख्या में वे चूक जाते हैं।

इस समूह के लिए उत्पल ने योजना बनाई कि :

क) 2s, 5s और 3s तक स्किप काउंटिंग (समूह कार्य)। ('क्या आपको लगता है कि 46 नम्बर 2s की स्किप काउंटिंग में आता है? क्यों/क्यों नहीं? आप कैसे जानते हैं?' जैसे सवालात 2s और 5s के लिए भी पूछे जा सकते हैं)।

ख) समझने के कौशल का आकलन करने के लिए उत्पल ने प्रोनोई को एक छोटी कहानी पढ़ने और अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहा।

ग) संख्या लचीलेपन और संख्या समझ में सुधार के लिए सवालों के साथ कस्टम वर्कशीट।

2.6.4 समूह घ

खिरेन और मुमताज ने संक्रियाएँ करते समय और कभी-कभी मानसिक रूप से अन्तरिम गणना करते समय लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

उनके लिए उत्पल ने सोचा:

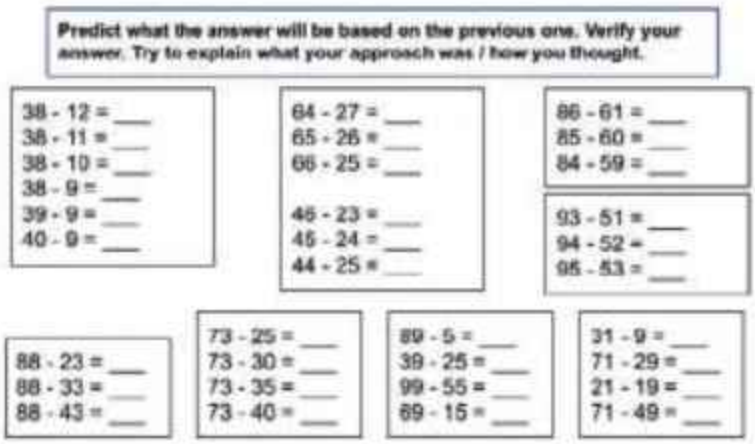

Khiren and Momtaz have started using numbers flexibly while performing operations and also sometimes doing interim calculations mentally. Utpal bhaiya has thought of:

1. Addition and Subtraction chart to observe patterns and relationships, questions like ___ -

क) पैटर्न और सम्बन्धों को देखने के लिए जोड़ और घटाव चार्ट में कुछ इस प्रकार के प्रश्न ___ - ___ = 18।

ख) पहेली के सरल संस्करण जैसे ग्रिड घटाव, संख्या टावर और Cryptarithms।

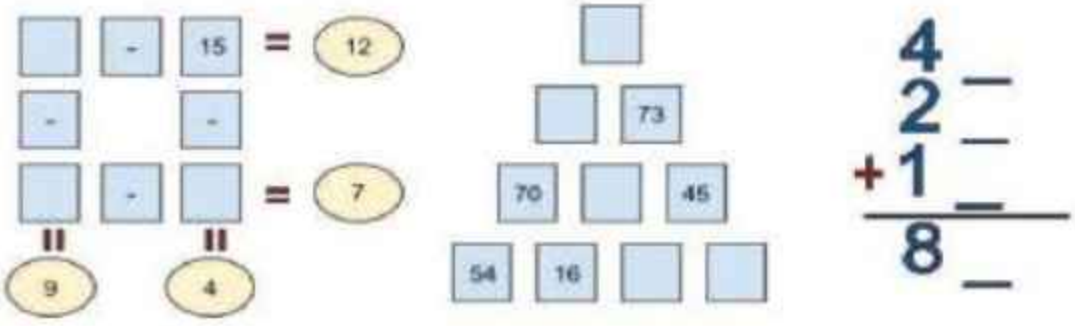

ग) स्थानीय मान का उपयोग करके दाएँ से बाएँ घटाव की मानक विधि का परिचय दें, अर्थात, यदि आवश्यक हो तो उधार लेना (स्थानीय मान की अवधारणा संबंधित गतिविधियों पर पूरे कक्षा सत्र के बाद)।

उत्पल ने उन गतिविधियों का एक अच्छा मिश्रण रखने की कोशिश की है जो बच्चे व्यक्तिगत रूप से, जोड़े में या छोटे समूहों में कर सकते हैं/सीख सकते हैं। वे लचीले ढंग से समूहों में सहायता करने, बातचीत/संवाद करने और उन गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ते रहते हैं, जिनमें उनकी आवश्यकता होती है। उन्होंने घटाव के अर्थ और संक्रिया पर जोर देने से पहले, घटाव की मानक विधि प्रस्तुत करने को रोका हुआ है। उन्होंने अवधारणात्मक समझ, जो कि ठोस अनुभवों से शुरू करके अभिव्यक्ति, वर्णन और प्रतीकात्मक निरूपण तक जाती है, का उपयोग करने के लिए विभिन्न स्थितियों, परिदृश्यों व समस्याओं से उनका परिचय करवाया। उन्होंने सोचा, एक बार जब बच्चे घटाव की एक पुख्ता समझ बना लेते हैं और विभिन्न सन्दर्भों में उसे लागू करने के लिए लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग कर सकते हैं, तब वे मानक विधि को बेहतर ढंग से समझने और हासिल करने में सक्षम होंगे। सत्र के बाद जब वह विचार कर रहे थे, तब उन्होंने महसूस किया कि कुछ हफ्तों के बाद मुद्रा, सिक्कों और नोटों का उपयोग करके

बाज़ार के अनुभव इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का बेहतर तरीक़ा होगा।

नोट : कोई समूह निश्चित नहीं है। शिक्षक समूह को गतिशील रूप से इस आधार पर चुनता-बदलता है कि बच्चे वर्तमान में कहाँ हैं और नियोजित कार्य / समस्या / गतिविधि की उपयुक्तता क्या है।

उपरोक्त गतिविधियों में शामिल सीखने के प्रतिफलों का सारांश।

क) बढ़ती हुई संख्या रेखा पर या ब्लॉक्स/चित्रों पर 2s या 3s में स्किप काउंटिंग प्रदर्शित करना।

ख) दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके निन्यानवे तक की संख्याओं के लिए भारतीय numerals को पढ़ना और लिखना।

ग) 99 तक 10s, 20s, 30s के समूहों में गिनना।

घ) विभिन्न पैटर्न्स में समान मात्रा के प्रतीकों या बिन्दुओं का उपयोग करना।

ङ) लचीली रणनीतियों का उपयोग करना और संख्याओं के संयोजन (साथ जोड़ना) और वियोजन (set से निकालना) के combinations प्राप्त करना।

च) स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करते हुए दो संख्याओं को जोड़ना (योगफल 99 से अधिक नहीं) और उन्हें सरल दैनिक जीवन की समस्याओं / स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना ।

छ) स्थानीय मान का उपयोग करके 99 तक की दो संख्याओं को घटाना और उन्हें दैनिक जीवन की सरल समस्याओं/स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना।

ज) संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्धों को सीखना और लागू करना।

झ) एक परिचित स्थिति/सन्दर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करना।

ञ) 100 रुपये तक की राशि बनाने के लिए नोट और सिक्के जोड़ना।

ट) कई चरणों (एक बार में 8 से 9 निर्देश) वाले निर्देशों का पालन करना।

ठ) एक विषय के बारे में चर्चा में शामिल होना और प्रश्नों को उठाना, उनका जवाब देना।

ड) वयस्कों द्वारा शुरू किए गए कार्यों में भाग लेना जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (उदाहरण के लिए, शिक्षक के नेतृत्व वाले छोटे समूह में भाग लेना)।

ढ) लम्बे समय तक (30 मिनट) किसी कार्य के साथ जुड़ाव बनाए रखना।

ण) विभिन्न गतिविधियों को आज़माने के लिए वयस्कों के सुझावों का लगातार जवाब देना।

त) समाधान या रणनीति खोजने में वयस्कों और अन्य बच्चों के कल्पनाओं पर विचार करना।

2.8 दृश्य कलाओं (Visual Arts) के लिए शिक्षण योजना (आयु 7-8)

2.8.1 सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. प्रतिरूपों, रंगों और डिज़ाइनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्यावरण का अवलोकन करते हैं।	रंगों, उनकी छवियों और उनके नामों को उनके आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ते हैं बाजार में रंगों का अवलोकन, तुलना, मिलान।
2. कलाकृतियाँ बनाते और देखते समय दृश्य और विषयगत विवरणों पर ध्यान देते हैं।	कोलॉज के लिए सामग्री का चयन करते समय पैटर्न, रंग और उस छवि के आधार पर चुनाव करते हैं जिसका वे प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं।
3. विभिन्न सामग्रियों को कोलॉज करके विभिन्न प्रकार की बनावट बनाते हैं (6-7 वर्ष की आयु से लागू)	कोलॉज में कपड़े, काग़ज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि को एक साथ रखते हैं।
4. विभिन्न पैटर्न्स को संयोजित करने और बनाने के लिए नवीन तरीक़ों का उपयोग करते हैं (6-7 वर्ष की आयु से लागू)	विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग के अलग-अलग बनावट बनाते हैं संरचित तरीके से दो या तीन सामग्री कोलॉज करके दृश्य पैटर्न बनाते हैं।

2.8.2 संबंध और कड़ियाँ (Connections and Linkages)

क) तीसरे और चौथे सीखने के प्रतिफल 6-7 साल की उम्र से लागू होते हैं और कोलॉज गतिविधियों की नींव बन जाते हैं। हालाँकि, 7-8 वर्ष के आयु वर्ग में बच्चों को सामग्री के अधिक विस्तृत अन्वेषण की ओर ले जाया जाता है और वे जो विकल्प चुनते हैं, वह सीखने के प्रतिफल 1 और सीखने के प्रतिफल 2 में अपेक्षित हैं। उन्हें और अधिक पुनरावृत्तियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ख) इन सीखने के परिणामों को संवेदी अनुभवों से सम्बन्धित भाषा और शब्दावली विकास से भी जोड़ा जा सकता है।

2.8.3 निर्देशात्मक रणनीति

कक्षा की गतिविधियों के अलावा, इस पाठ को स्थानीय बाज़ार में एक क्षेत्र-दौरे और विभिन्न प्रकार के कपड़े-लत्ते इकट्ठा करने के लिए गृहकार्य द्वारा भी बढ़ाया जा सकता है।

2.8.4 विषयवस्तु

क) इस सामग्री का औचित्य हमारी ज़िन्दगी के सभी पहलुओं पर विस्तार पर अधिक ध्यान देने के साथ ही उसमें मौजूद कई रंगों की खोज जारी रखने पर आधारित है। यह बच्चे को दिन के हर पल, आस-पास की वस्तुओं, सड़क पर लोगों आदि का अवलोकन करवाता है।

ख) बच्चे विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करके कोलॉज का भी पता लगाएँगे।

ग) नज़दीकी बाज़ार की यात्रा बच्चों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और रंगों की एक सुखद खोज पर ले जाएगी।

घ) इस्तेमाल की गई सामग्री - काग़ज़, पेंसिल, रबड़, क्रेयॉन, फूल, पंखुड़ी, कंकड़, रंगीन चॉक।

2.8.5 शिक्षण योजना और आकलन

इस पाठ योजना में हर दिन 60 मिनट के लिए, दो दिनों तक चलने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं।

क) पहला दिन : स्थानीय बाजार की फील्ड ट्रिप और कोलाज से परिचय

बच्चों को पास के किसी भी चालू व जीवन्त बाजार में ले जाया जा सकता है, जहाँ वे अवलोकन करेंगे, नोट्स लेंगे और विभिन्न चीज़ों के चित्र बनाएँगे और व्यस्त बाज़ार में रंगों का खेल देख सकते हैं। बच्चों को वस्तुओं और सामग्रियों की बनावट को देखने/कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- रंगों, उनकी तथा नामों को अपने आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ना
- बाजार में रंगों का अवलोकन, तुलना, मिलान

फील्ड ट्रिप के बाद, बच्चों को कोलाज गतिविधि से परिचित कराया जाता है जो वे अगले पाठ में करेंगे, जिसके लिए उन्हें तैयारी करने की आवश्यकता है।

बच्चों को कुछ चित्र बनाने या उसकी योजना बनाने के लिए कहा जा सकता है कि वे किस तरह की कलाकृति बनाएँगे, और विभिन्न सामग्रियों, रंगों और बनावटों का इस्तेमाल कोलॉज बनाने के लिए करना चाहेंगे।

उन्हें खाली जगह छोड़कर बोल्ड चित्र बनाने के लिए कहें, जिसमें कोलॉज बनाने के लिए क़ाग़ज़, कपड़े और अन्य सामग्री चिपकाई जा सके। अगले पाठ में कोलॉज में बनाना जारी रखने के लिए उन्हें चित्र सुरक्षित रखने के लिए कहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- भावों-विचारों को चित्रित करना
- कोलाज बनाने की प्रक्रिया में सामग्री की कल्पना कर उसके अनुसार चित्रों को बदलाव करना

बच्चों को अपने कोलाज के लिए आस-पास विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का पता लगाने के लिए कहा जा सकता है। चयन के लिए मानदण्ड, रंग, बनावट और काग़ज़/कार्डबोर्ड पर चिपकाने के लिए उपयुक्तता पर आधारित होना चाहिए। उन्हें कुछ उदाहरण दें जैसे पुराने समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में चित्रों से रंगों के टुकड़े फाड़ना, रंगीन खाद्य रैपर इकट्ठा करना और उन्हें उपयोग के लिए साफ़ करना, एक दर्ज़ी या अपने घर से बेकार कपड़े टुकड़े इकट्ठा करना आदि। उन्हें अपने भाई-बहनों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों से मदद लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें अगले पाठ में अपनी सामग्री लाने के लिए कहा जाना चाहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे स्कूल के समय के बाद, घर जाते समय, घर पर और समुदाय से विभिन्न प्रकार की सामग्री एकत्र करते हैं।
- बच्चे एकत्रित सामग्री को अगले पाठ में इस्तेमाल करते हैं।

ख) दूसरा दिन : कोलाज गतिविधि

कक्षा में सभी को समूहों में बैठाया जाता है ताकि कैंची और गोंद दिया जा सके।

उन्हें अपने चित्रों को फिर से देखने और अपनी सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए कहा जा सकता है। सभी बच्चों को अपनी सामग्री और विचारों को अपने सहपाठियों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

बच्चे अपनी व्यक्तिगत कलाकृतियों पर काम करते हैं, लेकिन समूह में अपनी सामग्री और उपकरण साझा करते हैं। उन्हें एक-दूसरे के काम का अवलोकन करने, नए विचारों, विधियों की खोज करने और एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है :

- आपके पास पीले रंग की कई अलग-अलग छटाएँ हैं। आपने इन्हें कहाँ से इकट्ठा किया?
- क्या आप मुझे इस बारे में कुछ बता सकते हैं कि आप अपनी कलाकृति में कैसे रंग भरेंगे?
- क्या आप मुझे उस पैटर्न के बारे में और बता सकते हैं जो आप बना रहे हैं? क्या आपने इसे कहीं देखा है, या आपने इसकी कल्पना की है?
- ऐसा लगता है कि आपके मित्र को यहाँ कुछ गहरे रंगों की ज़रूरत है ; क्या आप उसे कुछ गहरे रंग खोजने में मदद कर पाएँगे?

आकलन के मानदण्ड :

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है :

- अपने कोलाज में कपड़े, काग़ज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि का मिलान करें
- कोलाज बनाते समय रंगों, छायाओं, पैटर्न और बनावट में भिन्नता पर ध्यान देना
- विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग की अलग-अलग बनावट बनाना
- संरचित तरीक़े से दो या तीन सामग्रियों का कोलाज बनाकर दृश्य पैटर्न बनाना
- सामग्री को समायोजित करने के लिए मूल ड्राइंग में संशोधन और सुधार करना
- कलाकृतियों के माध्यम से रोज़मर्रा की वस्तुओं और उनके परिवेश के साथ जुड़ाव बनाना

बच्चों को अपने कार्यक्षेत्र को खाली करने और सामग्री को व्यवस्थित तरीक़े से वापस रखने के लिए कहा जाता है। जल्दी खत्म करने वालों से अपने साथियों की मदद करने के लिए कहा जाता है। बच्चों को अपने पूरे किए गए कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है, ताकि हर कोई उन्हें देख सके।

कार्यों की सराहना करने और उनके सीखे गए को साझा करने के लिए एक छोटी-सी समापन चर्चा शुरू की गई है।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे रंग और बनावट के विवरण के साथ-साथ अपने साथियों की कलाकृतियों में प्रयुक्त सामग्री चुनाव को समझाते हैं।
- बच्चे काम करने की प्रक्रिया के माध्यम से खोजे गए तरीक़ों को समझते हैं और साझा करते हैं।
- बच्चे प्राप्त सहायता की सराहना करते हैं या काम करते समय अपनी समस्याओं और चुनौतियों को व्यक्त करते हैं।

2.9 3 से 5 साल की उम्र के लिए विविधता का परिचय

गतिविधियों का यह सेट उन बच्चों के लिए है, जिनके घर की भाषा हिन्दी है:

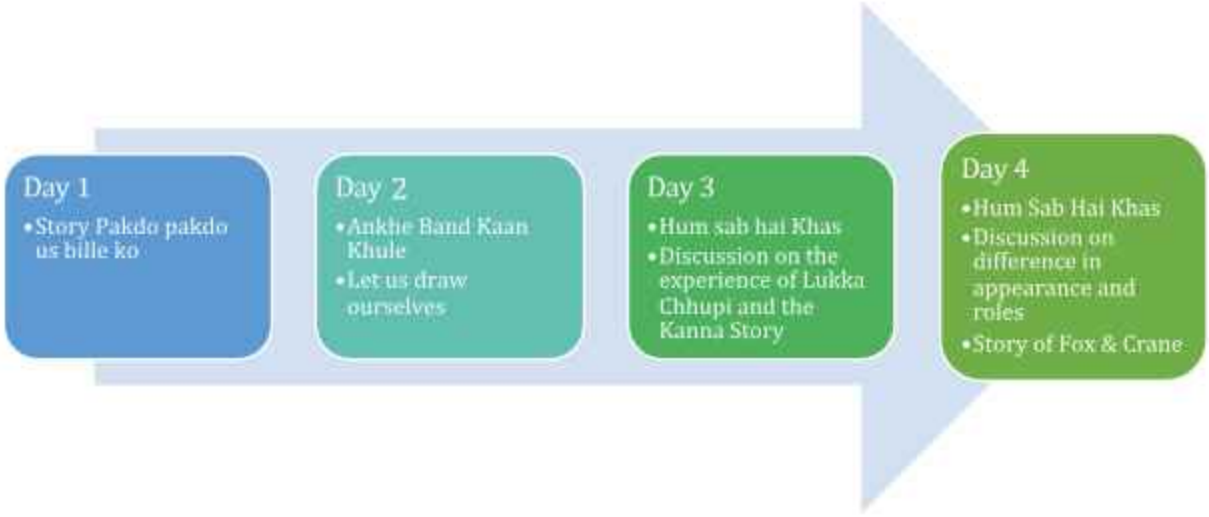

2.9.1 पहला दिन

व्हीलचेयर में एक उत्साही लड़की डिप-डिप की यह कहानी विकलांगता को सामान्य करती है।

क) गतिविधि - कहानी- उड़ने के लिए पंख/उड़ चली (20-25 मिनट)

टीचर : ठीक है बच्चों, चलिए उस लड़की के बारे में एक कहानी पढ़ते हैं, जिसने व्हीलचेयर पर अपनी गाड़ी में रोमांच का अनुभव किया था।

कापी नाम की बिल्ली खो गई है और डिप डिप उसे खोजने में अपनी दोस्त मिमो को मदद करना चाहती है। वह कापी की तलाश में उत्साहपूर्वक अपनी व्हीलचेयर पर घूमती है। डिप डिप हर जगह देखती है, जब तक कि अन्त में वह कापी को एक पेड़ के ऊपर नहीं पाती। लेकिन डिप डिप को फुसलाने के लिए एक शरारती बिल्ली से भी ज़्यादा वक्त लगता है और वह इस बात को नहीं भूलेगी कि वह व्हीलचेयर में है।

एक आम लेकिन ख़ास लड़की की कहानी बताने वाली किताब काफ़ी हौसला देने वाली है। हालाँकि व्हीलचेयर में वह अपने जीवन का प्रबन्धन कर सकती है। उसे आपकी मदद की ज़रूरत है, लेकिन उतनी ही जितना किसी और बच्चे हो सकती है।

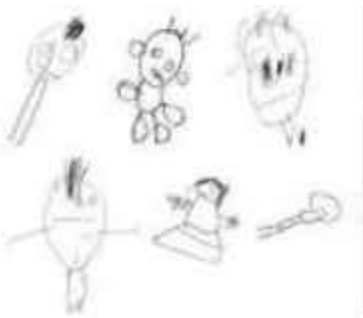

इस पूरी कहानी का सस्वर पाठ इस लिंक पर मिलेगा - https://www.youtube.com/watch?v=HPzK3ooyJ2A

टीचर : डिप डिप को क्या मज़ा आया !! क्या आप सभी ने कभी ऐसा मज़ा किया है?

बच्चा बी : एक बार जब मैं एक मुर्गी का पीछा कर रहा था।

बच्चा सी : जब भी हम पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं।

टीचर : हाँ, चलो कल एक खास तरह की पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं। क्या आपने आँख-मिचौली खेली है? हमें बारी-बारी से अपनी आँखों पर पट्टी बाँधनी होगी और अन्य खिलाड़ियों को पकड़ना होगा।

2.9.2 दूसरा दिन

क) गतिविधि 1 - आँखें बन्द-कान खुले (40-45 मिनट)

आँख-मिचौली बच्चों के बीच एक पुराना और लोकप्रिय मैदानी खेल (outdoor game) है। इस खेल मे, एक बच्चा जो 'खोजने वाला' होता है, उसकी आँखों पर कपड़े के टुकड़े से पट्टी बाँधी जाती है और उसे सभी बच्चों के बीच से एक बच्चे को पकड़ना होता है। अन्य सभी बच्चे तितर-बितर हो जाते हैं और 'खोजने वाले' का पीछा करने और उन्हें पकड़ने के लिए शोर मचाते हैं। जैसे ही वह किसी दूसरे खिलाड़ी को पकड़ लेता है, 'खोजने वाले' की बारी समाप्त हो जाती है। अब, यह दूसरा खिलाड़ी 'खोजने वाला' बन जाता है और खेल तब तक जारी रहता है जब तक कि हर कोई खेल को समाप्त करने का निर्णय नहीं ले लेता।

यह खेल संवेदी कौशल और सतर्कता विकसित करने में मदद करता है। 'साधक' को सुनाई देने वाली ध्वनियों के आधार पर अन्तर का निर्णय करना चाहिए।

विविधता : बच्चे एक-पैर वाली दौड़ भी खेल सकते हैं; एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए एक पैर पर कूदना।

ख) गतिविधि 2 - आइए हम स्वयं का चित्र बनाएँ (15-20 मिनट)

शिक्षक बच्चों को काग़ज़ और क्रेयॉन वितरित करता है।

शिक्षक : अब बच्चे कल्पना करें कि हम कैसे दिखते हैं, आइए आँखों पर पट्टी बांधे हुए अपना चित्र बनाते हैं।

बच्चे पहली कक्षा में हैं, उनके चित्र बहुत ज़्यादा परिष्कृत नहीं हैं, लेकिन पेंसिल, क्रेयॉन या पेंटब्रश पकड़ते समय उन्हें अच्छा नियंत्रण विकसित करना चाहिए था। वे कुछ इस प्रकार से रेखाएँ खींच सकते हैं:

चित्र किसी भी आकार या संरचना का हो सकता है। जब बच्चे अपने रेखाचित्र बना रहे हों, शिक्षक को प्रत्येक मेज पर जाना चाहिए। उसे चित्र ए या बी जैसा कुछ मिल सकता है। शिक्षक बच्चों से बात करेगा और बच्चे चित्र के बारे में जो कुछ भी समझाएंगे, उसे वह लिखेगा। उनकी व्याख्या जानने के लिए 'ओह, यह अच्छा है, आपने यहाँ क्या बनाया है, राहुल?' 'वाह, रज़िया, क्या यह आप चित्र में हैं? आँखें बन्द करते हुए आप क्या महसूस कर रहे थे?' जैसे सवाल भी पूछ सकता है।

शिक्षक को तब बच्चों से एक-दूसरे के काम को देखने के लिए कहना चाहिए और सराहना करनी चाहिए कि उन्होंने ख़ुद को कैसे बनाया है।

शिक्षिका को गतिविधि को मोटेतौर पर उसके द्वारा तय किए गए समय में समाप्त कर देना चाहिए। यदि कोई बच्चा अधिक चित्र बनाने पर ज़ोर देता है, तो वह अपने पोर्टफ़ोलियो में शीट रख सकती है, और उन्हें अपने खाली समय में इसे खत्म करने के लिए कह सकती है। इस तरह से शिक्षिका अलग-अलग गति से काम करने वाले सभी बच्चों को अलग-अलग समय प्रदान कर सकती है।

2.9.3 तीसरा दिन

क) गतिविधि 1 - दिखावे और विभिन्न भूमिकाओं में अन्तर पर चर्चा। लोमड़ी और सारस की कहानी (पंचतंत्र)। एक दिन, एक लोमड़ी ने अपने घर पर एक सारस को रात के खाने के लिए आमंत्रित किया। सारस निमंत्रण पाकर खुश हुआ और तुरन्त सहमत हो गया। लोमड़ी रसोई से बाहर आई और दो चपटी तश्तरियों में खीर परोस लाई। परोसकर वह खुद भी खीर का आनन्द लेने बैठ गई। सारस अपनी लम्बी चोंच के कारण खीर नहीं पी सकता था। लोमड़ी ने अपनी खीर चाट डाली और सारस देखता रह गया।

अगले दिन, सारस ने लोमड़ी को रात के खाने पर आमंत्रित किया। बगुले ने खीर से भरे दो जग लाकर रखे। जग की लम्बी सँकरी गर्दन थी। न तो लोमड़ी जग में अपना थूथन डाल सकती थी और न ही उसकी जीभ नीचे तक पहुँच पा रही थी। लोमड़ी भूखी घर लौट आई।

पूरी कहानी यहाँ उपलब्ध है: https://www.youtube.com/watch?v=v5-kJSy6Yw8&ab_channel=KiddaTV दोनों दिन, दोनों दोस्त एक-दूसरे के घरों से भूखे-प्यासे लौटते थे क्योंकि उन्हें एक-दूसरे की खास व्यवस्था पसन्द नहीं आयी थी।

शिक्षक : देखो बच्चों, हम सब एक जैसे हैं फिर भी अलग हैं। हममें से किसी की आँखें भूरी हैं, किसी की काली, किसी के घुँघराले बाल, किसी के सीधे, किसी के लम्बे, किसी के छोटे। हमें ख़ुद को और अपने दोस्तों को, वे जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करना चाहिए।

3. सीखने को समझना

विभिन्न शिक्षक अपने बच्चों के सीखने को समझने और आगे बढ़ाने के लिए कक्षा में आकलन का उपयोग कैसे कर रहे हैं, इस अनुभाग में इसके नमूने दिए गए हैं।

3.1 भाषा के लिए वर्कशीट का उपयोग करना, 7-8 की उम्र के लिए

एक भाषा शिक्षक के रूप में पढ़ने और लिखने में बच्चों की धाराप्रवाहिता विकसित करने में मदद करना पाठ्यचर्या का एक मुख्य उद्देश् है। मैं जिस कक्षा 2 (7-8 वर्ष के बच्चों) को पढ़ाता हूँ, उन्हें किसी चित्र या चित्रों के अनुक्रम का वर्णन करने के लिए छोटे वाक्य लिखने में सक्षम होना चाहिए।

वे किस तरह अपना कार्य कर रहे हैं (इस मामले में, एक वर्कशीट पर काम करना) मुझे इस बात का स्पष्ट प्रमाण देता है कि वे कहाँ हैं और मुझे उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है। यहाँ मेरी कक्षा 2 कक्षा के एक बच्चे नीरज के जरिए ऐसे काम का उदाहरण दिया गया है।

इससे ऐसी कई बातें निकलकर आती हैं, जिनकी मैं व्याख्या कर सकता हूँ। उदाहरणार्थ: वह वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करने का प्रयास करता है; उसकी वर्तनी अधिकांश शब्दों के लिए सही है, जिन्हें ध्वन्यात्मक रूप से सुना जा सकता है और वह कई दृष्ट शब्दों पर अपना नियंत्रण दिखाता है। वह वाक्य लिखते समय चित्र/विषय पर ही बना रहता है, बड़े अक्षरों (capital letters) का उपयोग करता है और सभी वाक्यों के आख़िर में विराम चिह्न का इस्तेमाल करता, 'a' वर्ण का स्थान निर्धारण के साथ प्रयोग करता है। दिए गए चित्र के बारे में नीरज का बहुत कुछ कहना है, लेकिन उसने बिना विविधता के एक सूची रूप में लिखा है।

इसी के आधार पर मुझे नीरज को कई तरह से ढाँढस बंधाना है। उदाहरणार्थ, मुझे उसके लेखन को अधिक रोचक बनाने के लिए 'दर्शकों या पाठकों' की भावना विकसित करने में मदद करने की आवश्यकता है, जैसे मैं यह क्यों और किसके लिए लिख रहा हूँ।

मुझे उसके दो छोटे वाक्यों को एक लम्बे वाक्य में संयोजित करने, नामों को सर्वनामों से बदलने और a/an जैसे आर्टिकल्स के उपयुक्त उपयोग पर काम करने की आवश्यकता है। मुझे उसे 'यह क्रिया कहाँ हो रही है, चित्र में क्या हो रहा है' जैसे प्रश्न पूछकर चित्र के और अधिक पहलुओं के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

He	in	on	she
playing	eating	sleeping	jumping
catching	mango	fruits	children
bench	throwing	ball	

Make sentences or a story on picture in own words with the help of given words

Maya was a Playing

Neerut was Boll catching

Harshu was a eating a Mango

Haldi was a Siting

Harshita was a Wa Yaming

3.2 भाषा का आकलन नमूना, 7-8 वर्षों की उम्र के लिए

मैं अपने कक्षा 2 (7-8 वर्षीय) विद्यार्थियों के साथ अंग्रेज़ी पर अपने काम में बहुत सारी वर्कशीटों का उपयोग करता हूँ। ऐसे ही एक वर्कशीट में बच्चों को कोई चित्र बनाना और कुछ वाक्यों में उसका वर्णन करना शामिल था। मैथ्यू की प्रतिक्रिया निम्नलिखित है

इस कार्य के लिए प्रत्येक अधिगम प्रतिफलों के प्रति प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है और नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि इस आकलन में व्याख्या की गई, मैंने मैथ्यू की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले कदमों की भी योजना बनाई।

तालिका 1

#.	सीखने के प्रतिफल	प्राप्ति (प्राप्त/आगे मदद की ज़रूरत है)	कारण (Justification)
1.	निर्देशों को सुनता है और चित्र बनाता है	प्राप्त	मैथ्यू ने निर्देशों में बताया गया या शिक्षक द्वारा समझाया गया एक चित्र बनाया है.
2.	सरल, छोटे वाक्य बनाता और लिखता है	प्राप्त	मैथ्यू सुसंगत, सार्थक और अभिव्यंजक वाक्य लिखने में सक्षम है, हालाँकि उनमें कुछ गलतियाँ हैं। वाक्यों में शब्दों के बीच उचित अन्तराल होता है, एक बड़े अक्षर (capital letter) से शुरू होता है और एक पूर्ण विराम के साथ समाप्त होता है।
3	लिंग से सम्बन्धित सर्वनामों जैसे 'his/ her/, 'he/ she', 'it' और 'this/that', 'here/there' 'these/ those' आदि अन्य सर्वनामों का उपयोग करता है	प्राप्त	मैथ्यू ने वाक्य में 'I' और 'This' का उचित प्रयोग किया है।
4	'before', 'between" आदि जैसे पूर्वसर्गों का उपयोग करता है	मदद की ज़रूरत है	मैथ्यू ने तीसरे वाक्य में 'from' पूर्वसर्ग का ग़लत इस्तेमाल किया है।

सारांश

बच्चा क्या जानता/ कर सकता	विचारों को अर्थपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है और विचारों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करता है। पसन्द-नापसन्द ज़ाहिर करता है अंग्रेज़ी में घोषणात्मक वाक्यों के लिए उपयुक्त वाक्य संरचना का उपयोग करता है।
बच्चा क्या नहीं जानता/नहीं कर सकता	बड़े व छोटे अक्षरों (capital and small letters) के प्रयोग में लगातार अन्तर करने और सामान्य व विशिष्ट संज्ञाओं के बीच अन्तर करने में असमर्थ है। स्वर और व्यंजन के पहले 'a' और 'an' और के प्रयोग में अन्तर नहीं कर पाता। उपयुक्त पूर्वसर्गों में मदद की ज़रूरत है, जैसे "from" का उपयोग करना। कभी-कभी आविष्कृत वर्तनी का उपयोग करता है, उदाहरण के लिए 'seeson'।

अगले क़दम :

निर्धारित करें कि क्या मैथ्यू को सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं की समझ है, क्या वह सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं को बड़े अक्षर से लिखने की समझ है। उसे अतिरिक्त वर्कशीट देकर उसके द्वारा किए गए कुछ और कार्यों का विश्लेषण करें।

मौखिक रूप में विचार व्यक्त करने के लिए उसे प्रोत्साहित करने के लिए चित्र पुस्तकों का अधिक उपयोग करें। उसे अपनी नोटबुक में लिखने के लिए प्रेरित करें और जहाँ भी आवश्यक हो, आवश्यक सहायता प्रदान करें।

उचित रूप से उपयोग करने के नियमों को समझने में उनकी सहायता के लिए "a", "an", and "the" के उपयोग वाले विशिष्ट उदाहरणों पर चर्चा करें। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले पूर्वसर्गों को संशोधित करें।

3.3 गणित के लिए आकलन नमूना, उम्र 7-8 के लिए

मेरे बच्चों को मात्राओं, आकृतियों व मापों के माध्यम से दुनिया को पहचानने के लिए गणितीय समझ और दक्षताओं को विकसित करने की आवश्यकता है। इसमें लचीली रणनीतियों का उपयोग करके 2 अंकों की संख्याओं का आसानी से जोड़ और घटाव करने की दक्षता शामिल है। मेरी कक्षा 7 (7-8 वर्ष के बच्चों) में मैंने एक समस्या पर काम किया, जिसमें हासिल लेना और दहाई के स्थान सेउधार लेना शामिल था।

संजीव ने इस तरह उत्तर दिया: 63 - 44 = 21

इस प्रतिक्रिया का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत किया गया है। मैंने बच्चे की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले कदमों की भी योजना बनाई।

तालिका 1

#	सीखने के प्रतिफल	प्राप्ति (प्राप्त/आगे मदद की ज़रूरत है)	कारण (Justification)
1.	दो अंकों की संख्याओं को लिखने और तुलना करने में स्थानीय मान का उपयोग करता है।	मदद की ज़रूरत है	ऐसा लगता है कि संजीव ने दहाई और इकाइयों को लिखित रूप में सही ढंग से दर्शाया है, लेकिन हल करते समय स्थानीय मान की समझ विकसित नहीं की है। बच्चे ने यह महसूस नहीं किया है कि 63 का इकाई स्थान 44 के इकाई के स्थान से कम है।
2.	दो अंकों की संख्याओं के घटाव पर आधारित सरल प्रश्नों को हल करता है।	मदद की ज़रूरत है	ऐसा लगता है कि संजीव ने दो एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अन्तर को याद कर लिया है, लेकिन यह नहीं समझ पाया कि घटाव में कैरी-ओवर की समस्याओं को कैसे किया जाए।

सारांश	
बच्चा क्या जानता/ कर सकता	जानता है कि घटाव का परिणाम एक संख्या है जो दी गई दो संख्याओं के मूल्यों से कम है। ऐसा लगता है कि उसने दो अंकों की संख्या के दहाई और इकाई के स्थानों को सही ढंग से दर्शाया है। ऐसा लगता है कि दो एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अन्तर को उसने याद कर लिया है।
बच्चा क्या नहीं जानता/नहीं कर सकता	यह समझ में नहीं आया कि कैरी ओवर तभी निष्पादित किया जाना चाहिए जब बड़ी संख्या का इकाई स्थान छोटी संख्या के इकाई स्थान से कम हो। उसने यह सत्यापित नहीं किया है कि अन्तर और छोटी संख्या का योग बड़ी संख्या होता है।

संजीव के सीखने के लिए आगे के क़दम :

- ठोस सामग्री के माध्यम से हासिल लेने और उधार लेने की समस्याओं का चित्रण करें।
- एकल अंकों के घटाव को फिर से देखें, और फिर धीरे-धीरे दोहरे अंकों के सवाल की ओर बढ़ें।
- उसे जोड़ और घटाव का उपयोग करके सरल समस्याएँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें हल करने का प्रयास करने दें।
- उसे मोना के साथ काम करने को कहें, उन्हें जोड़ और घटाव कार्यपत्रकों को हल करने के सहयोगी कार्य दें।

3.4 शिक्षक का वर्णनात्मक सारांश, 5-6 वर्षों की उम्र के लिए

तालिका 1

बच्चे की प्रोफाइल	
बच्चे का नाम	सुरुचि
कक्षा	एलकेजी (अब वह यूकेजी में है)
अनुक्रम	XX XX XXXX
लिंग	स्त्री
जन्मतिथि	DD MM YYYY
माता का नाम	गीता दास
पिता का नाम	विजय दास
घर का पता	क, ख ग...
सम्पर्क नम्बर	
भाई-बहन	कोई नहीं
प्रगति का सारांश : बच्चे की विशेष रुचियाँ और प्रतिभाएँ - सुरुचि एक शान्त और शर्मीला बच्ची है। वह घर पर अपने भाई-बहनों के साथ खेलना और कार्टून देखना पसन्द करती है। उसे घर की सामग्री जैसे गुड़िया, सेट आदि से खेलने में आनन्द आता है। जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है - सुरुचि परिवार में सबसे छोटी है और इसलिए परिवार के अन्य सभी सदस्य उसे लाड़-प्यार करते हैं। वह स्वभाव से थोड़ी जिद्दी है और उसे भावनाओं के नियमन में समर्थन की आवश्यकता होती है। जो उसका सामान ले जाते हैं, उन्हें वह कभी-कभी काट भी लेती है।	
प्रगति का विवरण :	
विकास का क्षेत्र	बच्चे का विकास
सामान्य व्यवहार	सुरुचि बहुत ही शान्त, चुप रहने वाली, जो बहुत समय लेकर लोगों के साथ घुलती मिलती है | वह काफी समय लेकर लोगों के साथ सहज होती है और सहज होने के बाद कुछ कुछ बातें साझा करती है। कक्षा में भी वह प्रतिभाग करती है और प्रश्नों के जवाब देती है। शुरुआत में जब वह मम्मी के साथ आती थी तो ही सहज हो पाती थी वरना वह एक शब्द भी नहीं बोलती थी। घुलने- मिलने के बाद मानवी शायद छोटे समूहों में शायद सहज हो पाएगी लेकिन अगर उसकी मन कि इच्छा पूरी न हो तो वह झगड़ा कर लेगी । अपनी बातों को रखने के लिए उसे अभी भी मदद की ज़रूरत पड़ती है।
परिवार	सुरुचि एक संयुक्त परिवार में रहती है, उसके परिवार में उसके माता, पिता, दादा, दादी, ताऊ, ताई, 2 सगी बहनें है और कजिन हैं। मानवी के दादा, पिता जी, ताऊ सभी लोग कृषि और कम्पनी में काम करने जाते हैं। मानवी की माता, दादी और अन्य सदस्य घर का काम करते हैं, इन्होंने घर पर जानवर भी पाल रखे है। अंशिका अपने परिवार के साथ दुर्गापुर में एक पक्के मकान में रहती है। जिसमें 2, 3 कमरे, किचन आदि बने हैं।

शारीरिक विकास	सुरुचि का शारीरिक विकास अपनी उम्र के अनुसार हो रहा है। उसकी फाइन मोटर स्किल अभी विकसित हो रही हैं, वह अच्छे से पेंसिल पकड़ पाती है और चित्र में दी गई बाउंड्री के भीतर रंग भरने की कोशिश करती है। ग्रॉस मोटर स्किल भी विकसित हो रही है, सन्तुलन वाली गतिविधियों में सुरुचि को अभी और अभ्यास की ज़रूरत है। वह धैर्य के साथ गतिविधियों को करने की कोशिश करती है। सरल गतिविधियों को बहुत ही आसानी से कर लेती हैं, किन्तु जहाँ भी एक से अधिक कार्य होते हैं, उसमें वह थोड़ा-सा अटक जाती है।
सामाजिक-भावनात्मक विकास	सुरुचि चुपचाप शान्त अपनी दुनिया में खोए रहती है, वह किसी-न-किसी चीज़ से खेलती रहती है। वह लोगों के साथ बहुत समय लेकर घुलती मिलती है और फिर सहज हो कर कुछ कुछ बातें शुरू करती है। वह बहुत ध्यान से बातें सुनती है, समझती है और पर उन पर प्रतिक्रिया अपने अनुसार ही देती है। जब वह आपसे पूरी तरह सहज हो जाएगी तब वह आपसे कुछ-कुछ शब्दों में बातें कहेगी। विजिट के दौरान भी वह बातें सुनती है और जब कुछ पूछो तो सहज होने पर ही कुछ जवाब देती है।
संज्ञानात्मक विकास	सुरुचि के सीखने के कौशल उम्र अनुसार विकसित हो रहे हैं, वह धीरे धीरे समय लेकर चीज़ों को सीख लेती है ! कौशल की बात की जाए तो वह अभी बोलती नहीं है इसलिए इसका आकलन अभी सही से नहीं हो पाया है। जिस दिन वह बोलती है उस दिन वह काफ़ी बेहतर तरीक़े से बताती है लेकिन जब उससे कार्य करवाया जाता है तब यदि उसका मूड नहीं है तो वह कुछ नहीं बताती है। अक्षरों को सही बनावट में लिखने के लिए अभी और अभ्यास की जरुरत है।
भाषा का विकास	सुरुचि का भाषाई विकास उम्र अनुसार सही है, वह अपने घरवालों के साथ पूरे वाक्यों में अपनी बातें बोल पाती है। कविता को लय और हाव भाव के साथ थोडा मदद से गा लेती है। अपनी बातें स्पष्टता से बोल पाती है, घर में घरवालों से काफ़ी खुलकर बात करती है बिना झिझक उन्हें पूछ भी लेती है। अभी वह स्कूल में किसी से ज्यादा बात नहीं करती है बस कक्षा में खिलौने, किताबें जैसी सभी चीज़ों से खेलती है।
सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास	सुरुचि को चित्र बनाने,चीज़ों और खिलौनों को सजाने तथा रचनात्मकता वाले कार्यों जैसे क्ले मॉडलिंग आदि का काफी शौक है। उससे चीज़ों को बनाने, सही से रखने आदि में मज़ा आता है ।
सत्र-वार प्रगति रिकॉर्ड	
जुलाई - सितम्बर	...
अक्तूबर - मार्च	सुरुचि शुरुआत में बात नहीं करती थी, वह कक्षा में किसी से भी बात नहीं करती थी। वह अपनी दुनिया में खोई रहती थी, बच्चों को देखकर कभी-कभी गतिविधि में प्रतिभाग करती थी। वह शान्त थी तो सभी उसे पसन्द करते थे। यहाँ तक कि टॉयलेट आदि के लिए भी नहीं बोलती थी, वह पूरे दिन बिना टॉयलेट किए रहती थी। धीरे धीरे उसे कक्षा में अपना नाम बोलने, उपस्थिति के दौरान हाँ/ न आदि में जवाब देने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। अब वह कविता भी सुनाने लगी है किन्तु अभी भी वह केवल 'हाथी राजा' को ही जल्दी से सुना कर बैठ जाती है, किन्तु कक्षा में अब वह सभी गतिविधियों में प्रतिभाग करती है और खुश हो कर अपनी बातें बताती है।
अन्तिम सत्र - संचयी आकलन (Cumulative Assessment)	सुरुचि शान्त और अपनी दुनिया में खुश रहने वाली बच्ची है। कक्षा में ध्यान से बातें सुनती है, कक्षा में उसे जोड़े रखने के लिए बीच-बीच में पूछना पड़ता है। चित्र बनाना, रंग करना और ब्लॉक्स से खेलना उसे पसन्द है। अपनी बातें समूह में रखने लगी है और स्वयं से पहल करने लगी है। पठन पाठन - अपने परिवार, कक्षा के बारे में बता पाती है। कविताओं को हाव-भाव के साथ स्वयं से सुना पाती है।थीम आधारित चीज़ों जैसे फलों, सब्जियों, जानवरों, दिनों, महीनों के नाम भी बता पाती है। अपने नाम को अँग्रेज़ी में पहचान कर मदद के साथ लिख पाती है। कहानी सुनना पसन्द करती है और चित्रों के माध्यम से किताबों को पढ़ती है। शब्दों में उसके पहले अक्षर और उसमें आने वाले अक्षरों की ध्वनियों को सुनकर बता पाती है। वर्कशीट में सुन कर स्वयं से मिलान कर पाती है, वर्गीकरणऔर तुलना के कौशलों को कर पाती है। ट्रेसिंग का कार्य और रंगों को दिए गए चित्र के भीतर भर पाती है। गणित में 20 तक मौखिक रूप से, 10 तक के अंकों की पहचान और 5 तक के अंकों का सह सम्बन्ध कर पाती है। अँग्रेज़ी के अक्षरों को क्रम में सुना पाती है और बड़ी वर्तनी के अक्षर (uppercase letters) को पहचान भी पाती है।

कक्षा आकलन के दौरान - नमूना

तालिका 2

डोमेन : भाषा, संज्ञानात्मक, रचनात्मक		
#	मौखिक	सुरुचि
1	परिचय - नाम, वर्ग, परिवार, भावनाएँ	हाँ, स्कूल और घर के बारे में जानती है
2	पसन्दीदा चीजें - मुझे पसन्द हैं	गोभी, अध्ययन, गुब्बारा खेल, बुलबुला शूट
3	कम-से-कम 3-4 हिन्दी कविता गाएँ	2,3 हाथी, मछली जल, आलू कचालू
4	1-2 अँग्रेज़ी कविता गाएँ	2 जॉनी, ट्विंकल
5	अँग्रेज़ी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	हाँ
6	अँग्रेज़ी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
7	हिन्दी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	नहीं
8	हिन्दी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
9	पुस्तक का उन्मुखीकरण	हाँ
10	परान्दीदा किताब	छोटा चूहा और बड़ा शेर
11	चित्रों के माध्यम से कहानी सुनाना	हाँ, केवल चित्र पढ़ना
12	पाठ पर उँगलियाँ फेरते हुए कहानी का वर्णन करना	नहीं
13	कहानी और मुख्य पात्र को सार रूप में बताने में सक्षम	नहीं
14	कहानी से प्रश्न के उत्तर बताने में सक्षम	हाँ
15	कहानी/घटना के कम-से-कम 4,5 चित्र अनुक्रमण	नहीं
16	प्रत्येक चार्ट से हिन्दी और अँग्रेज़ी में चित्र पहचान, कम से कम 10 चार्ट	फल, सब्जियाँ, जानवर, रंग
17	खेल कविता, कहानी को पूरा करें	हाँ, वर्णमाला, गिनती, सप्ताह के दिन, कविताएँ
18	ध्वनि पहचान - प्रारम्भिक और पाठ्यक्रम	हाँ
19	अँग्रेज़ी चार्ट वर्णमाला क्रम में पढ़ने में सक्षम	
20	हिन्दी चार्ट अक्षर को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
21	चार्ट संख्याओं को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
22	अक्षरों को क्रम से याद करने में सक्षम	हाँ

23	मौखिक रूप से 20 तक गिनने में सक्षम	हाँ
24	कम-से-कम 5 तक अर्थपूर्ण रूप से गिनने में सक्षम	हाँ
25	गणित-पूर्व अवधारणाएँ जैसे बड़ी, छोटी, लम्बी, छोटी, छँटाई, समूहीकरण, भारी - हल्का, पैटर्न, कम या ज़्यादा	हाँ
26	मुद्रा पहचानना	

4. शिक्षक को सक्षम बनाना

इस खण्ड में - क्षमता संवर्द्धन के विभिन्न तरीक़ों के माध्यम से शिक्षकों को सक्षम बनाने के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। शिक्षक का पेशेवर विकास प्रासंगिक होना चाहिए ताकि शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। जैसा कि इस अनुलग्नक के अन्य भागों के साथ है, यह केवल कुछ सम्भावित उदाहरण हैं, व्यापक या निर्देशात्मक विवरण नहीं है।

4.1 शिक्षक संगोष्ठियाँ

शिक्षक संगोष्ठी सतत पेशेवर विकास के तरीक़ों में से एक है। यह शिक्षकों के लिए अपने अनुभव और कार्यों को अपने साथियों के साथ साझा करने का एक अवसर है। यह उनके आत्मविश्वास का निर्माण करता है, उनके स्वयं के अभ्यास को बेहतर बनाने में मदद करता है और उन्हें नए कार्यों को सीखने में मदद करता है।

यह ब्लॉक या ज़िला स्तर पर वार्षिक या द्विवार्षिक रूप से आयोजित किया जाने वाला एक दिवसीय कार्यक्रम हो सकता है। ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन करने की प्रक्रिया के उदाहरण के तौर पर कम-से-कम तीन महीने पहले संगोष्ठी की घोषणा की जानी चाहिए। इसके बाद शिक्षकों को निमंत्रण भेजने की आवश्यकता होगी, उसके बाद समीक्षा व गुणवत्ता और प्रासंगिकता के आधार पर प्रस्तावों को अन्तिम रूप देना होगा। संगोष्ठी को अलग-अलग विषयों में विभाजित किया जा सकता है, विषय में प्रत्येक उप-विषय के लिए प्रस्तुतियों और चर्चाओं को एक साथ जोड़ा जा सकता है और प्रत्येक विषय पर एक संचालक संचालन कर सकता है।

शिक्षक महत्त्वपूर्ण विषयों पर तैयारी करके पर्चा प्रस्तुत कर सकते हैं जैसे :

क) बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए एक विशिष्ट दिन के लिए प्रभावी योजना

ख) स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और शिक्षक द्वारा विकसित सामग्री का प्रभावी ढंग से उपयोग करना

ग) साक्षरता-पूर्व संख्या-पूर्व कौशल, प्रारम्भिक साक्षरता या प्रारम्भिक संख्या ज्ञान सीखना-सिखाना

घ) अभिभावक/समुदाय की भागीदारी कैसे बढ़ाएँ

4.2 शिक्षक मेला

शिक्षक मेला एक दिवसीय आयोजन है, जहाँ शिक्षक सीखने व सिखाने पर जीवन्त और रोमांचक प्रदर्शन सत्रों की एक शृंखला में भाग लेते हैं। इन सत्रों में शिक्षक अपने द्वारा निर्मित कार्यों और सीखने-सिखाने की सामग्री को प्रदर्शित करते और समझाते हैं। शिक्षक मेला का उपयोग शिक्षक अभ्यासों को प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है, उदाहरण के लिए नाटक, बातचीत, कहानी, गीत, कला, शिल्प, या साक्षरता-पूर्व और संख्या-पूर्व कार्य आदि।

एक दिवसीय मेले के सम्भावित डिज़ाइन में विभिन्न विषयों वाले एक-एक घण्टे के चार सत्र शामिल हो सकते हैं, जिन्हें दिन में चार बार दोहराया जा सकता है। प्रत्येक सत्र में दो शिक्षक सुगमकर्ता हो सकते हैं। 30-40 शिक्षकों का एक समूह एक सत्र से दूसरे सत्र में जा सकता है।

तालिका 1

सुबह 9:30 से 10:45	प्रतिभागी पंजीकरण			
सुबह 10:45 से 11:45	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर
सुबह 11:45 से दोपहर 12:45	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ
दोपहर 12:45 से 1:45	मध्याह्न भोजन			
दोपहर 1:45 से 2:45	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता
दोपहर 2:45 से 3:45	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ
दोपहर 3:45 से 4:30	पैनल चर्चा और समापन			

जो शिक्षक अभ्यासों का प्रदर्शन करते हैं व सामग्री साझा करते हैं, वे प्रतिक्रिया हासिल कर सकते हैं और अन्य शिक्षक इन बेहतर अभ्यासों को देखकर सीख सकते हैं। हमेशा की तरह, इस तरह की शिक्षाओं को समूह और ब्लॉक स्तरों पर बैठकों और अकादमिक पदाधिकारियों द्वारा व्यवस्थित मंच स्थापित कर विभिन्न तरीक़ों और मंचों के माध्यम से सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

4.3 विकेन्द्रीकृत सतत शिक्षक पेशेवर विकास

प्रभावी शिक्षक पेशेवर विकास को प्रासंगिक, निरन्तर और शिक्षकों की विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने वाला होना आवश्यक है। मूल भावना (true spirit) में ऐसा होने के लिए, इस तरह के पेशेवर विकास को यथासम्भव शिक्षकों के अनुरूप निर्मित और संचालित की जाने की आवश्यकता है।

चूँकि स्कूली शिक्षा की संरचना और संगठन अलग-अलग राज्यों में भिन्न है, यह पूरे देश में विकेन्द्रीकृत है। इसलिए ऐसा करने के लिए इस तरह की संरचनाओं और उसके कार्मिकों का पूरी तरह से लाभ उठाया जा सकता है।

यह उदाहरण राजस्थान में मौजूदा संरचना का एक नमूने के रूप में उपयोग करता है और शिक्षक पेशेवर विकास की प्रक्रिया को दिखाता है, जो कुछ हिस्सों में विभाग और ग़ैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से हो रहा है।

राजस्थान की स्कूली शिक्षा प्रणाली में पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों में से एक को पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) नियुक्त किया गया। उस पंचायत के सभी स्कूल एक पंचायत एकीकृत शिक्षा क्लस्टर बनाते हैं और PEEO प्रशासनिक, वित्तीय, अभिसरण प्रक्रियाओं के प्रबन्धन के साथ-साथ इन स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए नोडल व्यक्ति के रूप में कार्य करता है। इसलिए इन PEEO का ध्यान न केवल परिचालन दक्षता पर है, बल्कि यह

भी सुनिश्चित करना है कि सीखने-सिखाने की गुणवत्ता में समय के साथ और बड़े पैमाने पर सुधार हो। प्रत्येक ब्लॉक में औसतन 30 PEEO हैं, प्रत्येक PEEO 5-8 स्कूलों यानी 35-45 शिक्षकों का समन्वय करता है।

इनमें से कई पंचायतों में, शिक्षकों को सहयोग प्रदान करने के लिए सभी शिक्षकों की मासिक कार्यशालाएँ, विशिष्ट शिक्षकों के लिए स्कूल-आधारित मंच और इच्छुक शिक्षकों के लिए क्षमता संवर्द्धन के अन्य स्वैच्छिक तरीक़े शामिल हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ये सम्बन्धित PEEO द्वारा भागीदार (ग़ैर-सरकारी) संगठनों और अन्य व्यक्तियों के सहयोग से पंचायत स्तर पर निर्मित और संचालित किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक पंचायत में :

क) मासिक कार्यशाला

शुरुआती कक्षा के शिक्षकों के लिए हर महीने दो एक दिवसीय कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, आरंभिक भाषा और गणित दोनों विषयों के लिए एक-एक। ये कार्यशालाएँ शिक्षकों को विषयवस्तु और शिक्षण-अधिगम सामग्री प्रदान करती हैं, जिसका उपयोग वे सीधे अपनी कक्षाओं में कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके बच्चे बुनियादी प्राथमिक स्तर की दक्षता प्राप्त कर सकें।

ख) निरन्तर मंच

उस माह की कार्यशाला में ली गई विषयवस्तु पर सुनियोजित फॉलो-अप स्कूल विजिट्स। सहयोगी संगठन के संदर्भ व्यक्ति (Resource person) प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री और कार्यपत्रकों (worksheets) के साथ अपने उपयोग को प्रदर्शित करने के साथ-साथ बच्चों के सीखने के स्तर का आकलन करने के लिए स्कूल का दौरा करते हैं। ऐसा मंच उन शिक्षकों को भी प्रदान किया जाता है जो इसके लिए अनुरोध करते हैं। यह शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं का अवलोकन करने में भी मदद करता है, जिसका उपयोग अगली कार्यशाला के सत्रों को बनाने के लिए किया जाता है।

ग) अन्य सहयोगी गतिविधियाँ

क्षमता संवर्द्धन अन्य स्वैच्छिक गतिविधियों के माध्यम से किया जाता है जो स्कूलों में समग्र रूप से बेहतर सीखने के माहौल को संभव बनाता है। उदाहरण के लिए :

i. **थैला पुस्तकालय :** बुनियादी भाषा और गणित कौशलों को हासिल करने में बेहतर सहायता के लिए, रुचि रखने वाले शिक्षकों को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के साथ थैला पुस्तकालय संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इन थैलियों को एक से दूसरे को सौंपने के ज़रिए से यह सुनिश्चित होता है कि नए संसाधन हर समय उपलब्ध हैं।

ii. **शिक्षा में रंगमंच :** शिक्षकों और बच्चों के साथ कुछ मुद्दों पर बात करने के लिए रंगमंच एक प्रभावी माध्यम है। स्कूलों की सुबह की सभा में प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं, इसके बाद इस विषय पर एक घण्टे की चर्चा होती है। इसका नेतृत्व अक्सर स्थानीय युवाओं के समूह करते हैं।

जैसा कि शुरुआत में उल्लेख किया गया है, यह सिर्फ़ उदाहरण है। मूल विचार शिक्षक विकास के लिए आधारभूत प्रक्रियाओं को निर्मित करने में सक्षम होने का है, जो शिक्षकों की वास्तविक जरूरतों को पूरा करती हैं। अन्य राज्यों में इस तरह की शिक्षक सहायता प्रदान करने के लिए क्लस्टर संसाधन केन्द्रों (cluster resource centres) जैसी संरचनाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है।

4.4 कठपुतलियों की कार्यशाला

आधारभूत स्तर पर शिक्षकों को अपने शिक्षणशास्त्र में विभिन्न रोचक और आकर्षक तत्वों को शामिल करने की आवश्यकता होती है। इसमें कहानी सुनाना, अभिनय, संगीत, नृत्य, नाटक आदि जैसी विधियाँ शामिल हैं। अन्य पहलुओं के अलावा, यह महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षक पेशेवर विकास कार्यक्रम, शिक्षकों को ऐसे कौशल विकसित करने में मदद करें जो उन्हें अपने प्रदर्शनों की सूची में इस तरह के शिक्षण को जोड़ने में सक्षम बनाते हों।

ऐसा ही एक तरीक़ा है कठपुतली बनाना। कठपुतली कला, ललित कला से लेकर प्रदर्शन कला तक, सबको अपने में समेट लेने वाली कला है। कठपुतली कला, प्रदर्शन के सबसे पुराने रूपों में से एक है और वर्षों से कला के एक परिष्कृत रूप में विकसित हुई है। साधारण अँगुली की कठपुतली से लेकर अत्यधिक जटिल कठपुतली तक तीन से अधिक लोगों द्वारा 'प्रदर्शन' की जाने वाली कठपुतली तक, इसके हज़ारों रूप हैं। भारत में कठपुतली के कई रूप हैं, जिन्हें शिक्षकों द्वारा शामिल किया जा सकता है।

कठपुतली के दो मुख्य पहलू हैं। एक है कठपुतलियों का डिज़ाइन तथा निर्माण और दूसरा है कठपुतलियों का प्रदर्शन। डिज़ाइनिंग के लिए विज़ुअलाइज़ेशन और निर्माण के तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है, जबकि प्रदर्शन के लिए उत्कृष्ट संचार कौशल की आवश्यकता होती है।

यह एक कार्यशाला का एक उदाहरण है, जिसे शिक्षकों को कठपुतली कौशल हासिल करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कार्यशाला में शिक्षकों को कठपुतली और कठपुतली के विभिन्न रूपों से अवगत कराया जाता है। कठपुतलियों के रूपों और सौन्दर्यबोध के बारे में चर्चा की जाती है। शिक्षक कठपुतलियों को डिज़ाइन करेंगे और बनाएँगे, एक स्क्रिप्ट तैयार करेंगे और कठपुतलियों के साथ प्रदर्शन करेंगे। इस कार्यशाला के माध्यम से, शिक्षक रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सौन्दर्यशास्त्र और कला की सराहना करने, कठपुतली डिज़ाइन करने, अभ्यास करने और लघु कठपुतली प्रदर्शन बनाने में सक्षम होंगे। कार्यशाला के लिए शिक्षण विधि अनुभवात्मक अधिगम है। इसके माध्यम से, शिक्षक कला के विभिन्न रूपों से गुज़रते हैं - रंगों से खेलना, पोशाक डिज़ाइन करना, चेहरे का मेकअप, पटकथा लेखन, संगीत और प्रदर्शन आदि।

क) पहला दिन:

i. चार के समूह बनाए जाते हैं। प्रत्येक समूह को सभी ज़रूरी स्टेशनरी संसाधन दिए जाते हैं। (जैसे, चार्ट पेपर, कैंची, गोंद, रंग, स्टेपलर, सेलो टेप)।

ii. वे अपनी अँगुली पर आँख, नाक और मुँह की आकृतियाँ बनाकर अँगुली की कठपुतली बनाते हैं, अँगुली को रूमाल से ढकते हैं और अँगुली की कठपुतली को नचाते और बोलते हैं।

iii. वे चार्ट पेपर पर मछली खींचते हैं, फिर आकार काटते हैं। वे एक साधारण पक्षी बनाते हैं और उसे रंगते हैं, और एक साधारण काग़ज़ को मोड़कर साँप बनाते हैं। वे काग़ज़ को शंकु आकार देकर एक चूहा बनाते हैं और साधारण रेखाचित्रों का उपयोग करके एक शेर बनाते हैं। सिर्फ़ काग़ज़ को मोड़कर और रंगों का इस्तेमाल करके वे अलग-अलग जानवर बनाते हैं।

ख) दूसरा दिन:

i. वे अपने द्वारा बनाई गई सभी कठपुतलियों का प्रदर्शन करते हैं, एक कहानी बनाना शुरू करते हैं और कठपुतलियों का उपयोग करके एक छोटे से प्रदर्शन की योजना बनाते हैं। वे एक समूह के रूप में कहानी और प्रदर्शन का अभ्यास करते हैं।

ii. फिर प्रत्येक समूह अपने द्वारा बनाई गई कठपुतलियों के साथ कहानी का प्रदर्शन करता है।

ग) तीसरा दिन:

i. वे काग़ज़ और पानी के रंग का उपयोग करके सरल एक-आयामी मुखौटा बनाना शुरू करते हैं। वे मुखौटे पहनते हैं, मुखौटे के इर्द-गिर्द एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।

ii. वे रंगीन काग़ज़ और गोंद का उपयोग करके दो-आयामी मुखौटा बनाना सीखते हैं। वे मुखौटा पहनते हैं, मुखौटे के चारों ओर एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।

iii. प्रदर्शन के तुरन्त बाद प्रत्येक टीम को टिप्पणियाँ और इनपुट दिए जाते हैं।

घ) चौथा दिन:

i. वे रंगीन काग़ज़ और डंडियों की मदद से त्रि-आयामी कठपुतली बनाना सीखते हैं - ये रॉड कठपुतली हैं, जिन्हें अन्य कठपुतलियों की तरह ही इस्तेमाल किया जा सकता है।

ii. वे एक प्रदर्शन के लिए एक विस्तृत स्क्रिप्ट पर काम करते हैं, जिसे स्कूल में छोटे बच्चों के साथ उनके छोटे समूहों में उनके द्वारा बनाई गई कठपुतली का उपयोग करके किया जा सकता है।

ङ) पाँचवाँ दिन:

i. प्रत्येक समूह साधारण रोशनी के साथ वेशभूषा, सामग्री सेट, गीत और संगीत का उपयोग करके प्रदर्शन करता है।

ii. प्रदर्शन के बाद वे एक आकलन करते हैं और कार्यशाला के अपने अनुभव साझा करते हैं।

हालाँकि इस तरह की कार्यशाला शिक्षकों को कठपुतली कला में विशेषज्ञ नहीं बनाएगी, फिर भी यह उम्मीद की जाती है कि इससे उन्हें यह विचार मिलेगा कि वे अपनी कक्षाओं में अभ्यास करना शुरू कर सकते हैं और आगे इसका विकास कर सकते हैं। यह उदाहरण कार्यशाला मोड के बारे में है, इसे अलग-अलग समयों पर अन्य तरीक़ों के माध्यम से किया जा सकता है - उदाहरण के लिए, शिक्षकों की मासिक क्लस्टर-स्तरीय बैठकों में।

अनुलग्नक 3:
फाउंडेशनल स्टेज के लिए NIPUN भारत और NCF की तरह SCF की दक्षताओं की मैपिंग

NEP 2020 के FLN सम्बन्धी पहलुओं को लागू करने के लिए NIPUN भारत ने उल्लेखनीय क़दम उठाए हैं। इस मिशन को सक्षम बनाने के लिए सम्बन्धित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ तीन विकासात्मक लक्ष्य तय किए गए हैं।

NCF के आधार पर पूरे देश में पाठ्यचर्याएँ विकसित की जाएँगी, जिसमें पाठ्यचर्या के उद्देश्य बताए गए हैं, जिनसे दक्षताएँ निकाली गई हैं और इनसे ही सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) (उदाहरणात्मक) तय किए गए हैं। फिर यही पाठ्यचर्याएँ, पूरे देश में शैक्षिक अभ्यास के लिए आधार बन जाएंगी।

विकसित की गई हर पाठ्यचर्या में दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के अपने समूह होंगे। महत्त्वपूर्ण यह है कि ये सीखने के प्रतिफल व दक्षताएँ, NIPUN भारत के सार्थक प्रयासों की संगति में हों, जिनमें शिक्षण-अधिगम सामग्री व प्रशिक्षण शामिल हैं। इससे शैक्षिक प्रयास व अभ्यास, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की पूरी संगति में हो सकेंगे।

इसे सुनिश्चित करने का तरीक़ा यह है कि पहले NIPUN भारत के विकासात्मक लक्ष्यों को इस NCF की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से मैप किया जाए। क्रियान्वयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम NIPUN भारत की दक्षताओं को NCF की दक्षताओं से मैप करना होगा।

इस अनुलग्नक में NIPUN भारत के विकासात्मक लक्ष्यों की मैपिंग NCF की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के साथ की गई है, फिर NIPUN भारत की दक्षताओं की मैपिंग NCF की दक्षताओं के साथ की गई है। इसी तरह का मैपिंग सीखने के प्रतिफलों के लिए भी की जा सकती है।

मैपिंग के ये दो स्तर, पाठ्यचर्या की दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को उचित तरीक़े से लागू करने के लिए NIPUN भारत के तहत बनाई गई विधियों व सामग्रियों (TLM, प्रशिक्षण सामग्री आदि) के इस्तेमाल को सुगम बनाएँगे। इस पूरे अभ्यास को सावधानी से लागू किए जाने की ज़रूरत है ताकि सभी प्रयासों का सघन संयोजन हो सके और NCF के क्रियान्वयन तथा NEP 2020 के लक्ष्यों को हासिल करने की तरफ़ बढ़ा जा सके।

1. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 1: बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और well-being बनाए रखें

1.1 SCF पाठ्यचर्या के उद्देश्यों (Curricular Goals) से मैपिंग: इस विकासात्मक लक्ष्य 1 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं

CG-3 बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं

CG-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

1.2 SCF दक्षताओं से मैपिंग :

नीचे दी गई तालिका में विकासात्मक लक्ष्य 1 के अंतर्गत NIPUN भारत की दक्षताओं को NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है :

तालिका 69

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
स्वयं (self) के प्रति जागरूकता	C-4.1 परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है
सकारात्मक आत्म-धारणा का विकास	C-4.1 परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है
स्व-नियमन	C-4.2 अलग-अलग भावनाओं को पहचानती है और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करती है
निर्णय लेना और समस्या समाधान	C-8.13 मानाओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है
समाजो-मुखी व्यवहार का विकास	C-4.3 अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है C-4.4 दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करती है C-4.5 कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझती है और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है C-4.7 दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझती है और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है

स्वस्थ आदतों, स्वच्छता, सफाई, और आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता का विकास	C-1.1 पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाती हैं तथा भोजन बर्बाद नहीं करती है C-1.2 अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करती है C-1.3 स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती है C-1.4 सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करती है C-1.5 गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करती है और समुचित तरीके से ये कार्य करती है C 1.6 असुरक्षित स्थितियों को समझती है और मदद मांगती है
सकल/स्थूल मोटर कौशलों (gross motor skills) का विकास	C-3.1 विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करती है C-3.2 विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सन्तुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाती है
सूक्ष्म मोटर कौशलों (fine motor skills) और आँख-हाथ समन्वय का विकास	C-3.3 हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाती है
व्यक्तिगत और सामूहिक खेलों में भागीदारी	C-3.4 ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करती है

2. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 2: बच्चे प्रभावी सम्प्रेषक बनें

2.1 SCF पाठ्यचर्या के उद्देश्य :

इस विकासात्मक लक्ष्य 2 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-9 बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं

CG-10 बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

CG-11 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं

CG-12 बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

2.2 SCF दक्षताओं से मैपिंग :

NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 2 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को तीन श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है।

2.2.1 सुनना और बोलना :

तालिका 1

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
समझ के साथ सुनना	C-9.1 सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनती-सराहती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है C-9.5 सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है
रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और बातचीत	C-9.2 ख़ुद सरल गीत और कविताएँ बनाती है C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है
भाषा और रचनात्मक चिंतन	C-9.5 सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है C-9.6 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाती है
शब्दावली विकास	C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है

बातचीत और बोलने का कौशल	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है
भाषा का अर्थपूर्ण इस्तेमाल	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है C-10.7 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ती-समझती है (L1)

2.2.2 समझ के साथ पढ़ना :

तालिका 2

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
किताबों के साथ जुड़ाव	C-10.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)
छपाई के प्रति जागरूकता और अर्थ निर्माण	C-10.2 किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपायी की दिशा के आईडिया को समझती है, और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानती है
पढ़ने का नाटक करना	*इस दक्षता के पहलुओं को C-10.2 (छपाई की अवधारणाएँ) और C-10.5, C-10.6 (कहानियाँ और कविताएँ पढ़ना) के सीखने के प्रतिफलों में सम्बोधित किया गया है।*
ध्वनि (Phonological) जागरूकता	C-10.1 L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है
ध्वनि-प्रतीक सम्बन्ध	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है
पूर्व-ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करके अंदाज़े से पढ़ना	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1) C-10.6 छोटी कविताएँ पढ़ती है और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करती है (L1)
आनन्द और विविध उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र पठन	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1) C-10.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)

2.2.3 उद्देश्य के साथ लेखन:

तालिका 3

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
शुरुआती साक्षरता कौशल	*इस दक्षता के पहलुओं को भाषा और साक्षरता की कई दक्षताओं के सीखने के प्रतिफलों तथा सौंदर्य बोध और संस्कृति संबंधी पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में सम्बोधित किया गया है*
आत्म-अभिव्यक्ति के लिए लेखन	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1)
वर्णों और ध्वनियों के अपने ज्ञान का इस्तेमाल करके लिखने के लिए वर्तनी बनाना	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है
पारम्परिक तरीके से लिखने का प्रयास करना चित्र बनाकर/ शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों के ज़रिए पढ़े हुए (रीडिंग) पर प्रतिक्रिया देना तुकबन्दी वाले / तुकांत शब्द लिखना संज्ञाओं (naming words) और क्रियाओं (action words) का इस्तेमाल करके अर्थपूर्ण वाक्य लिखना अपने को अभिव्यक्त करने के लिए सन्देश लिखना मिश्रित भाषा कोड्स का इस्तेमाल करना कक्षा की गतिविधियों में और घर पर विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखना, मसलन सूची बनाना, दादा-दादी, नाना-नानी को अभिवादन, दोस्तों को सन्देश/निमंत्रण आदि लिखना	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1) (इस दक्षता में सीखने के 15 प्रतिफल अन्तर्निहित हैं जो NIPUN भारत द्वारा रेखांकित विभिन्न दक्षताओं को शामिल करते हैं।)

3. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 3: बच्चे संलग्न शिक्षार्थी बनें और अपने आस-पास के वातावरण से जुड़ें

3.1 NCF/SCF पाठ्यचर्या के उद्देश्य :

इस विकासात्मक लक्ष्य 3 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

CG-6 बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं

CG-7 बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं

CG-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं

3.2 NCF/SCF दक्षताओं का ख़ाका :

NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 3 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को सात श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है।

3.2.1 संवेदी विकास :

तालिका 1

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श, गन्ध, स्वाद	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है C-2.2 प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करती है C-2.3 ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करती है C-2.4 विभिन्न गन्धों और स्वादों के बीच अन्तर करती है C-2.5 स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करती है

3.2.2 संज्ञानात्मक कौशल :

तालिका 2

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
अवलोकन, पहचान, स्मृति, मिलान, वर्गीकरण, क्रमिक चिन्तन, रचनात्मक चिन्तन, आलोचनात्मक चिन्तन, तर्क, जिज्ञासा, प्रयोग	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है C-7.2 प्रकृति में कार्य-कारण सम्बन्धों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखती व समझती है और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का इस्तेमाल करती है C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म : विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करती है C-13.2 स्मृति और मानसिक लचीलापन : समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करती है जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेगा C-13.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण: वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करती है, आश्चर्य करती है और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करती है, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करती है, सवाल पूछती है

3.2.3 परिवेश से सम्बन्धित अवधारणाएँ :

तालिका 3

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
प्राकृतिक : जानवर, फल, सब्जियाँ, भोजन	C-6.1 सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाती है C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है
भौतिक : पानी, हवा, ऋतु, सूरज, चांद, दिन और रात	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है
सामाजिक : स्वयं,, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक सहायक आदि	C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है C-5.1 दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है

3.2.4 अवधारणा निर्माण :

तालिका 4

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
रंग, आकृतियाँ, दूरी, मापन, आकार, लम्बाई, वज़न, ऊँचाई, समय	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है C-8.12 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करती है C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है
स्थानिक समझ	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है
एक-एक की संगति	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है

^ एक-एक की संगति, गिनने की दक्षता के अंतर्गत आने वाला सीखने का प्रतिफल है की दक्षता के भीतर है

3.2.5 संख्या बोध/समझ (Number Sense) :

तालिका 5

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
गिनकर संख्या बताना	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है
संख्या पहचान	C-8.5 दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानती और उनका उपयोग करती है
क्रम की समझ (किसी संख्या से 10 आगे तक क्रम से गिन सकना)	C-8.1 चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटती है C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है C-8.4 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

3.2.6 संख्याओं के बीच संक्रियाएँ :

तालिका 6

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
जोड़, घटाव	C-8.6 संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करती है
गुणा, भाग	C-8.7 गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानती-समझती है

3.2.7 मापन, आकृतियाँ और अन्य दक्षताएँ :

तालिका 7

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
लम्बाई, द्रव्यमान, आयतन, तापमान	C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है
आकृतियाँ (द्विविमीय आकृतियाँ, त्रिविमीय आकृतियाँ, सीधी रेखा, घुमावदार रेखा, सपाट और घुमावदार सतहें)	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है
आँकड़ों का प्रबंधन	*फाउंडेशनल स्टेज के लिए, आँकड़ों का प्रबंधन में C-29, C-31 समूहों में दी गई चीज़ों को छाँटना, वर्गीकरण, समूह बनाना और गिनना शामिल होगा*
पैटर्न	C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है
कैलेंडर गतिविधियाँ	C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है
तकनीकी का इस्तेमाल	C 7.3 दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करती है

3.2.8 NCF/SCF में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ

सौंदर्य बोध विकास और संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्रों के लिए NCF में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ नीचे दी गई हैं।

तालिका 8

NIPUN भारत दक्षता	SCF दक्षता
	C-12.1 विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलती है C-12.2 संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करती हैं, उनसे खेलती हैं C-12.3 कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करती है और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करती है C-12.4 कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करती है C-12.5 कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करती है और इनकी सराहना करती है
	C-5.1 दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है
	C-13.4 कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाती और उनका पालन करती है
	C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है

अनुलग्नक 4:
भारत और विश्व भर में ECCE पर शोध

दुनिया भर में कई समकालीन अध्ययनों से पता चला है कि गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रम, जो छोटे बच्चों को उचित प्रोत्साहन और सार्थक सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं, से न केवल स्कूल में बल्कि उससे भी आगे सीखने और बेहतर प्रदर्शन करने की व्यक्तिगत क्षमता को अत्याधिक लाभ होता है।

1. गुणवत्ता वाले ECCE कार्यक्रमों का महत्त्व

क. तंत्रिकाविज्ञान के साक्ष्य बताते हैं कि जीवन के पहले आठ वर्षों के दौरान मस्तिष्क का विकास तेज़ी से होता है। वातावरण के अनुभवों की गुणवत्ता और निरन्तरता के आधार पर मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के बीच सम्बन्ध मज़बूत या गठित होते हैं। इन वर्षों को मानव जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण और रचनात्मक माना जाता है। इसीलिए इन वर्षों में बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए देखभाल करने वाला, पोषक, प्रेरणादायक और स्वस्थ वातावरण आवश्यक होता है।[13]

ख. मानव मस्तिष्क की मूल संरचना उन प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है जो जीवन के आरम्भ में शुरू होती हैं और वयस्कता में जारी रहती हैं। आनुवंशिकी, वातावरण और अनुभव मस्तिष्क की संरचना के साथ परस्पर क्रिया करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं। नमनीयता, या मस्तिष्क की पुनर्गठित और अनुकूलन करने की क्षमता, और उसके कारण सीखना, जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में सबसे अच्छे से होता है। विकास की संवेदनशील अवधियों के अनुभव मस्तिष्क की क्षमताओं को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रारम्भिक वातावरण और शुरुआती अनुभवों का मस्तिष्क की संरचना पर विशेष रूप से मज़बूत प्रभाव पड़ता है।[13]

ग. प्रारम्भिक बाल्यावस्था का समय आजीवन सीखने और विकास की नींव रखता है और वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal studies) शुरुआत के वर्षों में आर्थिक निवेश की वापसी की एक उल्लेखनीय दर का संकेत देते हैं, जो स्कूली शिक्षा को पूरी करना और समाज के वयस्क सदस्यों के रूप में सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करता है।[14]

घ. संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताएँ जीवन भर अटूट रूप से जुड़ी होती हैं। प्रारम्भिक अनुभवों को प्रोत्साहित करना बाद में सीखने की बुनियाद रखता है। ख़राब शुरुआती अनुभव बाद में मस्तिष्क की क्षमताओं पर लम्बे समय तक रहने वाले हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं।[13]

2. भारत में अध्ययन इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुँचे हैं

क. प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा में आयु-उपयुक्त भागीदारी को प्री-स्कूलों में जाने वाले बच्चों में ठहराव (retention) की दर में 8-20% की बढ़त के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया था।[15] इसी तरह, बिहार और उत्तर प्रदेश में किए गए एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 7 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के स्कूल में नामांकित होने की सम्भावना अधिक थी यदि वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में शामिल हुए थे।[16] व्यवस्था के दृष्टिकोण से, हरियाणा आईसीडीएस केन्द्रों में पूर्वस्कूली शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में मध्य और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों का सहयोग एक महत्त्वपूर्ण कारक था।[17]

ख. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा किए गए प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रभाव अध्ययन (2017) ने दिखाया कि सभी राज्यों (असम, तेलंगाना और राजस्थान) में, 5 वर्ष की आयु के बच्चों की स्कूली तैयारी (school readiness) का स्तर संज्ञानात्मक और भाषा के क्षेत्र (जैसे संख्या से वस्तुओं का मिलान, चित्र में किसी वस्तु के स्थान की पहचान करना आदि) में अपेक्षाओं से बहुत कम था।[18]

जहाँ भी स्कूली तैयारी (school readiness) का स्तर बेहतर था, बच्चों ने अपना अधिकांश समय खेल-आधारित सीखने की गतिविधियों में बिताया। इन कार्यक्रमों में बच्चों के लिए अवधारणा निर्माण, अवधारणात्मक कौशल के विकास और तैयारी गतिविधियों (Readiness Activities) के लिए पर्याप्त अवसर थे।

बच्चे की उम्र, माँ की शिक्षा, घरेलू सम्पन्नता और घर पर शुरुआती सीखने का माहौल ऐसे अन्य कारक थे जिन्होंने स्कूली तैयारी के स्तर को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्री-स्कूल और प्रारम्भिक प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भागीदारी एक रैखिक आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र (linear age-based trajectory) का पालन नहीं करती है। कुछ राज्यों में, 4 साल के बच्चे पहले से ही स्कूल में हैं और अन्य में, 6 और 7 साल के बच्चों का एक बड़ा हिस्सा अभी भी प्री-स्कूल में है। बच्चे अनियमित रूप से स्कूल जाते हैं। 8 वर्ष की आयु आते-आते ही नामांकन स्थिर हो पाता है। यह एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पुष्ट करता है जो आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र के बजाय बच्चों के सीखने के स्तर पर केन्द्रित हो।

ग. शोध से पता चला है कि कम आय और सीमित संसाधन वाली व्यवस्थाओं में, गुणवत्ता वाला ECCE समता को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र के रूप में कार्य करता है।[19]

घ. एक अध्ययन में भारत के एक जिले में आँगनवाड़ियों में नामांकित 200 बच्चों और घर में रहने वाले 200 बच्चों की तुलना छह संज्ञानात्मक कौशल – अवधारणात्मक जानकारी (conceptual information), समझ (comprehension), दृष्टि बोध (visual perceptions), स्मृति (memory) और वस्तु शब्दावली (object vocabulary) पर की गई। इस अध्ययन ने पुष्टि की कि आँगनवाड़ी में उपस्थिति का बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भौगोलिक सीमाओं के बावजूद, यह अध्ययन प्री-स्कूल और संज्ञानात्मक विकास के बीच सम्बन्ध पर महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करता है।[20]

3. ECCE में निवेश के प्रतिफल पर अध्ययन

शिक्षा में निवेश के प्रतिफल में - निजी (अर्थात वेतन तथा सम्बन्धित सुविधाओं के साथ और रोज़गार के रूप में व्यक्ति को प्रतिफल), और सामाजिक (यानी, समाज और राष्ट्र को प्रतिफल देना - अधिक नागरिक समाज से करों के माध्यम से अर्जित राजस्व के साथ तथा कल्याण के फलस्वरूप सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों पर कम सार्वजनिक व्यय के सन्दर्भ में) दोनों शामिल हैं।

शिक्षा के लाभों का अनुमान आमतौर पर मूर्त (tangible) 'बाज़ार' के लाभों के माध्यम से होता है। ये श्रम बाज़ार (labour market) में व्यक्तियों की आय या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में उनके योगदान जैसे आँकड़ों पर आधारित होते हैं; और ये व्यक्ति के कामकाजी जीवन की अवधि से जुड़े होते हैं।

हालाँकि, शिक्षा के कई लाभकारी प्रभावों से उपजे 'ग़ैर-बाज़ार' लाभों का एक और सेट है। ये प्रभाव अधिक मूर्त निजी और सामाजिक-आर्थिक लाभों को मिश्रित करते हैं; वे न केवल शिक्षा प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवार को प्रभावित करते हैं, बल्कि पूरे समाज को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, शिशु मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि दर में कमी, लोकतंत्रीकरण और मानवाधिकार, राजनीतिक स्थिरता, अपराध दर में कमी, ग़रीबी में कमी, असमानता में कमी, और सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव।

लाभ अर्जित करने के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था और बुनियादी शिक्षा में निवेश महत्त्वपूर्ण है। दुनिया भर में कई अध्ययनों ने पुष्टि की है कि बाल विकास के शुरुआती वर्षों में निवेश से दीर्घकालिक प्रतिफल मिलते हैं। बच्चों की देखभाल से सम्बन्धित उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम, बच्चों की परवरिश (Parenting) से सम्बन्धित कार्यक्रम और बाल्य देखभाल अवकाश (Parental Leave) कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण हैं; ऐसे हस्तक्षेप आमतौर पर वंचित इलाकों में अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं।

35 से अधिक वर्षों में किए गए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) ने वंचित बच्चों के लिए जन्म से पाँच साल तक के प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के लाभों की गणना की। इन लाभों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार और रोज़गार में बेहतर परिणामों के रूप में परिभाषित किया गया था। परिणामों से पता चला कि वंचित बच्चों (जन्म से पाँच साल तक के) के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम निवेश पर प्रति वर्ष 13% प्रतिफल दे सकते हैं। इसके अलावा, जबकि व्यापक प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों की लागत अधिक होती है, गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में निवेश किया गया प्रत्येक अमरीकी डॉलर, 4 अमरीकी डॉलर और 16 अमरीकी डॉलर के बीच प्रतिफल दे सकता है।[21]

2006 में, हेकमैन ने प्रस्थापित किया कि शिक्षा के विभिन्न चरणों में वंचित बच्चों में निवेश पर प्रतिफल की दरों में गिरावट आई है। नीचे दिया गया रेखाचित्र, जिसे हेकमैन कर्व के नाम से जाना जाता है, दिखाता है कि प्रतिफल की अधिकतम दर प्री-स्कूल शिक्षा से जुड़ी है।[22]

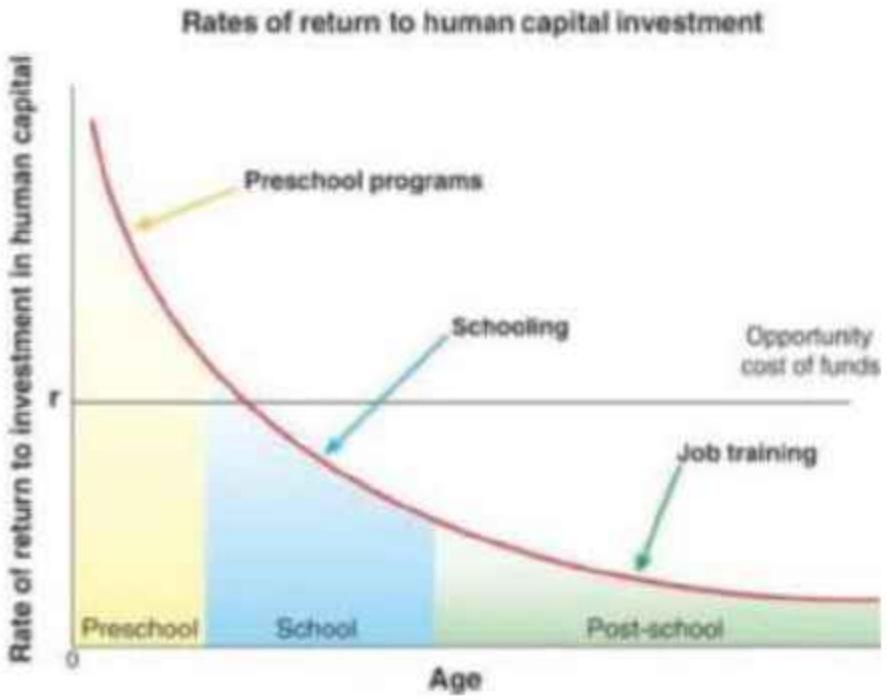

Figure 1

स्रोत : Heckman, J.J. (2006). Skill formation and the economics of investing in disadvantaged children. Science, Vol, 312. https://jenni.uchicago.edu/papers/Heckman_Science_v312_2006.pdf

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के कार्यक्रमों के तीन गहन अध्ययनों ने प्रतिभागियों और सामान्य जन को बड़े पैमाने पर प्रतिफल दिया, जो निवेश किए गए प्रत्येक अमरीकी डॉलर के लिए अमरीकी डालर 3.23 से अमरीकी डालर 9.20 तक था।[23]

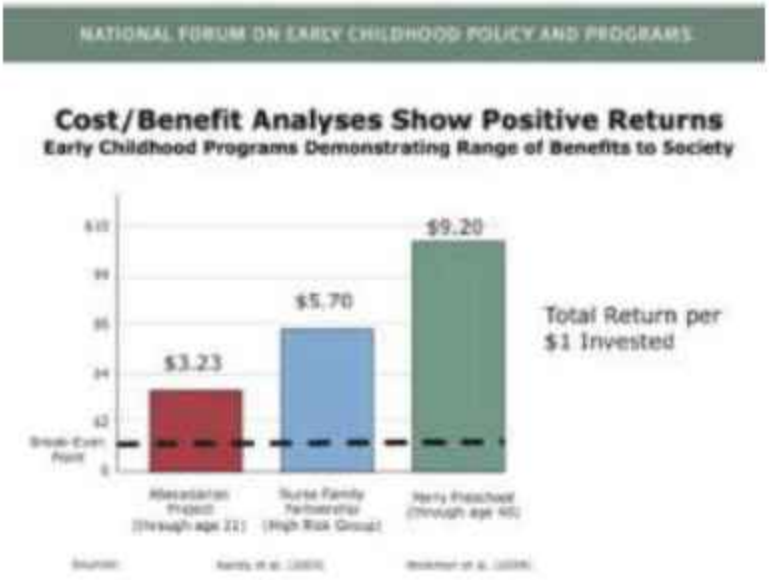

Figure 2

स्रोत: Center on the Developing Child. Harvard University. (2007). Early childhood program effectiveness. Accessed at https://46y5eh11fhgw3ve3ytpwxt9r-wpengine.netdna-ssl.com/wp- content/uploads/2015/05/inbrief-programs-update-1

अन्य अध्ययनों ने भी ECCE पर निवेश पर प्रतिफल के लिए इसी तरह के आँकड़ों का हवाला दिया है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए 7% और 18% के बीच मुद्रास्फीति के लिए समायोजित प्रतिफल की वार्षिक दर का अनुमान लगाया गया था। इसे 1985 में शुरू हुए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) द्वारा रिपोर्ट किया गया, और पाया गया कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा में निवेश किए गए प्रत्येक डॉलर के परिणामस्वरूप निवेश पर लगभग सात डॉलर का प्रतिफल प्राप्त हुआ।[24]

1.1 पारिभाषिक शब्दावली

1. आँगनवाड़ी - बच्चों की देखभाल के केन्द्र जो पूरे देश में छह साल से कम उम्र के बच्चों, माताओं और किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा जो एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना के तहत स्थापित हैं।
2. सन्तुलित पद्धति (Balanced approach) - साक्षरता शिक्षण की एक पद्धति, जो डिकोडिंग (नीचे देखें) के लिए स्पष्ट निर्देश और प्रस्तुत टेक्स्ट के अर्थ-निर्माण (नीचे देखें) के माध्यम से लिपि सीखने को सन्तुलित करता है।
3. बालवाटिका - 5-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कक्षा 1 से पहले एक वर्षीय preparatory कक्षा; यह आँगनवाड़ी, प्री-स्कूल, प्राइमरी स्कूल या किसी अन्य रूप में हो सकती है।
4. बालवाड़ी - पूरे देश में दूरदराज़ के क्षेत्रों में परिवारों और समुदायों को एकीकृत शिक्षा, स्वास्थ्य और देखभाल प्रदान करने के लिए केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक योजना के तहत स्थापित एक प्री-स्कूल; इसे ग़ैर-सरकारी निकायों द्वारा भी स्थापित किया जा सकता है।
5. बुनियादी शिक्षा - इसका तात्पर्य वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के आधार पर उत्पादक कार्य के आस-पास केन्द्रित स्कूली पाठ्यचर्या के उस गाँधीवादी प्रस्ताव से है, जो समग्र विकास और सीखने की ओर बढ़ाता है; इसे नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है।
6. देखभाल - किसी चीज़ या किसी के प्रति रुचि या चिन्ता व्यक्त करने वाला व्यवहार; कोई भी गतिविधि जो लोगों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने, बनाए रखने और सुधारने का प्रयास करती है।
7. संज्ञानात्मक - सोचने/चिंतन और तर्क की प्रक्रियाओं से सम्बन्धित या इसे शामिल करती कोई भी मानसिक गतिविधि।
8. दक्षताएँ - ये सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जिनका अवलोकन और व्यवस्थित आकलन किया जा सकता है।
9. प्रिंट की अवधारणाएँ (या प्रिंट जागरूकता) - यह छपे हुए texts कैसे काम करते हैं, के बारे में जागरूकता है। अन्य बातों के अलावा इसमें यह ज्ञान भी शामिल है कि किताबें किसलिए हैं, छपे हुए टेक्स्ट को किस दिशा से किस दिशा में पढ़ा जाता है। इसमें लेखन के अन्य नियमों जैसे शब्दों के बीच की जगह और विराम चिह्नों का ज्ञान भी शामिल है।
10. Creche - जब बच्चों के माता-पिता व्यस्त होते हैं, ख़ासकर काम पर गए हुए होते हैं, उस समय इस जगह पर दिन में छोटे बच्चों की देखभाल की जाती है।
11. पाठ्यचर्या के उद्देश्य - ये ऐसे विवरण हैं जो पाठ्यचर्या विकास और क्रियान्वयन को दिशा देते हैं।
12. डिकोडिंग - पढ़ना सीखने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। यह लिपि के अक्षरों और भाषा की ध्वनियों के बीच समुचित सम्बन्ध बनाने की क्षमता है। लिखित रूप में प्रस्तुत पूर्ण शब्दों को बोलने के लिए यह क्षमता आवश्यक है।
13. विकासात्मक विलम्ब - यह किसी आयु वर्ग के बच्चों से संबंधित मानदण्डों के अनुसार बच्चे के विकास में विलम्ब को सन्दर्भित करता है। यह विलम्ब motor function, भाषा और बोलने, संज्ञानात्मक कौशल व सामाजिक कार्यों आदि में हो सकता है।
14. विकासात्मक प्रतिफल - व्यवहार जो विकास और परिपक्वता की प्रक्रिया के परिणाम हैं।
15. विकासात्मक क्षेत्र - विकास और प्रगति के क्षेत्र, अर्थात शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और भाषा अर्जन।
16. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा - जन्म से आठ वर्ष तक बच्चों की देखभाल और शिक्षा।

17. आरंभिक भाषा (Early Language) - जीवन के पहले कुछ वर्षों में बच्चे का भाषा सीखना, जिसमें मौखिक कौशल अर्जित करने, उच्चारण और स्वर का अभ्यास करने तथा नई ध्वनियों, शब्दों और भाषा के नियम सीखने की रुचि होती है और उस पर ज़ोर दिया
जाता है।
18. उद्गामी साक्षरता (Emergent Literacy) - सीखने का शुरुआती चरण जहाँ बच्चे पढ़ने और लिखने में संलग्न होते हैं। स्कूल में औपचारिक रूप से इन कौशलों से परिचित होने से पहले की अवस्था।
19. उद्गामी संख्या ज्ञान (Emergent Numeracy) - सीखने का शुरुआती चरण जहाँ बच्चे बुनियादी संख्या अवधारणाओं और गणना कौशलों में संलग्न होते हैं। स्कूल में औपचारिक रूप से इनसे परिचित होने से पहले की अवस्था।
20. भावनात्मक बुद्धिमत्ता - अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, उनका प्रबन्धन करने और सामाजिक नियमों के प्रति सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया देने की क्षमता।
21. इनकोडिंग - किसी लिपि में ध्वनियों और प्रतीकों के बीच सम्बन्ध की समझ का उपयोग, विचार या सुनी गई भाषा से अक्षर, शब्द और वाक्य लेखन में करने का कौशल और क्षमता।
22. अनुभवात्मक अधिगम - वास्तविक जीवन की स्थितियों जैसे अनुभवों के ज़रिए गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया।
23. सूक्ष्म मोटर कौशल (Fine Motor skills) - सटीक गति के लिए हाथों और कलाई की छोटी मांसपेशियों का उपयोग करने की क्षमता।
24. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान - (FLN) - बुनियादी लिखित या पाठ्य सामग्री को पढ़ने और जोड़-घटाव जैसी मूलभूत गणितीय समस्याओं को हल करने की किसी बच्चे की क्षमता।
25. फाउंडेशनल स्टेज - 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा का चरण।
26. मुक्त खेल - शिक्षक द्वारा विकसित उत्प्रेरक वातावरण में बच्चों के नेतृत्व वाला, बच्चों द्वारा निर्देशित खेल।
27. मुक्त लेखन - लेखन गतिविधि का एक रूप जहाँ लेखक रूप, व्याकरण और शैली की चिन्ता किए बिना स्वतःस्फूर्त ढंग से और लगातार लिखता है।
28. मार्गदर्शित खेल - शिक्षक के मार्गदर्शन और मदद के साथ बच्चों के नेतृत्व वाले खेल।
29. समग्र विकास - किसी व्यक्ति में बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं का विकास।
30. समग्र प्रगति कार्ड - सीखने की उपलब्धि और विकास के सभी क्षेत्रों में बच्चे के सीखने और प्रगति का रिकॉर्ड।
31. घर की भाषा - बच्चे के घर में सदस्यों के बीच बोली जाने वाली भाषा(एँ)।
32. परिकल्पना - एक विचार जो किसी चीज़ के सम्भावित स्पष्टीकरण के लिए सुझाया गया है लेकिन अभी तक सच या सही नहीं पाया गया है।
33. समावेशन - शामिल करने का काम; यह सुनिश्चित करना कि बच्चों के व्यक्तिगत सीखने के अन्तर की परवाह किए बिना, उनके पास सभी स्कूल और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में भाग लेने के समान अवसर हैं।
34. Integral Education - बच्चा जिसका पहले से ही हिस्सा है, उस सन्दर्भ से किसी नए ज्ञान को जोड़ने और बच्चों की मातृभाषा के उपयोग के ज़रिये बच्चों को ख़ुद को खोजने और अपनी वास्तविक क्षमता हासिल करने में मार्गदर्शन करना।
35. Integrated Learning - पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों के अन्तर्सम्बन्धों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सीखने का एक समग्र दृष्टिकोण।

36. सीखने की उपलब्धियाँ - किसी भी क्षेत्र में सीखने के प्रतिफलों और सम्बन्धित दक्षताएँ प्राप्त करने की दिशा में प्रगति का विस्तार।
37. सीखने के प्रतिफल - ये ज्ञान, कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों के सार प्रस्तुत करने वाले कथन हैं, जो सभी बच्चों के पास अवश्य होने चाहिए, और सीखने के अनुभव या सीखने के अनुभवों के अनुक्रम के पूरा होने पर उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए।
38. Learning trajectories - दक्षताओं को प्राप्त करने का विकासात्मक मार्ग।
39. गणितीय समझ - इसमें गणितीय ज्ञान के अर्थ और लक्ष्यार्थ (connotation) जानना और समझना शामिल है।
40. अर्थ निर्माण - यह भाषा और साक्षरता विकास के सन्दर्भ में, सुने या पढ़े जा रहे का अर्थ समझने के लिए श्रोता / पाठक की सक्रिय भागीदारी है।
41. बहुभाषिकता - यह शिक्षण और सीखने के सन्दर्भ में सम्प्रेषण के लिए घर की भाषा के अलावा कई भाषाओं का ज्ञान और सक्रिय उपयोग है।
42. एक-एक की संगति (One-to-one correspondence) - छोटे बच्चों में एक कौशल जिसमें समूह की हर वस्तु को गिनना शामिल है, इसमें हर एक वस्तु की एक संख्या नाम के साथ केवल एक बार गिनती की जाती है।
43. फोनिक्स - मेल खाती ध्वनियों के साथ अक्षरों की डिकोडिंग सिखाने की एक विधि।
44. ध्वनि जागरूकता - किसी बोले गए शब्द में ध्वनियों को पहचानने और भेद करने की क्षमता।
45. सीखने की सकारात्मक आदतें - ये सीखने की आदतें हैं जो बच्चों को स्कूली कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय संलग्नता के लिए सक्षम बनाती हैं।
46. साक्षरता-पूर्व (Pre-literacy) - ये शुरुआती दौर में पढ़ने की तैयारी (reading-readiness) के व्यवहार और कौशल हैं, जो बच्चे को बाद में सफलतापूर्वक पढ़ने की क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
47. संख्या-पूर्व (Pre-numeracy) - ये शुरुआती दौर में गिनने,, संख्याओं की पहचान व मात्राओं की तुलना करने की संख्या-तैयारी (number-readiness) के व्यवहार व कौशल हैं जो एक बच्चे को बाद में सफल गणना क्षमताएँ विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
48. प्रिपरेटरी स्टेज - 8 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए चरण; कक्षा 3-5 के लिए।
49. प्री-स्कूल - 6 साल और उससे कम उम्र के बच्चों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाला स्कूल।
50. सुरक्षा - यह जोखिम का आकलन है, और नुकसान, ख़तरे या चोट से किसी व्यक्ति का सक्रिय बचाव है।
51. सम्बलन (Scaffolding) - सहयोग का विशिष्ट और व्यवस्थित रूप है जो किसी विशेष अवधारणा को सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए बनाया जाता है।
52. स्कूल की भाषा - स्कूल में उसके सदस्यों के बीच बोली जाने वाली भाषा।
53. स्कूल preparedness - इच्छा / खुलेपन के साथ सीखने के शुरुआती अनुभवों से जुड़ने और उनका लाभ उठाने के लिए स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चों की तैयारी; इसे स्कूल रेडीनेस के रूप में भी जाना जाता है।
54. ख़ुद की देखभाल - ख़ुद के स्वास्थ्य, भलाई और विकास के प्रति रुचि या चिन्ता के नाते किए गए व्यवहार।
55. Separation anxiety - माता-पिता या किसी अन्य संलग्न व्यक्ति से बिछड़ने होने के दौरान कुछ बुरा होने का तीव्र या लम्बे समय तक डर।
56. स्थानिक कौशल - वस्तुओं, आकृतियों और स्थानों के साद्दश्यीकरण (visualisation) और उनमें हेरफेर करने की मानसिक क्षमता।

57. उत्प्रेरणा (Stimulation) - बच्चों के साथ खेलने, पढ़ने और गाने जैसी सरल गतिविधियाँ, जो छोटे बच्चों की सोचने, सम्प्रेषण और दूसरों के साथ जुड़ने की क्षमता में सुधार करती हैं।

58. संरचित खेल - शिक्षक के नेतृत्व वाला खेल जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

59. Subitizing - बिना गिने किसी समूह में चीजों की संख्या को सटीकता से समझने की क्षमता, आमतौर पर जब वस्तुएँ कम संख्या में हों।

60. सिनैप्टिक सह-संबंध (Synaptic connections) - ये सीखने और स्मृति को संभव बनाने वाली न्यूरॉन्स (तंत्रिका आवेगों को संचारित करने वाली तंत्रिका कोशिकाएँ) के बीच स्थानिक लिंक हैं।

61. सकल शारीरिक प्रतिक्रिया - (Total Physical Response – TPR) - मौखिक इनपुट के साथ-साथ या इस पर प्रतिक्रिया स्वरूप शारीरिक गतियों का उपयोग करते हुए भाषा या शब्दावली सिखाने की एक विधि।

62. शब्दावली - यह शब्दों (a body of words) और उन शब्दों के अर्थ को जानना है। भाषा और साक्षरता विकास के सन्दर्भ में, शब्दावली उन शब्दों के समूह (the set of words) की तरफ़ भी इशारा करती है, जिन्हें बच्चा समझता है।

63. समग्र भाषा पद्धति (Whole language approach) - भाषाओं के शिक्षण का एक दर्शन और पद्धति जहाँ किसी विशेष भाषा को अनुभवात्मक और सामाजिक तरीक़ों से अधिक समग्रता में सिखाया जाता है, इसमें भाषा के हिस्सों (ध्वन्यात्मक संरचनाएँ, व्याकरण और शब्दावली) को एक के बाद दूसरे के क्रम में नहीं पढ़ाया जाता।

1.2 सन्दर्भ (References)

1. Ministry of Education (2018-19). UDISE Data, New Delhi. Ministry of Education http://udise.in/flash.htm
2. Ministry of Women and Child Development. (2013). Draft National Early Childhood Care and Education Policy. New Delhi. Ministry of Women and Child Development. https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf
3. Government of India (2022). Lok Sabha Unstarred Question no. 2146. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/179/AU2146.pdf
4. Ministry of Education (2020-21). UDISE Data, New Delhi. Ministry of Education https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home
5. Ministry of Health and Family Welfare. (2022). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019-20. http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_FCTS/India.pdf
6. Ministry of Education. (2021), 'Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education (SARTHAQ)'. New Delhi, Ministry of Education. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf
7. Government of India (2020). Lok Sabha Unstarred Question no. 3980. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/175/AU3980.pdf
8. NCTE. (2020). List of recognised teacher education institutions. https://www.ncte.gov.in/website/RecognizedInstitutions.aspx
9. Ministry of Education. (2022). National Achievement Survey. National Report NAS 2021. https://nas.gov.in/download-national-report
10. Fisher, D. & Frey, N. (2013). Better Learning Through Structured Teaching: A Framework for the Gradual Release of Responsibility. Association for Supervision and Curriculum Development (ASCD).
11. UNICEF & Language and Learning Foundation. (2019). Manual for Early Language and Literacy. UNICEF
12. Fan, L. (2010). Principles and Processes for Publishing Textbooks and Alignment with Standards: A Case in Singapore. Paper presented at APEC Conference on Replicating Exemplary Practices in Mathematics Education, Koh Samui, Thailand, 7-12 Mar. 201.
13. Center on the Developing Child at Harvard University. In Brief: The Science of Early Childhood Development. (n.d.-b). Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/
14. Heckman, J. J. (2000). Policies to foster human capital. *Research in Economics*, *54*(1), 3–56. https://doi.org/10.1006/reec.1999.0225
15. Kaul, V., Ramachandran, C., & Upadhyaya, G. C. (1994). A study of impact of preschool education on retention in primary grades. *National Council of Educational Research &Training*.
16. Hazarika, G., & Viren, V. (2013). The effect of early childhood developmental program attendance on future school enrolment in rural North India. *Economics of Education Review*, *34*, 146–161. https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005

17. Meenai, Z., Sen, R. S., & Firdos, S. (2015). Quality enhancement of preschool education component of ICDS through implementation of restructured curriculum in three states. In S. Azmat (Ed.), *Early learning perspectives to early childhood education (Early Childhood Development Knowledge Series)* (pp. 191–202). Global Books Organisation.

18. Kaul, V., Chaudhary, A.B., Sharma, S. (2017). *Quality and diversity in early childhood education.* Centre for Early Childhood Education and Development, Ambedkar University

19. Rao, N., & Sun, J. (2015). Quality early childhood care and education in low-resource level countries in Asia. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Investing against evidence: The global state of early childhood care and education* (pp. 211-230). UNESCO.

20. Dhingra, R., & Sharma, I. (2011). Assessment of Preschool Education Component of ICDS Scheme in Jammu District. 7. *Global Journal of Human Social Science.* https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf

21. García, J.L., Heckman, J.J., Leaf, D.E., Prados, M.J. (2017). *Quantifying the life-cycle benefits of a prototypical early childhood program. Working Paper* 23479. National Bureau of Economic Research Working Paper Series. https://heckmanequation.org/www/assets/2017/01/w23479.pdf

22. Heckman, J.J. (2006). Skill formation and the economics of investing in disadvantaged children. Science, *Vol, 312.* https://jenni.uchicago.edu/papers/Heckman_Science_v312_2006.pdf

23. Center on the Developing Child. Harvard University. (2007). *Early childhood program effectiveness.*Accessed at https://46y5eh11fhgw3ve3ytpwxt9r-wpengine.netdna-ssl.com/wp- content/uploads/2015/05/inbrief-programs-update-1.pdf

24. Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington. *National Journal, 36.*

1.3 ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. Barrett, P., Treves, A., Shmis, T., Ambasz, D., & Ustinova, M. (2019). *The Impact of School Infrastructure on Learning: A Synthesis of the Evidence*. World Bank. https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1378-8
2. Basham, A. L. (2004). *The Wonder That Was India: Volume 1* (Indian edition). Picador.
3. Bhattacharjea, S., & Ramanujan, P. (2019). *What do children in rural India do in their early years?* Ideas For India. Retrieved September 14, 2022, from http://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/what-do-children-in-rural-india-do-in-their-early-years.html
4. Brozak, J. (2017). The Importance of a Low Student to Teacher Ratio. https://classroom.synonym.com/disadvantages-teaching-small-class-7324788.htm
5. Carpenter, T. P., & Lehrer, R. (1999). Teaching and Learning Mathematics with Understanding. In E. Fennema, & T. A. Romberg, Mathematics Classrooms That Promote Understanding. Routledge.
6. Center on the Developing Child at Harvard University. (n.d.-a). In Brief: The Science of Early Childhood Development. Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/
7. Center on the Developing Child at Harvard University. (n.d.-b). In Brief: Early Childhood Program Effectiveness. University. Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-early-childhood-program-effectiveness/
8. Cummins, J. (2008). BICS and CALP: Empirical and Theoretical Status of the Distinction. Street, B. & Hornberger, N. H. (Eds.). Encyclopedia of Language and Education, 2nd Edition, Volume 2: Literacy. (pp. 71-83). Springer Science + Business Media LLC. .
9. Danniels, E., & Pyle, A. (2018). Defining Play-based Learning. 7. https://www.child-encyclopedia.com/pdf/expert/play-based-learning/according-experts/defining-play-based-learning
10. Department of Education Australia . (n.d.) Play-based learning. https://earlychildhood.qld.gov.au/earlyYears/Documents/age-appropriate-pedagogies-play-based-learning.PDF
11. Dhingra, R., & Sharma, I. (2011). Assessment of Preschool Education Component of ICDS Scheme in Jammu District. 7. Global Journal of Human Social Science. https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf
12. Directorate of School Education, Puducherry. (2021).*Preschool Curriculum Framework.*
13. Dweck, C. S., & Yeager, D. S. (2012). Mindsets That Promote Resilience: When Students Believe That Personal Characteristics Can Be Developed. *Educational Psychologist*, 47-51.
14. Eisner, E. W. (2002). *The Arts and the Creation of Mind*. Yale University Press.
15. Ellis, G., & Brewster, J. (2014). *Tell it again! The storytelling handbook for primary English language teachers*. British Council. https://www.teachingenglish.org.uk/sites/teacheng/files/pub_D467_Storytelling_handbook_FINAL_web.pdf
16. Fan, L. (2010). Principles and Processes for Publishing Textbooks and Alignment with Standards: A Case in Singapore. *Paper presented at APEC Conference on Replicating Exemplary Practices in Mathematics Education, Koh Samui, Thailand, 7-12 Mar. 201.*

17. Fennema, E., & Romberg, T. A. (1999). *Mathematics Classrooms That Promote Understanding*. Routledge.

18. Ganimian, A. J., Muralidharan, K., & Walters, C. R. (2021). Augmenting State Capacity for Child Development: Experimental Evidence from India. *NBER Working Paper No. 28780.* https://econweb.ucsd.edu/~kamurali/papers/Working%20Papers/w28780.pdf

19. García, J. L., Heckman, J. J., Leaf, D. E., & Prados, M. J. (2016). *The Life-cycle Benefits of an Influential Early Childhood Program* [Working Paper]. National Bureau of Economic Research. https://doi.org/10.3386/w22993

20. Gordon, A. M., & Browne, K. W. (2010). *Beginnings and Beyond: Foundations in Early Childhood Education* (8th edition). Wadsworth Pub Co.

21. Government of India. (2012). The Protection of Children from Sexual Offences Act, 2012. https://wcd.nic.in/sites/default/files/POCSO%20Act%2C%202012.pdf

22. Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disability Act, 2016. http://www.disabilityaffairs.gov.in/upload/uploadfiles/files/RPWD%20ACT%202016.pdf

23. Government of India. (2020). Lok Sabha Unstarred Question no. 3980. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/175/AU3980.pdf

24. Government of India. (2021). Lok Sabha Unstarred Question no. 3068. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/176/AU3068.pdf

25. Government of India. (2022). Lok Sabha Unstarred Question no. 2146. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/179/AU2146.pdf

26. Gupta, A. (2013). *Early Childhood Education, Postcolonial Theory, and Teaching Practices and Policies in India: Balancing Vygotsky and the Veda* (revised edition). Palgrave Macmillan.

27. Gupta, A., & Williams, L. (2006). *Early Childhood Education, Postcolonial Theory, and Teaching Practices in India Balancing Vygotsky and the Veda*. Saint Martin's Press Inc. http://www.palgraveconnect.com/doifinder/10.1057/9780312376345

28. Gupta, V., & Samant, S. (2017). *Using Child Assessments to Improve Program Quality*. https://www.linkedin.com/pulse/using-child-assessments-improve-program-quality-vini-gupta

29. Hazarika, G., & Viren, V. (2013). The effect of early childhood developmental program attendance on future school enrollment in rural North India. *Economics of Education Review*, *34*, 146–161. https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005

30. Heckman, J. J. (2000). Policies to foster human capital. *Research in Economics*, *54*(1), 3–56. https://doi.org/10.1006/reec.1999.0225

31. Heckman, J. J. (2006). Skill Formation and the Economics of Investing in Disadvantaged Children. *Science*, *312*(5782), 1900–1902. https://doi.org/10.1126/science.1128898

32. International Institute for Population Sciences (IIPS) and ICF. (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5)*, 2019-20. https://dhsprogram.com/pubs/pdf/FR375/FR375.pdf

33. Kapur, A., & Shukla, R. (2022). Saksham Anganwadi and POSHAN 2.0. *Accountability Initiative: Responsive Governance*. https://accountabilityindia.in/publication/saksham-anganwadi-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/

34. Kapur, M. (n.d.). *Child care in ancient India: A life span approach.* Retrieved September 13, 2022, from https://ipi.org.in/texts/others/malvikakapur-childcare-sp.php

35. Kaul, V. (2019). Introduction: Positioning School Readiness and Early Childhood Education in the Indian Context. In V. Kaul & S. Bhattacharjea (Eds.), *Early Childhood Education and School Readiness in India* (pp. 3–18). Springer Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-13-7006-9_1

36. Kaul, V., Chaudhary, A.B., Sharma, S. (2017). *Quality and diversity in early childhood education.* Centre for Early Childhood Education and Development, Ambedkar University

37. Kaul, V., Ramachandran, C., & Upadhyaya, G. C. (1994). A study of impact of preschool education on retention in primary grades. *National Council of Educational Research and Training*.

38. Kostelnik, M. J. (1998). *Guiding Children's Social Development*. Delmar Publishers.

39. Lancet. (2016). *Advancing Early Childhood Development: from Science to Scale*. An Executive Summary for The Lancet's Series. https://els-jbs-prod-cdn.jbs.elsevierhealth.com/pb-assets/Lancet/stories/series/ecd/Lancet_ECD_Executive_Summary-1507044811487.pdf

40. Meenai, Z., Sen, R. S., & Firdos, S. (2015). Quality enhancement of preschool education component of ICDS through implementation of restructured curriculum in three states. In S. Azmat (Ed.), *Early learning perspectives to early childhood education (Early Childhood Development Knowledge Series)* (pp. 191–202). Global Books Organisation.

41. Menon, S., & Das, H. V. (2019). Comprehensive literacy instruction model in Indian classrooms. *Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad*,.23. http://eli.tiss.edu/wpcontent/uploads/2017/08/Comprehensive_Literacy_Practitioner_Brief_12_PDF.pdf

42. Ministry of Education. (2016-17). *UDISE Data*. http://udise.in/flash.htm

43. Ministry of Education. (2018-19). *UDISE Data*. http://udise.in/flash.htm

44. Ministry of Education. (2019). *Draft National Education Policy 2019. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Draft_NEP_2019_EN_Revised.pdf*

45. Ministry of Education. (2020*). National Education Policy 2020*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

46. Ministry of Education. (2020-21). *UDISE Data*. https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home

47. Ministry of Education. (2022). *Prashast - A Disability Screening Checklist for Schools.* https://ncert.nic.in/pdf/DSCS_booklet.pdf

48. Ministry of Education.(2021). *'Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education (SARTHAQ)'*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf

49. Ministry of Education.(2021). *NIPUN Bharat. National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy (NIPUN Bharat): Guidelines for Implementation.*https://nipunbharat.education.gov.in/fls/fls.aspx

50. Ministry of Education.(2022).*Toy-Based Pedagogy -A Handbook- Learning for Fun, Joy and Holistic Development.* https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/update/toy_based_pedagogy.pdf

51. Ministry of Women and Child Development. (2016). *National Plan of Action for Children, 2016 Safe Children- Happy Childhood*. https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Plan%20of%20Action%202016.pdf

52. Ministry of Women and Child Development. (2017).*Pre-School Education Kit (PSE Kit) Recommended list of play and learning materials.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/Pre-School%20Education%20Kit.pdf

53. Ministry of Women and Child Development.(2013). *Draft National Early Childhood Care and Education Policy.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf

54. Ministry of Women and Child Development.(2014). *Early Childhood Care and Curriculum Framework.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/national_ecce_curr_framework_final_03022014%20%282%29.pdf

55. Ministry of Women and Child Development.(2014). *Early Childhood Care and Curriculum Framework.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/national_ecce_curr_framework_final_03022014%20%282%29.pdf

56. Morrison, G. S. (2012). *Early Childhood Education Today Plus NEW MyEducationLab with Pearson eText—Access Card Package* (12th edition). Pearson.

57. Nag, S. (2007). Early reading in Kannada: the pace of acquisition of orthographic knowledge and phonemic awareness. *Journal of Research in Reading, ISSN 0141-0423, Volume 30, Issue 1*, 7-22.

58. Nanda, M., Banerji, M., Ramanujan, P., Chaudhary, A. B., Bhattacharjea, S., & Kaul, V. (2017). *The India Early Childhood Education Impact Study*. UNICEF. https://www.unicef.org/india/media/2076/file

59. National Council for Teacher Education (NCTE). (2022). Recognised Institutions. Eastern Regional Committee. NCTE. https://ncte.gov.in/website/ercrecognizedInstitutions.aspx

60. National Research Council. (1999). *How People Learn: Brain, Mind, Experience, and School: Expanded Edition*. https://doi.org/10.17226/9853

61. NCERT. (2005). *National Curriculum Framework 2005.* https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf

62. NCERT. (2006). *National Focus Group on Early Childhood Education*. https://ncert.nic.in/pdf/focus-group/early_childhood_education.pdf

63. NCERT. (2008). *Early Childhood Education. An Introduction*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf

64. NCERT. (2017). *Learning Outcomes at the Elementary Stage*. https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/tilops101.pdf

65. NCERT. (2020). *Guidelines for Preschool Education*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/guidelines-for-preschool.pdf

66. NCERT.(2019). *The Preschool Curriculum*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Combined_Pre_school_curriculumEng.pdf

67. NCTE.(2010). Notification number F.No. 61 -03/20/2010/NCTE/(N&S). 2016-08-24 (1) (ncte.gov.in)

68. Nido Early School.(2017). *Project-Based Learning in Early Learning Centres.* https://www.poter.com.au/article/148/project-based-learning-in-early-learning-centres/

69. Nirmala, R., & Sun, J. (2015). Investing against evidence: The global state of early childhood care and education. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Quality early childhood care and education in low resource level countries in Asia*. UNESCO.

70. Pandey, S., & Kapur, A. (2022). Pradhan Mantri Poshan Shakti Nirman. *Accountability Initiative: Responsive Governance*. https://accountabilityindia.in/publication/pm-poshan-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/

71. Pinto, C. F., & Soares, H. (2012). *Using children's literature in ELT A story-based approach.* https://core.ac.uk/download/pdf/47141003.pdf

72. Prendergast, T., & Diamant-Cohen, B. (2015). Research Roundup: Investing in Early Childhood. *Children and Libraries*. https://journals.ala.org/index.php/cal/article/view/4189

73. Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington. *National Journal*, *36*.

74. Rajesh, A., & Samant, S. P. (2017). Geet, Nacho, Gappo (Singing, Dancing, Storytelling): A route to joyful learning. In *Benefits of multilingual education.* Child Care Exchange.

75. Ramachandran, V., Das, D., Nigam, G., Shandilya, A. (2020). *Contract teachers in India. Recent status and current trends.* Azim Premji University. https://eruindia.org/files/Contract%20Teachers%20in%20India%202020.pdf

76. Rao, N. (2010). Preschool Quality and the Development of Children from Economically Disadvantaged Families in India. *Early Education and Development*, *21*(2), 167–185. https://doi.org/10.1080/10409281003635770

77. Rao, N., & Kaul, V. (2018). India's integrated child development services scheme: Challenges for scaling up: Integrated child development services. *Child: Care, Health and Development*, *44*(1), 31–40. https://doi.org/10.1111/cch.12531

78. Rao, N., & Sun, J. (2015). Quality early childhood care and education in low-resource level countries in Asia. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Investing against evidence: The global state of early childhood care and education.* UNESCO.

79. Research Group, Azim Premji University. (2021). *Issues in Education, Teachers and Teacher Education.* https://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/research-projects.aspx

80. Research Group, Azim Premji University. (2014). *Pupil-Teacher Ratios in Schools and their Implications.* https://docplayer.net/10997038-Pupil-teacher-ratios-in-schools-and-their-implications-february-2014-azim-premji-foundation.html

81. Virginia Department of Education. (2022). *Standards of Learning (SOL) and Testing*. Retrieved September 13, 2022, from https://doe.virginia.gov/testing/index.shtml

82. Swaminathan, M. (2003). Training for Child Care and Education Workers in India. *International Journal of Early Years Education*, *2*, 67–76. https://doi.org/10.1080/09669760.2003.10807107

83. UNICEF. (2018). *Learning through play—Strengthening learning through play in early childhood education programmes.* (2018). UNICEF Education Section, Programme Division. https://www.unicef.org/sites/default/files/2018-12/UNICEF-Lego-Foundation-Learning-through-Play.pdf

84. Vidya Bharati. (2022). *Vidya Bharati*. Retrieved from Vidya Bharati: https://vidyabharti.net/

85. Yeager, D. S., & Dweck, C. S. (2012). Mindsets That Promote Resilience: When Students Believe That Personal Characteristics Can Be Developed. *Educational Psychologist*, *47*(4), 302–314. https://doi.org/10.1080/00461520.2012.722805

आभार

विद्यालयी शिक्षा विभाग / महिला सशक्तिकरण एवं बा0वि0वि0 / स्वास्थ्य विभाग उत्तराखण्ड शासन

- श्री रविनाथ रामन, सचिव, विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्री हरिचन्द्र सेमवाल, सचिव, महिला सशक्तिकरण एवं बा0वि0वि0 उत्तराखण्ड।
- मे० योगेन्द्र यादव, अपर सचिव, विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्रीमती रंजना राजगुरू, अपर सचिव, विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्री एम0एम0सेमवाल, अपर सचिव, विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्रीमती अमनदीप कौर, अपर सचिव, स्वास्थ्य उत्तराखण्ड।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

- प्रो0 रंजना अरोड़ा, विभागाध्यक्ष, पाठ्यक्रम।
- डॉ0 अमरेन्द्र बेहरा, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान।
- प्रो0 संध्या संघाई, राष्ट्रीय समन्वयक (उत्तराखण्ड)।
- डॉ0 अनिल कुमार नैनावत, राष्ट्रीय समन्वयक (उत्तराखण्ड)।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा स्टेयरिंग कमेटी

निर्देशन एवं मार्गदर्शक मण्डल–

- श्री बंशीधर तिवारी, महानिदेशक, विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्रीमती सीमा जौनसारी, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्रीमती बंदना गर्ब्याल, निदेशक, अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण, उत्तराखण्ड।
- श्री रामकृष्ण उनियाल, निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा उत्तराखण्ड।

स्टेयरिंग कमेटी

अध्यक्ष

- श्री राकेश चन्द्र जुगरान, प्राचार्य, डायट देहरादून।

सदस्य

- श्री जय प्रकाश चतुर्वेदी, संयुक्त निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, सी0बी0एस0ई0 देहरादून।
- श्री शिव पूजन सिंह, संयुक्त सचिव, विद्यालयी शिक्षा परिषद, उत्तराखण्ड।
- डॉ0 आदर्श शर्मा, पू0 निदेशक, राष्ट्रीय सार्वजनिक सहयोग और बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली।
- डॉ0 संगीता खुल्लर, एसोसिएट प्रोफेसर, एम.के.पी. कालेज, देहरादून।
- श्री अमित कुमार चंद, खण्ड शिक्षा अधिकारी, जयहरीखाल पौड़ी।
- श्री सुनील जोशी, प्रधानाचार्य रा.इ.का. गुनियाल गांव, देहरादून।
- श्री अजय कुमार खण्डेकर, प्रधानाचार्य, रा.इ.का. माजरीग्रांट।
- श्रीमती विनीता मार्टिन, प्रधानाचार्य, सी.एन.आई. बा.इ.का. देहरादून।

- श्री दिनेश बर्त्वाल, प्रधानाचार्य, दून इण्टरनेशनल देहरादून।
- श्रीमती स्वाति आनन्द, प्रधानाचार्य, धर्मा इण्टरनेशनल स्कूल देहरादून।
- श्री अब्बल सिंह तोपाल, प्रधानाचार्य, विवेकानन्द इण्टर कालेज, मण्डलसेरा बागेश्वर।
- श्री धीरेन्द्र रावत, प्रधानाचार्य, विवेकानन्द इण्टरकालेज, कपकोट बागेश्वर।
- मो0 रईस अहमद, प्रधानाचार्य, फैज़ ए आम इण्टर कालेज, जसपुर ऊधम सिंह नगर।
- श्री अम्बरीश बिष्ट, राज्य समन्वयक, अज़ीम प्रेमजी फाउन्डेशन, देहरादून।
- श्रीमती पुष्पलता रावत, राज्य समन्वयक, रूम टू रीड, देहरादून।
- श्रीमती तरूणा चमोला, बाल विकास परियोजना अधिकारी, देहरादून।
- डॉ0 राकेश चन्द्र गैरोला, मेम्बर कॉर्डिनेटर, स्टेयरिंग कमेटी (विद्यालयी शिक्षा तथा ई.सी.सी.ई.) /प्रवक्ता एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- डॉ0 अशोक कुमार सैनी, स्टेट टेक्निकल कॉर्डिनेटर/प्रवक्ता डायट रूड़की।
- डॉ0 अनुज्ञा पैन्यूली, प्रवक्ता, डायट बड़कोट उत्तरकाशी।
- डॉ0 संजीव चेतन, प्रवक्ता एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- डॉ0 उषा कटियार, प्रवक्ता एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- श्रीमती सुनीता बडोनी, प्रवक्ता, डायट देहरादून।
- श्री गोपाल सिंह गैड़ा, प्रवक्ता, डायट अल्मोड़ा।
- डॉ0 बीर सिंह रावत, प्रवक्ता, डायट टिहरी।
- डॉ0 नवीन जोशी, प्रवक्ता, डायट चम्पावत।
- श्रीमती संध्या कठैत, प्रवक्ता डायट देहरादून।
- डॉ0 एम.सी.जोशी, प्रवक्ता, डायट बागेश्वर।
- डॉ0 शैलेन्द्र धपोला, प्रवक्ता डायट भीमताल।
- श्री रविन्द्र सिंह चौहान, प्रवक्ता रा.इ.का. नैणी, चमोली।
- श्री बृजेश पंवार, प्रवक्ता, रा.इ.का.नीर, टिहरी।
- श्री राम लाल आर्य, प्रवक्ता, रा.इ.का. कर्णप्रयाग, चमोली।
- श्री आशीष जोशी, प्रवक्ता, एस.जी.आर.आर, रेसकोर्स, देहरादून।
- श्री विनोद मल्ल, सहायक अध्यापक, रा.इ.का. कण्डारी, उत्तरकाशी।
- श्रीमती दिव्या नौटियाल, स.अ., रा.इ.का. साकीनखेत, कल्जीखाल, पौड़ी।
- श्री संजय रावत, स.अ., रा.उ.मा.वि. बागथात, कालसी, देहरादून।
- श्री शैलेन्द्र रौथाण, स.अ. जय किसान इण्टर कालेज, रौड़ाधार टिहरी।
- श्रीमती सुमन बहुगणा, अनुदेशक, आई.टी.आई. झिंजनीसैंण, टिहरी।
- श्रीमती पूनम जोशी, प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु मन्दिर, जीवन धाम अल्मोड़ा।
- श्रीमती ममता गुप्ता, प्रधानाचार्य, रा.प्रा.वि. गिनतीगांव नैनीताल।
- श्री विनोद नौटियाल, आई.टी.आई. अल्मोड़ा।
- श्री दिगम्बर नेगी, स.अ., रा.उ.प्रा.वि. भकुण्डा, चमोली।
- श्री हेमेन्द्र चौहान, स.अ., रा.प्रा.वि.चौली, पुरानी बस्ती भगवानपुर, हरिद्वार।

विषय विशेषज्ञ

- डॉ० रितु चन्द्रा, डिप्टी सेक्रेटरी, ई.सी.सी.ई व एफ.एल.एन. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- श्री आर0के0 कुँवर, से०नि० निदेशक, माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्री शिव प्रसाद खाली, निदेशक, संस्कृत शिक्षा उत्तराखण्ड।
- डॉ० रूपेन्द्र दत्त शर्मा, से०नि० अपर निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- डॉ० सौरभ प्रकाश, प्रोफेसर, पं0सु0ला0शर्मा केन्दीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्यप्रदेश ।

- श्री डी0सी0 गौड़, मुख्य शिक्षा अधिकारी पौड़ी।
- श्री प्रदीप रावत, मुख्य शिक्षा अधिकारी देहरादून ।
- डॉ० निधि सिंह, अकादमिक कंसल्टेंट, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

बुनियादी अवस्था हेतु राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण एवं निर्देशन

- श्री बीरेन्द्र सिंह रावत, अपर निदेशक (प्रा०शि०), गढ़वाल मण्डल पौड़ी।
- डॉ0 एस0बी0 जोशी, अपर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा गढ़वाल मण्डल पौड़ी गढ़वाल।
- श्रीमती आशा रानी पैन्यूली, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- श्रीमती कंचन देवराड़ी, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- श्री कुलदीप गैरोला, मुख्य शिक्षा अधिकारी चमोली।
- श्री चेतन प्रसाद नौटियाल, से.नि. उप निदेशक, निदेशालय मा.शि.।
- श्रीमती कमला बड़वाल, उप निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्री हरीश चन्द्र सिंह रावत, उप निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड।
- श्री पी.के. बिष्ट,उप निदेशक, एम.डी.एम. उत्तराखण्ड।
- श्री नरबीर सिंह बिष्ट, उप निदेशक, प्रा.शि.नि., देहरादून।
- श्री राजेन्द्र प्रसाद डंडरियाल, प्राचार्य डायट, टिहरी।
- श्री हरक राम कोहली, प्राचार्य, डायट डीडीहाट।
- डॉ0 के.एन.बिजल्वाण, उप निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- डॉ0 ए.के.मिश्रा, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला सशक्तिकरण एवं बा0 वि0 विभाग उत्तराखण्ड।
- श्री राय सिंह रावत, से०नि० उप निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- श्री जे0पी0 काला, खण्ड शिक्षा अधिकारी, मोरी उत्तरकाशी।
- श्री रवि मेहता, खण्ड शिक्षा अधिकारी, भिकियासैंण अल्मोड़ा।
- श्री भारत जोशी, खण्ड शिक्षा अधिकारी पाटी चम्पावत।
- श्रीमती पल्लवी नैन, खण्ड शिक्षा अधिकारी सहसपुर देहरादून उत्तराखण्ड।
- श्रीमती हिमानी बिष्ट, प्रधानाचार्य, रा.इ.का.धनोल्टी, टिहरी उत्तराखण्ड।
- श्रीमती मीनाक्षी जोशी, प्रधानाचार्य, मानस इण्टरनेशनल स्कूल, डोईवाला देहरादून।
- श्रीमती रचना देव, प्रधानाचार्य, के0वि0, ओ0एल0एफ0, रायपुर देहरादून।
- श्री मुरलीधर चन्दोला, प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु मन्दिर कर्णप्रयाग, चमोली।
- श्रीमती विधु गुलाटी, सुपरवाइजर, महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास विभाग उत्तराखण्ड।
- श्री मदन मोहन जोशी, प्र.उप राज्य परियोजना निदेशक समग्र शिक्षा।
- डॉ0 मोहन सिंह बिष्ट, प्रोफेशनल, सीमैट उत्तराखण्ड।
- डॉ0 मदन मोहन उनियाल, प्रोफेशनल, सीमैट उत्तराखण्ड।
- डॉ0 जगमोहन सिंह बिष्ट, जूनियर प्रोफेशनल, सीमैट उत्तराखण्ड।
- डॉ0 विनोद ध्यानी, जूनियर प्रोफेशनल, सीमैट उत्तराखण्ड।
- श्रीमती गंगा घुघत्याल, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- डॉ0 अजय कुमार चौरसिया, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- डॉ0 रंजन कुमार भट्ट, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- श्री सुनील दत्त भट्ट, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- श्री सोहन सिंह नेगी, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0, उत्तराखण्ड।
- श्रीमती अंजुम फातिमा, प्रवक्ता एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- श्री डॉ0 आलोक प्रभा पाण्डे, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0, उत्तराखण्ड।
- श्रीमती प्रिया गुसांई, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी, उत्तराखण्ड।

- डॉ० एल०एस०बर्त्वाल, प्राचार्य डायट, गौचर, चमोली।
- श्री प्रेमचन्द्र चौहान, प्रायार्य डायट ऊधमसिंह नगर।
- श्री विमल किशोर थपलियाल, प्रवक्ता, डायट भीमताल।
- श्री मुजीब अहमद, प्रवक्ता, डायट रूड़की।
- श्री दिनेश खेतवाल, प्रवक्ता, डायट लोहाघाट, चम्पावत।
- डॉ0 विजय सिंह रावत, प्रवक्ता, डायट देहरादून।
- श्रीमती दीपिका पंवार रमोला, प्रवक्ता, डायट देहरादून।
- डॉ0 सरस्वती पुण्डीर, प्रवक्ता, डायट रूड़की।
- डॉ0 आरती जैन, प्रवक्ता डायट, भीमताल नैनीताल।
- डॉ0 दीपा जलाल प्रवक्ता डायट, अल्मोडा।
- श्रीमती इन्दुकांता भण्डारी, प्रवक्ता डायट रूद्रप्रयाग।
- श्रीमती सीमा त्रिवेदी, प्रवक्ता डायट ऊधमसिंह नगर।
- श्री गौरव जोशी, सांख्यिकीकार, डायट भीमताल नैनीताल।
- श्री दीपक सोराड़ी प्रवक्ता डायट चम्पावत।
- डॉ0 संदीप कुमार जोशी, प्रवक्ता डायट बागेश्वर।
- श्री राजेश कुमार पाठक, प्रवक्ता, डायट, पिथौरागढ़।
- श्री राजेन्द्र प्रसाद मैखुरी, प्रवक्ता, डायट, रूड़की चमोली।
- श्री जगमोहन कठैत, प्रवक्ता डायट पौड़ी।
- डॉ0 अरविन्द सिंह, प्रवक्ता डायट पौड़ी।
- श्री राजीव आर्य, प्रवक्ता डायट रूड़की हरिद्वार।
- श्रीमती शालिनी भट्ट, प्रवक्ता, डायट चड़ीगाँव, पौड़ी गढ़वाल।
- श्री दीपक रतूड़ी, प्रवक्ता, डायट टिहरी गढ़वाल।
- श्री कैलाश प्रकाश चन्दोला, प्रवक्ता, डायट बागेश्वर।
- श्रीमती विजयलक्ष्मी बहुगुणा, समन्वयक, समग्र शिक्षा उत्तराखण्ड।
- श्रीमती निधि नौटियाल, प्रधानाचार्य, बा0जू0हा0 पार्क रोड देहरादून।
- श्रीमती मोनिका गौड़, प्रवक्ता अ.आ.रा.इ.का. थानो, देहरादून।
- डॉ0 राजे सिंह नेगी, प्रवक्ता, रा0इ0का0 मथलऊ, टिहरी गढ़वाल।
- श्रीमती नीतू चौहान, प्रवक्ता, रा.इ.का. सोरना डोबरी, देहरादून।
- डॉ0 सुशील सिंह राणा, प्रवक्ता, रा0इ0का0 कोरवा, देहरादून।
- डॉ0 जसपाल खत्री, रा.इ.का. नवाखाल, पौड़ी गढ़वाल।
- श्री प्रशान्त बर्त्वाल, सीनियर प्रोग्राम एसोसिएट, रूम टू रीड, देहरादून।
- श्री पवन कुदवान, स०अ०, रा0इ0का0 नागणी, टिहरी गढ़वाल।
- श्री अनिल सिंह राणा, स०अ०, रा.इ.का. चौनघाट, चमोली।
- श्री उत्तम भण्डारी, स०अ०, रा.इ.का. नीर, टिहरी गढ़वाल।
- श्री अनिल कुकरेती, स०अ०, रा.इ.का. घेराधार, टिहरी गढ़वाल।
- श्रीमती रेखा नेगी, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री बालविकास परियोजना, डोईवाला देहरादून।
- श्रीमती जया नौटियाल, रा.उ.मा.वि. नौडियाल गांव, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।
- डॉ0 इन्दर प्रीत कौर, रा.प्रा.वि., कुन्जा, उत्तराखण्ड।

वैटिंग समिति (बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ)

- डॉ0 अनुराधा सिंह, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान, एम.के.पी. कॉलेज, देहरादून।
- डॉ0 पंकज कुमार, असिस्टैन्ट प्रोफेसर, राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून।
- डॉ0 मौनिका शर्मा, सहायक निदेशक बाल विकास, राष्ट्रीय सार्वजनिक सहयोग और बाल विकास संस्थान, मोहाली।
- डॉ0 राशि भटनागर, मनोचिकित्सक एवं स्पेशल एजुकेटर, निदान देहरादून।
- डॉ0 अनिता चंदोला, प्रोग्राम एसोसिएट, चाइल्ड डेवलेपमेंट, रूम टू रीड देहरादून।

छायांकन एवं परिमार्जन समिति

- डॉ० उमेश चमोला, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड
- डॉ० एस.पी. सिमल्टी, प्रवक्ता, एस0सी0ई0आर0टी0 उत्तराखण्ड।
- श्रीमती पुष्पा पठोई, स0अ0, रा0बा0इ0का0 थत्यूड़, टिहरी गढ़वाल।
- श्रीमती सुमन बिष्ट, रा.उ.मा.वि.पुण्डेरगांव, जयहरीखाल, पौड़ी गढ़वाल।
- श्रीमती हेमलता बिष्ट, रा.इ.का. कमखाल, रूद्रप्रयाग।
- श्रीमती शैलजा गौड़, स0अ0, रा0प्रा0वि0 कण्डोली देहरादून।
- डॉ० बिन्दु नौटियाल प्रवक्ता एस0सी0ई0आर0टी0, उत्तराखण्ड।
- श्री वीरेन्द्र कठैत, प्रवक्ता, डायट, गौचर चमोली।

सहयोग समिति

- पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण हेतु राज्य फोकस समूह।
- एस0सी0ई0आर0टी0 सीमैट, डायट एवं शिक्षा विभाग।
- जिला स्तरीय परामर्श समूहों के प्रतिभागी।
- विभिन्न हितधारक जिन्होंने विभिन्न ऑनलाइन सर्वेक्षणों में प्रतिभाग लिया।
- विभिन्न हितधारक जिन्होंने पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्माण प्रक्रिया में ऑनलाइन या ऑफलाइन सुझाव प्रेषित किए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड

- श्री शैलैन्द्र अमोली, उप निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- श्री कैलाश डंगवाल, प्रधानाध्यापक, रा. उ. मा. विद्यालय क्यारी, विकासखंड कालसी, जनपद देहरादून।
- श्री मनोज किशोर बहुगुणा, कार्यक्रम समन्वयक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।
- डॉ0 कामाक्षा मिश्रा, कार्यक्रम समन्वयक, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।

संकलन एवं समन्वयन

- श्री रविदर्शन तोपाल, कार्यक्रम समन्वयक (राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ), एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड।

कम्पोजिंग एवं टाइपिंग सहयोग

- श्री खिलाप सिंह पिमोली, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, अटल उत्कृष्ठ राजकीय इंटर कॉलेज रूड़की, हरिद्वार।
- श्री रधुवीर सिंह विष्ट, वरिष्ट प्रशासनिक अधिकारी सीमैट उत्तराखण्ढ।
- श्री राजेन्द्र पाल, प्रधान सहायक, एन.ई.पी.प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखण्ड।
- श्री बीरेन्द्र प्रवार, प्रधान सहायक, एन.ई.पी.प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखण्ड।
- श्री प्रमोद कुमार, प्रधान सहायक, एन.ई.पी.प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखण्ड।
- श्री राजकुमार, प्रधान सहायक, एन.ई.पी.प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखण्ड।
- श्री सचिन नौटियाल, वरिष्ठ सहायक, एन.ई.पी.प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखण्ड।

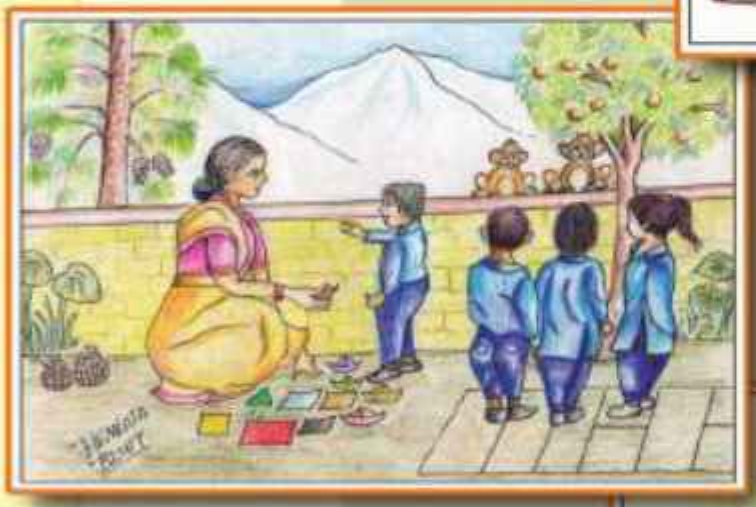

SCERT UK

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उत्तराखण्ड